

लघुकथा विशेषांक

साक्षात्कार

डॉ. विकास दवे

सम्पादक

ISSN : 2456-1924

साक्षात्कार

अप्रैल-मई-जून, 2022

संयुक्तांक : 502-503-504

सम्पादकीय एवं ग्राहकीय पत्र-व्यवहार : निदेशक/सम्पादक, साहित्य अकादमी, संस्कृति भवन, बाणगंगा,
भोपाल-462003

फ़ोन : 0755 - 2554782 (कार्यालय)

साक्षात्कार की प्रकाशनार्थ रचनाओं के लिए

email : sakshatkarnew@gmail.com पर मेल करें।

वार्षिक सहयोग राशि

व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए : ₹ 250

संस्थाओं के लिए : ₹ 300

आजीवन : ₹ 3,000

यह अंक : ₹ 75 (रजिस्टर्ड डाक खर्च अतिरिक्त)

समस्त बैंक इॉफ़िट/मनीआईर 'निदेशक, साहित्य अकादमी, भोपाल' के नाम स्वीकार्य होंगे।

आवरण : अमरजीत कुमार

आकल्पन : राकेश सिंह

मुद्रण : मध्यप्रदेश माध्यम, अरोहिल्स, भोपाल

'साक्षात्कार' में प्रकाशित रचनाकारों के विचार अपने हैं। सम्पादक या साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन का उनके विचार के प्रति सहमत होना आवश्यक नहीं है।

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश का मासिक प्रकाशन

अनुक्रम

संपादकीय

07 // देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर

बातचीत

09 // कांता रँय से डॉ. विकास दवे

आलेख

15 // बी.एल. आच्छा सृजन भूमि और...

24 // सूर्यकांत नागर रचनात्मकता...

27 // विनय घडंगी राजाराम कथा...

33 // बलराम अग्रवाल संस्कृत एवं अन्य भारतीय...

49 // अंतरा करवडे नयी सदी की लघुकथा

52 // रमेश नागोरे लघुकथा वृत्त...

56 // डॉ. पुरुषोत्तम दुबे लघुकथा का क्षेत्रिज...

68 // संतोष सुपेकर उन्जैन और लघुकथा

71 // धनश्याम मैथिल 'अमृत' बालसाहित्य...

75 // कांता रँय भोपाल में लघुकथा...

78 // दीपक गिरकर लघुकथा के परिदृश्य...

83 // डॉ. अशोक भाटिया लघुकथा...

91 // राधेलाल विजधावने लघुकथाओं...

95 // भगीरथ परिहार आरोप, चेतावनियाँ...

101 // माधव नागदा लघुकथा में शिल्प...

बातचीत

103 // श्री सतीश राठी से डॉ. विकास दवे

धरोहर

110 // जयशंकर प्रसाद प्रसाद

111 // माधवराव सप्रे एक टोकरी-भर मिट्टी

112 // शरद जोशी क्रमशः प्रगति

113 // जगदीश चन्द्र मिश्र मिट्टी के आदमी

114 // जगदीश कश्यप साँपों के बीच

115 // भवभूति मिश्र बची-खुची सम्पत्ति

115 // सतीश दुबे राजा भी लाचार है

116 // सतीशराज पुष्करणा चूक

117 // युगल रास्ता

118 // शकुन्तला किरण सासाहिक....

संस्मरण

119 // डॉ. रामकुमार घोटड़ लघुकथा...

लघुकथा

131 // असगर वजाहत कुत्ते

132 // डॉ. अशोक भाटिया अंतिम कथा

133 // अशोक मनवानी हुक्कू बंदर

133 // अर्चना मंडलोई तुलसी का बिरवा

134 // अशोक गुजराती शहादत

134 // आशा शैली परम्परा

135 // आशा भाटी अतिशयोक्ति

137 // अशोक शर्मा भारती आदमी

137 // आनंद कुमार तिवारी निरर्थक पश्चाताप

138 // अंजू खरबंदा गरीबी

138 // आशागंगा प्रमोद शिरदोणकर उसके...

139 // आशीष दलाल बेटी का सुख

140 // अनिल जनविजय धर्मनिरपेक्ष

140 // अंजना अनिल घास के फूल

141 // अंजू निगम मन के छाले

142 // अनुराग शर्मा पुरानी दोस्ती

144 // अखिलेश शर्मा आचरण

143 // अनिल शूर आजाद अनाम पल

143 // अनीता रश्मि थोड़ी सी पत्तियाँ

144 // अनिल मकरिया टूटी चप्पल

144 // अनीता राकेश नूतन आयाम

145 // आर.बी.भंडारकर बेटी मान है सम्मान है

- 146 // अखिलेश पालरिया रिश्ते
 146 // आशा खन्नी चेहरा
 147 // अर्पणा गुप्ता सेठानी
 147 // अर्चना मिश्र आप तब कहाँ थे पापा
 148 // अरुण अर्नंव खरे इंजेक्शन
 149 // अर्पणा शर्मा नागवार
 149 // अमरजीत कौंके भूख
 150 // अशोक जैन अपने-अपने दुःख
 151 // ओम नीरव एक तेरे लिए
 152 // ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' जीते जी
 152 // ओजेंद्र तिवारी प्रीतिभोज
 153 // उषा जायसवाल चुनाव
 153 // उमेश महादोशी पिंजड़े को पकड़कर...
 154 // उपमा शर्मा ममता
 155 // ऊषा भदौरिया सिक्स्टी प्लस
 156 // उर्मि कृष्ण रूप जाल
 156 // ऋचा शर्मा नॉटरीचेबल
 157 // कमल चोपड़ा बताया गया रास्ता
 158 // किशनलाल शर्मा मौत
 159 // किशोर श्रीवास्तव जिगर के टुकड़े
 160 // कृष्णा अग्निहोत्री न्याय
 161 // कमलेश भारतीय सात ताले और चाबी
 162 // कमल कपूर सहारे
 162 // कुँवर प्रेमिल पैसा...पैसा...पैसा...
 163 // कुमार सुरेश श्रद्धांजलि भोज
 165 // कविता वर्मा नालायक
 166 // कृष्णा कुमार यादव योग्यता
 166 // कृष्णा मनु सार्थक सोच
 167 // कांता राय सावन की झड़ी
 169 // कुंकुम गुप्ता माँ
 169 // कीर्ति श्रीवास्तव रक्तदान
 170 // कपिल शास्त्री हार-जीत
 171 // कुमार नरेन्द्र बिरादरी का दुख
 171 // कल्पना भट्ट बागवानी
 172 // कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' औलाद
 172 // गोविन्द शर्मा मोबाइल फोन
 173 // गोविन्द शर्मा भुगतान
 173 // गोविन्द भरद्वाज दो बैसाखियों वाली...
 174 // गोकुल सोनी कूटनीति
 175 // गिरिजेश सक्षेना दूध का दूध...
 175 // गिरिजा कुलश्रेष्ठ एक आसमान
 176 // गोवर्धन यादव अपने-अपने हिसाब से
 177 // गीता गीत भिखारी दोस्त
 178 // घनश्याम मैथिल 'अमृत' कागजी घोड़े
 178 // घनश्याम अग्रवाल एक बार फिर
 179 // चित्रा मुद्दल मर्द
 180 // चंद्रा सायता नास्तिक
 180 // चेतना भाटी पूस की सुबह
 181 // चरनजीत सिंह कुकरेजा सरप्राइज
 182 // चित्रा राणा राघव अनुकूलन
 182 // चैतन्य त्रिवेदी जूते और कालीन
 183 // छवि निगम ट्रैफिक रूल्स
 183 // ज्योति जैन शिक्षा
 184 // जया आर्य लेह का हिम
 185 // जया नर्गिस बिल्कुल माँ जैसी
 185 // जगदीश राय कुलारियाँ साँप
 186 // जितेन्द्र गुप्ता अंतर
 187 // तारिक असलम तस्नीम चरित्र
 187 // दीपक मशाल सहजीविता
 188 // देवी नागरानी आपको क्या चाहिये
 188 // दर्शना जैन मदद से चूकें नहीं
 189 // ध्रुव कुमार हिम्मत
 189 // नीना सिंह सोलंकी हाथों की बदौलत
 190 // पंकज शर्मा माँग नहीं सकता न
 190 // पुरुषोत्तम दुबे अलॉर्म
 191 // पूरण सिंह मैं चुप नहीं रहूँगी
 192 // प्रबोध कुमार गोविल माँ
 193 // प्रीति प्रवीण खरे वैचारिक प्रदूषण

- 193 // प्रदीप शशांक विखंडित न्याय
 194 // प्रताप सिंह सोढ़ी शर्मसार
 194 // प्रभात दुबे दरख्त
 195 // पुष्पा जमुआर मैं हूँ न
 196 // पवित्रा अग्रवाल नाटक
 196 // पूनम डोगरा हथियार
 197 // पवन जैन फाउंटेन पेन
 197 // प्रेरणा गुप्ता बसंती चावल
 198 // बलराम मसीहा की आँखें
 199 // बबिता चौबे धरा की प्यास
 200 // बरखा दुबे शुक्ला हारी हुई बाजी
 200 // भारत यायावर काम
 201 // भुपिंदर कौर खरपतवार
 202 // महावीर रवांटा समझौता
 202 // डॉ. मुक्ता कोहराम
 203 // मुकेश वर्मा प्लेटफार्म से लौटते हुए
 203 // मुकेश तिवारी यह क्यों नहीं
 204 // माया मालवेन्द बदेका अफवाह
 204 // मुरलीधर वैष्णव पागल
 206 // महिमा (श्रीवास्तव) वर्मा अनमोल
 206 // मधुकांत पहली लड़ाई
 207 // मधुदीप गुप्ता अबाउट टर्न
 208 // माया दुबे लकीरें
 208 // मौसमी परिहार उड़ान
 209 // मनीष कुमार चोर
 210 // मार्टिन जॉन नजरिया
 210 // मधुलिका सक्षेना असमंजस
 211 // महेश राजा पुराना छाता
 212 // मनोरमा पन्त रक्षासूत्र
 212 // मृणाल आशुतोष पोंगा-पण्डित
 213 // मुजफ्फर इकबाल सिंहीकी अम्मा...
 214 // मधु जैन कबाड़
 214 // मीरा जैन सर्वश्रेष्ठ
 215 // डॉ. मालती बसंत आत्मविस्मृति
- 216 // माला वर्मा आँपरेशन
 217 // डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद' संवेदना
 217 // मेघा मैथिल भाग्यलक्ष्मी
 218 // मृदुल त्यागी सब्र
 218 // योगराज प्रभाकर गुरु गोविन्द
 219 // योगेन्द्रनाथ शुक्ल कद
 219 // युगेश शर्मा जवाब
 220 // राम मूरत 'राही' माँ के लिए
 221 // डॉ. राजश्री रावत 'राज' आँखें
 222 // डॉ. रामनिवास 'मानव' कसक
 223 // राजनारायण बोहरे भय
 224 // राधेश्याम भारतीय धर्म
 225 // रामदेव धुरंधर राजनीति की बस
 226 // रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' कटे हुए पंख
 226 // रामकुमार घोटड़ एक और बिन्दु
 227 // रामयतन यादव प्रतिकार
 227 // रामचन्द्र धर्मदासानी माँ भी पास हो गई
 228 // राजकुमार जैन राजन अतिशयोक्ति कैसी
 229 // राजेंद्र शर्मा 'अक्षर' विकास
 229 // राजुरकर राज जेब
 230 // राजीव नामदेव 'राणा' बेन्टेक्स...
 230 // राजेन्द्र परदेसी विवशता
 231 // रंजना शर्मा खिसकते पल
 231 // रेणुका सिंह रियल हीरो
 232 // रोहित शर्मा मृत जीवन
 233 // रूपसिंह चन्देल हकीकत
 234 // आर. एस. माथुर भविष्य की योजना
 234 // रुखसाना सिंहीकी सीख
 235 // रूप देवगुण जगमगाहट
 236 // रश्मि प्रणय बागले कुर्बानी
 236 // लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रधानमंत्री...
 237 // लता अग्रवाल व्यावहारिक कुंडली...
 238 // ललित समतानी धर्म और जात
 238 // ललिता अव्यर अनुत्तरित प्रश्न

- 239 // **विजय जोशी** ‘शीतांशु’ काला पृष्ठ
 239 // **विवेक निझावन** कराहटें
 240 // **विभा रश्मि** लो अपनी धूप
 240 // **बंदना सहाय** तीन बेटों का बाप
 241 // **विजया त्रिवेदी** करवाचौथ
 242 // **बसुधा गाडगिल** सरोवर
 243 // **वाणी दवे** विश्वास
 243 // **विश्वभर पाण्डेय** ‘व्यग्र’ चबूतरे...
 244 // **विष्णु सम्मेना** संतोष
 244 // **विनीता राहुरीकर** सपनों का बक्सा...
 245 // **विजय उपाध्याय** राजा
 245 // **विनय कुमार** गुनाह
 246 // **वर्षा अग्रवाल** जिंदगी बाकी है अभी
 246 // **वर्षा रावल** किस्मत के निशान
 247 // **वर्षा चौबे** सलवार सूट
 247 // **सुकेश साहनी** विजेता
 248 // **वर्षा ढोबले** तर्पण
 249 // **श्याम सुन्दर** अग्रवाल मुर्दे
 249 // **श्याम सुन्दर दीमि** उदासी का सफर
 250 // **शेख शहजाद** उस्मानी देसी औरत
 251 // **शशि बंसल** असल सहारा
 251 // **शेफालिका श्रीवास्तव** बड़े लोग
 252 // **शारदा गुप्ता** माँ हमेशा माँ ही रहेगी
 252 // **शमीम शर्मा** बेटे की माँ
 253 // **शोभा रस्तोगी** मुट्ठी भर धूप
 254 // **शील कौशिक** विकलांग
 254 // **सुभाष नीरव** बारिश
 255 // **डॉ. शकुंतला कालरा** बाँझ...
 257 // **सुनीता प्रकाश** घर
 258 // **संजय पठाड़े** ‘शेष’ निपुणता
 258 // **सरस दरबारी** संकल्प
 259 // **सतीशचंद्र श्रीवास्तव** विश्वास
- 260 // **सत्यजीत रॉय** कुंभ चर्या
 260 // **सतीश खनगवाल** आँसुओं का रहस्य
 261 // **सतीश राठी** समाधान
 262 // **सत्या शर्मा** ‘कीर्ति’ फटी चुन्नी
 262 // **सारिका भूषण** सहारा
 263 // **सदाशिव कौतुक** सामंजस्य
 264 // **सतविंद्र कुमार राणा** स्नेह बन्धन
 264 // **सिमर सदोष** ओवर-टाइम
 265 // **सीमा व्यास** नो हॉर्न प्लीज
 265 // **सीमा वर्मा** लौट आई खुशियाँ
 266 // **सीमा जैन** मैं वारी जांवा
 267 // **सीमा भाटिया** परीक्षा की चिंता
 268 // **सुधा भार्गव** परिभाषा
 268 // **सुषमा गुप्ता** फॉक
 269 // **सुमन ओबेरोय** मेमने का प्रश्न
 270 // **सुरेश कुशवाहा** ‘तन्मय’ रात का...
 271 // **सूर्यकांत नागर** लघुता
 271 // **सुभाषचंद्र लखेड़ा** नसीहत
 272 // **सुदर्शन रत्नाकर** भाई जैसा
 272 // **संजीव वर्मा** सलिल समाज...
 273 // **संतोष श्रीवास्तव** शहीद की विधवा
 273 // **संध्या तिवारी** उगता सूरज
 274 // **संतोष सुपेकर** मजा नहीं, फायदा
 275 // **सुधा रानी** तैलंग सच्चा हकदार
 276 // **हरि जोशी** होनहार बिरवान...
 276 // **हनुमान प्रसाद मिश्र** परिचय
 277 // **हीरालाल नागर** बौना आदमी
 278 // **हेमंत उपाध्याय** अगरबत्ती
 278 // **हेमंत राणा** जवाब
 279 // **क्षमा सिसोदिया** सुरक्षा-कवच
 280 // **त्रिलोक सिंह ठाकुरेला** घरवाली
 280 // **ज्ञानदेव मुकेश** वायरस

देखन में छोटे लगें धाव करें गंभीर

हिंदी साहित्य में विगत कुछ दशकों से कुछ साहित्यिक विधाओं की मान्यता और प्रमाणीकरण की प्रक्रिया से साहित्य जगत गुजर रहा है। इन विधाओं में कविता के क्षेत्र में भी जहाँ अकविता, नवनीत जैसे उपक्रमों को साहित्य जगत ने मान्यता दी है वहीं गद्य के क्षेत्र में लघुकथा को भी अब विधिवत रूप से सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो गया है। इसके मानकीकरण को लेकर एक लंबे समय से संपूर्ण भारत के अनेक लघुकथाकार प्राण प्रण से जुटे हुए हैं। स्व. सतीश दुबे जी मृत्यु पर्यंत इस विधा को मान दिलाने के अभियान में संलग्न रहे।

वर्तमान में जो वरिष्ठ लघुकथाकार इस गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के अभियान में लगे हैं इनमें श्री बलराम जी अग्रवाल अग्रगण्य हैं।

श्री सतीश राठी, डॉ. सूर्यकांत नागर, डॉ. योगेंद्र नाथ शुक्ल, श्रीमती कांता राय, श्री संतोष सुपेकर, श्री चैतन्य त्रिवेदी, श्रीमती मीरा जैन और श्री घनश्याम मैथिल ‘अमृत’ की परंपरा तक के अनेक नाम केवल मध्यप्रदेश से ही हमें दिखाई देने लगते हैं। ऐसा नहीं कि लघुकथा की यह परंपरा बिल्कुल नई-नई-सी है। जब हम इसकी पूर्व पीठिका का अवलोकन करते हैं तो हमारे ध्यान में आता है कि श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री विष्णु प्रभाकर, श्री माधव राव सप्रे, श्री प्रेमचंद, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, श्री हरिशंकर परसाई, श्री शरद जोशी, श्री जयशंकर प्रसाद और श्री सत्यजीत राय जैसे कई बड़े नाम इस विधा से जुड़े नजर आते हैं। वास्तव में साहित्य में कथाओं के जितने प्रकार प्रचलन में रहे उनमें बोध कथाओं और प्रेरक प्रसंगों को भी एक लंबे समय तक लघुकथा के स्वरूप में स्वीकार किया जाता रहा किंतु धीरे-धीरे यथार्थ से हटकर यह विधा विशुद्ध कल्पना तत्व के आधार पर स्वयं को विकसित करने लगी। लघुकथा के बारे में ठीक वही बात लागू होती है जो बिहारी के दोहों के बारे में कही जाती है अर्थात् ‘देखन में छोटे लगें धाव करें गंभीर’। यह लघुकथाएँ आधुनिक माध्यमों पर इन दिनों लगातार बहुत तेजी से प्रचारित और प्रसारित हो रही हैं। उसका एक कारण यह भी है कि नई पीढ़ी बहुत लंबा ‘टेक्स्ट’ पढ़ने की आदत खो चुकी है। ‘सोशल मीडिया’ हो या ‘प्रिंट मीडिया’ हर माध्यम पर अब उपन्यास की तुलना में कहानी और कहानी की तुलना में लघुकथा को अधिक महत्व प्राप्त होने लगा है। अत्यंत कम समय का उपयोग करके छोटी-छोटी कथाओं को पढ़ लेना और उसके संदेश को समग्रता से ग्रहण कर लेना, यह नई उम्र के पाठकों को बड़ा सुविधाजनक लगता है। यही कारण है कि इन दिनों लघुकथा लेखकों की भी बहुत तेजी से वृद्धि हुई है किंतु यह वृद्धि लघुकथा के संदर्भ में चिंतन, मनन और विमर्श करने वाले वरिष्ठ रचनाकारों को खल भी रही है। यह इसलिए भी हो रहा है क्योंकि लघुकथा के नाम पर छोटे आकार में कुछ भी परोस देना और उसे लघुकथा कह देना यह इन दिनों बड़ी तेजी से प्रचलन में आया है।

पूर्ववर्ती रचनाकारों से इस विधा के मानकों को समझना यह नवोदित लघुकथाकारों के लिए अत्यधिक आवश्यक हो गया है। इस दिशा में एक बड़ा प्रयास प्रख्यात लघुकथाकार आदरणीया कांता रॉय जी ने भोपाल में प्रारंभ किया है। अपनी लघुकथा शोध केंद्र टोली के माध्यम से वे न केवल लघुकथा को कसौटी पर कसकर प्रमाणित करती हैं अपितु वे लगातार नवोदित रचनाकारों को एक मूर्तिकार की तरह गढ़ने का काम भी कर रही हैं।

यूँ तो यह काम आदरणीय सूर्यकांत जी नागर और सतीश राठी जी जैसे वरिष्ठ रचनाकार भी सतत कर रहे हैं। इस दिशा में राठी जी द्वारा संचालित ‘क्षितिज’ संस्था का उल्लेख करना समीचीन होगा। सभी लघुकथाकार बंधु-भगिनियों के मध्य मेरा सतत जाना-आना होता रहा और यह अनुभव किया कि उनके मन में यह टीस है कि वे स्वयं साज्ञा संग्रहों के रूप में अथवा एकल लघुकथा संग्रह के रूप में अपनी पुस्तकें तो प्रकाशित कर ही रहे हैं किंतु साहित्य जगत की बड़ी पत्रिकाएँ यदि इस विधा पर केंद्रित विशेषांकों का प्रकाशन करने लगें तो इस विधा को साहित्य जगत में भी वैसी ही मान्यता प्राप्त हो जाएगी जैसी शेष अन्य विधाओं को प्राप्त है। हालाँकि मेरा यह व्यक्तिगत मत है कि साहित्यिक पत्रिकाएँ और उनके संपादक फतवा जारी कर किसी विधा को मान्यता प्रदान नहीं कर सकते हैं, यह कार्य तो रचनाकार अपनी शक्ति से स्वयंसिद्ध होकर करवा लेंगे। जब पाठकों का एक बड़ा बल इन लघुकथाकारों के साथ है तो फिर लघुकथा को किसी भी साहित्यकार, संपादक या समालोचनाकार के प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। फिर भी सब के मनोभावों का सम्मान करते हुए साक्षात्कार पत्रिका का यह ‘लघुकथा विशेषांक’ आप सबके हाथों में समर्पित करते हुए प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ।

इस विशेषांक को तैयार करने में लघुकथा शोध केंद्र और क्षितिज की पूरी टोली एक साथ परिश्रम कर रही थी। सभी के नाम पृथक-पृथक लेकर उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित नहीं कर रहा बल्कि इस विशेषांक में जितनी लघु कथाएँ प्रकाशित हुई हैं, उन सब रचनाकारों को मैं धन्यवाद ज्ञापित कर रहा हूँ कि उन सबके परिश्रम के कारण यह अंक आकार ले पाया है। चार सौ से अधिक लघुकथाकारों का एक साथ इतने बड़े संग्रह के रूप में प्रकाशित होना उन सबके लिए जितने गौरव का विषय है, मध्यप्रदेश शासन की साहित्य अकादमी और साक्षात्कार पत्रिका के लिए भी यह उतना ही गौरव का विषय बन पड़ा है। पुनः आप सबको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए यह अंक आपके हाथों में सौंप रहा हूँ। आशा है पूर्व की तरह आप सबकी सम्मति इस विशेषांक पर प्राप्त होगी।

सदैव सा
-डॉ. विकास दवे
संपादक

श्रीमती कांता राय से डॉ. विकास दवे की बातचीत

डॉ. विकास दवे : लघुकथा के परिदृश्य में आपका प्रवेश कब और कैसे हुआ? यह विधा आपके दिल के इतने नजदीक की विधा कैसे बन गई?

कांता रॉय : लघुकथा के परिदृश्य में मेरा प्रवेश अनजाने में ही हुआ। यह मेरे जीवन की दूसरी बड़ी घटना थी/है जो घटता चला जा रहा है। लघुकथा में प्रवेश सन 2014 में हुआ। मेरा प्रारब्ध मुझे यहाँ खींच लाया। मैं बचपन से लेखन करती थी, लेकिन वह दिनचर्या से जुड़े सुख-दुःख के अनुभव थे जो डायरी तक सीमित रहा। जो भी चीजें पढ़ती थी उस पर एक प्रतिक्रिया निकल कर आती थी। वह प्रतिक्रिया समीक्षात्मक होती थी, वृहद, तर्कसंगत शायद अकाट्य भी होती थी तो इस कारण लोगों की नजरों में चढ़ गई। इसके बाद लेखक अपनी रचनाएँ मुझे भेजने लगे। रचनाओं पर प्रतिक्रिया / मत जानने के लिए समीक्षा माँगने लगे, इस तरह धीरे-धीरे रचनाकार मुझसे उम्मीदें रखने लगे। समीक्षात्मक टिप्पणियों के अंतर्गत ही कुछ जवाबी रचनाएँ तैयार हुईं जो लघुकथा के मापदंड में फिट बैठती थीं। वे लघुकथाएँ प्रकाशित भी हुईं और इस दिशा में मेरा हौसला बढ़ता चला गया। यह विधा मेरे दिल के नजदीक की विधा इसलिए भी हुई कि इस विधा के जरिए मैं उन बातों को रेखांकित कर पाई जिनसे मेरे सिद्धांत टकरा कर चोटिल हुए थे। समाज से संवाद स्थापित करने का यह एक सशक्त जरिया बनी। लघुकथा मेरी संवेदनाओं को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में सफल थी, इस कारण भी यह मेरे दिल के नजदीक की विधा बन गई।

डॉ. विकास दवे : आपके जीवन से जब बावस्ता होते हैं तो पता चलता है कि बहुत सारी कठिनाइयों में से निकल कर आप बाहर आई हैं। तो जीवन के कठिन क्षणों में साहित्य आपके जीवन का सहारा कैसे बना?

कांता रॉय : जीवन के कठिन क्षणों में जब आसपास कोई मन को समझने वाला नहीं होता है, जब आप खुद को साबित नहीं कर पाते हैं, अकेलेपन से जूझते रहते हैं, ऐसा पल किसी भी व्यक्ति के जीवन का सबसे कठिन होता है। घर के बाहर या भीतर, आप जब प्रायोजित तरीके से गलत आकलन किए जाने लगते हैं तब मन छटपटाता है। मेरी उस छटपटाहट को सहारा दिया साहित्य ने। अन्य विषयों पर जितनी वाचाल हूँ अपनी समस्याओं पर उतनी ही चुप। कह-सुनकर, जताकर खुद को अभिव्यक्त करने में हमेशा से मैं कमजोर रही। इस कारण जीवन में कठिनाइयाँ भोगीं। लेकिन जब लिखने लगी, तब वे बातें लोगों तक स्पष्ट रूप से पहुँचने लगीं।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा के परिंदे की कल्पना आपके मन में कैसे आई और आभासी दुनिया के एक माध्यम से लघुकथा को कितना लाभ आपके द्वारा पहुँचा?

कांता राँय : लघुकथा के परिंदे मंच की कल्पना मेरे मन में हठात नहीं आई थी। यह एक घटना थी जो सहसा घट चुकी थी। पूर्व नियोजित कुछ भी नहीं था। परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि लघुकथा के परिंदे मंच का गठन हो गया। इससे लघुकथा को वास्तव में बहुत लाभ हुआ। लघुकथा के परिंदे मंच ने लेखकों के साथ पाठकों को भी तैयार किया। लघुकथा का प्रारूप क्या है, लघुकथा का कलेवर क्या है, यह समझ पाठकों के अंदर विकसित की। लघुकथा के परिंदे मंच पर हमने रचनाओं पर शुरू के दिनों से ही समीक्षाएँ, चर्चाएँ कीं क्योंकि उस वक्त तक लघुकथा के प्रारूप को लेकर इतनी अस्पष्टता थी कि मंच पर यह अस्पष्टता हमारे लिए एक चुनौती बन गई थी। नए तो नए पुराने लेखकों में भी लघुकथा के प्रारूप पर भ्रांतियाँ बनी हुई थीं। लघुकथा को लोग लघु कहानी के रूप में लिख रहे थे। 300 शब्द या उससे छोटी, सिर्फ आकार-प्रकार में छोटी होने से ही वह लघुकथा कही जाती थी। लघुकथा की विशेषता क्या है? लघुकथा छोटी कहानी से अलग कैसे है? इस बात को लेकर हमने लघुकथा के परिंदे मंच पर चर्चा की। हमने प्रश्नोत्तरी के लिए महीने के अंतिम दिन अतिथि के रूप में वरिष्ठ लघुकथाकार आमंत्रित किये जिसमें अशोक भाटिया, (करनाल, हरियाणा), बलराम अग्रवाल, सुभाष नीरव, मधुदीप गुप्ता, (नई दिल्ली), सतीशचन्द्र पुष्करणा, (पटना, बिहार) से शामिल हुए। इस आयोजन में शामिल प्रश्न महत्वपूर्ण थे। इस आयोजन के तुरंत बाद अशोक भाटिया ने 'परिंदे पूछते हैं' और बलराम अग्रवाल ने 'परिंदों के दरमियाँ' पुस्तक सम्पादित की जिसे साहित्य सरोकार में सराहना मिली। लघुकथा में यह अपनी तरह का एक नवाचार था जो नए लेखक और वरिष्ठ साहित्यकारों के बीच संवाद-सेतु बना। यहाँ मंच पर सदस्यों की संख्या अधिक है। आज विश्व भर से सदस्य के रूप में लगभग 58,608 की संख्या में पाठक, लेखक, प्रकाशक के रूप में जुड़े हुए हैं। यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। 'चलें नीड़ की ओर', 'समय की दस्तक', 'रजत शृंखला', 'बालमन की लघुकथा', दस्तावेज (2017-2018) इत्यादि लघुकथा-संकलन लघुकथा के परिंदे मंच से निकलकर आई अच्छी लघुकथाओं के संकलन हैं जो पुस्तक के रूप में आ चुका है। यहाँ से लघुकथा का प्रचार-प्रसार खूब हुआ। लोगों तक बात पहुँची। लेखक, पाठक और संपादक विधा के प्रति जागरूक हुए एवं संगठित होकर काम करने के लिए आगे आये। लघुकथा के मापदंड, कलेवर से अब पूरी तरह से लोग परिचित हैं। और आप तो जानते हैं कि अच्छे परिणाम देने वाले नए विचारों का भी संक्रमण होता है। एक व्यक्ति की सोच जब वैचारिक दृष्टि से दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क तक पहुँचती है तो फिर वह अपने आगे उसे प्रवाहित करता है। और यह प्रवाहित करने की जो एक शृंखला शुरू हुई और इससे लघुकथा को ही नहीं, साहित्य के सभी क्षेत्रों में, सभी वातावरण में सोशल मीडिया द्वारा पहुँचा दिया गया। लघुकथा के परिंदे मंच से लघुकथा के मापदंड, कलेवर और प्रयोजन स्पष्ट तौर पर निकल के आए और पूरी दुनिया में फैल गए। अब लघुकथा को लेकर कोई भ्रांति नहीं है, लघुकथा के लिए मंच की यह एक बड़ी उपलब्धि है।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा शोध केंद्र के माध्यम से एक केंद्रीकृत संस्थान लघुकथा के

विकास में लग गया है। इस विचारधारा को आपने कैसे क्रियान्वित किया और इतनी बड़ी टीम को कैसे खड़ा किया?

कांता रॉय : टीम तो सोशल मिडिया ने ही तैयार की। भोपाल के करीब 30 से अधिक रचनाकार इस मंच से जुड़े हुए थे। पहला लघुकथा संग्रह ‘घाट पर ठहराव कहाँ’ के लोकार्पण के लिए सन 2015 में कोट कपूरा, पंजाब में अंतरराज्यीय मिनी कहानी सम्मेलन में भाग लेने गयी और इसके बाद पंजाब, हरियाणा, पटना (बिहार) में आयोजित लघुकथा सम्मेलनों में जाने का मौका मिला, उन जगहों के मुकाबले भोपाल में लघुकथा पर सन्मान प्रदान हुआ था। हमने भोपाल में लघुकथा पर कार्य करने हेतु योजना बनाई, समय-समय पर वरिष्ठ साहित्यकारों से सहयोग माँगा। हमारे वरिष्ठजनों ने उदारमन से सहयोग किया और प्रोत्साहित किया। मंचों पर धीरे-धीरे लघुकथा जगह बनाने लगी। संस्था का गठन जब हो रहा था तब ‘लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल’ की परिकल्पना करते ही सभी साथी उत्साह से भर उठे थे। वर्तमान में सभी साथी मन प्राण से लघुकथा के हित में ‘लघुकथा शोध केंद्र’ को अपना समर्पण दे रहे हैं।

डॉ. विकास दवे : लेखन, संपादन, संयोजन, प्रकाशन संस्थान, अखबार का संपादन और भी बहुत सारे क्षेत्र आपके साहित्यिक जीवन में बने हुए हैं। आपका बहुआयामी व्यक्तित्व इन सारे क्षेत्रों में बहुत ही सफलता के साथ काम कर रहा है। इस जादू का क्या राज है?

कांता रॉय : सच कहूँ तो इस सन्दर्भ में तो मुझे भी नहीं मालूम कि कैसे यह सब हो रहा है। जब जो कार्य सामने आता जाता है, उपलब्ध साधनों की सहायता से करती जाती हूँ। पूर्व नियोजित अथवा निर्धारित कुछ भी नहीं रहता है। एक चिंता हमेशा बनी रहती है कि लघुकथा शोध केंद्र को अपने पैरों पर खड़ा करना है और इसके लिए अखबार और प्रकाशन संस्थान ही एक मात्र विकल्प दिखाई दे रहा है। अखबार और प्रकाशन संस्थान, दोनों का विस्तार काम की गुणवत्ता से ही संभव है। इसके लिए खुद को अपग्रेड करती रहती हूँ। जन्म जिसे दिया है उसे पालने की जिम्मेदारी तो उठानी होगी ताकि भविष्य में संस्थान स्वपेषित बने, किसी व्यक्ति विशेष पर यह निर्भर न रहे। जादू जैसा तो कुछ भी नहीं है। ऐसा समझ लीजिये कि इस सामाजिक अनुष्ठान में समाज अपनी-अपनी भागीदारी बढ़-चढ़ कर निभा रहा है, इस कारण यह सफल होता प्रतीत होता है।

डॉ. विकास दवे : आप आभासी दुनिया से बहुत नजदीकी रूप से जुड़ी हुई हैं। आपके विचार में लघुकथा के विकास में इनका क्या योगदान है? क्या इस माध्यम से लघुकथा की गुणवत्ता प्रभावित होती है?

कांता रॉय : अंतरजाल ने पूरे विश्व में हिन्दी साहित्य को संगठित कर दिया है। लघुकथा को ही नहीं बल्कि कहानी, गीत, ग़ज़ल सहित विमर्श को भी विस्तार दिया है। जहाँ हम अपने शहर में एक हॉल में पचास श्रोता जुटाने में पसीने-पसीने हो जाते हैं वही अंतरजाल पर पढ़ने और सुनने वाले हजारों पाठक / श्रोता एक क्लिक पर जुड़ जाते हैं। साहित्य जिस समाज के लिए लिखा जा रहा है, अंतरजाल के माध्यम से अब उन तक पहुँच भी रहा है। पहले की लिखी गयी लघुकथाओं के मुकाबले आज लघुकथा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। यहाँ आकलन नए रचनाकारों के लिखे हुए को देख कर

करना गलत हो जाएगा। कारण जो आज नया है वही कल पुरानों की गिनती में आयेंगे। लिखेंगे तभी न सीखेंगे।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा आज एक विधा के रूप में स्थापित हो चुकी है, तेकिन इस स्थापना के पीछे उसकी एक लंबी संघर्ष यात्रा है। उस संघर्ष यात्रा पर आप क्या कहना चाहेंगी? किस तरह का और किन लोगों का योगदान उस संघर्ष यात्रा में रहा है।

कांता रॉय : खुशी की बात है कि लघुकथा वर्तमान में लोकप्रिय विधा के रूप में पहचानी जाती है। लघुकथा के स्थापना के पीछे पचास वर्ष का लम्बा संघर्ष है। उन कमज़ोर पलों में जब लघुकथा के अस्तित्व को गढ़ा जा रहा था, जब वह स्वीकार्य होने की चुनौती से जूझ रही थी, उस वक्त सत्तर के दशक में जब लघुकथा के लिए रमेश बत्रा, जगदीश कश्यप ने कमान थामी थी, धर्मयुग जैसी बड़ी पत्रिकाओं के साथ सारिका, तारिका (शुभ तारिका), आघात, मिनी युग, जनगाथा, क्षितिज, अभिव्यक्ति, दृष्टि, संरचना सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने साथ दिया था जिसके फलस्वरूप नए-पुराने लेखकों में लघुकथा के प्रति रुझान बढ़ा, वे प्रणम्य हैं। वे सभी कारक एवं कारण स्तुत्य हैं जिन्होंने चित्रा मुद्रल, भगीरथ, अशोक भाटिया, बलराम, सिमर सदोष, पूरन मुग्दल, कृष्णा अर्णिहोत्री, सुकेश साहनी, बलराम अग्रवाल, सुभाष नीरव, रामेश्वर कम्बोज 'हिमांशु', कृष्ण कमलेश, सतीश दुबे, सूर्यकांत नागर, विक्रम सोनी, परस दासोत, मालती बसंत, सतीशराज पुष्करणा, कमलेश भारतीय, मिथिलेश कुमारी, कुमार नरेंद्र, सतीश राठी, अशोक जैन, कमल चोपड़ा, रामकुमार घोटड, मधुदीप, श्यामसुंदर अग्रवाल, श्यामसुंदर दीसी, मोहम्मद अतहर और कुँवर प्रेमिल जैसे अनगिनत समर्पित लघुकथाकार दिए। इन सभी ने लघुकथा के लिए इतिहास में गोते लगाये और भविष्य को देने के लिए प्राचीन साहित्य में से लघुकथा के असंख्य मोती तलाशे, वर्तमान को समृद्ध किया तथा भविष्य के लिए ठोस जमीन तैयार की।

डॉ. विकास दवे : क्या लघुकथा में किसी प्रकार की खेमे बाजी है और यदि है तो उसका इस विधा के विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

कांता रॉय : यहाँ खेमेबाजी सिर्फ लघुकथा में ही क्यों, मुझे तो समाज के हर क्षेत्र में वह चाहे गाँव हो या शहर, दिखाई देती है। धर्म-कर्म के क्षेत्र में, राजनैतिक परिवेश में, सरकारी महकमों में, हर जगह ऐसे लोग दिखाई देते हैं। इन बातों को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। एक जैसे स्वभाव वाले व्यक्ति जब किसी खास उद्देश्य से अच्छे कार्यों के लिए संगठित होकर काम करते हैं तो ये खेमेबाजियाँ धरी की धरी रह जाती हैं। लघुकथा में सकारात्मक परिणाम देख कर मुझे लगता है कि इससे विकास को कोई फर्क नहीं पड़ता है।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा के आकार को लेकर, उसके शिल्प को लेकर, उसकी भाषा की कसावट को लेकर, उसकी शैली को लेकर आप कुछ कहना चाहेंगी?

कांता रॉय : सामाजिक हित के अभिप्राय से परिस्थितियों पर चिंतन-मनन के पश्चात् मौलिक दृष्टि निष्पादित करना लघुकथा है। मौलिक दृष्टि नये प्रयोग से ही संभव है। आकारगत लघुता इसकी पहली शर्त है लेकिन निश्चित रूप से इसे शब्द संख्या में बाँधना उचित नहीं होगा। कारण कि रचना

अपना आकार-प्रकार स्वयं ही तय करती है। लघुकथा में दार्शनिक दृष्टिकोण होने से उसकी उपादेयता बढ़ती है। शिल्प और शैली किसी विशेष खाँचे में बँधकर नहीं रहती। साहित्य कला का क्षेत्र है और कला सदा विकासोन्मुख हुआ करती है। इसमें छूट मिलना ही चाहिए। जहाँ तक बात है विधा-सम्मत मापदंड की तो लघुकथा का प्रारूप अगर कैप्सूल का है तो उसे होमियोपैथी की गोलियों का आकार नहीं दिया जा सकता है। यह जरूरी है कि भाषा में लालित्य और रस हो जिससे पाठकों में रुचि बनी रहे, पढ़ते हुए उनके मन में तीव्र भावनाएँ, मानवीय संवेदनाएँ जागृत हों।

डॉ. विकास दबे : आप एक प्रदेश की राजधानी में रहती हैं। वहाँ रहने के अपने फायदे और नुकसान होते हैं। लघुकथा के विकास में इस शहर का क्या योगदान रहा है और आप इसमें किस तरह से सहभागी बनी हैं?

कांता रौय : जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ। अपने देश से प्रेम करने वाला चाहे गाँव में हो या शहर में, वह अपनी माटी से प्रेम करेगा। जब मैं निमाड़ क्षेत्र में गयी तो मुझे निमाड़ की माटी में बसने वालों पर रश्क हुआ। इसी तरह संस्कारधानी और मालवा की मिठास छू गयी। भोपाल के मुकाबले विचारों और संस्कारों से वहाँ के लोग अधिक संपन्न लगे। बत्तीस वर्ष से भोपाल में हूँ, इस शहर का ऋष्ण है मुझ पर। बड़ा दिलदार शहर है भोपाल भी। यहाँ के साहित्यकार विशाल हृदय के स्वामी, उदारमना हैं। लघुकथा के लिए सभी साहित्यकारों ने सच्चे दिल से रचनात्मक योगदान दिया। वर्तमान में लगभग सभी मंचों से लघुकथा का आवाहन हो रहा है।

डॉ. विकास दबे : लघुकथा को लेकर इन दिनों बहुत सारे सम्मान, पुरस्कार और घोषणाएँ होती हैं। क्या यह लघुकथा के विकास में योगदान करने वाला होता है? क्या इनमें पुराने और नए के बीच का सामंजस्य बनता है?

कांता रौय : सम्मान और पुरस्कार की गरिमा मंच की गंभीरता से आँकी जाती है। मंच के पदाधिकारी अगर वैचारिक रूप से समृद्ध हैं, तो चयन समिति भी अच्छी होगी। विवेकपूर्ण, तर्कसंगत, तुलनात्मक तरीके से परख कर जहाँ सम्मानार्थीयों का चयन होगा तो पुरस्कार की गरिमा अवश्य बनी रहेगी। मेरा निजी मत है कि सम्मान के साथ राशि का प्रावधान अवश्य किया जाना चाहिए। इससे साहित्य में सम्मान की रक्षा करने में मदद मिलेगी।

डॉ. विकास दबे : लघुकथा का देशज परिदृश्य और वैश्विक परिदृश्य किस प्रकार से एक-दूसरे से अलग है?

कांता रौय : अंतर्जाल ने अब यह अंतर पाट दिया है। जितने चाव से भारत में लघुकथा लिखी-पढ़ी जा रही है। उतने ही चाव से वैश्विक स्तर पर भी लघुकथा में रुझान देखा जा रहा है। अगर गणित लगाने बैठते हैं तो पाते हैं कि अकेले लघुकथा के परिदें मंच पर 1,336 की संख्या में प्रवासी भारतीय लेखक-पाठक के रूप में उपस्थित होकर रचनात्मक योगदान दे रहे हैं। राज हीरामन, अनिल जनविजय, रामदेव धुरंधर, सुधा ओम धींगरा, वंदना मुकेश, अंशु जौहरी, शशि पाधा, अनीता कपूर, पूनम डोगरा, चित्रा राणा राघव, उषा भदौरिया सहित अनेक भारतीय, विश्व में हिन्दी लघुकथा का परचम फहरा रहे हैं।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा की नई पीढ़ी लेखन के साथ-साथ कितना अध्ययन कर रही है? इन दिनों निरंतर पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। क्या इतना सब पढ़ा जा रहा है? यदि नहीं पढ़ा जा रहा है तो क्या इन प्रकाशन का कोई औचित्य है?

कांता रॉय : इस सवाल पर हर बार नई पीढ़ी को ही क्यों घेरा जाता है? ये प्रश्न तो नई और पुरानी पीढ़ी, दोनों से होना चाहिए था। नई पीढ़ी की अगर पढ़ने में रुचि नहीं होती तो वह लेखन की तरफ रुख कभी नहीं करती। इतना जरूर है कि मोबाइल, कम्प्यूटर ने हाथ से किताब छीन ली है, लेकिन पुस्तकों में रुचि रखने वाले लोग खूब पढ़ रहे हैं। लेखन की ओर रुझान बढ़ा है तो उनका प्रकाशन तो होगा ही। हमने आजकल प्रकाशन का औचित्य पुस्तक की बिक्री के आँकड़ों से जोड़ लिया है। इस आँकड़े में प्रकाशकों ने ही लेखकों को उलझाया है जो गलत है। इससे जो विकृति साहित्य में देखने को मिल रही है, वह है लेखकों के चिंतन में सामाजिक सरोकार की जगह बाजार की जगह बनना। लेखक लिखने से पहले समाज का हित बाद में, पाठकों की संख्या बढ़ाने की जुगत पहले लगाने लगा है, जो चिंताजनक है।

डॉ. विकास दवे : आपके लघुकथा लेखन की रचना प्रक्रिया क्या है?

कांता रॉय : मैं सामान्य क्षणों में कुछ भी नहीं लिख पाती हूँ। जब किसी विशेष परिस्थिति से टकराती हूँ या वे स्थितियाँ मुझसे टकराती हैं तो प्रतिक्रिया के फलस्वरूप लेखन हो पाता है। रोजमरा की दिनचर्या में बहुत बार ऐसा होता है कि चीजें आँखों के सामने घट जाती हैं और हम चाह कर भी उसे रोक नहीं पाते, उस वक्त मन बहुत छटपटा उठता है, ग्लानी का बोध होता है। हम इन वजहों को घटने से क्यों रोक नहीं पा रहे हैं, आखिर ऐसी स्थिति पैदा ही क्यों होती हैं, ऐसे सवालों से जब-जब घिरती हूँ, लिखने पर विवश हो जाती हूँ, कारण मानवीय मूल्यों के विघटन से जुड़े मेरे इन सवालों के जवाब के लिए मुझे ही जिम्मेदारी निभानी होगी।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा के भविष्य के बारे में आपका क्या विचार है?

कांता रॉय : कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी के समकक्ष लघुकथा ने अब अपनी जगह बना ली है। लेखकों की ही नहीं बल्कि संपादकों की भी यह पसंद की विधा बन गयी है। लघुकथा के उज्ज्वल भविष्य के लिए लेखकों को सदैव सावधान रहना होगा ताकि यह जगह भविष्य में भी बनी रह सके। मंजिल पाना आसान होता है लेकिन उसे सँभालना और उस पर टिके रहना सबसे बड़ी चुनौती है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9575465147

बी.एल. आच्छा

सृजन भूमि और समालोचना

साहित्य एक व्यापक संज्ञा है और विधाएँ उसकी अभिव्यक्ति का सहज प्रतिबिम्बन। विधाओं की विषयगत या भावगत अनुरूपता होती है। मसलन गीत के लिए जो अंतरंग भाव सघनता की लय चाहिए तो कथा-कुल के लिए गद्य का पठार। पर ऐसा भी नहीं कि कविता में लय ही लय होती हो और कथा-कुल में भाव-सघनता से रिश्ता-नाता न हो। इसीलिए आज की कविता में गद्य-अभिव्यक्ति ने भी ताल ठोककर पहचान बनाई है और कथा-साहित्य भी गद्य-गीत की लय में संक्रमित हुआ है। यह परिवर्तन जब रचनाओं में घटित होता रहता है, तो आलोचक की दृष्टि इस बदलाव को परखती है। और जब युग-सापेक्ष संवेदन या वैचारिक संबोध में भावान्तर आता है, तब भी वह पड़ताल का विषय बनती है। तो क्या इस बदलाव की किसी सुनिर्धारित शास्त्र से फॉर्मेट से, सुनिश्चित मानकों से तौलना चाहिए? स्पष्ट है कि रचना में बदलाव आया है और वह प्रवाह यदि कन्नेन्ट और फॉर्म में भी उतरा है, तो मानदण्ड स्थायी नहीं हो सकते। रचना का तापमान अलग तरह का है, तो बेरोमीटर भी बदलाव के लिए प्रतिश्रुत है। पर इसका अर्थ यह भी नहीं कि पुराना शास्त्र खारिज हो जाता है और नये को परखने की दृष्टि ही पुराने शास्त्र के हिसाब से बेगानी हो जाती है। कालिदास जब ‘पुराणमिवत्येव न साधु सर्वम्’ की बात करते हुए नये की प्रतिष्ठा करते हैं, तो तय है कि रचनाधर्मिता में बदलाव आया है, फिर कसौटी में भी बदलाव आएगा! आखिर बासी उत्तरों से भी नये सवाल खड़े होते हैं। और साहित्य तो उस रमणीयता का उपासक रहा है। जो कहता है—‘क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयताया।’ कालिदास साहित्य में इसी प्रयोगविज्ञान के उपासक थे। लघुकथा हो या साहित्य की अन्य विधाएँ, ये सभी नवोन्मेषी प्रयोगशीलता की माँग करती हैं। क्योंकि युग बहुत गतिशील है, तकनीक और विचार में भी; इसीलिए साहित्य में यह गतिशीलता और बदलाव दशक-पंचक में उतर आये हैं।

समीक्षा या आलोचना रचनापेक्षी है। शास्त्र तो एक तरह से नौसिखियों के लिए सधी हुई सीढ़ियाँ हैं। पर वे भी इतनी सुगठित हैं कि न तो छठी शताब्दी के आचार्य भामह की अनदेखी की जा सकती है, न आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र की। हिन्दी में यह बात आचार्य शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रभृति अनेक आलोचकों की परंपरा में पुनराविष्कृत हुई है। वामपंथ में भी और रसवादी आनंद धारणा में भी पर बदलाव बहुत आये हैं। मार्क्स, फ्रायड, पूँजीवाद, आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता, ग्लोबल से गुजरते हुए और नयी विधाओं के रूपांकन के साथ उनके निरन्तर बदलाव में भी। अब किसी फार्मेट या चौखट से

बँधकर लिखना संभव नहीं है। यों भी साहित्य हर काल में परम्परा का अतिक्रमण करता है। यदि घनानंद कहते हैं कि – ‘लोग हैं लागि कवित बनावत, मोहि तो मोरे कवित बनावत।’

लक्षणों के आधार पर निर्मित काव्य-व्यक्तित्व एक बात है और स्वानुभूत प्रयोगविज्ञान से निर्मित व्यक्तित्व नितांत अलहदा। इसीलिए शास्त्र को रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास की सीढ़ियाँ कहा है, व्यक्तित्व का मूर्ति स्थापन नहीं। रचनाकार पुरानी मूर्तियों को गला भी देता है, तो नये आविष्करण के लिए। इलियट इसे ट्रेडिशन एंड इन्डिविज्युअल कहते हैं। हम भी जानते हैं कि जब कोई विधा ऑटोमेटिक सी हो जाती है, यहाँ तक कि रचना किसी प्रवाह या वाद-संबद्ध तो उस पर भी आधात होता है। नयी रचनाधर्मिता अतिक्रमण करती है। पर आलोचक के लिए उन्हीं सोपानों का यानी शास्त्र का ज्ञान जरूरी है। और रचनाधर्मिता में आ रहे बदलावों को चीरकर देखने की नयी दृष्टि भी। साथ ही इन बदलावों के पैटर्न को समझकर शास्त्रीय दृष्टि को नवनवीन बनाने की। रचना भी बदलती है और शास्त्र भी बदलता है। रचना को समझने के लिए शास्त्र भी जरूरी हैं और रचना के बदलाव को समझने के लिए लोचदार शास्त्रीय दृष्टि भी। रचना का अस्तित्व भाषा की सत्ता में होता है। भाव संवेदन की दृष्टि से और बुनावट की दृष्टि से भी। रचनाकार भाषा की अनेक कोटियों का संदर्भित विषय के अनुसार चयन करता है और यह संगठित रूपांकन ही रचना के भीतर तक, उसकी अंतर्वस्तु तक ले जाता है। अलबत्ता संस्कृत काव्यशास्त्र में भाषा को आधारभूत मानते हुए भी रस और ध्वनि की वकालत की है और आत्मवादी तथा देहवादी के तात्त्विक भेद से अलगाये रखा है। पर रचना की अखंड सत्ता कथ्य और रूप के अद्वैत में हैं, इसलिए भाषा में रची अंतर्वस्तु तक भाषा के माध्यम से ही जाना होता है। समूची रचना एक महावाक्य है और त्वचा को फोड़कर निकलने वाला शक्तिमय चूजा या ध्वन्यार्थ भी उसी संरचना से फूटता है। बनावट और बुनावट के भीतर जो ध्वनि है, संदेश है, संवेदन है, वह भाषा के ही अन्तर्जात हैं। उसका मीनिंग ऐरिया बहुत लंबा हो सकता है, शब्दों के कोशीय या लाक्षणिक अर्थों को छिटकाकर हो सकता है, वह फूटता तो भाषा से ही है। पुनः शास्त्र पर लौटना चाहूँगा। समीक्षा के दौरान रचना जितना प्रभाव छोड़ती है, उतना ही समीक्षा शास्त्र या आलोचना के मापदण्ड बिनकहे सहयोगी हो जाते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि उन्हीं पायदानों से गुजरकर सफल होते हैं। बल्कि रचना में नये बदलाव दिखते हैं, तो पुराने हूक नहीं मचाते, बल्कि बदलाव को रेखांकित करते हैं? उस बदलाव से रचना में आए नये आस्वाद को तौलते हैं और यदि वह युगीन या व्यक्ति वैशिष्ट्य (idiosyncracy) से अनुप्राणित हैं, तो शास्त्र को भी परिमार्जित या संशोधित करते हैं। यह रचना की ताकत है, इसीलिए तो रामचरितमानस आचार्य शुक्ल को लोकमंगलवादी उन्मेष देती है। प्रेमचन्द को प्रगतिशीलता से जोड़ती है और भाषिक तौर पर नव प्रवर्तनों को पुराने में योजक बनाकर शास्त्र को भी नवनवीन बनाती रहती है। तात्पर्य यही कि शास्त्र और विचारधाराएँ, युगीन परिप्रेक्ष्य और प्रयोगविज्ञान के शैलीगत नवाचार समीक्षक के अंतरंग पार्श्व में सक्रिय रहते हैं, पर वे रचना के संवेदनात्मक प्रवाह में बाधक नहीं, बल्कि संप्रेषणीयता के सतर्क साधक या प्रश्नशील संवेदी के रूप में बने रहते हैं।

सभी विधाओं की अपनी-अपनी विशिष्टताएँ हैं। साहित्य मनीषी किसी एक विधा का ही पारखी बनकर नहीं रह जाता। यों भी कलाएँ अंतर-अनुशासी होती हैं। संवेदन भी अनेक ज्ञानधाराओं से

अन्तर्भूत। और प्रयोगशील रचनाकार समय के संवेदन से अपने भीतर के तर्क को जितना पुष्ट करता है, उतना ही अभिव्यक्ति के नये शिल्पों की तलाश करता है। और करते-करते अन्य विधाओं की विशिष्टता से अपने कथाविन्यास को रूप देने के नयेपन तक जाता है। तो विधागत अन्तःसंक्रमण से जो विशिष्टता आती है, उसे भी पहचानना ही होगा। मसलन लघुकथा का उपदेशात्मक, बोधात्मक रूप अपने नरेटिव में ही होता था, कथाकथन की पद्धति में। जब उसे नाट्य और विज्युअल से रचा गया, तो शिल्प के साथ संवेदन की प्रेषणीयता का नया प्रतिमान बना, तो लघुकथा और जीवन्त हो गयी। अभिनय के योग्य और विज्युअल माध्यमों में भी प्रभावी। इसलिए रचना को शास्त्र के अनुरूप तौलने के बजाय रचना को चीरकर नये शिल्प-संवेदन की पड़ताल करते हुए शास्त्र को भी, नजरिये को भी संशोधित और नवनवीन बनाना होगा। पढ़ते समय रचना कहाँ-कहाँ झटका देती है? कहाँ-कहाँ शब्द अलग ही अर्थ ध्वनित करते हैं? कहाँ मोड़ और यति-गति चौंका कर नये अर्थ तक ले जाती है? एक संवेदनशील सहयात्री और अर्थविज्ञानी के तौर पर आलोचक हर घुमाव और बदलाव को पकड़ता है। यह जितना सहदय है, उतना ही तत्वान्वेषी भी।

बात लघुकथा की। कहा गया है कि गद्यकुल की यह सबसे छोटी विधा है। यों उसके उत्स वेद-उपनिषद्, रामायण-महाभारत, जैन-बौद्ध कथा, पंचतंत्र, कथासरित्सागर उपदेश-बोधकथा में हैं और अवशेष आज की लघुकथाओं की बुनावट में भी झलक जाते हैं। पर अब इसका आविष्करण नया है। संवेदन और रूपाकार में भी। वैचारिक संस्पर्श और बुनावट में भी झलक दे जाते हैं। और यह भी दोनों स्तरों पर प्रयोगधर्मी बना रहेगा। पहली बात आती है कि क्या समीक्षक को आकार की लघुता शब्द संख्या के आधार पर तय करनी चाहिए? मैं शब्द-संख्या या आकार में नहीं अटकता! बात इतनी सी है कि जिस सूक्ष्म को, क्षण को, संवेदन को, व्यंग्य को, संदेश को, यथार्थ को रचनाकार लघुकथा में रचना चाहता है, वह यति-गति से गुजरती हुई लघुकथा में कितनी एकाग्रता से उस शिखर तक ले जाती है। अब उसमें अंतःप्रेरणा हो, अन्तर्द्वन्द्व हो, मनोविज्ञान हो, समस्यापरकता हो, नाटकीय मोड़ हो, चक्रव्यूह हो, छोटे-छोटे समीकरण हों, कल्पना हो, यथार्थ हो, कथा का ताना-बाना हो, कथा-रस हो, दर्शन हो, अंतर्विरोध हों, बिम्ब हो, प्रतीक हो, विरोधी रंग-योजना हो, मगर वह सब एक देशीय और एक दिशायी हों। सब समेटते हुए त्वरा से अपने शीर्ष संवेदन पर नुकीले स्पर्श से व्यंजित हो जाएँ। यह स्पर्श-व्यंजना प्रतिक्रिया हो सकती है, विरोध हो सकता है, कोमल का उभार हो सकता है, न्याय की पैरवी में डां हाथ हो सकता है, विवशता की बॉडी लैंग्वेज हो सकती है। और... और... पर अंतर्गठन तो उत्स से लेकर पूर्णता तक एक दिशा, एक गंतव्य।

इसे कितने शब्दों में रूपाकृत किया जाए तो शास्त्रीय निर्देश भी साधक हैं- ‘अन्यूनातिरिक्तत्वं मनोहारिणी अवस्थितिः। न कम न अतिरिक्त शब्द-रचना मनोहारी होती है। तय है कि कथा भी होगी, कथारस भी, ध्वनियाँ भी, शब्द भी, संवाद भी, कथानकीय मोड़ भी, दृश्य-नाट्य भी, परिवेश भी, चरित्र का केंद्रीय संघटन भी, संदेश की दिशा भी। मगर सारा लक्ष्यधावन तो उसी अंतिम बिन्दु के लिए समर्पित, जिसके लिए कथा का रचाव है। इसलिए न प्रासंगिक कथाजाल, न बहुचरित्रीय, न परिदृश्यों की पट्टभूमि। तंतुजाल तो हो लता की तरह, पर उसी में कोई फूल खिलकर मुखर हो जाए। संपूर्ण लता की

बात नहीं, केवल एक पुष्प के लिए जो तंतुजाल बुना जाता है, बस उसी के प्रतीक के रूप में। अब कई बार यह भी कहा जाता है कि क्या दो काल और दो कथाएँ समांतर रूप से नहीं चल सकतीं? मेरा मानना है कि हर्ज नहीं है क्योंकि युगांतर को दर्शने के लिए ऐसा हो सकता है, पर समांतर योजना का उद्देश्य भी एक बिन्दु पर जाकर विस्फोट करना है। उदाहरण के लिए भृंग तुपकुरी की लघुकथा 'बादशाह बाबर का नया जन्म' में बाबर की शहंशाही सल्तनत और राजेश की बेबसी विरोधी रंग योजना में समांतर कथानक रचते हैं, पर दोनों ही विवशता के शिखर पर माइक्रो हो जाते हैं। या अशोक वर्मा की 'खाते बोलते हैं' के कालान्तर के तीन परिदृश्य। पर मार तो अंतिम परिदृश्य के 'रामभरोसे' के व्यंग्य और सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर ही है। इसे काल दोष मानने की जरूरत भी नहीं।

लघुकथा चाहे आतिशबाजी में तीर की तरह आकाश में नुकीले क्षण पर विस्फोट कर अपने रंग बिखाराये या चक्री की तरह घुमावदार होकर जमीनी वृत्त में ही बिन्दु विशेष को जगमगा दे, पर उसका वृत्त समूचे परिदृश्य या चरित्र को प्रकाशी बनाने का नहीं है। 'क्षण को सीमित अर्थ में लेना ठीक नहीं, उसके साथ वह अनुभूत चक्र भी है, जो एक दिशा में ही एक अपनी अणु-व्यंजना पर संकेन्द्रित होता है। लघुकथा एकरेखीय नहीं है, वह मनःस्थितियों का संघर्ष भी है, विरोधों की तल्खी भी है, तटस्थिता की चुप्पी की भीतरी व्यथा भी है, समाजशास्त्र का छोटा सा एकांश भी है, चरित्र की माइक्रो झलक भी है। और इतना जरूर है कि सारा कथाविन्यास अपने व्यंजक शीर्ष के लिए समर्पित हो। लघुकथा न बौन्साई है, न कहानी का लघु-संस्करण। इस सूक्ष्म, इस क्षण, इस शीर्ष, इस अणु, इस मेक्रो की संघनित अभिव्यक्ति का पूर्ण बिम्ब उत्तरकर आ जाए और वह कहानी में परिवर्तित होने की संभावनाओं को भी यह जतला कर समाप्त कर दे कि इससे व्यंजना का घनत्व बिखर कर अपनी क्षमता को खो देगा। तय है कि ऐसी बुनावट लघुकथा को संक्षिप्त आकार ही देगी, क्योंकि यह सौ मीटर की दौड़ है, मैराथन नहीं। तलवार, कटार और चाकू तीन अलग-अलग हथियार हैं, उसी तरह आज कथाकुल की सबसे छोटे आकार की लघुकथा अब विधारूप में स्थापित है, शब्दों की संख्या के आधार पर नहीं, स्वरूप की संभावित पहचान के आधार पर।

यह पहचान लक्षणों पर आधारित नहीं, लक्षणों को सिद्ध करते हुए नवोन्मेषी हो। और यह स्वरूप समय और बदलाव के साथ बदलेगा, स्थिर नहीं रह सकता। नहीं कहा जा सकता- 'इदमित्थम्।' भाषाविज्ञान को ही लीजिए। जनता में व्याकरण की एक अन्तर्निहित व्यवस्था (Language of Competence) होती है, और साहित्यिक अभिव्यक्ति में एक नयी संभावनाओं का कौशल (Language of Performance)। उसी तरह विधा के आधारभूत लक्षण नयी संभावनाओं के साथ सदैव अतिक्रमण करते हैं। नया स्वरूप देते हैं। कहना यह भी चाहिए कि कई बार जीवन के सूक्ष्म अनुभव कहानी, उपन्यास में बड़े कैनवास के घटनाक्रम में नहीं आ पाते, लघुकथा ऐसे अहसासों, क्षणों, संवेदनाओं, व्यंग्यों, अनुभूतियों को सहज ही उठाकर क्षण को चरितार्थ कर देती है।

यों कथा साहित्य की समीक्षा के लिए एडगर एलेन पो ने छः तत्वों का निर्देश दिया था और आधारभूत-सोपान के रूप में किताबी दुनिया में मौजूद हैं- कथानक, पात्र, संवाद, भाषा-शैली, देशकाल और उद्देश्य। ये सभी आज भी कथा साहित्य की हर विधा में मौजूद हैं। मगर तत्वों के विन्यास से न कथा

बनती है, न सफलता का प्रतिमान बनती है। बदलाव यहाँ तक हुआ है कि कहीं परिवेश और पात्र के मनोविज्ञान से ही कथा बन जाती है, घटनाचक्र या कथानक तो नयी कहानी में कथानक के ह्लास की विशिष्टता में बदल गया था। अलबत्ता कथा-तत्व का नियोजन लघुकथा में वात्याचक्र को भी गढ़ता है, कुतूहल की सृष्टि करता है, पात्रों की मनःस्थितियों को उभारता है, आरोह-अवरोह या घात-प्रतिपात से तर्क की दिशा गढ़ता है, संदेश या शीर्ष की अभिव्यक्ति के लिए मुकम्मल सोपान रचता है, कथा-रस से पाठक को बाँधे रखता है, एक जीवंत जैविक संरचना के रूप में मनोमय अनुभव को रचता है, कथाचक्र में परिवेश और मनोविज्ञान को भी गूँथता है, पर हर लघुकथा अपने सत्त्व के लिए नया स्वरूप, नया बिम्ब गढ़ती हुई आती है। प्रयोग के तौर पर ऐसी भी लघुकथाएँ देखी जा सकती हैं, जिनमें वैसा परंपरित कथानक नहीं है। मसलन अशोक भाटिया की लघुकथा ‘स्त्री कुछ नहीं करती है’ और मेरी लघुकथा ‘अस्तित्व’ में। फिर भी इनमें क्रियात्मकता पूरा बिम्ब बनाती है।

इस प्रायोगिकता की सार्थकता की नाप यही है कि वर्णनात्मक क्रियाशीलता में कोई चरित्र, कोई संदेश, कोई विवशता, कोई विडम्बना कथानक की तरह ही उसे बहन करने में सक्षम हो पाई है या नहीं। कथानक संरचना का संस्कृत में प्रतिमान था और वह नाटक में एक रूढ़ प्रतिमान-आरंभ, यत्न, प्रत्याशा, नियतासि और फलागम। इसमें कथा विकास की सोदैश्य क्रियाशीलता है। दरअसल इसमें भी कथा चक्र की दिशा तो है, पर यह शास्त्रीय प्रतिमान इसलिए काबिज नहीं रहा क्योंकि फलवादी सुखांत के स्थान पर यथार्थवादी और अक्सर विवशताओं का दुखांत जमाने की सोच में प्रतिमान बन गया। तय है कि जो आदर्शवाद हिन्दी लघुकथा की विकास यात्रा में अयोध्याप्रसाद गोयलीय या कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर में था, वह समय सापेक्ष होकर यथार्थ, विडंबना, विसंगति, विवशता, विरोध से गुजरता हुआ कभी तनी हुई मुट्ठियों का कथाचक्र बन गया। या अन्तर्विरोध अंतर्दृढ़ों में पाठकीय स्पर्श बन गया। यह बात इसलिए कहना जरूरी हुआ कि किस तरह से समय, नजरिया और नवोन्मेषी संभावनाएँ शास्त्र का अभिमुखीकरण चाहते हैं, और ओरिएन्टेशन के अभाव में सिर्फ़ पुराने साहित्य तक सिकुड़ कर रह जाते हैं। बावजूद इसके कि वे अपने समय की के सुचिन्तित प्रतिमान थे।

हिन्दी में यह बात आदर्श और यथार्थ की कथा-रचना के द्वंद्व और बदलाव में देखी जा सकती है। पर यथार्थ के बावजूद मन के रसायनों का भावांतरण, सेवेदनात्मक तरलता, स्पर्शिल अंत, यहाँ तक कि प्रचलित शब्द सकारात्मकता भी आदर्श का ही भावतरल द्रवणांक है और बेहतर इन्सानी दुनिया का आंतरिक स्वप्न सर्जक में अंतहीन होता है।

कथानक संरचना के रूप भी बदलते हैं। कभी जो वर्णनात्मक था, वह फ्लैशबैक में प्रयोगी बना। कभी जो घटना प्रधान था, वह फेन्टेंसी शिल्प का कथानक बन गया। कभी जो सीमित काल में लघुकथा के रचाव को लेकर चलता था, वह शरद जोशी की लघुकथा ‘मैं वही भगीरथ हूँ’ में अतीत में छलांग मारकर वर्तमान के क्षण पर मुखर हो गया। कभी चित्रा मुद्रगल की लघुकथा ‘दूध’ में संवादी कथानक रचाकर मुखर हुआ, तो चैतन्य निवेदी की लघुकथा ‘उल्लास’ में वर्णनात्मक शिल्प में भी कथाचक्र रच गया।

क्या वर्णनात्मक शिल्प को नितांत पुराना बासी कहें और संवादी कथानक को प्रयोगशील?

प्रतिमान यही है कि दोनों लघुकथाओं में अपनी तरह की गत्यात्मकता है। अपने शीर्ष संकेत की ओर ले जाने की अपनी राह है। अशोक जैन की 'जिन्दा मैं' तो एकांकी का संवादी दृश्य भर है, और मधुदीप की 'हिस्से का दूध' तो दो दृश्यों का रूपांतर। इससे अलग सुकेश साहनी की लघुकथा है-'आधी दुनिया'। पुरुष के एकतरफा संवाद पत्नी को झिड़कते हुए। लगता है हर संवाद एक दृश्य बुनता है, गज़ल के शेर की तरह। और अंत में आधी दुनिया का दर्द बयाँ कर जाता है पतित्व के अहंकारी अंदाज से। इसलिए कथानक की परंपरित धारणा को तोड़कर भी लघुकथा बड़े यथार्थ को रच सकती है। बल्कि कई लघुकथाओं को एक लघुकथा में बुन सकती है। इस सभी उदाहरणों को सामने रखने का एक ही उद्देश्य है कि संरचना में कथानक के बदलाव को भी अनदेखा न किया जाए। यथार्थ आज का केन्द्रीय विमर्श है, पर यथार्थ भी कथाचक्र में अन्तस्तनावों को, अन्तर्विरोधों को इस तरह बुना गया है जैसे नदी के बहाव में भँवर पड़ते जाते हैं, उलझाते हैं और धीरे से रास्ता निकालकर नदी को फिर बहता कर देते हैं।

हाल में जो अल्प शब्द संख्या वाली लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं, वे एक नकारात्मक संवाद पर एक सकारात्मक संवाद को चर्पा करके एक भावपरक स्पर्श दे जाती हैं और उसी क्षण समाप्त भी। पर जब अन्तर्विरोधों, विसंगत परिदृश्यों, जीवन की कुलबुलाहटों से अँतड़ियों को हिलाते हुए। रचना तभी सावधानिक बनती है, इंटीग्रेटेड होकर जीवंत इकाई। यही रचना की जैविकता भी है और उसके टिकने का प्रतिमान भी? कथानक के सन्दर्भ में इतना कहना औचित्यपूर्ण है कि अंतर्वस्तु के अनुरूप सहज लघु आकार, कथानकीय प्रवाह में अन्तस्तनाव और आकर्षण, लक्ष्य समावेशी संवेदन, परिदृश्य का समानुपाती समावेश, चरित्र या संदेश का तानाबाना और शीर्ष तक हुँचने के शैलीगत-भाषागत प्रयोग जरूरी है। यह तय है कि यथार्थ अपने समय को रचना में इतिहासबद्ध करता है और लोक का संवेदन मूल्यपरकता के विवेक से ही असरदार बनता है।

अभी पुराने समीक्षा तत्त्वों की राह पर चलकर ही बात की जाए। इन्हीं में जो सृजन के स्तर पर बदलाव आया है, उसे रेखांकित करते हुए नये प्रस्थान की बात करना उचित होगा। लघुकथा में पात्र संवेदन की संप्रेषणीयता के कारक हैं और स्वयं उस संवेदन के सम्मूर्त रूप भी। संस्कृत समीक्षा शास्त्र में चार प्रकार के पात्र थे-धीरोदात्त, धीर प्रशांत, धीर ललित और धीरोद्धत। अब ये पात्र संस्कृत नाटकों से ही आए हों तो कालिदास के शाकुंतल और शूद्रक के मृच्छकटिकम् में भी अंतर आ गया। और जब से आधुनिक कथा साहित्य का सृजन हुआ तो जयशंकर प्रसाद की 'गुंडा' कहानी का नायक ही नायकत्व के झँडे गाड़ गया। यानी धीरोद्धत ही धीरोदात्त सा बन गया। और तब से तो कथा साहित्य के पात्रों में जमीनी-आकाशी अंतर आया है। शिखर धूल चाट गये, और किसान-मजदूर, मजलूम झँडा गाड़ गये। श्रेष्ठता के सामाजिक अधिमान वाले सारे पात्र जब कथा साहित्य से झँड़ गये हैं, तो साधारण आदमी के सारे मनोराग, सारी दुर्बलताएँ, सारी शक्तिमत्ता, सारे संघर्ष, सारे सोच, परिवार, समाज और उसकी केन्द्रीयता, उसकी वैयक्तिक सत्ता, अस्मिता और सामाजिक स्वतंत्रता, विवशता और मानवीयता जैसे अनेक अक्स कथा साहित्य में आ गए। कभी उच्च-मध्य-निम्नवर्गीय अवधारणाओं और संघर्ष के साथ, कभी अवचेतन की कुंठाएँ, कभी राजनैतिक-सामाजिक प्रतिरोध, कभी विवश दैन्य की चीख तो कभी संकल्पों की हुंकार। और इन अक्सों के भी कई भीतरी अक्स हैं। और कहना होगा कि ये अक्स, ये संवेदन, ये परिदृश्य, ये

मनोराग, ये अनुभूतियाँ इतने पाश्वों के साथ संजीदा हैं, जिन्हें लघुकथा के कलेक्टर में ही संघनित अभिव्यक्ति मिल सकती है। आखिर सूरज का अपना आकाश है, और जुगनू के लिए रात के अँधेरे के परिदृश्य में क्षणिक मगर रेखांकन योग्य चमक। हिंदी लघुकथा जुगनू की इस चमक में अपने समय के उजले-अँधेरे अक्सों को इन पात्रों के माध्यम से व्यक्त कर रही है। अब इन पात्रों का शास्त्रीय दृष्टि से वर्गीकरण संगत नहीं है, न ही उसकी सार्थकता का सवाल। इतना ही है कि वह पात्र भी कितना स्मरणीय बन जाता है।

ये चरित्र लेखक की तयशुदा मानसिकता के उत्पाद हैं, या किसी वैचारिक हलचल, आदर्श-यथार्थ की टकराहट, परिवर्तन की आकांक्षा, पीढ़ियों के टकराव, यथास्थिति और संवेदनशीलता के द्वंद्व के नये रचाव की सूक्ष्मता युगबोध, नक्काल आधुनिकता पर प्रहार, मुर्दा आस्थाओं का प्रतिकार, किसी सूक्ष्म भाव रसायन की मानवीय अर्थवत्ता या तलस्पर्शी फलसफ़ों से इस तरह सने हों कि लघुकथा के सूक्ष्म आकार में भी चरित्र और कथा एकमेक हो जाएँ। पर इससे लघुकथा की अन्वित प्रभावित न हो कभी-कभी लघुकथा में चरित्र के दो केन्द्र बन जाते हैं। कहैया लाल मिश्र प्रभाकर की 'इंजीनियर की कोठी' में केन्द्र तो इंजीनियर है, पर माली का चरित्र भी उतना ही प्रभावी। इससे चरित्र का केन्द्र स्थिरित होता है। इसके बजाय प्रसाद का 'गूदड़ सार्इ' एक संपूर्ण चरित्र बन जाता है, अविस्मरणीय।

लघुकथा में संवाद सपाटपन, सहजबयानी और वर्णनात्मक ठंडेपन पर प्रहार करते हैं, अपनी जीवंतता, संवेदनीयता और कहन के भीतरी प्रेरकों से। कभी कभी तो लघुकथा का चरमांत कथन अपने में की पूरी ताकत दिखाता है। कभी इनमें प्रहार, कभी छुअनभरी संवेदनीयता, कभी प्रतिकार, कभी दर्शन की गहराई, कहीं प्रतिबोध कहीं व्यथा, कहीं क्रियात्मक संवेग, कहीं भीतरी कुंठा, कहीं मनोवेग, कहीं दोहरापन आदि इसतरह व्यक्त होते हैं कि सारे संवाद चरित्र के आत्मसंघर्ष को नुकीले अंत तक पहुँचा देते हैं। इनमें कहीं गद्यगीतों का मार्मिक गुंफन, कभी व्यंग्य की मार, कभी खुली चुनौती, कभी आत्मव्यथा आदि संवेग रचना की अपेक्षानुरूप बुन दिये जाते हैं। बल्कि ये संवाद खुद ही लघुकथाकार के मानस पर इस तरह छा जाते हैं कि शब्दों में भाव-तरंगें झँकूत हो जाती हैं। भाषा-शैली के तेवर इन लघुकथाओं को संदेश और आस्वाद की दृष्टि से, चेतना और कलात्मक स्थापत्य की दृष्टि से असरदार बनाते हैं। आधुनिक लघुकथाओं में तो बिंब, प्रतीक, सांकेतिकता, मिथक, विरोधी रंगों का संयोजन या कंट्रास्ट, व्यंग्य, आंचलिकता, शब्दलय और अर्थलय, अन्योक्ति, काव्यात्मक स्पर्श, खड़खड़ाते शब्दों की आग, कभी सम्मूर्तन-कभी अमूर्तन, कभी चित्रात्मकता, कभी सांगीतिक प्रभाव कभी संस्मरणात्मक या रेखाचित्रात्मक भाषा, कभी देशी-विदेशी शब्दों की कोडमिक्सिंग से लघुकथा में विन्यास की चालक शक्ति को नियोजित किया जाता है कि लघुकथा का अंत अपने पैनेपन में एक खासतरह की चुभन बन जाता है। पर यह सब रचना की अंतर्वस्तु की प्रेषणीयता पर निर्भर करता है। शब्दों, ध्वनियों, वाक्य योजना के प्रवाह, विराम चिह्नों की सार्थकता या अर्थव्यंजना में सहकारिता, अर्थ की सांकेतिकता आदि का चयन लेखकीय क्षमता का प्रतिमान बन जाता है। फिर शैलीगत प्रयोग तो लघुकथा में निरंतर हो रहे हैं। कथोकथन की शैली से लेकर पंचतंत्रीय शैली तक, संवादात्मक शैली से आत्मकथा या डायरी शैली तक, मिथकीय प्रयोगों से लेकर कालांतरों के परिवर्तन तक।

जहाँ तक परिवेश या कैनवास का सवाल है, लघुकथाकार शब्दों की मितव्यता के साथ परिवेश के नियोजन में भी सार्थक मितव्यता का ही परिचय देता है। प्रकृति का उतना ही अंश जो लघुकथा की मनःस्थिति का पोषक हो। घर-परिवार का उतना ही नाट्य दृश्य, जो रचना के भीतरी तनाव और संदेश का नियोजक हो। एकतरह से सृजन और कतरन एक साथ चलते हैं, सर्जक के भीतर के आलोचक की तरह। बड़ी बात यह कि प्रकृति, जीवन या समाज ये सादृश्य तभी सकारक होते हैं, जब वे लघुकथा की भीतरी जरूरत का अनिवार्य हिस्सा बन जाते हैं। यथार्थ भी, कला भी, परिवेश भी, संवेदना भी, चित्र भी, मनःस्थिति भी। पर बात उस चरमांत की है, जिसे पुरानी भाषा में उद्देश्य कहा जाता है। और ये सारे तत्व, सारे रचाव, सारी यति-गतियाँ, सारे चरम विन्यास, शैलीगत विन्यास इसी पैनी, भाव-संवेदी अर्थवत्ता से जुड़े हैं। लघुकथा की अंतःप्रेरणा से लेकर उसकी व्यंजना तक। सारे कथा-विन्यास का वात्याचक्र, वैचारिक संवेदन का मर्म, माइक्रोस्कोपिक चित्रण का ऊर्जा बिन्दु, व्यंग्य की मार, संघर्ष के चरमान्त की चेतना, संवेदना का तर्क, चुभन का एन्ड्रिय मनस्तात्त्विक उद्गेलन, यथार्थ का साक्षात्कार, जड़ता पर कौंधभरी चेतना, पतनशील मूल्यों से मुठभेड़ करता विवेक, अन्तविर्वाधों की सूक्ष्म पकड़, लेखकीय प्रवेश से रहित उसके आंतरिक मनस्ताप वाला व्यक्तित्व इस उद्देश्य में विशिष्ट छोड़ जाते हैं। गेहूँ की बाली का कद छोटा ही होता है, पर सूखने के बाद उसका नुकोला सिरा कितना चुभनदार होता है। इस चुभन में लघुकथा का अंतरंग जितना छुपा होता है, उतना ही पाठक के भीतर का प्रभावी संवेदन भी।

पर ये छः तत्व तो सीढ़ियाँ हैं, दरवाजे हैं। न जाने कितनी खिड़कियाँ और बातायन हैं, जिनसे कोई कौंध अपनी गमक के सा प्रविष्ट हो जाती है और रचनाकार के भीतरी रसायनों से संश्लिष्ट होकर रूपाकृत हो जाती है। खासकर लघुकथा के लिए इनका कंडेसिंग या संघनन बहुत छोटे आकार में बड़ा संदेश देने की जद्दोजहद करता है। तो भाषिक विन्यास को कितना काटना-पीटना, तराशना, संप्रेषी तत्वों में रचाना एक गहरी तन्मयता और समावेशी कला की मांग करता है। शीर्ष संवेदन की संप्रेषणीयता से सिद्धि के लिए भाषा के तमाम घटक यदि यथार्थ के नुकीले अक्स तक जाएँ, भावतरलता में रूपांतरित करें, ये तर्क से पाठक की चौखट को खटखटाएँ, नये शिल्प के प्रभावक बनें, पुराने शिल्प में नयी संवेदना के संवाहक बनें तो लघुकथा पाठक पूँजी बन जाती है। कोई तर्क, कोई संवेदना, यथार्थ का कोई सिरा तीर की तरह राह चीरता हुआ पाठक तक पहुँच जाएँ और उसके हृदय-मस्तिष्क में ठन्न बजा दे। ये सारी बातें पुरानी भी हैं और बहुत कुछ नयी भी, बल्कि अभिव्यक्ति में प्रयोगी भी। पर कुछ अच्छी लघुकथाओं के आधार पर कहाँगा कि सावयविक अंतर्ग्रथन (organik unity) जरूरी है। बुनावट में यह संवेदन और भाषिक विन्यास की बुनी हुई मित्रता है, उसके नाट्य और विज्युअल रूप में। कई बार इनके भीतर यथार्थ का पठार और गद्यगीत की भावुकता मैत्री करते हुए गड्मडु हो जाते हैं। जो प्रतीक या चरित्र उभरते हैं, वे संपूर्णता में खुद को विकसित नहीं कर पाते। पर मूल संघर्ष और उसकी वांछित परिणति के निर्माणक बन जाते हैं। लेखक पात्रों को अपने तोतारटं संवादों से नहीं लादता, बल्कि नेपथ्य में ही संवेदना का अंग बन जाता है। और इस सब के लिए शिल्प की चालक शक्ति ही कारगर है, बिना किसी नक्काशी के, बिना जड़ाऊ शिल्प के। सार्थकता संवेदनात्मक चरमान्त के साथ पाठकीय प्रवेश में है। इसीलिए बहुत ज्यादा अमूर्तन या सपाटपन से पाठक दरवाजे पर ही ठिक जाएगा। चाहे झनझनाए, तरल कर दे, उदात्त बनाये,

तर्क खड़ा करे, यथार्थ के किसी कोने को शीर्ष बनाए, कभी नयी मर्यादा गढ़े, पुराने को खंडित करे, विरोध की तर्नी हुई मुट्ठी बने, विसंगति के खिलाफ प्रतिपक्ष या प्रतिरोध बने, पर लघुकथा समकाल की वैचारिकी से भरीपूरी हो और रचाव में अन्तस्तंतुओं से इतनी गहरी बुनी हो कि उसके किसी हिस्से को काटना, या बदलना नामुमकिन हो जाए। लघुकथा की वस्तुपरक (objective) पड़ताल के अतिरिक्त एक पक्ष और है मूल्यांकन का। तब नये बिन्दु उमरते हैं – रचना का यथार्थ और जीवन का यथार्थ। कई लोग इनके सीधे तुलना करते हैं, तो कई रचना के यथार्थ को विशिष्ट मानते हैं। इसलिए भी कि रचना में कलात्मक संप्रेषण के साथ रचनाकार की सृजन-भूमि के मनस्तत्व वैचारिकी से संशिलष्ट होते हैं। कई बार कल्पना और कला तत्व उसे स्थूल यथार्थ की अपेक्षा संवेदनीय यथार्थ में इस तरह विन्यस्त कर देते हैं कि जीवन की धड़कन ही विशिष्ट हो जाती है। पर जो मूल्यगत प्रतिमान होते हैं, उन्हें आलोचक विचारधारा, अपनी आलोचना दृष्टि और पूर्वाग्रहों से परखता है, तो विवाद भी होते हैं। देखना तो यह भी चाहिए कि लेखक जिस उद्देश्य को लेकर चला है, वह रचना से संप्रेषित होता है या संदेश और रचना के विन्यास में कोई खोट है। मूल्यगत प्रतिमान सञ्जेक्टिव या विचारधाराओं की प्रतिबद्धता लिए हों तो परिणाम भी वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकते। असल में तीन चरण हो सकते हैं– रचना के भीतर दो-तीन बार अन्तर्यात्रा। रचना की भाषा से रचना का सूक्ष्म विश्लेषण। सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर रचना की मूल्यगत पड़ताल और जीवन सापेक्षता। इससे रचना केन्द्र में रहेगी और मूल्य प्रतिमान रचनापेक्षी।

इस लंबे विमर्श में विमर्शों की भी अपनी भूमिका है, क्योंकि वे समकालीनता का चर्चित पक्ष होते हैं। व्यापक तौर पर ये वैचारिक विवेक के पक्षधर हैं; जो सामाजिक रूप से मानव नियति को समता और बेहतर जीवन तक ले जाते हैं। चाहे जेण्डर समता हो, वर्गीय विषमता का संघर्ष हो, तकनीक और जीवन का पक्ष हो, पर्यावरण ‘और जैविक संतुलन का पक्ष हो। पर इन सबसे साक्षात्कार लेखक की वैचारिकी का हिस्सा है। यह हिस्सा सृजनात्मक बनकर रचना में आए, न कि विचारधारा के साधन के रूप में। विमर्शों से रचना का कथ्य लदा न हो, बल्कि विमर्श पात्रों की चेतना और कथ्य का सहज पक्ष बने। यह भी कि रचनाएँ विमर्श को नये कोण दें, संवेदना के नये अक्स दें और विमर्श इस सृजनात्मकता से अधिक समृद्ध हों।

इतना सब कहने के बावजूद लघुकथा और उसकी समालोचना में ‘इदमित्थम्’ तो नहीं हो पाता। बात तभी सार्थक लगती है, जब रचना के ध्वनि पक्ष से लेकर उसके सारे भाषिक तत्वों से गुजरा जाए। मुक्तिबोध इस रूप में संगत लगते हैं कि रचनाकार भाषा के सिंहद्वार से बाहर आता है। तो आलोचक भाषा के सिंहद्वार से रचना में प्रवेश करता है। पाठक रचना का सहयात्री बन जाए और आलोचक रचना की भाषिक संरचना से ध्वनित संदेश का वस्तुपरक-मूल्यांकन करें।

सम्पर्क : चेन्नई (तमिलनाडु) मो. 9425083335

सूर्यकांत नागर

रचनात्मकता में आए बदलाव ही सृजन की दिशा तय करते हैं

अत्याधुनिक लघुकथा के उदय को साढ़े चार दशक से अधिक समय बीत चुका है। इस बीच काफी पानी बह चुका है। विचार गोष्ठियों, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों में लघुकथा की शक्ति, सीमा, परिभाषा, आकार-प्रकार, भाषा, शिल्प, आलोचना और विधागत मान्यता पर जमकर बहस हुई। अब इन्हें दोहराने का कोई अर्थ नहीं। देखना यह चाहिए कि ऐसे कौन-से बिंदु हैं जिन पर नए सिरे से, अलग ढंग से विचार किया जा सकता है ताकि विधा अधिक सुसंगत, प्रतिष्ठित और मान्य हो। आज लघुकथा की लोकप्रियता असंदिग्ध है। बड़ी पत्रिकाएँ लघुकथाओं को सम्मान छाप रही हैं। पर इसकी स्वीकार्यता के लिए गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। नई ज़मीन तोड़ने और नये आयाम तलाशने की ज़रूरत है। पुराने विषयों को भी भिन्न दृष्टिकोण से देखना होगा। समकालीन यथार्थ के प्रति सजग रहना होगा। घटनाओं के पीछे के छल-छद्म को पहचानना होगा।

इधर बुजुर्ग पीढ़ी के प्रति युवा पीढ़ी की असंवेदनशीलता और हृदयहीनता की ढेरों लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं। इनमें अधिकांश लघुकथाएँ नकारात्मक सोच वाली हैं। नकारात्मकता जीवन में निराशा, छल, स्वार्थ और आत्मकेन्द्रीयता को प्रश्रय देती है। जबकि समकारात्मक सोच जीवन में आशा, उमंग और उत्साह का संचार कर बेहतर ज़िंदगी जीने की प्रेरणा देती है। रचनात्मकता में आए बदलाव ही सृजन की दिशा तय करते हैं। समय का दबाव, उसकी ज़रूरतें और लेखकीय प्रयास ही किसी विधा को आगे बढ़ाते हैं।

भ्रष्टाचार को लेकर अभी भी काफी लघुकथाएँ रची जा रही हैं। इनमें भी घिसे-पिटे विषयों के दोहराव से बचकर नए कथ्य की तलाश करना चाहिए। अनावश्यक बौद्धिक बहसों में उलझने के बजाय कुछ सार्थक किया जाना चाहिए। इस बहस में कि लघुकथा को विधा की मान्यता मिली है या नहीं, समय और शक्ति जाया करने की बजाय ज़रूरी यह है कि श्रेष्ठ, सार्थक प्रभावी लघुकथाएँ लिखी जाएँ। जब विधा को पाठकों ने स्वीकार कर लिया है तो यह लेखक की जानकारी बनती है कि वह पाठक की अपेक्षाओं पर खरा उतरे। पाठक की संतुष्टि महत्वपूर्ण है। रचना के विधान से अधिक महत्वपूर्ण है रचना-संसार। उसी से रचना की पहचान बनती है। वैसे भी रचनात्मकता की कोई नियमावली नहीं होती। हर रचनाकार की अपनी एक विशिष्ट रचना-प्रक्रिया होती है। रचना प्रक्रिया नितांत निजी मामला है। उसे किसी ढाँचे में नहीं बाँधा जा सकता।

आरंभ में नवोन्मेषी साहित्य की ओर स्थापित विधाओं के पैरोकारों ने लघुकथा की ओर ध्यान नहीं दिया ! लम्बे समय तक दूरी बनाए रखी। मुख्य धारा के लेखकों ने इसे प्रतिष्ठा का काम नहीं माना। लेकिन लघुकथा की बढ़ती स्वीकार्यता के महेनजर वे भी अब इस ओर उन्मुख हुए हैं। निश्चित ही इससे लघुकथा को अपनी ताकत दूर तक फैलाने का मौका मिला है।

यह सही है कि समकालीनता के प्रति युवा रचनाकारों का जज्बा बढ़ा है, लेकिन गहरी अंतर्दृष्टि तथा राजनीतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक समझ के अभाव में वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाए। प्रतिबद्धता जरूरी है। प्रतिबद्ध होने के लिए रचनाकार का किसी वाद या राजनीतिक विचारधारा से बँधा होना जरूरी नहीं है। अपने विचार को पूरी ईमानदारी से व्यक्त करने के नैतिक साहस में ही लेखकीय प्रतिबद्धता संशिहित है। प्रतिबद्धता बँटी हुई नहीं हो सकती। एक प्रज्ञावान लेखक को पता होता है कि उसे किसका पक्षधर होना है।

इधर कुछ लेखक अमूर्त, अतिबौद्धिक, कलावादी लघुकथाएँ लिख रहे हैं। ऐसे रचनाकारों और समीक्षकों ने विमर्शों में मनोचिंतन वाली, कथाविहीन, कलावादी कथाओं को श्रेष्ठ, अद्भुत और प्रयोगवादी बताकर यह आभास देने की कोशिश की है कि ऐसी लघुकथाएँ ही श्रेष्ठ हैं। इस सोच से भिन्न सोच रखने वालों को आधुनिक कथा-कहानी की समझ ही नहीं है। लेकिन एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो कहानी में सशक्त कथानक का पक्षधर है। कथा है तो उसमें कथा-तत्त्व, कथा-रस होना चाहिए। रमेश उपाध्याय के अनुसार रचना के अभ्यांतरिक अर्थ को समझना चाहिए और यह अर्थ केवल कथानक से ही समझा जा सकता है। उदू के मशहूर कहानीकार काजी अब्दुल सत्तार ने ऐसी कथाविहीन रचनाओं को आधी-अधूरी, अस्पष्ट और टूटी-फूटी रचनाएँ कहा था। अमूर्त लेखन के बारे में ख्यात आलोचक धनंजय वर्मा ने कहा था कि जब-जब कहानी को अमूर्त बनाकर, उसे अंधों की चीख बनाने की कोशिश की गई, तब-तब वह सौंदर्यशास्त्रियों के हाथों से फिल कर जीवन की बुनियादी सच्चाइयों से जुड़ गई। अमूर्त लेखन हो या कलावादी, उसे समझने वाला एक विशिष्ट, शिक्षित, प्रशिक्षित वर्ग होता है। इसका संबंध 'कलास' से है, 'मास' से नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि सृजन में कला का महत्व नहीं है। कला से ही रचना का सौंदर्य-बोध होता है। अनुभव कितना ही प्रामाणिक हो, अंततः सत्ता तो कला की ही चलती है। जरूरत इस बात की है कि यथार्थ और कला के बीच एक समावेषी, संतुलित और सामंजस्य का भाव होना चाहिए।

लघुकथा के हित संवर्धन के लिए एक सृमद्ध समीक्षा-शास्त्र का होना आवश्यक है। लघुकथा का कोई मान्य आलोचना-शास्त्र विकसित नहीं हो पाया। आज भी लघुकथा का कोई स्वतंत्र गंभीर, पूर्णकालिक आलोचक नहीं हैं। अधिकांश लघुकथाकार ही लघुकथा के समीक्षक हैं। ऐसे में बाहरी, स्वतंत्र मूल्यांकन नहीं हो पाता। लघुकथा के अधकचरे, आत्म-मुग्ध लेखकों का अधिपत्य समाप्त करने के लिए प्रबुद्ध आलोचकों को आगे आना होगा। आलोचना पाठक के लिए ही नहीं, लेखक के लिए भी होती है। आलोचना का सफर तय करती है। प्रायोजित समीक्षा हमें कहीं नहीं ले जाती।

राजनीतिक विचारधारा या वाद से जुड़े होने का तब तक कोई माने नहीं जब तक कि

विचारधारा लेखक के अंतरंग में रच-बस नहीं जाती, उसकी संवेदना का अंग नहीं बनती। विचारधारा को सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करने वाले कथाकारों की लघुकथाएँ विश्वसनीय नहीं हो पातीं। याद आती है बहुत पहले पढ़ी एक लघुकथा जिसमें एक औरत लाल गेहूँ खरीदने और खाने से इसलिए इनकार करती है क्योंकि वह गेहूँ पूँजीपति देश अमेरिका से आया था, जबकि उसके बच्चे दो दिनों से भूख से बिलख रहे थे। इसके विपरीत संवेदना के विस्तार वाली जगदीश अरमानी की लघुकथा ‘कमानीदार चाकू’ जो अनकहे ही बहुत कुछ कह जाती है। साम्प्रदायिक तनाव के बीच एक युवक चाकू लेकर इसे सोच के साथ बाहर निकलता हैं कि रास्ते में दूसरे सम्प्रदाय का कोई व्यक्ति मिल गया तो चाकू से उसकी आँतड़ियाँ हेड़ देगा। तेजी से जाते हुए उसका स्कूटर फिसल जाता है और चोटिल होकर वह सड़क पर गिर पड़ता है। तभी दूसरे सम्प्रदाय के दो प्रौढ़ व्यक्ति दौड़े-दौड़े उसके पास आते हैं और उसे उठाते हैं। उन्हें देख वह युवक तेजी से अपना हाथ जेब में डालता है, पर वहाँ कुछ नहीं था। ‘बेटा, तेरा चाकू, दूसरे आदमी ने कुछ दूर पर गिरे चाकू को उठाकर युवक के हाथ में थमाते हुए कहा। युवक ने दोनों आदमियों की ओर देखा और नजरें चुराकर चाकू पकड़ा और स्कूटर स्टार्ट कर तेजी से चला गया। यह लघुकथा बिना किसी अतिरिक्त विवरण और स्पष्टीकरण के बहुत कुछ कह दती है। पाठक की चेतना को झकझोरती है। एक अच्छी लघुकथा वही जो पाठक का कम से कम लेकर उसे अधिक से अधिक दे।

भ्रष्ट मानसिकता पर प्रहार करती शरद जोशी की व्यंग्य-लघुकथा ‘मैं वही भागीरथ हूँ’ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। इसमें निर्माण कार्य से जुड़े भ्रष्ट लोभी ठेकेदारों की मनोवृत्ति को उजागर किया गया है। एक ठेकेदार को गंगा किनारे खड़े साक्षात् भागीरथ कहते हैं कि वे ही वर्षे पूर्व गंगा को यहाँ लाए थे। उसे लाने के बाद ही उनके पुरखे तर सके। यह सुन ठेकेदार एकदम से कहता है – ‘वाह वाह! कितना बड़ा प्रोजेक्ट रहा होगा। अगर ऐसा प्रोजेक्ट मुझे मिल जाए तो पुरखे तो क्या मेरी तमाम पीढ़ियाँ तर जाएँ।’ भ्रष्टाचार पर इससे तीखा व्यंग्य और क्या हो सकता हैं!

उपर्युक्त तीनों लघुकथाएँ, लघुकथा से की जाने वाली अपेक्षाओं पर खरी उतरती हैं। यह भी कि अभिव्यक्ति-दक्षता और दृष्टि-सम्पन्नता से कैसे सार्थक और प्रभावी लघुकथा रची जा सकती है।

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.) मो. 9893810050

विनय घडंगी राजाराम

कथा अर्थात् आख्यायिका

आख्यायिका या आख्यान के पूरा प्राचीन स्वरूप वेदों में देखने को मिलते हैं, जिनमें पूषा, वरुण, उषा और संध्या के साथ पृथ्वी आदि पर अनेक सुन्दर स्तोत्र रखे गए हैं। ये स्तोत्र न केवल कथात्मक हैं, अपितु उनमें उपमा, रूपक आदि के सुन्दर प्रयोगों की छटा भी दिखाई देती है। उत्तर वैदिक युग के उपनिषदों में तो आख्यानों-उपाख्यानों का भंडार भरा है। प्रत्येक महत्वपूर्ण दार्शनिक विषय की व्याख्या आख्यानों के माध्यम से की गई है, ताकि दुरुह विषय भी अत्यंत सहज, रोचक एवं ग्राह्य बन जाएँ।

छान्दोग्य उपनिषद में बहम विद्या के ज्ञाता उद्दालक एवं उनके पुत्र श्वेतकेतु के मध्य अति रोचक संवादी का वर्णन है। इन संवादों में अत्यंत छोटे प्रश्नोत्तरी वाक्य हैं, जिनके द्वारा उद्दालक ऋषि श्वेतकेतु की जीव एवं आत्मा को समझाने का सरल एवं सफल प्रयास करते हैं।

ऋषि उद्दालक अपने पुत्र से कहते हैं-

“पुत्र! विशाल न्यग्रोध वृक्ष का एक फल लेकर आओ।”

“ले आया तात।”

“इसे तोड़ो।”

“मैंने इसे तोड़ लिया।”

“क्या देखा उसमें?”

“बहुत छोटे-छोटे बीज तात।”

“एक बीज को तोड़ो।”

“मैंने इसे भी तोड़ लिया।”

“अब उसमें क्या देखते हो?”

“कुछ नहीं दिखाई देता है तात।”

“मेरे पुत्र! जो तुम इस बीज में देख नहीं सकते, वही इस वृक्ष का स्वत्व है। उसी स्वत्व में यह विशाल न्यग्रोध वृक्ष विद्यमान है। वह स्वत्व ही आत्मा है, श्वेतकेतु।”

इस रोचक कथा का उदाहरण ‘एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका’ में भी कहानी के उत्स को स्पष्ट करने के उद्देश्य से दिया गया है। यों तो विभिन्न उपनिषदों में अनेक, कथा प्रसंगों के रोचक उदाहरण मिलते हैं, किन्तु यहाँ वृहदारण्यक उपनिषद की सत्यकाम की कथा का उदाहरण अत्यंत उपयुक्त होगा। यह कथा तत्कालीन समाज की सामाजिक व्यवस्था की सत्य को उजागर करती एक सुन्दर कथा है।

सत्यकाम नामक बालक विद्याध्ययन हेतु गुरुकुल पहुँचता है। गुरुकुल में प्रवेश के पूर्व उसके पिता का नाम पूछा जाता है। सत्यकाम अपने पिता से परिचित नहीं था, अतः जानकारी लेने हेतु लौटकर अपनी माता के पास जाता है। सत्यकाम की माता जाबाला सहज ही अपने पुत्र को कहती है कि वे स्वयं वर्षों ऋषियों की सेवा में रत रहीं और अपनी युवावस्था में उन्होंने सत्यकाम को पुत्र रूप में प्राप्त किया, किंतु वे नहीं जानती कि उसके पिता कौन है?

सत्यकाम जब ऋषि आश्रम में माता द्वारा कहे कथ्य को दोहराता है, तब ऋषि गौतम उनके सत्य कथन से प्रसन्न होकर उसे माता जाबाला का नाम देते हैं तथा उपनयन संस्कार कर ज्ञानार्जन का मार्ग बताते हैं। आगे चलकर यही सत्यकाम परम ब्रह्मज्ञानी जाबाली ऋषि के रूप में ख्याति अर्जित करते हैं।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इस कथा को उपनिषद के कुछ अन्य तथ्यों सहित इस कथा से मिलते-जुलते प्रसंगों को अंग्रेज कवि टी.एस. इलियट ने अपनी प्रसिद्ध कविता “द वेस्टलैंड” में स्थान दिया है। ‘द वेस्टलैंड’ इलियट ने उपनिषद के तीन महत्वपूर्ण शब्दों का हू-ब-हू अर्थपूर्ण उपयोग किया है—“दत्त, दयध्वम् तथा दम्यत्”।

उपनिषद में जीव एवं ईश्वर की परिभाषा को स्पष्ट करने के लिए अनेक लघु-कथाओं की सहायता ली गई है। प्रायः सभी उपनिषदों में विविध कथाओं एवं संवादों के माध्यम से जीवात्मा के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुंडकोपनिषद की एक अत्यंत प्रसिद्ध कथा “द्वा-सुपर्णा” के नाम से अनेक स्थनों पर उद्घृत की गई है। एक छोटे से श्लोक की दो पंक्तियों में कही गई यह कथा अत्यंत प्रभावक है।

“द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया/समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वादश्य-/नशनन्त्योऽभि चाक शीति ॥” (मुंडकोपनिषद तृतीयखण्ड प्रथम श्लोक)

कथनानुसार— ईश्वर और जीवात्मा परस्पर मित्रवत दो सुन्दर पक्षियों की तरह संसार-वृक्ष की एक आकर्षक टहनी पर अनादि काल से एक साथ निवास करते हैं। एक पक्षी सुख-दुःखात्मक कर्म-फल को अति स्वादिष्ट समझ कर अनेक प्रकार से उसका उपभोग करता है। दूसरा पक्षी मात्र साक्षी बन कर अपने अभिन्न मित्र को देखा करता है।

सुख-दुःखात्मक फल का उपभोग करने या पक्षी आत्मा है और अभिन्न मित्र परमात्म उसके कर्मफल-उपभोग निरपेक्ष साक्षी हैं।

ऐसे ही केनोपनिषद के एक प्रसंग में अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश इन पाँच तत्वों की महत्ता और प्रभाव को अति सुन्दर प्रश्नोत्तर शैली में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। ये पंचतत्व कितने भी प्रभावशाली बलवान क्यों न हों, परम सत्ता के आगे वे निष्पक्ष ही होते हैं। परम सत्ता अर्थात् ईश्वर के बिना कुछ भी संभव नहीं है। ईश्वर के इसी माहात्म्य को समझाने के लिए उपनिषदकार ने ‘अग्नि’ तथा ‘यक्ष’ (ईश्वर) के वार्तालाप को प्रस्तुत किया है, जो निश्चित ही कथोपकथन युक्त लघुकथा ही है।

यक्ष अग्नि से प्रश्न करते हैं— “तुम कौन हो?”

अग्नि सगर्व उत्तर देते हैं— “मैं जात वेद हूँ— आदि देवता हूँ। जो कुछ इस धरती पर है सबको जला सकता हूँ।”

यक्ष पुनः अग्नि की परीक्षा लेते हुए उससे कुछ दूरी पर एक तिनका रख कर अग्नि से उसको जलाने का आग्रह नितांत असहाय-निरूपाय है, क्योंकि दूर रखे उस तिनके को भस्म नहीं कर सकता।

यह सत्य तथ्य है कि सामर्थ्यवान हो कर भी अग्नि परमात्मा की शक्ति को स्पष्ट करने के लिए भी

कही गई है। समस्त उपनिषद साहित्य अनेक लघु-दृष्टांतों, कथाओं-उपकथाओं से भरा है; जिनके माध्यम से उपनिषदकारों ने “आत्मा-परमात्मा” के सह-अस्तित्व जैसे कठिन विषय को सहजता से स्पष्ट किया है।

मनुष्य की आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है, यह भारतीय चिंतन निश्चित ही वर्तमान समय की अधुनात्मन वैज्ञानिक खोजों से पुष्ट हो चुका है। इस गंभीर विषय को स्पष्ट करती एक आकर्षक ‘वार्तालापी-कथा’ श्वेतकेतु-उद्दालक वार्ता प्रसंग में देखने को मिलता है।

पिता उद्दालक पुत्र श्वेतकेतु को ‘तत्वमसि’ समझ का प्रयास करते हैं किन्तु पुत्र असमंजस में है कि ‘वह’ अर्थात् परमात्मा ‘मैं’ कैसे हो सकता हूँ।

पिता कुछ नमक दे कर पुत्र को किसी छोटे पात्र में पानी भर उस नमक को डालने का कार्य सौंपते हैं। अगले दिन पुत्र उस पानी को पिता के सम्मुख ला कर पुनः अपना प्रश्न दोहराता है—

“मैं वही कैसे हूँ?”

पिता-उसजल को ऊपर से पी कर देखो।

पुत्र-“पीकर देखा। नमकीन है।”

पिता-“बीच में से कुछ जल पी कर देखो।”

पुत्र-“वह भी नमकीन है तात।”

पिता-“अच्छा तो नीचे से जो थोड़ा जल बचा है उसे भी पी कर देखो।”

पुत्र-“वह भी वैसा ही नमक युक्त है।”

पिता-“वैसे ही पुत्र! जैसे थोड़ा सा नमक सारे पानी में एक-सा हो कर पानी बन जाता है; ठीक वैसे ही परमात्मा आत्मा के भीतर उसके अंग-प्रत्यंग में समाहित रहता है।

“तुम वही परमात्मा हो, आत्मतत्त्व हो जिसने तुमको बनाया है। वही सब एक संत है जो तुम्हारे शरीर में सर्वत्र व्यास है।”

उपनिषद काल के उपरांत ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में इस भारत भूमि में शाक्य मुनि गौतम अवतारित हुए और बुद्ध के रूप में विश्व गुरु बने। बुद्ध लगभग 80 वर्षों तक जीवित रहे तथा अपने जीवनकाल में ही असंख्य शिष्यों सह समग्र भारत, भारतीय धर्म एवं भारतीय दर्शन को उन्होंने प्रखर रूप से प्रभावित किया। महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का मानना है कि बुद्ध ने उपनिषदों के मर्ग को समझ कर अपने मत को परिपृष्ट किया था। इसीलिए वे भारत के सनातन धर्म के अवतार पुरुष बन गए। भगवान बुद्ध द्वारा स्थापित धर्म ने ही नहीं, उनके जीवन की कथा ने भी केवल भारतीय उपमहाद्वीप में अपितु संपूर्ण विश्व में सूर्य की किरणों की तरह अपना आलोक फैलाया।

बुद्ध के अनुयाइयों ने उनके अनेक जन्मों की कथाओं का ‘जातक कथा’ के रूप में संकलन किया। इन जातक कथाओं के भीतर भारत में प्रचलित तमाम लोक-कथाओं, धार्मिक आच्यानों एवं किंवदन्तियों का अनुकूलन कर समाहित कर लिया गया। इन कहानियों ने बौद्ध दर्शन को व्यापक लोकोन्मुखी बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया। इन जातक कथाओं की संख्या 500 से भी अधिक

मानी जाती है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृत्तांत में श्रीलंका के ऐसे सजीव चल समारोह की चर्चा की है जिसमें 500 से भी अधिक जातक कथाओं की जीवंत झाँकियाँ प्रदर्शित की गई थीं।

स्पष्ट है कि उस कालखंड तक जातक कथाओं का प्रचार-प्रसार भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक स्तर पर हो चुका था। ये कथाएँ इतनी लोकप्रिय थीं कि इनकी झाँकियाँ सजाते निकाली जाती थीं।

बौद्ध जातक कथाएँ अनेक प्रकार से देशाटन करते हुए मध्य एशिया के रास्ते यूरोप में गई और अनेक कथाएँ लोक-प्रियता की चरम सीमा पर भी पहुँची। एक ग्रीक भाषा की लोकोक्ति है—“ईफ्रोत्तिस इपोबनीदी”, अर्थात् “मूर्ख घुड़सवार” यह संदर्भ मूलतः चुड़बोधि जातक से लिया गया है जिसमें चुरघोधि नामक घुड़सवार यात्री किसी अन्य के द्वारा उसकी पती का हरण कर लेने पर भी कुछ नहीं कहता है। चुपचाप शांत बना रहता है। यह कथा बुद्ध से बुद्ध बनने की कथा है जिसने देशांतर में पहुँच कर लोकोक्ति का रूप ले लिया।

बौद्ध-धर्म से जुड़ी अनेक लोकप्रिय जातक कथाएँ प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी के स्तूप एवं प्रस्तर शिल्पों पर भी उत्कीर्ण हैं। यहाँ दो छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण कथाओं का उदाहरण उपयुक्त होगा।

एक सुन्दर शिल्प साँची-स्तूप के पूर्वी तोरण पर खुदी है जिसमें भगवान बुद्ध नदी के ऊपर पैदल चलकर पार जाते हैं। कथा-प्रसंग के अनुसार श्रावस्ती में अपना प्रवास पूर्ण करके बुद्ध अन्यत्र जाने को उद्यत होते हैं। शिष्य नौका की व्यवस्था करें, इसके पूर्व ही शाक्य मुनि नदी के ऊपर पानी पर पैदल चलने लगते हैं... तब पुरवासी आश्चर्य और श्रद्धा से भर कर उनको ईश्वर का अवतार स्वीकार करते हैं।

गांधार शिल्प में सज्जित एक प्रस्तर-पट्टिका लंदन के म्यूजियम में है। वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक भी है। उस चित्र में धूल में खेलता एक बालक भगवान कुछ के भिक्षा-पात्र में धूल की भिक्षा देता है जिसे भगवान सहर्ष स्वीकार करते हैं। किंवदंती के अनुसार वह बालक ही अगले जन्म में अशोक के रूप में जन्म लेता है। नटखटपन के परिणामस्वरूप प्रारंभिक जीवन में वह अनेक मानसिक-शारीरिक कष्टों को भोगता है और भगवान बुद्ध की भिक्षा स्वीकृति के परिणाम स्वरूप वह चक्रवर्ती सप्राट बन कर बौद्ध धर्म का वैशिक विस्तार करता है।

जातक कथाओं के प्रभाव बाइबिल की कहानियों में भी मिलते हैं, जिनमें एक अति प्रसिद्ध कथा बाइबिल में ‘सोलोमन के जजमेंट’ की है जो मूल रूप से राजा ‘महासोढ़’ के न्यास की कथा के रूप में ‘महाउमंग-जातक’ में वर्णित है। जातक-कथाओं के अतिरिक्त स्वयं बुद्ध के जीवन की कथा ने भी देशांतर की यात्राएँ की और अपने परवर्ती धर्मों को अनेक प्रकार से प्रभावित किया। “बारलाम एंड जोसाफट” नामक 11वीं शती का आर्थोडॉक्स ईसाई ग्रीक धर्मग्रंथ पूरी तरह से बुद्धचरितम का रूपांतरण है। यह कथा संपूर्ण यूरोप में एक लोकप्रिय कथा के रूप में आज भी समादृत है।

ऑक्सफोर्ड के ब्रिटिश विद्वान आर्थर ए मेकडोनेल लिखते हैं, ‘कलिला या दिमा’ नाम से पंचतन्त्र को अनुदित करवाने वाले खलीफा अल मंसूर के दरबार में एक आर्थोडॉक्स’ ईसाई जॉन दमास्कस रहता था, जिसने ग्रीक भाषा में ‘बारलाम एंड जोसाफट’ की रचना की, जो मूलतः बोधिसत्त्व की कथा का ईसाई रूपान्तरण था।

भगवान बुद्ध से जुड़ी जीवन की घटनाओं तथा जातक कथाओं की तरह पंचतंत्र की कहानियों ने भी भारतीय कथा साहित्य को व्यापक रूप से विश्वस्तर पर पहुँचाया है। तृतीय शताब्दी ईस्की पूर्व विष्णु शर्मा रचित पंचतंत्र की कहानियाँ अपनी शैली, शिक्षा तथा प्रतीकात्मक पशु-पात्रों के प्रयोगों के कारण समग्र विश्व में अत्यंत प्रसिद्ध हुईं। प्राचीन ग्रीक कथाकार ईसप की कहानियाँ भी इन्हीं कथाओं में प्रचलित हैं। ईसप ने मोर, सियार, हाथी, बाघ जैसे पशुओं को अपने कहानियों में स्थान दिया जो भारतीय मूल के पशु-पक्षी हैं। ग्रीस में तो वे कभी दिखाई तक नहीं देते। यूरोप के कुछ विद्वान ईसप की कहानियों को पंचतंत्र के पूर्व का मानते अवश्य हैं किंतु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। ईसप की कहानियों का लिखित स्वरूप पर्याप्त बाद का लगभग चतुर्थ शती के आसपास माना जाता है। यों भी पशु-पक्षियों को कथा-पात्रों के रूप में प्रयोग करने की परंपरा भारत में उपनिषद काल से चली आ रही है। छान्दोग्य उपनिषद इस प्रकार की कथाओं का वृहत भंडार है। अधिकांश विद्वानों का यह मानना उचित ही है कि पशु-पक्षियों की पात्र रूप में कही गई कथाओं का मूल देश भारत है क्योंकि भारतीय दर्शन सदा से निसर्ग के साथ समरसता का पोषक रहा है।

भारतीय ज्ञान-संपदा को यूरोप तक पहुँचाने का माध्यम मध्य-एशिया रहा है। पंचतंत्र का प्रथम पहलवी अनुवाद ससानियन राजा खोसरू अनुशीर्वान (531-579 ई.) ने परशिया के भेषज-विज्ञानी बोर्जाई के द्वारा करवाया था। मूल तथा अनुवाद की ये पुस्तकें अनुपलब्ध हैं, किंतु इसी पहलवी अनुवाद से दो अन्य महत्वपूर्ण अनुवाद हुए जो उपलब्ध रहे। एक सीरियाई अनुवाद 570 ई. में कलिलाग एंड दमाग नाम से, और दूसरा अनुवाद अरबी भाषा में हुआ कलिलाह वा दिमाह अथवा फेबल्स ऑफ पिलपई' नाम से। यह अनुवाद में एक गुमराह राजा की कथा है जो 'बिदबाह' या पिलगई नामक ब्राह्मण दार्शनिक के माध्यम से अपने गुणों को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है।

स्पष्ट है कि विद्यापति शब्द पहलवी के रास्ते फारस पहुँचकर विदबाह हो गया, फिर पिलपई बना। विद्यापति संभवतः यहाँ नामवाचक संज्ञा नहीं, गुणवाचक अर्थात् विद्या के स्वामी के रूप में हुआ है।

पंचतन्त्र के इस अरबी अनुवाद ने समग्र यूरोप के मध्युगीन साहित्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे चलकर सीरियाई (1000 ई.) ग्रीक (1180 ई.) फारसी (1130 ई.) स्पेनी (1251 ई.) हिन्दू (1250 ई.) आदि अनेक भाषाओं में तथा उसके पश्चात लगभग सभी योरोपीय भाषाओं में पंचतंत्र के अनुवाद होते रहे।

पंचतंत्र की कथाओं ने जैसे अपने रूप बदल कर यूरोपीय कथाओं का बोल पहन लिया, जैसे कथा में कथा कहने की शैली से सिंदबाद की कथा विकसित हुई काई सोच भी नहीं सकता कि बुद्ध कथा के वैश्विक देशाटन का ही परिणाम है कि शेक्सपीयर के मर्चेण्ट ऑफ वेनिस में जो श्री कास्केट का वैसे ही वह बुद्ध-कथा का ही प्रभाव है लंदन विश्वविद्यालय के पौर्वात्य एवं अफ्रीकी शिक्षण-संस्थान के प्राध्यपक डॉ. डेविड मार्शल लैंग ने अपनी पुस्तक “द विस्डम ऑफ बालाहवर-ए क्रिश्चयन लिजेण्ड ऑफ द बुद्ध” के प्रारंभिक कथन में बुद्ध कथा को मध्ययुगीन ईसाई संसार की सर्वाधिक व्यापक एवं लोक प्रिय कथा के रूप में स्वीकार करते हुए शेक्सपीयर के मर्चेण्ट ऑफ वेनिस’ में इस कथा के समाहित होने को विशेष रूप से रेखांकित किया है। मर्चेण्ट ऑफ वेनिस की पंक्तियाँ हैं-

All that glisters is not gold;
Often have you heard that told;
Many a man his life hath sold
But my outside to be hold
Glided tombs do worms infold”

जैसा कि स्पष्ट है, यह प्रसंग बुद्ध के सांसारिक त्याग तथा चत्वारि आर्य सत्य से प्रभावित है।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में तो भारत को कथा कहानियाँ (Sfolk lore) का उत्स तक स्वीकार किया गया है। सच तो यह है कि भारतीय कथा साहित्य का खजाना जब पश्चिम पहुँचा तो उसकी समृद्धि से साथ यूरोप और मध्य एशिया चकाचौंध से भर उठा। हर देश, हर भाषा उस खजाने से कुछ न कुछ लेखन, अपनी समृद्धि को बढ़ाना चाहते थे।

भारतीय कला साहित्य का स्वर्णिम खजाना पहले तो अपनी चमक बिखेरता रहा, फिर धीरे-धीरे उसकी उजास पर समय की मानसिक हीनतावादी धूल की परत जमती गई। धूल की यह परत इतनी गहरा गई कि हम अपने ही खजाने को पहचानना भूल गए।

आज कथा-साहित्य के वर्तमान स्वरूप को हम सीधे-सीधे आयातित मान कर प्रसन्न हैं, वैसे ही जैसे कोहिनूर हीरे को इंग्लैण्ड के राजमुकुट में देखकर प्रसन्न होते हैं।

इतिहास तो साहित्य का भी होता है, तो फिर इस साहित्यिक इतिहास से छेड़छाड़ के कारण या सत्य से अनभिज्ञता के कारण यदि हम अपनी जड़ों तक नहीं पहुँच पाए हैं तो क्या अब हमारा दायित्व नहीं है कि उसे नए सिरे से हम रेखांकित करें। स्थापित करें! उस पर फिर से फर्क करें।

भारत में आख्यान, आख्यायिका, कथा वार्ता, गाथा, श्रुति, जनश्रुति, किंवदंती, दंतकथा, पुराकथा, लोककथा आदि अनेक नामों से हम वर्तमान में प्रचलित कहानी के अर्थ को प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि प्रत्येक की परिभाषा भिन्न होती है, प्रत्येक का अर्थ भी भिन्न होता है, तब भी इन सभी शब्दों का सामान्यीकृत अर्थ एक ही माना जा सकता है। किसी भी शैली में कहे जाएँ, इनके मूल तत्व कथात्मक अभिव्यक्ति से जुड़े होते हैं। कथन एवं विचारों को स्पष्ट करने के उद्देश्य इनका लक्ष्य होता है।

भारत के ही नहीं, विश्व के आदि-ग्रंथ वेद और उपनिषदों से प्रारंभ भारतीय कथाओं ने विभिन्न रूपों में अपने आप को स्थापित किया है। आज हम चाहे कहानी या उपन्यास की बात कहें, अथवा कथा-लघुकथा को समझने की चेष्टा करें, सर्वत्र कहानी के मूल में हमें भारतीय उद्घम स्पष्ट दिखाई देते हैं।

बीज से महावट बनाने के दृष्टांत को कथा-साहित्य के विकास से जोड़ना बहुत सटीक प्रतीत हो रहा है। क्योंकि, कथा-साहित्य के वर्तमान महावट तो भारत के प्राचीन ग्रंथों में संग्रहित लघु-कथाओं में ही हुए हैं।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9826215072

संस्कृत एवं अन्य भारतीय कथा साहित्य

विश्व साहित्य को संस्कृत कथा साहित्य की जो देन है उस पर विश्व के लगभग सभी विद्वान एकमत हैं। प्रकृति विविध रंगी है और इस विविधरंगी प्रकृति में विस्मय का स्थान बहुत अधिक है। पूर्व में क्षितिज पर सुनहली छटा छिटकाने वाली उषा का दर्शन जैसा आह्वादकारी विस्मय हृदय में उत्पन्न करता है वैसा ही नील मंडल में रजत रश्मियों को बिखेरने वाले और नेत्रों को शीतलता प्रदान करने वाला चंद्रमा भी उत्पन्न करता है। इस प्रकार सूर्य और चन्द्र दोनों ही विस्मयवर्धक हैं। प्रकृति के इस कौतुकमयी चरित्र को चित्रित करने की दृष्टि से भारतीय साहित्य में एक नवीन परंपरा का उदय हुआ जिसे 'कथा' कहा गया।

अभिव्यक्ति के मुख्य रूप से तीन सोपान हैं। आदिम मनुष्य में अभिव्यक्ति सर्वप्रथम आँगिक ही रही होगी। उसके बाद उसने गुफाओं की भित्तियों पर अभिव्यक्त होना प्रारंभ किया। यह दूसरे सोपान की अभिव्यक्ति थी जो कि चित्रात्मक थी। इन्हीं चित्रों से प्रोत्त्रत होकर मनुष्य ने लिपि का आविष्कार किया और स्तर हैं मनुष्य की अभिव्यक्ति ने लिखित शब्दों में प्रकट होना शुरू किया जो कि शनैः-शनैः 'वक्' में उत्तरता चला गया। मैं समझता हूँ कि आदिम काल से वाचिक होने तक दुनिया में कहानी के चार चरण अवश्य रहे हैं— आँगिक, चित्रित, लिखित और वाचिक।

यहीं से प्रत्येक देश में सामान्य कौतुकवर्द्धक कथाओं का उदय भी हुआ और विकास भी। मनुष्य की अभिव्यक्त होने की स्वाभाविक प्रकृति को चरितार्थ करने का यह एक साहित्यिक प्रयास है।

कहावत है कि—वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। लेकिन 'कथा' आह से नहीं उपजी, ऐसा विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है। आदिकालीन मानव को जब पहली बार सुदूर क्षितिज की गोद से सिर को धीरे-धीरे ऊपर लाते अरुण का दर्शन हुआ होगा, तब वह एक साथ विस्मित और आह्वादित अवश्य हुआ होगा। निश्चित रूप से पहली कथा का जन्म आह्वाद और विस्मय के इस योग से हुआ होगा जिसमें पक्षियों के कलरव और पशु-शावकों की उछल-कूद व अन्य अनेक प्राणियों की प्रणय-क्रीड़ाओं आदि का भी योगदान रहा। संध्या समय सूर्य को उसने क्षितिज की गोद में समाते और अमृत बरसाने हेतु चंद्रमा को आकाश के भाल पर आते देखा। इस दृश्य ने उसमें कल्पना और रुचि का संचार किया तथा कथन की भंगिमा का विस्तार भी। यही कारण है कि आज भी कथा का रुचिर और कल्पनायुक्त होना एक आवश्यक गुण बना हुआ है। यहाँ कल्पना से तात्पर्य कथारूप में भावों और विचारों की उस प्रस्तुति से है जो मानव समाज की एकजुटता और उत्थान के लिए आवश्यक समझी जाती है।

'समय, लघुकथा और यह सदी' शीर्षक अपने भूमिकापरक लघु-आलेख में डॉ. गोयनका ने कहा है कि—'साहित्य से अपने जुड़ाव को मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। समाज में, वस्तुतः साहित्य ही वह चीज है जो मनुष्य को 'मानव' बनाए रखने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। किसी काल में 'वाणी' ही साहित्य हुआ करती थी और समूचा साहित्य 'स्मृति' के रूप में पूर्व पीढ़ी से आगामी पीढ़ी तक की यात्रा करता था। कितने समय तक यह चलता रहा, कुछ कहा नहीं जा सकता; लेकिन यह सत्य है कि 'स्मृति'

के रूप में चलते आ रहे अलिखित साहित्य ने अंततः लिखित साहित्य के रूप में प्रकट होना शुरू किया। विज्ञान की उन्नति ने अब इतने उपकरण तैयार कर दिए हैं कि मनुष्य को अपने दिमाग का इस्तेमाल करने की कम-से-कम जरूरत पड़ती है। मसलन, अब किसी को पहाड़े रटने की जरूरत नहीं पड़ती, हर तरह की गणना के लिए कैलकुलेटर उपलब्ध है। कुछ समय पहले लाइन में लगाकर प्राप्त होने वाला टेलीफोन चलन से बाहर हो गया है। मोबाइल ने भी स्वयं को एंड्रॉयड के रूप में विकसित कर लिया है। अब किसी अन्य की तो बात ही क्या, स्वयं अपना भी नंबर किसी को याद नहीं मिलेगा। सब-कुछ उपकरण में दर्ज है। कहने का तात्पर्य यह कि कागज पर लिखित साहित्य धीरे-धीरे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों पर लिखा और बेचा जाने लगा है। वैज्ञानिक उन्नति के नाम पर मनुष्य को उसके दिमाग से, और इस तरह उसकी संवेदनशीलता से अनायास ही दूर करते जा रहे इस 'समय' पर नजर रखने की गहरी जरूरत है।

'समय' साहित्य की दशा और दिशा को निर्धारित करने का बड़ा महत्वपूर्ण घटक है। कहना चाहिए कि 'समय' ही साहित्य को रूपायित करता है। 'समय' के संबंध में एक उल्लेखनीय प्रसंग महाभारत में आया है। भीष्म जी जब शर-शैया पर थे, तब उनसे पूछा गया था कि 'काल' और 'राजा' में कौन किसका निर्धारण करता है? तब भीष्म पितामह ने जवाब दिया था—'राजा' 'काल' का निर्धारण करता है। लेकिन साहित्य की स्थिति, उसका क्षेत्र व दायित्व 'राजा' की स्थिति, उसके क्षेत्र व दायित्व से एकदम भिन्न है। 'साहित्य' का निर्धारण 'राजा' नहीं 'काल' अर्थात् समय करता है।

कथा की उद्भव भूमि के रूप में पहला प्रामाणिक ग्रंथ 'ऋग्वेद' ही सिद्ध होने के कारण संस्कृत साहित्य के साथ कथा का कुछ विशेष संबंध बनता है।

संस्कृत साहित्य में कथाएँ केवल कौतुकमयी प्रवृत्ति को ही चरितार्थ नहीं करतीं बल्कि समाज में नैतिक चरित्र का अवगाहन भी करती हैं। डॉ. बलदेव उपाध्याय ने इसीलिए कथा के उदय को मानव की कौतुकमयी प्रकृति की चरितार्थता कहा है।

परवर्ती साहित्य में कथाओं का उपयोग धार्मिक संप्रदायों ने अपने-अपने सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए किया। आज बौद्ध और जैन संप्रदाय अपने-अपने सिद्धांतों के अनुरूप रची कथा-कहानियों से समृद्ध हैं। मुख्यतः संप्रदायों से जुड़े संन्यासियों के साथ ये कथाएँ विदेशों में पहुँचीं और वहाँ के साहित्य में भी अपनी पैठ इन्होंने बना ली। कथाएँ देश-काल और परिस्थिति के अनुरूप अपने चरित्र में बदलाव लाने की सामर्थ्य रखती हैं। इसलिए पश्चिम के देशों में गई भारतीय कथाओं ने पश्चिमी वातावरण के अनुकूल तथा पूरब के देशों में गई भारतीय कथाओं ने पूरब के वातावरण के अनुकूल अपने आप को ढाल लिया और वहीं जैसे कलेवर में वहाँ के नागरिकों के सामने ऐसे आईं जैसे वे वहीं की उपज हों।

संस्कृत साहित्य में धार्मिक वाड्मय के बाहर केवल अलौकिक प्रयोजन से ही रचित कथा साहित्य के स्वतंत्र ग्रंथों की रचना कब से प्रारंभ हुई होगी, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ईसा की पहली शताब्दी के बहुत पहले से ही संस्कृत में कथा साहित्य का प्रणयन प्रारंभ हो चुका था। तब से लेकर भारतीय इतिहास के मध्यकाल के प्रायः (भारतीय इतिहास का मध्यकाल 600 ई से 1200 ई तक माना गया है)। लगभग सन् 1000 से सन् 1310 तक मुस्लिम प्रभुता और शासन की लहरें कभी कम और कभी अधिक वेग से भारत में लगातार आती रहीं। यहाँ तक कि

चौदहवीं शताब्दी ईस्वी के आरम्भ यानी सन् 1310 से लेकर सन् 1526 ई. तक लगभग सारा भारत मुस्लिम शासन के अधीन हो गया।) अंत तक संस्कृत में कथा साहित्य का सृजन होता रहा। इस दीर्घकालिक परंपरा में अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ।

भारतीय कथा साहित्य : साहित्य के एक महत्वपूर्ण अंग कथा साहित्य का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद के यम-यमीसंवाद, पुरुरवा-उर्वशी संवाद, सरमा और पणि संवाद जैसे लाक्षणिक संवादों, ब्राह्मणों जैसे रूपात्मक आख्यानों, उपनिषदों के सनतकुमार नारद जैसे ब्रह्मर्षियों की भावमूलक आध्यात्मिक व्याख्याओं एवं महाभारत के गंगावतरण, श्रृंग, नहूष, ययाति, शकुंतला, नल आदि जैसे उपाख्यानों में उपलब्ध होता है। (डॉक्टर नेमिचंद्र शास्त्री-हरीभद्र के प्राकृतिक कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन, पृष्ठ 1)

व्यवस्थितरूप से भारतीय कथा साहित्य की सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन पुस्तक ‘पंचतंत्र’ है। विश्व साहित्य पर ‘पंचतंत्र’ का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। ‘पंचतंत्र’ के समान ही ‘हितोपदेश’ की नीति कथाएँ प्रसिद्ध हुईं। लोककथाओं में पैशाची भाषा में लिखित ‘बृहत्कथा’ ने भारतीय साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया। ‘बृहत्कथा’ के तीन संस्कृत रूपांतर उपलब्ध होते हैं—

- 1- बुद्धस्वामी कृत ‘बृहत्कथाशलोकसंग्रह’
- 2- क्षेमेन्द्र कृत ‘बृहत्कथामंजरी’, तथा
- 3- सोमदेव कृत ‘कथासरित्सागर’।

‘वेतालपंचविंशतिका’, ‘सिंहासनद्वात्रिंशिका’, ‘शुकसप्तति’, ‘उपमितिभव-प्रपञ्चकथा’, ‘त्रिषष्ठिशलाकाचरित’, ‘बृहत्कथाकोश’ इत्यादि अनेक कथा ग्रंथों ने भारतीय कथासाहित्य की श्रीवृद्धि की है।

बौद्ध काल में भी जातक कथाओं के रूप में कथा-साहित्य का अच्छा विकास हुआ।

अर्द्धमागधीआगम ग्रंथों में छोटी-बड़ी सभी प्रकार की सहस्रों कथाएँ प्राप्त हैं। प्राकृत आगम साहित्य में धार्मिक आचार, आध्यात्मिक तत्व चिंतन तथा नीति और कर्तव्य का प्रणयन कथा के माध्यम से किया गया है। गूढ़ से गूढ़ विचारों और गहन से गहन अनुभूतियों को सरलतम रूप में जन-जन तक पहुँचाने के लिए तीर्थकरों, गणधरों एवं आचार्यों ने कथाओं का आधार ग्रहण किया है। ‘ज्ञातृधर्मकथा’, ‘उवासगदसा’, ‘आचारांग’ ग्रंथों में रूपक और उपमानों के साथ घटनात्मक कथाएँ भी आई हैं जिनके महत्वपूर्ण उपकरणों से कथाओं का निर्माण विस्तृत रूप में हुआ है। डॉक्टर नेमिचंद्र शास्त्री प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास टीका, निर्युक्ति और भाष्य ग्रंथों में साहित्य का विकास बहुत-कुछ आगे बढ़ा हुआ दिखाई देता है। इनमें ऐतिहासिक, अर्द्ध ऐतिहासिक, धार्मिक, लौकिक आदि कई प्रकार की कथाएँ उपलब्ध हैं।

कथा साहित्य की उत्पत्ति मनुष्य की कौतूहल वृद्धि को संतुष्ट करने के लिए हुई होगी। पर यह कौतुक वृत्ति थोड़ा आगे बढ़ते ही मानव के भाग्य को उसके आचरण को उसके सुख-दुख के स्वरूप को पहचानने की प्रवृत्ति में परिणत हो गई होगी। उसी समय साहित्य का जन्म हुआ होगा। हो सकता है कि कथा आरंभ में कथा मात्र रही हो पर वह कथा साहित्य का युग नहीं रहा होगा वह युग रहा होगा कथा मात्र

का। केवल कथा सुन-सुना कर कौतुक शांत कर देने वाला। परंतु जिस दिन अमानवीय तत्वों की स्थिति अपने यहाँ बनाए रखते हुए भी मनुष्य की दिलचस्पी मनुष्य में बढ़ने लगी होगी और यह संस्कार उगने लगा होगा कि इनका अस्तित्व मानव में सोयी शिथिल भाव या क्रिया तरंगों को जगाह देता है, उसी दिन कथा साहित्य के प्रथम सुप्रभात का आविर्भाव हुआ होगा और उसी दिन कथा साहित्य ने प्रथम किरणें देखी होंगी।' किसी भी साहित्य विधा के मध्य कभी भी स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती—यह तथ्य संस्कृत कथा साहित्य के पक्ष में भी उतना ही सत्य है जितना किसी भी अन्य साहित्य के संबंध में।

भारतीय चिंतन साहित्य और साधना के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण विद्वान हुए हैं। वे न केवल महान गुरु धर्माचार्य रहे बल्कि अद्भुत प्रतिभा और सर्जन क्षमता से सम्पन्न मनीषी रहे। आचार्यों ने साहित्य, दर्शन, योग, व्याकरण, छंद, काव्यशास्त्र आदि को अनेक बार कथाओं के माध्यम से भी संप्रेषित करने का कौशल दिखाया है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास : निस्संदेह संस्कृत साहित्य का महत्व बहुत बड़ा है। इसकी बड़ी उम्र, एक बहुत-बड़े भूखंड पर इसका फैला हुआ होना, इसका परिमाण, इसकी अर्थ-संपत्ति, इसकी रचना-चारूता, संस्कृति के इतिहास की दृष्टि से इसका मूल्य इसे महान, मौलिक और पुरातन साहित्य सिद्ध करते हैं।

संस्कृत साहित्य का अध्ययन ऐतिहासिकों के बड़े काम का है। यह विस्तृत भारतवर्ष के निवासियों के बुद्धिजगत के 3,000 से भी अधिक वर्षों का इतिहास ही नहीं है, प्रत्युत उत्तर में तिब्बत, चीन जापान कोरिया, दक्षिण में लंका, पूर्व में मलाया प्रायद्वीप, और पश्चिम में अफगानिस्तान इत्यादि देशों के बौद्धिक जगत पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव भी पड़ा है।

आधुनिक शताब्दियों में इसने यूरोप पर युग प्रवर्तक प्रभाव डाला है। संस्कृत भारोपीय शाखा की सबसे पुरानी भाषा है। अतएव इसके साहित्य में इस शाखा के स्मारक उपलब्ध होते हैं। धार्मिक विचारों के क्रमिक विकास का जैसा स्पष्ट चित्र उपस्थित करता है वैसा जगत का कोई दूसरा साहित्य के स्मारक नहीं।

साहित्य शब्द के व्यापक से व्यापक अर्थ में महाकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक, गद्य-आख्यायिका, औपदेशिक कथा, लोकप्रिय कथा, विज्ञान ग्रंथ इत्यादि जो कुछ भी आ सकता है वह सब संस्कृत साहित्य में मौजूद है। हमें भारत में राजनीति, आयुर्वेद, फलित ज्योतिष, गणित ज्योतिष, अंकगणित और ज्यामिति का ही बहुत-सा और कुछ पुराना साहित्य मिलता हो, यह बात नहीं है; बल्कि भारत में संगीत, नृत्य, नाटक, जादू, देवविद्या, यहाँ तक कि अलंकार विद्या के भी प्रथक-प्रथक ग्रंथ पाए जाते हैं जो वैज्ञानिक शैली से लिखे गए हैं।

संस्कृत साहित्य व्यापकता के लिए ही नहीं, रचना सौष्ठव के लिए भी प्रसिद्ध है। सूत्र रचना में ये लोग सब जातियों में प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा किए हुए पशु कथाओं, पक्षी कथाओं, अप्सरा कथाओं तथा गद्यमय आख्यायिकाओं के संग्रहण का भूमंडल के साहित्य के इतिहास में बड़ा महत्व है। इसा के जन्म से कई शताब्दीपूर्व भारत में व्याकरण के अध्ययन का प्रचार था और व्याकरण वह विद्या है जिसमें पुरातन काल की कोई जाति भारतीयों की कक्षा में नहीं बैठ सकती। कोश-रचना की विद्या भी भारत में बहुत पुरानी है।

मैकडोनाल्ड ने लिखा है—भारोपीय वंश की केवल भारत निवासिनी शाखा ही ऐसी है जिसने वैदिक धर्म नामक बड़े जातीय धर्म और बौद्ध धर्म नामक एक बड़े सार्वभौम धर्म की रचना की। अन्य शाखाओं ने इस क्षेत्र में मौलिकता न दिखलाकर पहले से एक विदेशी धर्म को अपनाया। इसके अतिरिक्त भारतीयों ने स्वतंत्रता से अनेक दर्शन संप्रदायों को विकसित किया जिनसे उनकी ऊँची चिंतन शक्ति का प्रमाण मिलता है।

संस्कृत साहित्य की एक और विशेषता इसकी मौलिकता है। इसा के पूर्व चतुर्थ शताब्दी में यूनानियों का आक्रमण होने से बहुत पहले आर्य सभ्यता परिपूर्ण हो चुकी थी और बाद में होने वाली विदेशियों की विजयों का इस पर सर्वथा कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

विद्यमान संस्कृत साहित्य परिमाण में यूनान और रोम दोनों के मिलाकर एक किए हुए साहित्य के बराबर है। यदि हम इसमें वे ग्रंथ जिनके नाम समसामयिक या उत्तरवर्ती ग्रंथकारों के दिए हुए उद्धरणों से मालूम होते हैं तथा वे ग्रंथ जो सदा के लिए नष्ट हो चुके हैं इसमें सम्मिलित कर लें तो संस्कृत साहित्य का परिमाण बहुत ही अधिक हो जाएगा।

यूरोप पर संस्कृत-साहित्य का प्रभाव : 18 वीं शताब्दी की अंतिम दशाब्दियों में जब यूरोप निवासी संस्कृत से परिचित हुए तब उसने वहाँ एक नए युग का प्रारंभ कर दिया क्योंकि इसने भारतीय और यूरोपीय दोनों जातियों के इतिहास पूर्व के संबंधों पर आश्वर्यजनक नया प्रकाश डाला। इसने यूरोप में तुलनात्मक भाषा विज्ञान की नींव डाली। तुलनात्मक पौराणिक कथा विद्या में कई परिवर्तन करा दिए। पश्चिमीय विचारों को प्रभावित किया और भारतीय पुरातत्व के अन्वेषण में स्थिर अभिरुचि उत्पन्न की।

यूरोपीय विचारों पर प्रभाव : भारतीय लोगों के सबसे गंभीर और सबसे उत्तम विचार उपनिषदों में देखने को मिलते हैं। दारा शिकोह ने 18वीं शताब्दी के मध्य के आसपास उनका अनुवाद फारसी में करवाया था। उसके बाद 1775 ईस्वी में अंक्रैटिल डुपैरन ने फारसी अनुवाद का अनुवाद लैटिन में किया। शॉपेनहावर ने इसी फारसी अनुवाद के लैटिन अनुवाद को पढ़कर उपनिषदों के तत्व तक पहुँचकर कहा था—उपनिषदों ने मुझे जीवन में सांत्वना दी। यही मुझे मृत्यु में सांत्वना देंगे। शॉपेनहावर के दार्शनिक विचारों पर उपनिषदों का बड़ा प्रभाव पड़ा।

जर्मन और भारतीय विचारों में तो और भी अधिक आश्वर्यजनक समानता है। लेबोल्ड वानश्राडर का कथन है कि भारतीय लोग पुराने काल के रमणीयतावाद (रोमान्टिसिज्म) के विश्वासी हैं, जर्मन लोग आधुनिक काल के। सूक्ष्म चिंतन की ओर झुकाव, प्रकृति देवी की पूजा की ओर मन की प्रवृत्ति, जगत को दुखात्मक समझने का भाव, ऐसी बातें हैं जो जर्मन और भारतीयों में बहुत ही मिलती-जुलती हैं।

कालिदास का ‘अभिज्ञानशाकुंतल’ नाटक यूरोप में बड़े चाव के साथ पढ़ा गया और गेटे ने ‘फास्ट’ की भूमिका उसी ढंग से लिखी।

महायान संप्रदाय के प्रामाणिक ग्रंथ संस्कृत में ही हैं। उनके यूरोपियन भाषाओं के अनुवाद ने यूरोप में बौद्धों को बहुत प्रभावित किया है। उत्तरभारत के बौद्धों के ग्रंथ प्रायः संस्कृत में ही चले आ रहे हैं। इससे सूचित होता है कि बौद्ध लोग तक जीवित भाषा संस्कृत की उन्नति के विरोध में सफल नहीं हो सके।

हवेनसांग स्पष्ट शब्दों में कहता है कि सातवीं शताब्दी में बौद्ध लोग मौखिक वाद-विवाद में संस्कृत का ही व्यवहार करते थे। जैनों ने प्राकृत को बिल्कुल छोड़ तो नहीं दिया था परं वे भी संस्कृत का व्यवहार करने लगे थे। इसका व्यवहार 'शिष्ट' अर्थात् ब्राह्मण ही नहीं, अन्य लोग भी करते थे। पतंजलि ने एक कथा लिखी है जिसमें कोई सारथि किसी वैयाकरण से 'सूत' शब्द की व्युत्पत्ति पर विवाद करता है। लोकवार्ता है कि राजा भोज ने एक लकड़हरे के सिर पर बोझ लदा देखकर पर-दुखकातर हो संस्कृत में पूछा, कि तुम्हें यह बोझ कष्ट तो नहीं पहुँचा रहा? और क्रियापद 'बाधति' का प्रयोग किया। इस पर लकड़हरे ने उत्तर दिया—महाराज! मुझे इस बोझ से उतना कष्ट नहीं हो रहा जितना 'बाधते' के स्थान पर आपके बोले हुए 'बाधति' पद से हो रहा है।

सातवीं शताब्दी में तो बौद्ध और जैन भी संस्कृत बोलने लगे थे। संस्कृत के बारे में कहा जाता है कि मूल रूप में यह ब्राह्मण धर्म की भाषा थी। ब्राह्मण धर्म के प्रसार के साथ इसका भी प्रचार हुआ और जब भारत के अन्य दो बड़े धर्म—जैन और बौद्ध—फैलने लगे, तब कुछ समय के लिए इसका प्रचार रुक गया। कालांतर में जब भारत में उक्त दोनों धर्मों का ह्वास हुआ तब इसने निर्विघ्न फिर से उभरना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे यह सारे भारत वर्ष में फैल गई। अंत में यह एक धर्म, राजनीति और संस्कृति की भाषा बन गई। उसके बाद यह तभी पदच्युत हुई जब मुसलमानों ने हिंदू राष्ट्रीयता को तबाह किया।

कहानियों में सुना जाता है कि भिक्षुओं ने बुद्ध के सामने विचार रखा था कि आप अपनी बोलचाल की भाषा संस्कृत को बना लें। इससे यही परिणाम निकलता है कि संस्कृत बुद्ध के समय में बोलचाल की भाषा थी।

प्रसिद्ध बौद्ध कवि अश्वघोष (ईसा की दूसरी शताब्दी) ने अपने सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए अपने ग्रंथ संस्कृत में लिखे। इससे यह अनुमान करना सुगम है कि संस्कृत प्राकृत की अपेक्षा साधारण जनता को अपनी ओर अधिक खींचती थी तथा संस्कृत ने कुछ समय के लिए खोए हुए अपने पद को पुनः प्राप्त कर लिया था। ईसा की दूसरी शताब्दी के बाद मिलने वाले शिलालेख क्रमशः संस्कृत में अधिक मिल रहे हैं और ईसा की छठी शताब्दी से लेकर केवल जैन शिलालेखों को छोड़कर सारे के सारे शिलालेख संस्कृत में ही मिलते हैं। यह बात तो सभी मानेंगे कि शिलालेख प्रायः उसी भाषा में लिखे जाते हैं जिसे सर्वसाधारण पढ़ और समझ सकते हैं।

कथा की उत्पत्ति : भित्ति-चित्रों से वाक् तक की यात्रा : कथा की उत्पत्ति का संबंध मानव मस्तिष्क के विकास से है। प्रारंभ में जैसा कि कहा और माना जाता है—कहानी का रूप मौखिक रहा। लेकिन बहुत-सी पुरातन गुफाओं की भित्तियों पर बने चित्रों ने इस अवधारणा को चुनौती दे डाली है। दुनियाभर में कितनी ही गुफाएँ खोजी जा चुकी हैं, जिनकी भित्तियों पर आदिकालीन मानवों द्वारा बनाये गये चित्र अपने पूर्व रंग, रूप, आकार में विद्यमान हैं। इनकी आयु 40 हजार वर्ष से लेकर 60-70 हजार वर्ष भी आँकी जाती है। इससे सिद्ध यह होता है कि मनुष्य ने अभिव्यक्त होने की शुरुआत बोलकर नहीं, संकेत-चित्र बनाकर की। भित्तियों पर उसने अपने अनुभव-क्षेत्र के पशुओं, पक्षियों, पेड़-पौधों के चित्र बनाये और यथासम्भव उनमें रंग भी भरे। इन चित्रों को उसने 'अक्षरों' के रूप में प्रोत्तत किया। इस तरह, मानवीय अभिव्यक्ति चित्रों की बजाय शब्दों में व्यक्त होने लगी। इस दृष्टि से देखें, तो 'अक्षर' भी 'संकेत'

चित्र' ही हैं। उन्हें हम वाचिक परम्परा के लिखित संकेत-चिह्न भी कह सकते हैं। इन संकेत चित्रों ने भी देश-काल और परिस्थिति की अनुकूलता के अनुरूप अलग-अलग आकार ग्रहण किया है। यही कारण है कि पुराकाल की अनेक लिपियाँ आज इस खोज का विषय बन गयी हैं कि उनके तात्पर्य क्या हैं?

कथा के आधार-बिन्दु रुचिरता और जिज्ञासा : यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि लिखित ग्रंथों से पूर्व भी लोगों के मनोरंजनार्थ कथाओं का प्रचलन हो चुका था। उस आदिम युग में, मनुष्य ने अभिव्यक्ति के लिए जब अक्षरों व शब्दों का निर्माण कर लिया, तब उसने कुछ स्वानुभूत प्रसंगों को अपने साथियों के बीच कहना भी शुरू किया और अनुभव किया कि उन प्रसगों को सुनने में लोगों की बड़ी रुचि है। इस रुचि को अपनी कहन कला का परिष्कार करके उसने जिज्ञासा में परिवर्द्धित किया। इस तरह रुचिकर होना और जिज्ञासा को बनाए रखना कथा के साथ उसकी उत्पत्ति के समय से ही जुड़े हुए हैं। इसलिए कथा की उत्पत्ति के इतिहास में स्वयं को अभिव्यक्त करने की लालसा और दूसरों की अभिव्यक्ति के प्रति सहदय होने की नैतिकता स्वतः ही छिपी हुई है। आत्म-अभिव्यक्ति, रुचिरता और जिज्ञासा की प्रवृत्ति से संबद्ध होने के कारण कथा, साहित्य की महत्वपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। अपने प्रारंभिक काल में कथन और श्रवण की रुचि से संबद्ध होने के कारण यह आत्म-परितोष और मनोरंजन का माध्यम भी रही ही होगी। लेकिन परवर्ती काल में व्यष्टि और समष्टि की आध्यात्मिक जीवन अनुभूतियों और वस्तुजगत के प्रामाणिक सत्य को शब्द देने के गंभीर और मौलिक दायित्व का निर्माण भी उसे करना पड़ा। बोध, नीति और उपदेश, सुधार और आत्म अन्वेषण की शिक्षा देने के क्रम में युग सत्य की एकांगी अभिव्यक्ति का माध्यम भी उसे बनना पड़ा। निःसंदेह, प्रारंभ में कथा का उद्देश्य केवल 'कहन' ही रहा होगा। कालांतर में 'कहन' के अभिप्राय से हटकर यह नैतिकता और ज्ञान प्रदान करने के क्षेत्र से संबद्ध होने लगी। कुछ जन्तु-कथाएँ नीति और धर्म के उपदेश तथा व्यावहारिक ज्ञान देने के उद्देश्य से कालांतर में रची गईं।

संवेदनशील व्यक्तित्व स्थूल संसार के भीतर कुछ भीतरी आवाजों को सुनते हैं और रचना के रूप में प्रकट आध्यात्मिक संसार की आवाजों और छायाओं को पहचानते हैं। इस प्रकार कथा-चेतना स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतर से परमसूक्ष्म की ओर जाकर फिर से स्थूल की ओर यात्रा करती है। यह एक वृत्त बनता है जो लेखक और आलोचक की मेधा शक्ति से पूर्ण होता है। इन दोनों की मेधा में सामंजस्य के बिना रचना में 'रस' अथवा 'राग' को पहचान पाना असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य रहता है। जिस समय कथासाहित्य का प्रारुद्धर्भा हुआ होगा सामान्यतया उसका स्वरूप मौखिक और आंगिक ही रहा होगा।

अधिकतर कथा आलोचक यह कहते और स्थापित करते पाए जाते हैं कि वैदिककाल से लेकर बाद तक के संस्कृत साहित्य में उपदेश और शिक्षा की कथाएँ ही अधिक मिलती हैं; लेकिन ऋग्वेद आदि ग्रंथों में निहित अनेक संवादों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह स्थापना पूरी तरह सत्य नहीं है। कथा साहित्य के संवर्धन में बौद्ध और जैन संप्रदायों का भी योगदान रहा है। कथा वाङ्मय वैदिक साहित्य से लेकर अब तक संस्कृत साहित्य की प्राणात्मिका शक्ति है।

वैदिक काल से लेकर संपूर्ण वाङ्मय में प्राप्त कथाओं को विद्वानों द्वारा चार भागों में विभाजित

किया जाता है—

- 1- अद्वृत कथा (फेअरी टेल्स)
- 2- लोक कथा (मार्चेन)
- 3- कल्पित कथा (मिथ्स)
- 4- जंतु कथा (फेबुल्स)

इसके अतिरिक्त सूक्ष्म विवेचन के आधार पर कुछ विचारक सम्पूर्ण कथा साहित्य के दो भाग भी मानते हैं—

- 1- नीति कथा—इसके अंतर्गत उपदेशात्मक जंतु कथाएँ भी आ सकती हैं।
- 2- लोक कथा—इसके अंतर्गत समस्त प्रकार की अद्वृत, कल्पित एवं काल्पनिक आदि कथाओं को संग्रहित किया जा सकता है।

लोककथाओं में इतनी बहुरूपता है कि इनका अतिसूक्ष्म विभाजन करना संभव नहीं है किंतु स्थूल रूप से इनका वर्गीकरण दृष्टिकोणों से किया जा सकता है—

- 1- प्रयोजन की दृष्टि से, और
- 2- पात्रों की दृष्टि से

प्रयोजन की दृष्टि से लोककथाओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है—

- 1- नीतिकथा
- 2- मनोरंजन प्रधान कथा, और
- 3- इति वृत्तात्मक अथवा दंतकथा।

पात्रों की दृष्टि से भी कथाओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है—

- 1- जंतु कथा
- 2- मानवीय कथा, तथा
- 3- अति मानवीय कथा।

यद्यपि मनोरंजन का तत्व सभी कथाओं में विद्यमान रहता है तथापि जिनका प्रयोजन मात्र मनोरंजन हो वे मनोरंजन प्रधान कथाएँ कही जाती हैं। जिन कथाओं का उद्देश्य रोचक ढंग से नीति का उपदेश देना हो वे नीतिकथा तथा किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के विषय में कोई इति वृत्त अथवा किंवदंती प्रस्तुत करने वाली कथाओं को इति वृत्तात्मक तथा दंत कथा कहा जाता है।

जंतुकथा के पात्र मुख्यतः पशु-पक्षी ही होते हैं और इनका प्रयोजन भी बोधपरक होता है इसलिए यह नीतिकथाओं के अंतर्गत आती हैं।

मानवीय कथा का मुख्य पात्र मनुष्य ही होता है। ऐसी कथाओं का मुख्य उद्देश्य लोक व्यवहार, नीति अथवा सदाचार का उपदेश देना होता है।

अति मानवीय कथाओं के पात्र मुख्यतः विभिन्न देवता, अप्सराएँ, यक्ष, भूत-पिशाच और बेताल आदि होते हैं। ये कथाएँ श्रोताओं या पाठकों के मन में अपने रहस्यात्मक पक्ष के कारण कुतूहल उत्पन्न करती हैं।

कथा में तथ्य की प्रधानता होती है अथवा कल्पना की? यह प्रश्न सामान्यतः उठाया ही जाता रहा है। इस संबंध में ‘दशरूपक’ के रचनाकार धनंजय की उक्ति है कि ‘उत्पाद्यक विकल्पितं’ अर्थात् कथा का इति वृत्त उत्पाद्य होता है और उत्पाद्य वस्तु कल्पित होती है। जबकि इतिहास का अर्थ इसके विपरीत होता है। ‘इति’—ऐसा, ‘ह’—निश्चित रूप से और ‘आस’—पास हुआ। इस प्रकार इतिहास सत्य घटनाओं को ही उपस्थित करता है। कथा का आविर्भाव आदिम मानव की उस अवस्था में प्रस्फुटित हुआ जब वह ‘शिशु’ था।

लघुकथा के आदि-चरण : इसी तारतम्य में, लघुकथा की बात भी करते हैं। दुनिया में पुस्तक रूप में लिखित पहला दस्तावेज़ ‘वेद’ को माना जाता है। ऋग्वेद में अनेक ऐसे सूक्त मिलते हैं, जिन्हें हम सीधे-सीधे ‘कथा’ कह सकते हैं। इनमें ‘यम-यमी’ संवाद तो सर्वविदित और बहुपटित है ही, उसके अलावा ‘लोपामुद्रा-अगस्त्य’ आदि अनेक पात्रों के परस्पर संवाद भी कथापरक ही हैं। ऋग्वेद में वे क्योंकि केवल ‘सूक्त’ रूप में हैं, इसलिए वेद के बाद वाले ब्राह्मण, उपनिषद और पुराण आदि ग्रंथों में इनमें कल्पना का भी पुट दिया जाकर सूक्त से प्रोत्तर कर इन्हें विस्तृत एवं रोचक कथारूप दिया गया है। कालिदास द्वारा लिखित ‘विक्रमोर्वशीयम्’ उर्वशी और पुरुषों की प्रेमकथा का वैसा ही कथा-विस्तार है। बहुत सम्भव है कि ये तथा अन्य बहुत-सी कथाएँ वेद से पूर्व के काल में सामान्य जन के बीच प्रचलित रही हों। वेद में सूक्त रूप में आकर उनमें से कुछ सुरक्षित हो गयीं; शेष, जो दर्ज नहीं हो सकीं अथवा जो परवर्ती कथाकारों के हाथ चढ़कर विस्तार न पा सकीं, काल-कवलित हो गयीं। यह भी सम्भव है कि पूर्व-वेदकाल में ये कथाएँ उतनी विस्तृत न रही हों, जितनी बाद के समय में मिलती हैं। सामान्यतः कह सकते हैं कि जैसे शनैः-शनैः लुप्त होती जन-कथाओं को ऋग्वेद में ‘सूक्त’ के रूप में सुरक्षित रखा गया था, वैसे ही उन सूक्त-कथाओं का विस्तार भी शनैः-शनैः ही हुआ है। वे एकदम-से महाकाव्य नहीं बन गयीं बल्कि लम्बे कालखण्ड में धीरे-धीरे विकसित और परिवर्द्धित हुई हैं। आख्यायिका से भी पहले सूक्तों के विस्तार का कोई कथारूप अवश्य ही रहा होगा जो कालान्तर में लुप्त हो गया; लेकिन ‘पंचतंत्र’ आदि की कथाओं के रूप में उस रूप की छाया हमारे पास विद्यमान है। उस छाया की प्रतिष्ठवियाँ संसार की लगभग सभी समृद्ध भाषाओं के कथा-साहित्य में हमें मिलती हैं। यह स्वरूप केवल ‘लघुकथा’ का नहीं, समूचे कथा-साहित्य का रहा है। प्रारम्भिक समाजवेत्ताओं की प्रथम चिन्ता और आवश्यकता क्योंकि मानव समाज को एकजुट और नैतिक बनाये रखना थी, इसलिए वही भावभूमि पूर्वकालीन लघुकथाओं की हमें मिलती है।

वैदिक कथा-सूत्रों का रचनात्मक विस्तार सरल कार्य नहीं रहा होगा। इसके अनेक कारण हैं। प्रमुख कारण यह विचार कि वेद में इतिहास कथाएँ नहीं हैं। उनमें नामधारी पात्र प्रतीक मात्र हैं, वास्तविक नहीं। ऐसे में कथा का विस्तार प्रस्तुत करने वाले कथाकारों को वेद समर्थकों का तीक्ष्ण विरोध जब आज भी सहना पड़ता है; तो उन दिनों कितना सहना पड़ा होगा इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। कुल मिलाकर हम यह कहने की स्थिति में हैं कि वेद-काल में कथा-विस्तार एक क्रांतिकारी कदम था।

भारतीय साहित्य का इतिहास दो प्रधान कालों में विभक्त हो सकता है—

1. पाणिनि से पूर्व का अर्थात् वैदिक काल जिसमें वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् और सूत्र ग्रंथ सम्मिलित हैं; तथा

2. पाणिनि के बाद वाला अर्थात् वह काल जिसमें रामायण, महाभारत, पुराण, महाकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य, गद्य, आख्यायिका, लोकप्रिय कहानियाँ, औपदेशिक कथाएँ, नीति, सूक्तियाँ तथा शिक्षा, व्याकरण, आयुर्वेद, राजनीति, ज्योतिष और गणित इत्यादि केन्द्रित वैज्ञानिक साहित्य सम्मिलित है।

विद्वानों के अनुसार, संपूर्ण ऋग्वेद की रचना गद्य में हुई है। यजुर्वेद और ब्राह्मणों में गद्य का अच्छा विकास देखने को मिलता है। उपनिषद तक पहुँचते-पहुँचते गद्य का प्रभाव बहुत मंद पड़ गया क्योंकि उपनिषदों में गद्य अपेक्षाकृत कम देखाजाता है। श्रेण्य (क्लासिक) संस्कृत में तो गद्य प्रायः लुप्त-सा ही दिखाई देता है। संस्कृत साहित्य में गद्य का प्रयोग केवल व्याकरण और दर्शनों में ही किया गया है पर वह भी दुर्बोध और चक्करदार शैली के साथ। साहित्यिक गद्य कल्पनाद्य आख्यायिकाओं सर्वप्रिय कहानियों औपदेशिक कथाओं तथा नाटकों में अवश्य पाया जाता है परन्तु यह गद्य लम्बे-लम्बे समासों से भरा हुआ है और ब्राह्मण ग्रंथों के गद्य से मेल नहीं खाता।

संस्कृत कथासाहित्य को मुख्यतः दो भागों में बाँटकर देखा जाता है—

1. निहित कथा—इसमें उपदेशात्मक जन्तु कथाएँ रखी जाती हैं।
2. लोककथा—इसके अंतर्गत अद्भुत कथा और कल्पित कथा आ जाती है।

ऋग्वेद में संवाद सूक्तों के रूप में कथा के मूल तत्व सूक्त अवस्था में अवश्य पाए जाते हैं। कुछ सूक्तों में मानवेतर जीवों को मानव का प्रतिनिधि बनाया गया है और उनसे वैयक्तिक संपर्क एवं संवाद स्थापित किया गया है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद के मंडल 7 के 103वें सूक्त में वर्षाकालीन में ढकों की ध्वनि की तुलना ब्राह्मणों के वेदपाठ से की गई है। इतना ही नहीं, इन्हें वर्षभर तपस्या करने वाले ब्रसी ब्राह्मण कहा गया है। ऋग्वेद मंडल 10 के 108वें सूक्त में सरमा नामक देवताओं की कुतिया का वार्तालाप पणिगण से कराया गया है। वह उन्हें उपदेश करती है कि वे इन्द्र के आगे समर्पण कर दें। पणि सरमा को मित्र और बहन कहकर पुकारते हैं। इस प्रसंग से अनेक तथ्यों का खुलासा होता है। पहला यह कि दूत-कार्य के लिए वेद-काल में स्त्री की नियुक्ति का चलन देवताओं द्वारा किया जा चुका था। दूसरा यह कि जीव-जन्तुओं के साथ मनुष्यों की आत्मीयता का बीज तब तक पनप चुका था। ‘आत्मीयता’ का यह बीज ही ‘कथा’ का मूल बीज है। सम्पूर्ण कथा इसी से पनपती है।

यास्क ने ‘इत्येतिहासकाः’ कहकर इंद्र-वृत्र युद्ध आदि को कथा का रूप माना है।

ऋग्वेद मंडल 1 के 164वें सूक्त के 20वें छंदमें आत्मा और परमात्मा को सुंदर पंखों वाले साथ-साथ रहने वाले दो मित्रपक्षी बताया गया है जो संसार रूपी इस एक ही वृक्ष पर रहते हैं।

कथा, आख्यान, आख्यायिका, इतिहास और पुराण : कथा और आख्यायिका के मध्य भेद और इनके अर्थ-बोध की उचित संज्ञा का निर्धारण वस्तुतः आज भी नहीं हो पाया है। यद्यपि कथा के विभिन्न वंशजों और जातियों के विभाजन किए गए हैं किंतु उनमें भी वे सफल नहीं हुए हैं।

इनके बीच जितना भी भेद निरूपित किया गया है, वह अपूर्ण, अव्यापक और संकुचित है। प्रायः ‘आख्यायिका’ शब्द का प्रयोग वर्णनात्मक कथा के अर्थ में तथा ‘कथा’ का प्रयोगवार्तालाप, कहानी आदि के अर्थ में किया जाता है; फिर भी इनके बीच विभाजन रेखा खींचना आसान नहीं है।

क्षेमेंद्र के अनुसार, लंबी कहानी को ‘कथा’ और छोटी कहानी को ‘आख्यायिका’ कहते हैं; तथापि

संस्कृत में ‘आख्यायिका’ सामान्यतः अंग्रेजी के एनेकडॉट (किसी बात के बीच में कही गई घटना, किंवदंती, उपकथा) को कहते हैं। वस्तुतः यह स्वतंत्र रचना नहीं होती है। इस प्रकार विचार करें तो ‘आख्यायिका’ को सीधे-सीधे समकालीन लघुकथा के अर्थ में ग्रहण नहीं किया जा सकता। समकालीन लघुकथा अपनी अन्तः प्रकृति में आख्यायिका से सर्वथा भिन्न कथा-रचना है।

‘आख्यान’ शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण (18-10) में शुन-शेष के आख्यान के रूप में मिलता है, जिसे राजसूय यज्ञ में होता सुनाता है। ऐतरेय में आख्यानविदों (3-5-21) का भी उल्लेख है। ये लोग आख्यान सुनाने में दक्ष होते थे। ये लोग प्रायः सौ पर्ण आख्यान सुनाते थे, जिसे ‘शतपथ ब्राह्मण’ में ‘व्याख्यान’ कहा गया है। ‘आख्यायिका’ शब्द का प्रथम उल्लेख तैत्तिरीय आरण्यक में प्राप्त होता है। इतिहास का उल्लेख पुराण के साथ ही उत्तर-वैदिक साहित्य में होता है। पतंजलि आख्यान, आख्यायिका, इतिहास और पुराण इन चारों को पृथक-पृथक मानते हैं। यास्क के मत से इतिहास साहित्य का ही एक भाग है। उनके मत से ऐतिहासिक वे लोग हैं जो वेदों में पुराण-कथाओं का ज्ञान रखते हैं। इस कथन का सीधा-सीधा तात्पर्य यही है कि वेदों में पुराण-कथाएँ गुम्फित रही हैं। ओल्डनवर्ग के मत में, आख्यान गद्य-पद्य का मिश्रण है। जातक-कथाएँ भी इस समय प्रचलित हो चुकी थीं।

संस्कृत कथा के अंतर्गत कल्पित कथाएँ, ऐतिहासिक कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, नीति कथाएँ तथा उपाख्यान आदि अंतर्भूत हैं। इन कथाओं को निम्न भागों में विभक्त करके देखा गया है—

1. जैन कथाएँ : इन कथाओं का उद्देश्य जैन धर्म का प्रचार एवं उत्थान है। जैन कथा ग्रंथों के अतिरिक्त जातक कथाएँ, बोध कथाएँ भी इनमें सम्मिलित हैं।

2. नीति कथाएँ : ये कथाएँ नैतिक अथवा धार्मिक उत्थान के उद्देश्य से कही गई हैं। ये मुख्यतः मौखिक ही प्रचलित थीं। इनका प्रसार केवल संस्कृत में ही नहीं बल्कि सभी लोकप्रिय भाषाओं और बोलियों में है।

3. मनोरंजनात्मक कथाएँ : इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन था। ये कथाएँ पहले प्राकृत में लिखी जाती थीं, कालांतर में संस्कृत में लिखी जाने लगीं। वृहत्कथा, वैतालपञ्चविंशतिः, वृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर आदि इनके उदाहरण हैं।

संस्कृत कथा साहित्य की विवेचनार्थ ऋग्वेद के संवाद सूक्तों, ब्राह्मण ग्रंथों के अंतर्गत विभिन्न कथाओं, पौराणिक आख्यानों-उपाख्यानों, उपनिषदों के आख्यानों, महाभारत के आख्यानों-उपाख्यानों, जातक कथाओं से लेकर स्वतंत्र रचनाओं केरूप में उपलब्ध पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर, वैतालपञ्चविंशतिः, शुकसंस्तिः, सिंहासनद्वात्रिंशिका को अध्ययन का विषय बनाया गया है। संस्कृत कथासाहित्य अत्यंत विस्तृत एवं समृद्ध है। इसने विश्व के समस्त देशों के साहित्य को प्रभावित किया है। साहित्यिक विधा के रूप में कथा की स्थापना कब से मानी जाए, यह कभी निश्चित किया जा सकेगा, इसमें संदेह है; परंतु कथा साहित्य का उद्भव ‘ऋग्वेद’ को माना जाता है, यह निर्विवाद है।

ब्राह्मण एवं उपनिषद ग्रंथों में कथाएँ : ब्राह्मण ग्रंथों में ये कथाएँ अपने विस्तृत रूप में प्राप्त होती हैं। ऐतरेय ब्राह्मण (7-13) में कथा के साथ उपदेशात्मक पद्यों का भी समावेश है।

उपनिषदों में जन्म-कथाएँ और भी विकसित रूप में हैं। छांदोग्य उपनिषद में एक व्यंग्य कथा में

भोजन के लिए कुत्ते अपना एक नेता चुनते हैं (छान्दोग्य 1-12-2)। उसी में दो हंसों के वार्तालाप से रैक्त का ध्यान आकृष्ट होता है (छान्दोग्य 4-1)। छान्दोग्य में ही ज्वाला के पुत्र सत्यकाम को बैल, हंस और मृदग्र (एक जलचर पक्षी) ब्रह्मविद्या का उपदेश देते हैं (छान्दोग्य 4-5,7,8)। महाभारत में जन्तु-कथाएँ और भी विकसित रूप में मिलती हैं। इसके शांतिपर्व तथा अन्य पर्वों में भी पंचतंत्र के लिए उपयोगी प्रचुर सामग्री मिलती है। इसमें सोने के अंडे देने वाली चिड़िया की कथा, धार्मिक बिल्ली की कथा, चतुर शृंगाल आदि की कथाएँ हैं।

लेखन में काव्य का बाहुल्य : चिंतामणि विनायक वैद्य ने 'भागवत पुराण' का काल निश्चित करते हुए कहा है कि यह शंकर (9वीं शताब्दी) के पश्चात् और गीत गोविंद के रचयिता जयदेव (1164 ई.) से पहले की रचना है; अर्थात् बहुत करके 10वीं शताब्दी में बना है। इसका अनुवाद भारत की प्रायः सभी भाषाओं में हो चुका है।

भास ईसा की दूसरी शताब्दी से पहले ही जीवित रहे होंगे। पंडित गणपति शास्त्री ने भास कोई सा पूर्व चौथी शताब्दी का माना है। उनके 13 नाटक मिलते हैं। इनमें दो (प्रतिज्ञायौगंधरायण व स्वप्नवासवदत्तम्) उदयन की कथा वाले; उर्भग्नम्, बालचरित, दूतघटोत्कच, दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, मध्यमव्यायोगतथा पंचरात्रमहाभारत की कथाओं पर आश्रितःयज्ञफलम् (अथवा यज्ञनाटकम्), अभिषेक नाटक तथा प्रतिमा नाटक रामायण पर अवलंबित एवं अविमारक और चारुदत्त कल्पनामूलक हैं।

संस्कृत का बहुत बड़े कवि अश्वघोष बौद्ध भिक्षु और महायान मत को मानने वाले थे। वह कनिष्ठ (ईसा की प्रथम शताब्दी) के समसामयिक अथवा गुरु थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के कई पालि ग्रंथों पर संस्कृत टीकाएँ लिखी हैं। उन्हें साकेत का निवासी बताया गया है। इनके महाकाव्य 'बुद्धचरित' का (414-421 ई. में) अनुवाद हो चुका था। 'बुद्धचरित' में प्रेमकथा के दृश्य, नीतिशास्त्र सिद्धांत और सांग्रामिक घटनाओं का वर्णन भी है। कमनीय कामीनियों की केलियाँ, पुरोहित का सिद्धार्थ को उपदेश, सिद्धार्थ का मकरध्वज के साथ संग्राम—ये सब दृश्य रमणीय शैली में अंकित किए गए हैं। इसमें उपनिषदों, भगवत् गीता, महाभारत और रामायण के उल्लेख भी देखने को मिलते हैं।

'वज्रसूचि' अश्वघोष का अनुपम ग्रंथ है। इस ग्रंथ में ब्राह्मणों के चातुर्यवर्ण सिद्धांत का खंडन किया गया है। यह एक पठनीय एवं संग्रहणीय कृति है।

लगभग 550 ई के आसपास हुए भारवि की रचना 'किरातार्जुनीय' का विषय महाभारत के वनपर्व से लिया गया है। लेकिन उसमें अपनी ओर से कुछ नवीनताएँ भी पैदा कर दी हैं।

लगभग 600 ई में भट्टि हुए हैं जिनका 'रावण वध' महाकाव्य सुप्रसिद्ध है। 650 से 700 ईस्वी के मध्य माघ लिखित 'शिशुपाल वध' प्रसिद्ध है। महाभारत की इस कहानी में माघ ने अनेक सुंदर सुधार किए हैं। सन् 850 ई के लगभग रत्नाकर ने 'हरविजय' लिखा। 1150 से 1200 के मध्य श्रीहर्ष का 'नैषधीय चरित' महाकाव्य की परंपरा में अंतिम कहा जाता है। इसमें दमयंती के साथ नल के विवाह की कथा है। जनश्रुति है कि श्री हर्ष मम्मट का भान्जा अथवा रिश्ते में भाई था।

लघुकथा और प्रबन्ध काव्य : समयानुरूप लघुकथा ने अपने आप को किस प्रकार प्रबन्ध काव्यों में भी जीवित रखा इस तथ्य के अनेक उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, हाल अथवा सातवाहन द्वारा

लिखित 'सतसई' महाराष्ट्री प्राकृत का प्रबंध काव्य है। इसमें विभिन्न श्रेणियों के स्त्री-पुरुषों के मनोरंजक तथा विस्मयोत्पादक वर्णन हैं। मसलन, एक प्रोषित पतिका चन्द्रमा से प्रार्थना करती है कि तूने जिन किरणों से मेरे जीवन-वल्लभ का स्पर्श किया है उन्हीं से मेरा भी कर। एक प्रवत्स्यद्वर्तुका चाहती है कि सदा रात ही बनी रहे, दिन कभी न निकले क्योंकि प्रभात काल में उसका जीवन-नाथ विदेश जाने को तैयार है। कोई तृष्णातुरु पथिक किसी उद्यत यौवना कन्या को पानी भरती हुई देखकर उससे पानी पिलाने को कहता है और उसके सुंदर वदन को देर तक देखते रहने का अवसर पाने के लिए अपने चुल्लू में से पानी गिरने लगता है। जो इच्छा पति के मन में थी, उसी इच्छा से पानी पिलाने वाली भी उसके चुल्लू में पतली धार से पानी ढालना शुरू करती है। नीति संबंधी उक्तियों के उदाहरण भी इसमें हैं। कृपण को अपना धन उतना ही उपयोगी है जितना पथिक को अपनी छाया। जगत में बहरे और अंधे ही धन्य हैं क्योंकि बहरे कटु शब्द सुनने से और अंधे कुरूप को देखने से बचे हुए हैं। कहीं-कहीं नाटकीय परिस्थितियाँ भी मिलती हैं। एक कुशलमति स्त्री बहाना करती है कि मुझे बिछू ने काट लिया है। इस बहाने का कारण केवल यह है कि इसके द्वारा उसे उस वैद्य के घर जाने का अवसर मिल जाएगा जिसके साथ उसका प्रेम है।

ईसा की सातवीं शताब्दी में अमरु नामक कवि का 'अमरु-शतक' मिलता है जिसमें 90 से लेकर 115 तक श्लोक हैं। इसके टीकाकार रविचंद्र ने पदों की वेदांत पर व्याख्या की है। आमोद-प्रमोद ही इनका विषय हैं। छोटी सी कली के पश्चात् मुस्कुराते हुए प्राणियों को देखकर वह बड़ा प्रसन्न होता है। देखिए, प्राणों को गुदगुदा देने वाली एक कथा को कवि ने किस कौशल से संक्षेप में एक ही श्लोक में व्यक्त कर दिया है, जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न प्रकार है—

प्रिये!

स्वामिन्!

मानिनि! मान छोड़ दे।

मान करके मैंने आपकी क्या हानि की है?

हृदय में खेद उत्पन्न कर दिया है।

हाँ, आप तो कभी मेरा कोई अपराध करते ही नहीं! सारे अपराध मुझमें ही हैं।

तब फिर गद्गद कंठ से रोती क्यों हो?

किसके सामने रोती हूँ?

यह मेरे सामने रो रही हो या नहीं?

तुम्हारी क्या लगती हूँ?

प्यारी।

प्यारी नहीं हूँ, इसीलिए तो रोना आ रहा है।

यह एक अद्भुत लघुकथा है। परस्पर प्रेम और उलाहने-मनाने का ऐसा कथात्मक संयोग आज भी दुलभ है। संस्कृत साहित्य में औपदेशिक काव्य के अनेक होने के प्रमाण मिलते हैं। इसके प्राचीनतम चिह्न ऋग्वेद में पाए जाते हैं। उसके पश्चात् ऐतरेय ब्राह्मण में शुनःशेष के उपाख्यान में इसके अनेक उदाहरण

उपलब्ध होते हैं। उपनिषदों में सूत्रग्रंथों में मनु आदि राजधर्म शास्त्रों में और महाभारत में नीति के अनेक वचन मिलते हैं। पंचतंत्र और हितोपदेश तो ऐसे नीति वचनों से भरे हुए हैं। बिल्ली, चूहे, गधे, शेर आदि मानवेतर जन्तुओं के मुँह से कहे जाने के बाबजूद वे बड़े स्वाभाविक प्रतीत होते हैं।

ईसा की 11वीं शताब्दी (1088ई) में विलहण का 'विक्रमांकदेव चरित' सामने आता है और 12वीं शताब्दी (1149-50) में कलहण का 'राजतरंगिणी'। हर अवसर पर उपमाओं का प्रयोग करने में कलहण सिद्धहस्त हैं। इसके लिए उन्होंने पर्वत, नदी, सूर्य और चंद्रमा से अधिक काम लिया है। इनकी भाषा में एक असामान्य चमत्कार है। राज्य के चाटुकारों के संबंध में लिखते हुए कहते हैं—‘जो शठता और मूर्खता के निधान हैं वही राजाओं को खुश रखने वाले हैं।’ ‘राज तरंगिणी’ को पूरा करने का काम उनके जिन शिष्यों ने जारी रखा उनमें जोगराज (निधन 1456ई) का, जोगराज के एक शिष्य शिवर का और शिवर के शिष्य शुक का नाम लिया जाता है। इन्होंने ‘राजतरंगिणी’ की कथा को कश्मीर को अकबर द्वारा अपने राज्य में मिलाए जाने तक आगे बढ़ाया।

1163ई के आसपास जैन मुनि हेमचंद्र द्वारा लिखित ‘कुमारपालचरित’ में 20 सर्ग संस्कृत में और कुल 28 सर्ग प्राकृत में हैं।

आख्यायिका, कथा और चरित काव्य

दण्डी गद्य के दो भेद करते हैं—आख्यायिका और कथा।

आख्यायिका—उनके अनुसार, आख्यायिका वह है जो नायक द्वारा कही जाये। कथा वह है जो नायक या अन्य द्वारा कही जाये। इस नियम का भी सर्वत्र पालन नहीं होता और अन्य भी आख्यायिका कह सकता है।

भामह ने प्रकृत अनुकूल अन्य शब्दार्थ वाले पदों से युक्त गद्य में लिखी गयी कथा को आख्यायिका कहा है, पर उसमें अपना वृत्तनायक स्वयं कहे। उसमें कवि का अभिप्रायकृत कथानक भी हो, कन्यापहरण, संग्राम, विप्रलम्भ और अभ्युदय से सहित हो।

कथा—कथा का लक्षण भामह के अनुसार यह है कि उसमें संस्कृत हो, सुसंस्कृत चेष्टाएँ हों, गौण रूप से अपभ्रंश कथा हो।

आख्यान की अन्य जातियाँ भी इसी के अन्तर्गत हैं। कन्यापहरण आदि इसमें भी होते हैं। रुद्रट के अनुसार कथा की परिभाषा यह होगी—श्लोकों में पहले इष्टदेव गुरु को नमस्कार करके, संक्षेप में कुल परिचय कहकर सरल गद्य में कथावस्तु की रचना करे। वर्णन भी हो, फिर उसमें कथोत्तर भी हो। यह संस्कृत में करें या अगद्य (पद्य) में भी करें। इन तीन कथनों से कथा की परिभाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य प्रकट होते हैं—

1- भामह दण्डी का मत एक है। भेद केवल इतना है कि दण्डी आख्यायिका का विधान कथा में भी लगाना चाहते हैं।

2- भामह अपभ्रंश में कथा मानते हैं पर गद्य में लिखी अपभ्रंश कथा एक भी नहीं मिली।

3- उद्धट ने यही बात ध्यान में रखकर दूसरी भाषाओं में गद्य का नियम हटा दिया।

4- रुद्रट की परिभाषा संस्कृत और प्राकृत अपभ्रंश कथाओं को ध्यान में रखकर बनायी गयी है।

5- चरित-काव्य के लक्षण के विषय में सभी मौन हैं लेकिन 'बाण हाचरित' को आख्यायिका कहते हैं और कादम्बरी को कथा। इसलिए चरित और आख्यायिका में स्वरूप और विधान की दृष्टि से भेद नहीं जान पड़ता है।

6- हर्षचरित में समकालीन ऐतिहासिक राजा हर्ष का जीवन कथावस्तु बनता है। अपभ्रंश चरित्रकाव्यों में ऐसा एक भी उदाहरण अभी तक देखने में नहीं आया। सबकी कथावस्तु पौराणिक है; अतः पौराणिक कथावस्तु पर आधारित कथा भी चरित्र कहला सकती है। सम्भव है इन्हीं से बाण को 'हर्षचरित्र' नाम सूझा हो।

अपभ्रंश लेखक चरित और कथा में भेद नहीं करते। वास्तविक भेद है भी नहीं। दण्डी का 'दशकुमारचरित' भी इसका प्रमाण है। तुलसीदास अपनी रचना को 'रामचरित' भी कहते हैं और 'रामकथा' भी। कालिदास का रघुवंश भी चरित्र-काव्य ही है। वंश उसकी पौराणिकता को साफ बता रहा है। इतनी विवेचन का निष्कर्ष यही है कि कथा, आख्यायिका और चरित के बीच स्थायी भेदक रेखा खींचना असम्भव है। थोड़ा-बहुत अन्तर होते हुए भी वह कथा-साहित्य ही है। विषय को लेकर कथा साहित्य के भेद किये जाते हैं। जैसे धर्मकथा, काव्यकथा, लोककथा आदि। (डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, अपभ्रंश भाषा और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता-27, प्र सं 1966, प्रकीर्णक, पृष्ठ 317।)

हेमचन्द्र की दृष्टि में कथाकाव्य एवं रासक

हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन में काव्य के पाँच भेद किये हैं—

- 1- महाकाव्य,
- 2- आख्यायिका,
- 3- कथा,
- 4- चम्पू और
- 5- अनिबद्ध ।

वह गद्य और पद्य के आधार पर काव्य का विभाजन नहीं करते। वह संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश महाकाव्य के अतिरिक्त, ग्राम्य भाषा के महाकाव्यों का भी उल्लेख करते हैं। ऐसे एक 'भीमकाव्य' का नाम भी उन्होंने दिया है। इस ग्राम्य भाषा को उन्होंने 'ग्राम्य अपभ्रंश' कहा है। निश्चय ही यह अपभ्रंशेतर नयी भाषा का काव्य रहा होगा।

कथा और आख्यायिका - मत-मतान्तर : बाणभट्ट की तरह, हेमचन्द्र भी कथा और आख्यायिका में भेद स्वीकार करते हैं। परन्तु उनकी मान्यता में अन्तर है। बाणभट्ट के मत में कल्पित कहानी कथा है और ऐतिहासिक आधार पर चलने वाली कथा आख्यायिका है। जैसे कादम्बरी और हर्षचरित। हेमचन्द्र के अनुसार, आख्यायिका वह है जो संस्कृत गद्य में हो, यात्रावृत्त हो, नायक स्वयं वक्ता हो, और उच्छ्वासों में लिखी हो। कथा वह है जो किसी भी भाषा में लिखी जा सकती है, उसके लिए गद्य-पद्य का बन्धन नहीं है। इस प्रकार हेमचन्द्र ने बाणभट्ट के गद्य-बन्धन को हटाकर कथाको इतनी व्यापकता दे दी कि उसमें सभी कथा-काव्य रूप समा गये। गद्य कथा का उदाहरण कादम्बरी है और पद्य कथा का 'लीलावई कहा'। अपभ्रंश 'चरित' काव्य भी इसीके अन्तर्गत आते हैं। हेमचन्द्र को 'गद्य' का नियम इसलिए हटाना पड़ा,

क्योंकि अपभ्रंश में गद्य का अभाव था। कथा के सिवाय, उन्होंने और भी उपभेद किये हैं, जैसे—

1- आख्यान—आख्यान प्रबन्ध काव्य के बीच आनेवाला वह भाग है जो गेय और अभिनेय होता है। दूसरे पात्र के बोध के लिए इसका प्रयोग होता है, जैसे नलोपाख्यान।

2- निर्दर्शन—पशु-पक्षियों के माध्यम से अच्छे-बुरे का बोध देनेवाली कथा का निर्दर्शन है—पंचतन्त्र।

3- प्रवल्लिका—प्रवल्लिका में एक विषय पर विवाद होता है।

4- मतल्लिका—पैशाची और महाराष्ट्री भाषा में लिखी गयी लघुकथा मतल्लिका है। इसमें पुरोहित, ममात्य और तापस का मजाक उड़ाया जाता है।

5- मणिकुल्या—मणिकुल्यावस्तुका उद्घाटन करती है।

6- परिकथा—पुरुषार्थसिद्धि के लिए कही गयी वर्णनात्मक कथा परिकथा है।

7- खण्डकथा—इतिवृत्त के खण्ड पर आधारित कथा खण्डकथा है।

8- सकलकथा—समस्त फलवाली कथा सकलकथा है। और,

9- उपकथा—एक कथापर चलनेवाली कथा उपकथा कहलाती है।

‘रासक’ के उन्होंने तीन भेद किये हैं—कोमल, उद्धृत और मिश्र। इस पर से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का अनुमान है कि पृथ्वीराज रासो चरित-काव्य तो है ही, वह रासो या रासक काव्य भी है। वह सन्देश रासक को भी गेय मानते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि रासक काव्य गेय थे। पर छन्दों की विविधता के कारण इन्हें गेय मानने में थोड़ी अड़चन है। उपदेश रसायन रास में यह बात नहीं है।

इस प्रकार वेद से लेकर परवर्ती काल तक कथा के विभिन्न भेदों का परिचय हम इस अध्याय में पाते हैं। (शीघ्र प्रकाश्य आलोचना पुस्तक से एक अंश)

सन्दर्भित ग्रंथ :

1- हंसराज अग्रवाल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रकाशक : राजहंस प्रकाशन, सदर बाजार, दिल्ली; तीसरा संस्करण : 1950

2- (देवराज उपाध्याय, कथा साहित्य में मेरी मान्यताएँ, वृष्ट 17-18); संदर्भ : हिमांशु द्विवेदी (श्रीमती), शुक्रसंसाति : एक आलोचनात्मक अध्ययन (डी. फिल. उपाधि हेतु शोध प्रबंध), संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2003

3- विंटरनिट्स कृत भारतीय साहित्य का इतिहास (इंग्लिश) प्रथम भाग से

4- डॉ. ए. बी. कौथ; संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. मंलदेव शास्त्री (अनुवादक); प्रकाशक : मोतीलाल बनारसीदास मुख्य कार्यालय बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7, द्वितीय संस्करण 1967

5- हिमांशु द्विवेदी (श्रीमती), शुक्रसंसाति : एक आलोचनात्मक अध्ययन (डी. फिल. उपाधि हेतु शोध प्रबंध), संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2003

6- एस. के. डे, बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ऑर्गेन्झल स्टडीज़। स्रोत : डॉ. मोहम्मद शरीफ : संस्कृत कथा-साहित्य : एक अध्ययन

7- डॉ. मोहम्मद शरीफ; संस्कृत कथा साहित्य : एक अध्ययन; इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी. लिट. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध, सन् 1993

8- अल्लामा अब्दुल्ला युसुफ अली, मध्यकालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था, हिन्दुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रदेश, प्रयाग, 1929

9- डॉ. कमल किशोर गोयनका, लघुकथा का समय, दिशा प्रकाशन, दिल्ली-35; वर्ष 2016

10- डॉ. नेमिचंद्र शास्त्री : प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, तारा पब्लिकेशंस, कमच्छ, वाराणसी, 1966

संपर्क : दिल्ली, मो. 8826499115

अंतरा करवड़े

नयी सदी की लघुकथा

वर्तमान समय में लघुकथा का प्रयोजन या नयी सदी की लघुकथा, यह विषय अपने आप में ही एक ताज़ा हवा के झोंके के समान है। नयापन चाहे जैसा भी हो, खुशनुमा होता है, साथ ही उसमें जुड़ा होता है एक सौंधा सा कच्चापन, पता नहीं कितना, कैसे और कब तक ये नया साथ निभेगा जैसे सवाल मन में स्वाभाविक रूप से उठते हैं।

लेकिन लघुकथा, एक उदार विधा है, यह सभी प्रयत्नों, विचारों, विषयों और कल्पनाओं को भी विशाल हृदय से स्वीकार करती है। व्यक्तिगत रूप से मुझे इस विधा से संबंधित कुछ बिन्दु दिखाई देते हैं जो कहीं तो इसे तराश सकते हैं और कहीं इसकी खूबसूरती को उभार सकते हैं। सबसे पहले कुछ तराशने वाले बिन्दु -

बारीक संवेदनाओं का उभार आवश्यक है -

लघुकथा में घटनाओं का विवरण, चौंकाने वाले तथ्य, प्रतीक, वैश्विक पृष्ठभूमि आदि को लेकर काफी प्रयोग और रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं। ऐसा लगता है कि बारीक संवेदनाएँ भी उतनी ही बराबरी से सामने आ सकें, तब गुणवत्ता और भी बेहतर हो सकती है। ये संवेदनाएँ मानवीय, प्रकृति से संबंधित, प्रतिक्रियाएँ या नेपथ्य के वर्णन के रूप में सामान्य रूप से लघुकथा को पोषण देती आई हैं।

लेखक ही लेखक के बारे में लिख, बोल, सुना रहे हैं, पाठक चाहिये-

एक और तथ्य जो इन दिनों अधिक दिखाई दे रहा है, वह वास्तव में एक प्रश्न है कि क्या पाठक हमारी कथाओं को पढ़ रहे हैं? हमें लाइक्स, कमेन्ट्स, व्हॉट्सएप्प के गुलदस्ते या कभी-कभार फोन कॉल या अत्यंत दुर्लभ हो चुके पत्र आदि रचनाओं के पठन के बाद पाठकों से मिलते हैं या अपने ही साथी रचनाकारों से? यह प्रश्न अभी उत्तर खोज रहा है। एक उक्ति है 'परस्पर देवो भव' और यह भयावह है, इसके हम पर हावी होने से पहले बचाव हो सके तो बेहतर होगा।

कविता, उपन्यास, कहानी में संघर्ष अधिक है और लघुकथा में मंच और पुरस्कार तेज़ी से और अपेक्षाकृत कम संघर्ष के मिल रहे हैं-

व्यक्तिगत रूप से मैंने कुछ कविताएँ भी लिखी हैं और लंबी कहानियाँ भी। वहाँ पर जो संघर्ष या पहचान बनाने का प्रयत्न था, उसकी कठिनता लघुकथा में कम दिखाई देती है। सोशल मीडिया का प्रभाव कहें या किसी विधा को उभारने के लिये दिये जाने वाले स्वास्थ्य सप्लीमेन्ट्स की अधिकता, इस पर संतुलन बनाने संबंधी विचार की आवश्यकता है। कई बार हारना सीखना पड़ता है, और इसके अनुभव हमें जिता भी देते हैं। अस्तु।

गंभीर होना अपेक्षित है। लेखक स्वयं को केन्द्र में रख रहे हैं विधा को कम-

यदि हमने लघुकथा पर विश्वास किया है, तब भक्ति भी बनाकर रखनी होगी, वक्त भला हो या बुरा। यह 'हम' लिख रहे हैं इसलिये अच्छा ही होगा इस कल्पना का टूट जाना, अथवा किसी प्रयोग के

अपेक्षानुरूप स्वीकार्य न हो पाने की स्थिति में प्रयत्नों से परे चला जाना, यह तकलीफ देता है। इन सभी से बचकर एक निरंतरता, शाश्वत प्रभाव और केवल वर्तमान परिस्थिति से प्रभावित होकर प्रतिक्रिया स्वरूप रचना कर्म करना, इनपर पुनर्विचार की जरूरत है।

लघुकथा के स्वास्थ्य पर कम और उसके बनाव शृंगार पर अधिक प्रयास हो रहे हैं-

यह सही है कि लेखन सीखना, उसका अभ्यास करना, साधना और अभिव्यक्ति जैसे प्रकार गंभीरता की माँग करते हैं। एक बारीक सी बात जो समझ में आती है, लेखन की पायदानें जब बढ़ना शुरू करते हैं, तब अपनी रचना को किसी वरिष्ठ को दिखाकर उनसे सुझाव लेना हमें बड़ा अच्छा लगता है। अब ये मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि उस समय वरिष्ठ जो भी बताते हैं, उसमें से अधिकांश बातें तो सिर के ऊपर से जाती हैं, लेकिन एक आन्तरिक आत्मविश्वास जरूर बढ़ता है, अपनी रचना पर चर्चा होने के कारण। जबकि वह आत्मविश्वास तब बढ़ना चाहिये जब आपकी रचना वास्तव में बेहतर हो और वह अपने बूते पर कहीं स्थान पा सकी हो। और फिर इस मार्ग पर, रचना के स्वास्थ्य की, उसकी बेहतरी की चिन्ता कम और उसके सजाने-सँवारने के प्रयत्नों पर ज्यादा ऊर्जा खर्च होने लगती है।

अब इन तराशने वाले बिन्दुओं को छोड़कर देखते हैं कि यह विधा अपनी खूबसूरती को कैसे उभार पा रही है।

महिलाएँ अधिक लघुकथा लिख रही हैं-

संवेदनाओं के सैलाब बह रहे हैं, महिलाओं की अभिव्यक्ति को मंच मिल रहा है, स्वीकार्यता मिल रही है, और बिना किसी भूमिका के यह एक खुशनुमा समय है लघुकथा के लिये, सिर्फ इस विडंबना को छोड़कर कि छपने वाली, श्रोताओं के रूप में उपस्थित रहने वाली महिलाएँ मंच पर उतने अनुपात में अपना स्थान बनाने के लिये अभी भी संघर्ष कर रही हैं।

लघुकथा लेखक में प्रतिभा अधिक और अभ्यास कम वाला अनुपात होता है-

मुझे यह अनुभूत होता है, कि साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका व्यक्ति फिर भले ही वह पाठक हो, रचनाकार हो, रचना का आस्वाद लेने वाला कोई श्रोता ही क्यों न हो, उसमें सामान्य व्यक्ति से कुछ अधिक या अलग मात्रा में प्रतिभा का समावेश होता है। इसके आगे, वह अपने प्रयत्नों और परिस्थिति के माध्यम से पाठक से आलोचक, कभी रचनाकर्मी और कभी कार्यक्रम आयोजनकर्ता तक बन जाता है। अब बात लघुकथा की बिरादरी की करें, तब इसमें प्रतिभा और प्रयत्न के अनुपात में, प्रतिभा का पलड़ा भारी होता है, यह मुझे लगता है और यह सुखद भी है।

घरेलू बैठकों का दौर बढ़ रहा है-

समय नहीं मिलता लंबी कहानी पढ़ने का, इसलिये लघुकथा को सम्मान मिला या 'देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर' जैसे कारणों या बहानों की मोहताज आज की लघुकथा नहीं है। आज बाकायदा घरेलू बैठकें आयोजित हो रही हैं, किसी विषय विशेष पर लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं। अनेक समूह सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं जहाँ पर सृजन आकार ले रहा है। यहाँ पर अच्छे या बुरे के स्थान पर परिस्थिति से ऊपर उठकर यह देखना भला लग रहा है कि हिन्दी, साहित्य और अपनी जड़ें, शहरों में फिर से मजबूत होने लगी हैं।

सम्मेलनों की निरंतरता-

इस संबंध में कई बार यह लगा कि अंतर्राज्यीय लघुकथा सम्मेलन जो पंचकूला में संपन्न हुआ, वह अन्तिम था, यह दुखद है परंतु इस दुख पर मरहम लगाती हैं इन्दौर की क्षितिज जैसी संस्थाएँ जो कि लघुकथा के प्रति समर्पित हैं, अब नवजीवन पाकर सक्रिय हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि क्षितिज न केवल लघुकथा को लेकर सक्रिय है, अपना आकार बढ़ाते हुए इसी वर्ष मई-जून में एक बड़ा लघुकथा पर केन्द्रित कार्यक्रम भी संस्था द्वारा इन्दौर में प्रस्तावित है। अंत में मुझे यही लगता है कि नयी सदी की लघुकथा कहीं लघु है कहीं कथा है और कहीं लघुकथा भी है। यह इसी दशक में पूर्ण लघुकथा बन जाए, यह आशा की जा सकती है।

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.) मो. 9752540202

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

गनीमत हुई

राधारमण हिंदी के यशस्वी लेखक हैं। पत्रों में उनके लेख सम्मान पाते हैं और सम्मेलनों में उनकी रचनाओं पर चर्चा चलती है। रात उनके घर चोरी हो गई। न जाने चोर कब घुसा और उनका एक ट्रैक उठा ले गया – शायद लोगों की नींद खुल गई और उसे बीच में ही भागना पड़ा।

राधारमण बहुत परेशान है। बार-बार उसके मुँह से निकल पड़ता है – ‘हाय, मेरी तो सारी उमर की कमाई चली गई।’ ‘अब हुआ सो हुआ। भगवान और देगा। दुखी मत हो, संतोष कर बेटा।’ बड़े ने सांत्वना के शब्द कहे।

कई तरुण कंठ एक साथ खुल पड़े- ‘राधे! आखिर चला क्या गया?’

‘मेरे वाला ट्रैक चला गया और देखो, उसके पास ही किशोरी के ज़ेवर का ट्रैक बच गया।’

‘क्या था तुम्हारे ट्रैक में?’ उत्सुकता उमड़ पड़ी।

‘पुराने मासिक पत्रों की कतरने और मेरे तीन ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ थीं। हाय, अब क्या होगा भगवान।’

बूढ़ों की आकुलता शांत हो गई। उन सबकी ओर से ही जैसे, रमाशंकर ने कहा- ‘खैर, गनीमत हुई बेटा, कि ज़ेवर बच गया। क़ागजों का क्या, फिर लिख लेना। तू तो रात-दिन लिखता ही रहता है।

●●

रमेश नागोरे

लघुकथा वृत्त : मासिक सामाचार-पत्र

समय चक्र के चलते/धूमने के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में कथा साहित्य भी हरकत में आ गया। कथा-क्षेत्र में नई-नई विधाओं ने जन्म लिया। 19वीं शताब्दी में साहित्य क्षेत्र में कतिपय परिवर्तन हुए। नई विधायें भी अवतरित होने लगीं, जो पाठकों की रुचि एवं समय के साथ अलग-अलग प्रकार से प्रयुक्त होने लगीं, कम समय में बड़ी से बड़ी बात को लघुकथा का प्रयोजन रहा है।

लघुकथा से तात्पर्य एक संक्षिप्त, सारगर्भित, तथ्यपरक एवं मर्मस्पर्शी प्रस्तुति, जिसमें रचनात्मकता, गंभीरता एवं संक्षिप्तता की झलक मिलती है। लघुकथा किसी भी प्रकार की कथाओं के अधीन दृष्टिगत होती है। लघुकथा में किसी भी प्रकार की समस्या को भी अभिव्यक्त किया जा सकता है, बशर्ते समस्या में सच्चाई हो एवं नीति संगत हो। लघुकथा मानव मूल्यों को तराशने की भी अहम भूमिका निभाती है, यह रचनाधर्मिता का भी आधार होती है। इसीलिये यह (लघुकथा) चर्चित भी है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि युवाओं ने भी लघुकथा को रचनाधर्मिता का मूल आधार भी बनाया था।

लघुकथा प्रायः: मनुष्य के अनुभव और उसकी सोच से ही जन्म लेती है, जो मानवीय मूल्यों का संरक्षण भी करती है। कितना अच्छा होगा लघुकथा सामाजिक मूल्यों को भी स्थापित करने की अहम भूमिका निभा सके। यह भी कहा जा सकता है कि लघुकथा इससे सार में भाव, अनुभूति, प्रतीति सद्वावना आदि का सृजन करती है। लघुकथा कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि यह संसार में एक संभावनापूर्ण दस्तक भी है। यह जीवन के सत्य को पूर्ण तरह से मुख्यरित करती है। यह कम से कम शब्दों में अपनी सारी बात कह जाती है। यहाँ यह भी दर्शाना जरूरी है कि लघुकथा का साहित्य दक्षिण भारत भी चारों प्रमुख भाषाओं में मिलता है। इनका स्वरूप प्राचीन बोध कथाओं में भी परिलक्षित होता है। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि कथाकार लेखन में बहुत कुछ जोड़ता एवं घटाता भी है, जिससे उक्त लघुकथा को रुचिपूर्ण, सार्थक एवं शीर्षक को चरितार्थ कर सके।

लघुकथा द्वारा समय-समय पर कथाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कई पुरस्कार बड़े संस्थानों द्वारा दिये गये। इस प्रकार यह एक अच्छा कदम है, जिसमें कथाकारों को प्रोत्साहन मिलता है एवं ये संगठन समाज-साहित्य एवं देश के हित में एक वरदान हैं। यह गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति है कि हिंदी की प्रथम लघुकथा ने उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय सभा का पक्ष लिया। 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिंदी की प्रथम लघुकथा है, जो 1901 में छत्तीसगढ़ की मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इसी प्रकार सन् 1939 में विष्णु प्रभाकर जी ने प्रथम (पहेली) लोककथा लिखी उपेन्द्रनाथ अशक्जी ने भी लगभग 25 लघुकथायें लिखी हैं। प्रसिद्ध कवि रघुवर सहाय ने भी 'सीढ़ियों पर धूप में' इस लेखक ने कहानी शीर्षक से घटना/स्थिति को रचना में परिणित करने के लिए संभावनायें तलाशी है। यह एक श्रेष्ठ लोक लघुकथा के रूप में सामने आती है। यहाँ यह जान लेना अति आवश्यक है कि लघुकथा का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व एवं महत्व है। यद्यपि हरिशंकर परसाई जी ने भी सौ लघुकथायें लिखी हैं। उदय प्रकाश, स्वयं प्रकाश एवं

संजीव आदि ने भी लघुकथा लेखन के क्षेत्र में अपनी कलम चलाई है। चित्रा मुद्दल ने भी लघुकथा लेखन के क्षेत्र में अपनी कलम चलाई है। असगर वजाहत एवं विष्णु नागर की लघुकथाओं को सराहा गया। ‘दिल्ली एवं बुखार’ भी हिंदी की प्रथम लघुकथा है, जो माननीय माखनलाल चतुर्वेदी जी द्वारा लिखी गई है। लघुकथाओं का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र के काल/समय से मानते हुए उनके ‘परिहासिनी’ संग्रह को लघुकथाओं का पहला संग्रह माना गया, लेकिन इसमें कुछ विसंगतियाँ भी हैं।

लघुकथा वृत्त भारत का ही नहीं, अपितु विश्व का एक मात्र अतिविशिष्ट एवं प्रतिष्ठित साहित्यिक समाचार पत्र है जो न केवल साहित्यप्रेमियों, वरन् सभी भाषा भाषी पाठकों के लिए भी प्रसिद्ध है। मैं स्वयं भी इस अपूर्व साहित्यिक विधा पर आधारित बहुआयामी हिंदी भाषा को सर्वोपरि रचनात्मक पत्र (समाचार पत्र) को आद्योपांत पढ़कर एवं हृदयंगम करके अत्यंत प्रभावित एवं प्रमुदित हूँ। विदुषी महोदया कांता रौय के उक्त प्रयास से इस विश्वमात्र के बहुचर्चित, लोकप्रिय पत्र (साहित्यिक कृति) को गौरवान्वित महसूस करता हूँ। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे इसे आद्योपांत पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

लघुकथा वृत्त जैसे विश्व व्यापी अखबार ‘साहित्यिक रचना’ का शुभारंभ मई 2018 को भोपाल में हुआ। इसका लोकार्पण साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद के कार्यक्रम में हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. उमेश कुमार सिंह एवं श्री दीपेन्द्र दीपक जी की उपस्थिति में की गई। कालांतर में उक्त अखबार द्वारा साहित्यिक गतिविधियाँ भी लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ संचालित होती रहीं। साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद द्वारा जैनेन्द्र कुमार लघुकथा पुरस्कार राशि 51000/- भी घोषित किया गया। तदनन्तर इसी वर्ष बड़े पैमाने पर इंदौर में क्षितिज सम्मेलन भी आयोजित किया गया। मानस भवन द्वारा तुलसीदास पर प्रोजेक्ट (परियोजनायें) भी साहित्यिकारों को दिये गये। जिसकी अध्यक्षता डॉ. पी.डी. मिश्र जी ने की। 2018 से उक्त पत्र (अखबार) निरंतर प्रकाशित हो रहा है।

उक्त पत्र में आपकी प्रतिभा, साहित्यिकता, व्यक्तित्व, कृतित्व, सोच, शोधात्मकता प्रतिबिंबित होती है। उक्त पत्र में प्रतिष्ठित साहित्यिकारों, कहानीकारों एवं साहित्यप्रेमियों द्वारा साहित्यिक-अवदानों, विश्लेषणों, समालोचनाओं एवं प्रतिक्रियाओं की झाँकियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। निश्चित ही यह पत्र सभी पाठकों के लिए वरदान सिद्ध होगा, अतः उक्त पत्र का पठन हर पाठक के लिए किसी गंगा स्नान से कम नहीं है। उक्त पत्र को प्रदेश के ही नहीं, देश एवं विदेश के कोने में पहुँचा कर प्रबुद्ध पाठकों को साहित्य की सभी विधाओं से जोड़ा जाये, तो उन्हें महती साहित्यिक उपलब्धि प्राप्त होगी। इस साहित्यिक पत्र की गरिमा में चार चाँद और लग जायेंगे। यह हमारा प्रयास होना चाहिए।

समय-समय पर उक्त प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से साहित्यिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। यथा-लघुकथा गोष्ठी। अतः इस पत्र (साहित्यिक अखबार) में प्रकाशित सभी लेख/आलेख निश्चित एवं निःसंदेह मर्म/हृदयस्पर्शी, अनुभव आधारित एवं अविस्मरणीय हैं। इसके साथ ही यह अखबार गणमान्य, संवेदनशील साहित्य सम्प्राटों के अनुभवों पर आधारित लेख लघुकथाओं को चिह्नित करता है। छापी गयीं लघुकथायें मन में नई जागृति, अनुभूति एवं रचनात्मकता के पूर्ण भाव उत्पन्न करती हैं। निश्चित ही उक्त पत्र (अखबार) सभी प्रकार की रचनाओं का मुक्त हृदय से प्रस्तुत करता है। श्री सुभाष नीरव द्वारा सृजित सहयात्री, सुश्री अनद्या जोगलेकर द्वारा सृजित नवसृजन, सुश्री भारती कुमारी सृजित ‘मोक्षदायिनी गंगा’, श्री

हीरालाल जी नागर द्वारा लिखित ‘बौना आदमी’, बेमोल लघुकथा डॉ. रेणु भी अत्यंत प्रेरक एवं शिक्षाप्रद हैं।

चार साल बेमिसाल ‘लघुकथा वृत्त’ का प्रकाशन एवं संपादन करने के भागीरथ प्रयास की यशस्वी कांता रॉय की भूरि-भूरि प्रशंसा करना मेरा परम धर्म एवं कर्तव्य है, जिनकी व्यापक साहित्यिक सोच ने उक्त अखबार को हिमालय जैसी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। निःसंदेह जश्न-ए-हिंद आयोजन 21वें शताब्दी में ‘लघुकथा वृत्त’ एक उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय विस्तृतिकरण लग रही हैं। सुश्री कांता रॉय द्वारा संपादित यह पत्र (अखबार) निश्चित ही न केवल मध्यप्रदेश में, बल्कि पूरे जन-जन के मानस पटल में एक विशेष स्थान प्राप्त करके अपना वर्चस्व भी बना रहा है। इस अखबार की एक विशेषता यह है कि यह अधिकाधिक तथ्यों को अल्पतम अर्थात् कम से कम शब्दों में व्यक्त करता है। शायद इसीलिए इसका नाम लघुकथा वृत्त रखा गया है। इस पत्र में कलात्मकता, साहित्यिकता एवं तथ्य परकता भी प्रतिबिंबित होती है। यह साहित्यिकार, कथाकार के व्यक्तित्व (स्वभाव) एवं उनके साहित्यिक अवदान को दर्शाता है।

प्रदेश, देश के प्रतिष्ठित साहित्यिकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को दर्शाने की अहम भूमिका निभाता है। इस पत्र की प्रायः सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। यथा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ने कहा है, “लघुकथा वृत्त पत्र कम शब्दों में अधिक बात रखता है।” इस पत्र की प्रशंसा माननीय श्री प्रबोध गोविल ने कहा- “लघुकथा वृत्त बड़े कहानीकारों का “गागर में सागर है, श्री संतोष राठी कथाकार कहते हैं, “लघुकथा वृत्त जीवन मूल्यों को संरक्षित करने वाला पत्र है। श्री संतोष सुपेकर का कथन है, “लघुकथा वृत्त” विश्व के लिए एक संभावनापूर्ण दस्तक है।” घनश्याम जी मैथिल कहते हैं, “लघुकथा वृत्त” मानवमूल्यों की स्थापना के लिए यह पत्र प्रतिबद्ध लघुकथाओं का संग्रह है। भगीरथ जी का कथन है “लघुकथा वृत्त” वर्तमान में व्याप्त पाखंड को समाप्त करने का एक सफल माध्यम है। इसी प्रकार श्री शशांक दुबे जी कहते हैं, ‘लघुकथा वृत्त’ की लोकप्रियता का लगातार बढ़ते रहना इसकी मुख्य विशेषता है। श्री मुकेश वर्मा जी का कथन है, “लघुकथा की कलात्मकता समाप्त न हो, हमें इसके लिए प्रयास करने होंगे। अंततः श्री बलराम अग्रवाल कहते हैं, लघुकथाओं को किसी भी सीमा में न बाँधें।”

ठीक इसी प्रकार यह/उक्त पत्र (अखबार) लगातार समयानुसार अपनी गतिविधियों को विभिन्न रूप से संचालित करता आ रहा है, यथा कथा गोष्ठियाँ, संवाद, लेखन प्रोत्साहन स्थिति के अनुसार कार्यरत है।

यह पत्र लघुकथा प्रतियोगिता समय-समय पर सभी केंद्रों में आयोजित करता है, जैसे पूर्व में लघुकथा शोध केंद्र मंडलेश्वर में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था। मूर्धन्य पद्मश्री स्व. रामनारायणजी उपाध्याय की स्मृति में लघुकथा प्रतियोगिता भोपाल शोधकेंद्र की इकाई मंडलेश्वर में आयोजित की गई थी, जिसमें 18 प्रतिभागियों की 30 लघुकथायें प्राप्त हुईं, जिनमें से उक्त शोध केंद्र के प्रायोजक श्री विजय जोशी ने 10 कथाओं को शार्ट लिस्ट किया। पद्मश्री स्व. रामनारायण उपाध्याय की जन्मतिथि 20 मई को पुरस्कार घोषित किये गये। प्रथम पुरस्कार सुश्री रश्मि स्थापक, द्वितीय पुरस्कार सौ. शालिनी बडोले, श्री सुधीर देशपाण्डे तृतीय पुरस्कार सौ. विभा भडोरे, डॉ. रश्मि दुधे, सुश्री दर्शना जैन को दिए गए। भोपाल शोध केन्द्र की दिल्ली शाखा की ऑनलाइन संगोष्ठी 18 अप्रैल को संपन्न हुई

जिसमें नवागत लेखकों के लेखन कौशल को सराहा गया, जिसे आधुनिक विश्वकथा के समक्ष खड़ा करने के प्रयास की बात कही गई। इस संगोष्ठी में विभिन्न स्थानों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जो निश्चित ही अविस्मरणीय है।

शीर्षस्थ साहित्यकारों ने लघुकथा लेखन क्षेत्र में अपने हाथ अजमाये हैं एवं लघुकथा की ऊँचाइयाँ दी हैं। यथा- विष्णु सागरजी, असगर वजाहत, अशोक भाटिया जी, सुश्री कृष्णा अग्निहोत्री, सुश्री कांता रॉय, सूर्यकांत नागर जी, सुश्री ऋचा शर्मा, सतीश राठी एवं और अन्य।

लघुकथा वृत्त की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणवत्ता को उत्तरोत्तर विकसित करने के लिए सभी लघुकथा लेखकों को पूर्ण मनोयोग से सच्चाई पूर्ण जीवन मूल्यों को अपनाकर इस सृजन को अर्थपूर्ण बनाना है, जिससे अखिल भारतीय प्रशंसा एवं वर्चस्व प्राप्त हो सके। 'लघुकथा वृत्त' विश्वस्तर पर अपूर्व, अपार ख्याति अर्जित करने जा रहा है, जिसका हिंदी जगत हृदय से आभारी है। निस्संदेह साहित्य जगत में इतना उत्कृष्ट, उल्लेखनीय एवं साहित्यिक मानदण्डों पर खरा उत्तरने वाला कोई अन्य कोई पत्र-पत्रिका नहीं है। इस पत्र ने कथाकारों को एक मंच प्रदान किया है, जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। विभिन्न लघुकथाकारों ने विभिन्न विषयों पर अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं। इस पत्र में प्रकाशित लघुकथाओं से स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त होने के साथ-साथ ज्ञानार्जन भी होता रहता है। साहित्य-मनीषियों, विद्वानों तथा सृजनकर्ताओं ने भी विदुषी, कांता रॉय के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में प्रशंसनीय, उल्लेखनीय एवं नवाचार प्रधान लघुकथाओं का सृजन किया। लघुकथा में पाठकों, जनमानस एवं शोधार्थियों को नई दिशा दी।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9111826928

पारस दासोत

भूख

बेटे को पकड़ते हुए वह चिल्लाई, “नाश पिटे! मैंने तुझसे कितनी बार कहा, “दौड़ा मत कर, कूदा मत कर....तू समझता क्यों नहीं!” यह सब देख-सुन पड़ोसन बोली, “अरी बहन,...बच्चा है। दौड़ने-कूदने दो!....तुम्हें मालूम नहीं! दौड़ने-कूदने से भूख अच्छी लगती है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है।” अब....वह उत्तर में कुछ न बोली। वह तो बेटे को इस तरह पीटने लगी, मानो समझा रही हो, ‘दौड़ने-कूदने से भूख अच्छी नहीं, अधिक लगती है।’

●●

डॉ. पुरुषोत्तम दुबे

लघुकथा का क्षेत्रिज और ऊर्ध्ववत् विकास

श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका वीणा देश की एकमात्र पत्रिका है जो सन् 1927 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। यह गर्व की बात है कि आगामी 7 वर्ष की अवधि के बाद पत्रिका वीणा अपनी प्रकाशन यात्रा का शताब्दी वर्ष पूर्ण कर लेगी। पत्रिका वीणा के प्रकाशन का यह लंबा कार्यकाल साहित्य की अनेकानेक धाराओं/विधाओं के विकासशील होने और स्थापित होने का एक विश्वसनीय दस्तावेजी साक्ष्य है। पत्रिका के माध्यम से यह बात स्पष्ट है कि पत्रिका वीणा में सन 1944 के नवंबर अंक में पृष्ठ 21 पर मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के एक छोटे से गाँव कालमुखी में जन्मे श्री रामनारायण उपाध्याय की दो लघुकथाएँ ‘आठा और सीमेंट’ तथा ‘मजदूरी और मकान’ शीर्षक से प्रकाशित हैं। जो दर्शाती है कि मध्यप्रदेश में लघुकथा के लेखन का कार्य विगत 75 वर्ष से अधिक है।

मध्यप्रदेश द्वारा लघुकथा के नामकरण का अनुमोदन-

लघुकथा के नामकरण के सवाल पर बहुतेरे मतमतान्तर मिलते हैं। इस विवाद से परे लेकिन विचारार्थ एक बात यह है कि इंदौर की मासिक पत्रिका वीणा के चतुर्थ संपादक शांतिप्रिय द्विवेदी जो सन 1944 से सन् 1946 तक वीणा के संपादक रहे हैं, उन्होंने सन् 1944 में प्रकाशित वीणा में रामनारायण उपाध्याय की दो लघुकथाएँ तथा सन् 1945 में श्यामसुंदर व्यास की लघुकथा “‘ध्वनि प्रतिध्वनि’” को ‘लघुकथा’ शीर्षक के अंतर्गत ही प्रकाशित किया है। इस बात का उल्लेख हिंदी लघुकथा पर प्रथम शोधकार्य संपादित करने वाली डॉक्टर शकुंतला किरण ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक ‘हिंदी लघुकथा’ के पृष्ठ क्रमांक 82 पर किया है। यह बात लघुकथा के नामकरण के तारतम्य में इंदौर को श्रेय दिए जाने वाली अकाट्य बात नहीं है वरन् लघुकथा के नामकरण को लेकर देशभर में जो चल रहा था उसके निराकरण में समस्त मध्यप्रदेश की ओर से लघुकथा नाम की संज्ञा निर्धारित करने की आवश्यक पहल की तरह मानी जा सकती है।

पहली लघुकथा होने की दावेदारी में मध्यप्रदेश-

एक भारतीय आत्मा के नाम से विख्यात दादा माखनलाल चतुर्वेदी मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में जन्मे होकर खंडवा में आ बसे थे। उन्होंने ‘बिल्ली और बुखार’ लघुकारीय गद्य कथा लिखी जिसकी प्रामाणिकता अप्राप्त है किंतु हिंदी की प्रथम लघुकथा होने की दौड़ में इसको भी शामिल किया गया है। ‘अंगहीन धनी’ परिहासिनी 1876 भारतेंदु हरिश्चंद्र, एक टोकरी भर मिट्टी (छत्तीसगढ़ मित्र 1901), माधव राव सप्रे ‘झलमला’ (सरस्वती 1916), पदुमलाल पुन्नालाल बख्ती ‘गुदड़ी के लाल’ (प्रतिध्वनि 1926), जयशंकर प्रसाद इत्यादि रचनाकारों की गद्य कथा रचनाओं के मध्य माखनलाल चतुर्वेदी की रचना ‘बिल्ली और बुखार’ के प्रथम लघुकथा होने की वैधता पर शोधात्मक प्रयास चल रहे हैं।

लघुकथा का मंदिर कहीं है तो इंदौर मध्यप्रदेश में-

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल की लघुकथाकार मालती बसंत के अनुसार ‘इंदौर लघुकथा की

नसरी है। 2008 में मॉरिशस के विख्यात कथाकार राज हीरामन इंदौर आए थे। उनके सम्मान में डॉक्टर पुरुषोत्तम दुबे और लघुकथाकार श्री प्रतापसिंह सोढ़ी की उपस्थिति में डॉक्टर सतीश दुबे के निवास पर लघुकथा गोष्ठी रखी गई थी। इस गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए राज हीरामन ने अपने अध्यक्षीय उद्घोषन में ‘डॉक्टर सतीश दुबे के निवास स्थान को लघुकथा का मंदिर’ निरूपित किया था।

मध्यप्रदेश को खंडवा के माखनलाल चतुर्वेदी से लघुकथा विधा पालने में झूलती नवजात बालिका की तरह मिली, जिसको खंडवा के ही रामनारायण उपाध्याय और इंदौर के श्यामसुन्दर व्यास ने संयुक्त रूप से पालने से उतार कर उसको घुटरुन-घुटरुन चलाया फिर उसकी अँगुली पकड़कर उसे पैरों के बल चलना सिखाया, उसको जवान बनाया और आगे चलकर लघुकथा का प्राणीग्रहण संस्कार इंदौर के लघुकथाकार डॉक्टर सतीश दुबे की लेखनी के साथ संपन्न बनाया।

इंदौर के डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने 18 वर्ष की उम्र में पहली लघुकथा ‘ध्वनि-प्रतिध्वनि’ लिखी, जो श्रीमध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर की मासिक मुख्य पत्रिका ‘बीणा’ में अगस्त 1945 में प्रकाशित हुई। यह लघुकथा इंदौर के लघुकथाकारों को प्रेरित करने वाली सिद्ध हुई। डॉ. श्यामसुन्दर व्यास का लघुकथा और निबंध संग्रह ‘कांकर पाथर’ के नाम से प्रकाशित हुआ।

इंदौर के सतीश दुबे की लघुकथा लेखन प्रतिभा को लघुकथा के क्षेत्र में स्थापित होने में देर नहीं लगी। डॉक्टर सतीश दुबे की छः लघुकथाएँ 15 फरवरी 1965 की सरिता के अंक में प्रकाशित हुई और 17 अप्रैल 1966 के ‘सासाहिक हिंदुस्तान’ में उनकी लघुकथा ‘पोनीटेल’ प्रकाशित हुई। लघुकथा जगत को सतीश दुबे के योगदान के संदर्भ में लघुकथाकार मधुदीप का मानना है कि, “समकालीन लघुकथाकारों में सतीश दुबे ही अकेले लघुकथाकार हैं जिनकी लघुकथाएँ 1970 से पूर्व के दशक में प्रकाशित हुई हैं।”

सन् 1970 में जब लघुकथा विकास के पायदान पर कदम-दर-कदम चढ़ रही थी ऐसे विकास काल में सन 1974 में डॉक्टर सतीश दुबे अपना एकल लघुकथा संग्रह सिसकता उजास लेकर सामने आए फिर जीवन पर्यंत सतीश दुबे का लघुकथा लेखन कर्म जारी रहा। आगे चलकर उनका बड़ा योगदान लघुकथा जगत को मिला। ‘सिसकता उजास’ (1974) के अलावा सतीश दुबे का ‘भीड़ में खोया आदमी’ (1990), ‘राजा भी लाचार है’ लघुकथा संग्रह (1994)।

प्रेक्षागृह (1998) समकालीन सौ लघुकथाएँ (2001) ‘बूँद से समुद्र तक’ (2011) और ‘प्रेम के रंग’ (2017) नामक महत्वपूर्ण लघुकथा संग्रह लघुकथा जगत को विरासत के रूप में मिले हैं!

लघुकथा विधा को संपूर्ण रूप से आत्मसात करने वाले बाजार, राजनीति और अव्यवस्था की भीड़ में खोए हुए व्यक्ति को खोजने वाले, पराभूत और बेज़ार हुई मानवता के पक्ष में लघुकथाएँ लिखने वाले, जीवन के मूर्तिमान चित्रों को उद्घाटित करने वाले, लघुकथाकार सतीश दुबे ने लघुकथा जगत में अपने एकल योगदान के कारण इंदौर, मध्यप्रदेश का नाम बड़ा किया है। मैंने लघुकथा की वकालत में अपने आलेख ‘उपन्यास का वामन अवतार’ में यह आशा व्यक्त की है कि लघुकथा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाएगी। इसका स्पष्ट रूप से उत्तर यह है कि लघुकथा के पास सतीश दुबे जैसा समृद्ध रचना शिल्पी है।

इंदौर के लघुकथाकारों की लघुकथा लेखन की विकास यात्रा का अध्ययन करें तो सन 1944 से लगायत तक की लघुकथा लेखन यात्रा 75 वर्ष पार कर चुकी हैं। यानी मध्यप्रदेश ने लघुकथा रचने के

क्षेत्र में एक तरह से 'हीरक जयन्ती' का समय पूर्ण कर लिया है।

इंदौर में डॉक्टर सतीश दुबे के समकालीन लघुकथाकारों में सूर्यकांत नागर, कृष्णा अग्निहोत्री, कांतिलाल ठाकरे, प्रताप सिंह सोढ़ी, सुरेश शर्मा, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, चंद्रशेखर दुबे, डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सतीश राठी, चेतन त्रिवेदी, राजेंद्र पांडे उन्मुक्त, देवेंद्र होलकर और अशोक शर्मा भारती का नाम उल्लेखनीय है। पंडित रामनारायण उपाध्याय और डॉक्टर श्यामसुन्दर व्यास ने लघुकथा विधा का जो बीजारोपण किया था उसका विस्तारण इन लघुकथाकारों द्वारा बखूबी किया गया है।

लघुकथा लेखन के सन्दर्भ में इन्दौर का समृद्ध कालानुक्रमिक योगदान-

मध्यप्रदेश राज्य के सबसे महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्र के अलावा प्रदेश की खेल-कूद की राजधानी के नाम से इन्दौर की खास पहचान है। खाने-पीने के शौकीन इन्दौरवासियों में साहित्यिक और सांस्कृतिक अभिरुचियाँ पूर्वजों से बीजरूप में मिली हैं। इन्दौर के प्रथम लघुकथाकार होने का गौरव डॉ. श्यामसुन्दर व्यास को प्राप्त है। उन्हीं का अनुगमन करते हुए डॉ. सतीश दुबे ने लघुकथा लेखन की ऐसी सलिला बहायी जिसमें अवगाहन कर अनेक प्रतिभाशाली लघुकथाकार इन्दौर के लघुकथा-पटल पर अवतरित हुए और समय-समय पर लघुकथा-लेखन को सार्वकालिक लेखन बनाने की दिशा में अपनी-अपनी लेखनी से लघुकथा का मुहूर्त जगाते रहे हैं।

सूर्यकांत नागर ने अनेक लघुकथाएँ लिखीं। कालान्तर से उनका लघुकथा संग्रह 'विषबीज' (1987) में प्रकाशित हुआ। लोक कथाओं के लेखक चन्द्रशेखर दुबे ने अनेक लघुकथाएँ लिखीं। उनका लघुकथा संग्रह 'टुकड़े-टुकड़े' उनकी असामयिक मृत्यु के कारण प्रकाशन की देहरी नहीं चढ़ पाया। सन् 1973-75 से अपना सृजन-कर्म का आरम्भ करने वाले लघुकथाकार चैतन्य त्रिवेदी का सन् 2000 में 'उल्लास' नामक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुआ और सन् 2019 में उनका दूसरा लघुकथा संग्रह 'कथा की अफवाह' प्रकाशित होकर सामने आया है। इस बीच लघुकथा-लेखन में लघुकथाकारों की एक महत्वपूर्ण त्रयी' सामने आई, जिसमें प्रतापसिंह सोढ़ी, सतीश राठी और योगेन्द्रनाथ शुक्ल ने अपनी-अपनी विचार शैली से अनुस्यूत अनेकानेक लघुकथाएँ लिखी हैं। प्रतापसिंह सोढ़ी का लघुकथा संग्रह 'शब्द संवाद' (2008), 'मेरी प्रिय लघुकथाएँ' (2018), सतीश राठी का 'शब्द साक्षी है' (2002) और योगेन्द्रनाथ शुक्ल के 'शपथ यात्रा' (1999), 'लघुकथाओं का पिटारा' (2008) में प्रकाशित होकर चर्चित हुए हैं। लघुकथाकार सुरेश शर्मा का लघुकथा संग्रह (अंधे-बहरे लोग), कांतिलाल ठाकरे का 'शंख में समुद्र' (2010) देवेन्द्र गो. होलकर का 'पहली उड़ान' (2007), सदाशिव कौतुक का 'संकल्प और सपने' (2018), डॉ. पुरुषोत्तम दुबे का 'लघुकल्प' (2015), जवाहर चौधरी का 'सौरी जगदीश्वर' (2014), ज्योति जैन के तीन लघुकथा संग्रह 'जलतरंग' (2009), 'बिजूका' (2014), 'निन्यान्वे का फेर' (2019), रंजना फतहपुरकर का 'बूँदों का उपहार' (2014), ब्रजेश कानूनगो 'रिंगटोन' (2014), पुष्पारानी गर्ग का 'भीतर का सत्य', चेतना भाटी के 'उल्टी गिनती', 'सुनामी सड़क', राम मूरत के दो लघुकथा संग्रह 'अंतहीन रिश्ते' (2019), 'भूख से भरा पेट' (2021), डॉ. रमेश चन्द्र का 'मौत में जिन्दगी' (2017) अंतरा फखड़े का 'देन उसकी हमारे लिये, डॉ. वसुधा गाडगिल 'साझा मन' (2019), डॉ. वसुधा गाडगिल और अन्तरा करवड़े का साझा लघुकथा संग्रह 'धारा' 2019 और रश्मि प्रणय वागले का 'एक सेल्फी रिश्तों की' सामने आये हैं।

इन्दौर में लघुकथा लेखन की संकल्प यात्रा निरन्तर जारी है। कई ऐसे नाम और भी हैं, जो लघुकथा लेखन की दिशा में अनवरत रूप में संलग्न हैं या जिनके लघुकथा-संग्रह प्रकाशन की देहरी तक पहुँच चुके हैं। कतिपय लघुकथाकारों की प्रतिनिधि लघुकथा के साथ उनका नामोल्लेख करना श्रेयस्कर होगा। सीमा व्यास (सुन्दरता राड़ा, आज भी माँ बन जाओ ना), अखिलेश शर्मा (कैरेक्टर), अशोक शर्मा भारती (रोजगार), कविता वर्मा (धुएँ की लकीर, जेवर, परजीवी), विनिता शर्मा (चार्जर), गरिमा संजय दुबे (बेबी कॉर्न) जितेन्द्र गुप्ता (पापा आप झूठे हो), बरखा शुक्ला (माहौल), भीमराव रामटेके (नीयत), एकता कानूनगो (शुभारम्भ, चना), मंगला रामचन्द्रन (संवेदना), गोपाल माहेश्वरी (जामुन, घरोंदे), आर.एस. माथुर (बोध), चन्द्रा सायता (शोर), सुषमा व्यास राजनिधि (ममता का लॉकडाउन), अदिति सिंह भदौरिया (एहसास), देवेन्द्र सिंह सिसौदिया (अंतर सोच का) ललित समतानी (तेरह तारीख), ज्योति सिंह (सूत सावन), नन्दकिशोर बर्वे (आजादी), इसके अतिरिक्त विजयसिंह चौहान (अनुभव का भार) तथा धीरेन्द्र कुमार जोशी सतत लघुकथा-लेखन कार्य कर रहे हैं।

विक्रम सोनी अर्थात् लघुकथाओं के सम्पादन कार्य का सूत्रपात-

प्रख्यात लघुकथा पत्रिका 'आघात/लघुआघात', सन् 1981 से सन् 1986 तक अवतरित रूप से सम्पादित करने वाले लघुकथाकार विक्रम सोनी लम्बे अरसे तक लघुकथा क्षेत्र में अदृश्य रहे (सम्भवतः 2007 में उनके दायें अंगों पर पक्षाघात हुआ), प्रताप सिंह सोढ़ी, सतीशराज पुष्करण, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, श्रीराम दवे, अशोक भाटिया, बलराम अग्रवाल आदि लघुकथा के हस्ताक्षरों ने उनके उज्जैन निवास पहुँचकर समय-समय पर उनसे भेट की। दरअसल इस बात का खुलासा यहाँ इसलिए जरूरी है कि इन्दौर में लघुकथा-विधा से जुड़े रहने वाले विक्रम सोनी के नाम की प्रशस्ति एक समय में उनके लघुकथा में महत्वपूर्ण योगदान देने के अर्थ में पूरे देश में रही है।

'अन्तहीन सिलसिला', 'कारण', 'मुआवजा', 'सर्वशक्तिमान' जैसी सशक्त लघुकथाओं के रचनाकार विक्रम सोनी विगत शती के नौवें दशक के क्षितिज में चमकने वाले दैदीप्यमान नक्षत्र रहे हैं। 'लघु आघात' पत्रिका के प्रकाशन के कारण उनकी प्रतिभा का स्थापन लघुकथा के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में हुआ। विक्रम सोनी की लघुकथा पत्रिका 'आघात' के सम्पादक मण्डल में सहयोगी के रूप में लघुकथाकार सतीश राठी ने महत्वपूर्ण कार्य किया है, जिसके कारण जून 1983 में सतीश राठी ने इन्दौर में 'क्षितिज' मंच की स्थापना की एवं सर्वप्रथम अखिल भारतीय लघुकथा प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए लघुकथा वार्षिकी 'क्षितिज' के प्रकाशन का क्रम आरम्भ किया, जो अद्यतन है। इन्दौर के लघुकथाकार वेद हिमांशु भी 'लघु आघात' से जुड़े हुए होकर विक्रम सोनी के सहायक के रूप में कार्य करते रहे।

इन्दौर में लघुकथा विषयक संकलन और सम्पादन का एक लम्बा सिलसिला कायम रहा है। दिसम्बर 1976 में सतीश दुबे और सूर्यकान्त नागर के सम्पादन में 'प्रतिनिधि लघुकथाएँ', दिसम्बर 1977 में नरेन्द्र मौर्य और नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के सम्पादन में 'समानान्तर लघुकथाएँ', सन् 1979 में सतीश दुबे के सम्पादन में 'आठवें दशक की लघुकथाएँ : जून 1983' में विक्रम सोनी के सम्पादन में 'मानचित्र', सन् 1991 में सतीश राठी के सम्पादन में 'सक्षम', सन् 2008 में सुरेश शर्मा के सम्पादन में 'बुजुर्ग जीवन की लघुकथाएँ : सन् 2010 में प्रतापसिंह सोढ़ी के सम्पादन में 'लघुकथा संसार : माँ के आसपास' तथा

देशभर के लघुकथाकारों को स्थान देने वाली संकलन समप्रभ 2006 में निकाला। प्रतापसिंह सोढ़ी के मार्गदर्शन में डॉ. पुरुषोत्तम दुबे ने अपने सम्पादन में अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'छह शब्द' का लघुकथा विशेषांक (2011) में निकाला।

इन्दौर महानगर को 'लघुकथाकार का गढ़' सत्यापित करने में इन्दौर में आयोजित होने वाले 'अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन' का भी बड़ा योगदान रहा है। देश के लगभग सभी नामचीन लघुकथाकारों की उपस्थिति से लबरेज हुए तीन महत्वपूर्ण लघुकथा-सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन इन्दौर में हो चुका है। प्रतापसिंह सोढ़ी द्वारा आयोजित प्रथम लघुकथा सम्मेलन सन् 2010 में सम्पन्न हुआ है। तदन्तर क्षितिज संस्था इन्दौर, अध्यक्ष, सतीश राठो के तत्वावधान में निरंतरता से तीन लघुकथा सम्मेलन क्रमशः 2018, 2019, और 2021 में सम्पन्न हो चुके हैं। इन्दौर के लघुकथाकार डॉ. पुरुषोत्तम दुबे ने हिन्दी लघुकथा के क्षेत्र में देश के कई नामचीन लघुकथाकारों की लघुकथाओं पर दस्तावेजी समीक्षा प्रस्तुत की है। एक तरह से डॉ. दुबे ने नई पीढ़ी के सामने लघुकथा की समीक्षा किए जाने का आईना प्रस्तुत किया है। डॉ. दुबे ने समीक्षा-भाषा का सरल स्वरूप पैदा किया है।

पृथ्वी का 'नाभिस्थल' उज्जैन और लघुकथा की 'कर्क रेखा'-

द्वापर-युग की उज्जयिनी यानी आज का उज्जैन में महर्षि सांदीपनि के गुरुकुल में आकर भगवान श्रीकृष्ण समस्त प्रकार की शिक्षा में पारंगत हुए हैं। उज्जैन का पुरातन साहित्यिक परिवेश कविकुलगुरु कालिदास के काव्य-सृजन का केन्द्र स्थल रहा और सरस्वती-पुत्र डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की काव्य-साधना की आधारभूमि भी रहा है।

साहित्य-साधना की सिद्ध-भूमि उज्जैन में रहते हुए जिसने भी कलम पकड़ी है उसे रचना रचने की बड़ी योग्यता प्राप्त हुई है। रचने की योग्यता के पार्श्व में दो बड़े कारण रहे हैं, जिनमें पहला उज्जैन में 1 मार्च 1957 को विक्रम विश्वविद्यालय की स्थापना और दूसरा श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर की मुख-पत्रिका वीणा से प्रेरित होकर उज्जैन के अधिकांश लेखकों का सृजनात्मक परिवेश से जुड़ना। सन् 1980 में सम्पूर्ण भारत में लघुकथा लेखन की विकासात्मक दृष्टि को लेकर जो सृजनात्मक बयार चली उससे लघुकथा-विषयक रचनात्मक आन्दोलन उज्जैन की धरती पर भी पैदा हुआ। उज्जैन की शैक्षणिक धरती पर शरद जोशी का अवतरण हुआ। साहित्य की अन्यान्य विधाओं में लोकप्रियता प्राप्त करने वाले शरद जोशी ने लघुकथा रचना का भी दामन पकड़ा। उनकी लघुकथा "मैं वही भागीरथ हूँ" व्यंग्य मिश्रित होकर काफी चर्चित रही है। लघुकथाकार राजेन्द्र सक्सेना का अवतरण लघुकथा-क्षेत्र में हुआ और उनका प्रथम लघुकथा संकलन 'महांगीर्झ अदालत में हाजिर हो' सन् 1981 में प्रकाशित होकर सामने आया। उज्जैन के शैक्षणिक परिवेश के कारण प्रस्तुत संकलन की लघुकथाओं में सामाजिक परिवर्तन, मानवीय रिश्तों में प्रगाढ़ता का वर्णन-विश्लेषण, गुणात्मक आदर्शों का अभिलेखन आदि बातों का ब्यौरा राजेन्द्र सक्सेना की लघुकथाओं में मिलता है।

लघुकथाकार राजेन्द्र सक्सेना के पश्चात् वर्तमान में साहित्यिक पत्रिका 'समावर्तन' का सम्पादन कार्य कर रहे श्रीराम दवे ने लघुकथा पर केन्द्रित 'भूख के डर से' एक फोल्डर 1990 में निकाला। तदन्तर सन् 1996 में डॉ. शैलेन्द्र पाराशर ने 25 लघुकथाकारों को लेकर 'सरोकार' शीर्षक से लघुकथा संकलन निकाला। सन्

1997 में राधेश्याम पाठक उत्तम का लघुकथा संग्रह ‘बात करना बेकार है’ प्रकाशित हुआ। सन् 1999 में अरविंद नीमा ‘जय’ ने लघुकथा संग्रह ‘गागर में सागर’ शीर्षक से निकाला। लघुकथा सन्दर्भित इन प्रस्तुतियों ने उज्जैन के सम्भावित लघुकथाकारों में लघुकथा की दिशा में कार्य करने की उम्मीद और जोश जगाया।

उज्जैन के लघुकथाजगत में लघुकथा-लेखन का विराट जज्बा सन् 2000 के तुरन्त बाद पैदा हुआ। इक्कीसवीं सदी में कदम रखते ही यहाँ के लघुकथाकारों ने सघन रूप में लघुकथा-लेखन, संकलन, सम्पादन तथा वैयक्तिक संग्रहों के प्रकाशन में अपनी रुचियाँ जगाई। लघुकथाकार सतीश राठी तथा राजेन्द्र नागर का साझा लघुकथा-संग्रह ‘साथ चलते हुए’ 2004 में प्रकाशित हुआ।

समकालीन जीवन की व्यथा-कथा, आम-आदमी की उपस्थिति, स्वार्थ और परमार्थ से भरे मनुष्यों की कीर्ति-अपकीर्ति का मिला-जुला प्रभावकारी लेखन लेकर लघुकथाकार सन्तोष सुपेकर की लघुकथा-जगत में उपस्थिति, उनका लघुकथा में योगदान महत्वपूर्ण है। सन्तोष सुपेकर के चार लघुकथा संग्रह ‘स्वतन्त्र हाशिए का आदमी’ (2007), ‘बंद आँखों का समाज’ (2010), ‘भ्रम के बाजार में’ (2013) और ‘हँसी की चीरें’ (2017) में प्रकाशित हुए हैं। सन् 2013 में लघुकथा के क्षेत्र में ‘शब्द सफर के साथी शीर्षक ‘फोल्डर’ के सम्पादन का महत्वपूर्ण श्रेय भी सन्तोष सुपेकर को जाता है। महिला लघुकथाकार मीरा जैन का लघुकथा संग्रह क्रमशः 2003 में ‘मीरा जैन की लघुकथाएँ’, 2010 में ‘एक सौ एक लघुकथाएँ’ 2016 में, ‘सम्यक लघुकथाएँ’ और 2010 में ‘मानवमीत लघुकथाएँ’ शीर्षक से प्रकाशित हुए। सामाजिक विसंगतियों के अभिरूप, विश्वासों के विखण्डन के बरअक्स सम्बन्धों में मृदुल आकर्षण इत्यादि के परिदृश्यों पर केन्द्रित मीरा जैन की लघुकथाएँ व्यक्तिमूलक और समाजमूलक चेतनाओं से अनुप्राणित हुई दिखाई देती हैं। उज्जैन की ही लघुकथाकार कोमल वाधवानी के तीन लघुकथा संग्रह ‘नयनतीर (2013) (दृष्टि बाधित पर आधारित), ‘कदम-कदम पर’ (2015), ‘यादों का दस्तावेज’ (2016), महत्वपूर्ण लघुकथा संग्रह है। करीब 13-14 अखिल भारतीय सांझा संकलन में आपको स्थान प्राप्त है।

उज्जैन नगर से निरंतर प्रकाशित हो रही साहित्य एवं सांस्कृतिक सरोकारों की राष्ट्रीय पत्रिका ‘समावर्तन’ में देश में हिन्दी लघुकथा का बढ़ता हुआ स्वरूप देखते हुए लघुकथा पर केन्द्रित मासिक रूप में सन् 2018 से ‘घरोंदा’ शीर्षक के अधीन एकल लघुकथाकार की 10 लघुकथाएँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। ‘घरोंदा’ के पृथक सम्पादक के रूप में लघुकथाकार वाणी दवे कार्यरत होकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इसके अतिरिक्त लघुकथाकार वाणी दवे का एकल लघुकथा संग्रह ‘अस्थाई चारदीवारी’ सन् 2016 में प्रकाशित हुआ है। जिसमें वाणी दवे ने अपनी लघुकथाओं में जीवनगत नानाविध प्रसंगों, समाज में अक्सर घटने वाली घटनाओं और मानवीय चरित्रों के सुन्दर रूप प्रस्तुत किये हैं।

उज्जैन के लघुकथाकार मोहम्मद आरिफ के दो लघुकथा संग्रह ‘अर्थ के आँसू’ 2008 तथा ‘गाँधी गिरि’ 2010 में प्रकाशित हुए हैं। सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन, परम्पराओं का विघटन और पारस्परिक रिश्तों के विखण्डनों के स्वरूप का विवेचन इन संग्रहों की मूल भावना है। डॉक्टर प्रभाकर शर्मा और सरस निर्मली के सम्पादन में ‘सागर के मोती’ प्रकाशित हुआ है। राधेश्याम पाठक उत्तम के दो लघुकथा संग्रह ‘बात करना बेकार है’ (1999) और ‘पहचान’ (2008) में प्रकाशित हुए हैं। वर्ष 2012 में राजेन्द्र नागर निरन्तर का लघुकथा संग्रह ‘खूँटी पर लटका सच’ प्रकाशित हुआ है।

उज्जैन के कतिपय अन्य लघुकथाकारों की लघुकथाएँ यत्र-तत्र प्रकाशित होकर उज्जैन के लघुकथा जगत को सधन रूप प्रदान करने में सहायक बनी हैं। उज्जैन के लघुकथाकार में गड़बड़ नागर (तेरहवीं सदारी) गफूर स्नेही (खाली सीट), गोपाल कृष्ण निगम (रोशनी के गमले), हरीश कुमार सिंह (नया मन्दिर), कमलेश व्यास 'कमल' (आत्मिक सुख), मुकेश जोशी (मुर्दे, भरोसा), डॉ. पिलकेन्द्र अरोगा (योग्यता), प्रभाकर शर्मा (मेमने के बहाने), रमेशचन्द्र शर्मा (धन, रहस्य), ब्रजेन्द्र सिंह तोमर (शत्रु नहीं मित्र), बी.एल. आच्छा (संगमरमरी आतिथ्य, श्रद्धा), घनश्याम सिंह (सुविधा) के नाम उल्लेखनीय हैं।

लघुकथा के अखिल भारतीय परिदृश्य में उज्जैन के प्रो. बी.एल. आच्छा का नाम लघुकथा के नामचीन समीक्षकों में सर्वोपरि है। प्रो. बी.एल.आच्छा की लघुकथा विषयक समीक्षा दृष्टि नीर-क्षीर विवेक से जन्मी होकर किसी भी लघुकथा का सूक्ष्मातिसूक्ष्म परीक्षण कर उसका औचित्य प्रतिपादन करने में तनिक भी कोरकसर नहीं रखती है।

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलानुशासक डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा समय-समय पर अपने आलेखों में लघुकथा विधा के स्वरूप निर्धारण का तथा लघुकथा सन्दर्भित समीक्षा कार्य में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं।

झीलों की नगरी भोपाल में लघुकथा की अजस्र प्रवहमानता-

सन् 1969-70 के मध्य हिन्दी लघुकथा की मृदंग पर जिस लघुकथाकार की थाप सुनाई पड़ती थी वह थे प्रोफेसर कृष्ण कमलेश। लघुकथाकार सिमर सदोष के सम्पादकत्व में जालंधर से प्रकाशित होने वाले हिन्दी मिलाप 'पत्र में जब बहुतायत में लघुकथाएँ छपा करती थीं, तब प्रकाशित होने वाले लघुकथाकारों में प्रो. कृष्ण कमलेश का नाम अग्रिम पंक्ति में हुआ करता था। कृष्ण कमलेश का नाम लघुकथाकार रमेश बतरा की 'गुड बुक' में रहा है। कमलेश्वर के सम्पादन में दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' की पत्रिका 'सारिका' में लघुकथा के प्रकाशन का एक योगदान कृष्ण कमलेश का भी रहा है। बजरिए कृष्ण कमलेश यह श्रेय मध्यप्रदेश को जाता है। सामाजिक बिखराव से उत्पन्न माननीय असन्तोष, पारस्परिक उपेक्षाओं से ग्रस्त मनुष्य के एकाकीपन और अन्तर्दृढ़ की पीड़ा झेलते मानवों का समोचित अंकन, कृष्ण कमलेश की लघुकथाओं में मिलता है। उनका लघुकथा संग्रह 'मोहभंग' तथा 'मुखौटे'(कहानी और लघुकथा) संग्रह प्रचलित है।

भोपाल की वरिष्ठ महिला लघुकथाकार मालती बसंत का नाम राष्ट्रव्यापी रहा है। मालती बसंत के तीन लघुकथा संग्रह 'शिक्षा और संस्कार', 'अतीत का प्रश्न' और 'बुढ़ापे की दौलत' प्रकाशित हुए हैं। नारी चरित्र की बदलती भूमिकाएँ, पुरुष और नारी के सम्बन्धों में व्यास वैचारिक आरोह और अवरोह पर केन्द्रित मालती बसंत की लघुकथाएँ सर्वकालिक लघुकथाएँ हैं। 'नारी संवेदनाओं की लघुकथाएँ' आपके द्वारा सम्पादित लघुकथा संग्रह है।

भोपाल में एक लम्बे अन्तराल तक लघुकथा की रचनात्मकता को लेकर शून्य ही पसरा रहा है। इस कमी को पाटने में लघुकथाकार कांता रॉय में प्राण-पण से लघुकथा के सृजनात्मक, विकास और स्थापना में अपना महत योगदान दिया है। लघुकथा पर आधारित पत्र 'लघुकथा-वृत्त' निकालना और भोपाल तथा प्रदेश के अन्यान्य क्षेत्रों में लघुकथा-शोध केन्द्र की स्थापना करना, लघुकथा के उत्थान की दिशा में कांतारॉय का

महत्वपूर्ण कार्य है। कांता रॉय के तीन लघुकथा संग्रह ‘घाट पर ठहराव कहाँ’, ‘पथ का चुनाव’ और ‘अस्तित्व की यात्रा’ प्रकाशित हुए हैं। लघुकथा के श्रेष्ठ लघुकथाकार तथा समीक्षकों आदि का समय-समय पर लघुकथा सन्दर्भ में साक्षात्कार लेने वालीं लघुकथाकार डॉ. लता अग्रवाल द्वारा लिए गए साक्षात्कार का संकलन ‘लघुकथा का अन्तरंग’ 2018 में प्रकाशित हुआ है। इसके साथ ही लता अग्रवाल के पाँच लघुकथा संग्रह, ‘मूल्यहीनता की संत्रास’, ‘लकी हैं हम’, ‘गांधारी नहीं हूँ मैं’, ‘धीमा जहर’ और ‘तितली फिर आएगी’ प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त आपकी लघुकथाकार मधुकांत अनूप बंसल की लघुकथाओं पर ‘मधुकांत की 51 लघुकथाएँ’ पर समीक्षात्मक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। अशोक मनवानी की ‘मिथ्या मंजिल’, सुदर्शन सोनी के तीन लघुकथा संग्रह, संतोष श्रीवास्तव की ‘मुस्कुराती चोट’, कपिल शास्त्री का लघुकथा संग्रह ‘जिंदगी की छलाँग’, डॉ. मोहन आनन्द तिवारी का ‘देश बिकाऊ है’, डॉ. रंजना शर्मा की ‘फंदे’, सतीष चन्द्र श्रीवास्तव की ‘हाथी के दाँत’, अर्चना मिश्रा की ‘फूलों की घाटी’, डॉ. कुंकुम गुप्ता की ‘मिट्टी की पुकार’, गोकुल सोनी की ‘अपने-अपने समीकरण’, मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी की ‘अम्मा अभी जिंदा हैं’, डॉ. गिरिजेश सक्सेना के दो लघुकथा संग्रह ‘चाणक्य के दांत और गाँधी के आँसू’, डॉ. वर्षा चौबे का ‘शिखर की ओर’, अंजना छलोत्रे का ‘ऊँची उड़ानें’, कल्पना विजयवर्गीय का ‘जीवन का प्रवाह’ और घनश्याम मैथिल अमृत का ‘एक लोहार की’ और ‘जहाँ काम आवे सुई’ लघुकथा संग्रहों ने भोपाल की सरजर्मी के साथ मध्यप्रदेश में लघुकथा लेखन का कद भी ऊँचा किया है। साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग, भोपाल द्वारा स्थापित साहित्य अकादमी पुरस्कार कैलेण्डर वर्ष 2017 हेतु ‘लघुकथा’ के लिए प्रादेशिक ‘जैनेन्द्र कुमार जैन पुरस्कार’ श्री घनश्याम मैथिल ‘अमृत’-भोपाल, कृति : ‘एक लोहार की’ ‘सम्मान निधि – 51,000’ सहित दिया गया।

भोपाल के कतिपय ऐसे और अनेक लघुकथाकार हैं जिनकी प्रतिनिधि लघुकथाएँ यत्र-तत्र प्रकाशित हुई हैं, जिनमें लघुकथाकार आर.बी. भण्डारकर (रतिया की भैंस), कल्पना भट्ट की (रेल की पटरियाँ), नयना भारती कानेटकर (हम चलेंगे साथ-साथ), मेघा राठी (अपनी लड़ाई), उदय श्री ताम्हणे (आँसू, अन्जाना पाप), कुमकुम गुप्ता (रिश्तेदार), जया आर्य (खामोश तड़प), जया नर्गिस (दृश्यान्त्र), विनीता राहुरिकर (इतिहास दोहरा रहा है) आदि चर्चित हैं।

और भी अनेक लघुकथाकार हैं जो अपने समय के समाज, ठहरती-चलती जिंदगी, मनुष्यों के मध्य घटते-बढ़ते विश्वास की स्थितियों को साधकर लघुकथाएँ लिख रहे हैं, जिनमें श्री राम वल्लभ आचार्य, गोकुल सोनी, कीर्ति गाँधी, भूपिन्दर कौर : शशि बंसल, ऊषा जायसवाल, प्रीति प्रवीण खेरे, मिथ्लेश वामनकर, आभा शर्मा, नीता सक्सेना, मधु सक्सेना, उषा सक्सेना, राहुल आसिफ किरण खोड़के, मीना सिंह सोलंकी, विनोद जैन, सरिता बघेल, मिथ्लेश वामनकर, संजय पठारे, ‘शेष’, चरणजीत सिंह कुकरेजा, राजश्री रावत, दामिनी खेरे, कामिनी खेरे और लक्ष्मीनारायण पथोधि के नाम प्रमुख हैं।

जबलपुर : देर आयद मगर दुरुस्त आयद की तर्ज पर योग दान-

जबलपुर मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी की लचीली बाँहों में ‘धुआँधार फॉल्स (झरने) का लहराता-मचलता नजारा, मार्बल रॉक्स (चट्टानों) के दमकते रंगमंच, भेड़ाघाट की बाँहों में ‘ओ बसन्ती पवन पागल’ का गूँजता मादक, मंदिर-मधुर गीत और ग्वारी घाट (घाटों) की धार्मिक और सांस्कृतिक छवियों की बात ही

कुछ और है। जबलपुर में लघुकथा और लघुकथाकार को स्थिति को लेकर पत्रिका ‘लघुकथा अभिव्यक्ति’ के प्रबन्धक और सम्पादक मोह. मुझनुदीन ‘अतहर’ ने अपने लिखे सम्पादकीय में बताया कि, “‘मैं जबलपुर में वर्ष 1980 से हिन्दी लघुकथा के लिए काम कर रहा हूँ। उस समय मेरे साथ मेरे अपने शहर जबलपुर में मात्र तीन-चार ही लघुकथाकार थे। इन्हीं के साथ मिलकर मैंने 1986 में ‘युवा रचनाकार समिति’ का गठन किया और लघुकथा विधा को स्थायित्व दिलाने हेतु अधिक ध्यान देने लगा।’”

मोह. मुझनुदीन अतहर ने जबलपुर में लघुकथा के लेखन और स्थापन की जो जिम्मेदारी ली, इसके पीछे जबलपुर के जो तीन लघुकथाकार प्रेरणास्तम्भ थे। उनमें से सर्वप्रथम आनन्द मोहन का नाम आता है। जिनका लघुकथा संग्रह ‘बंधनों की रक्षा’ 1950 में प्रकाशित हो चुका था। इसके पश्चात् श्रीराम ठाकुर दादा का नाम आता है जिनका ‘अभिमन्यु का चक्रव्यूह’ 1977 में प्रकाशित हो चुका था। तदन्तर 1980 में प्रकाशित हरिशंकर परसाई का लघुकथा संग्रह ‘विकलांग श्रद्धा का दौर’ जिनमें परसाई जी की लघुकथाएँ उनकी अन्य रचनाओं के बीच प्रमुखता के साथ छपी हुई मिलती हैं।

लघुकथा लेखन की इन मुद्रीभर लघुकथाओं का सम्बल लेकर और समाज में जगह-जगह व्याप अनैतिकता, अत्याचार, भ्रष्टाचार तथा मानवीय मूल्यों में गिरावट की वीभत्स स्थितियों के प्रतिकार में मोह. मुझनुदीन ‘अतहर’ के साथ ही सन् 1980 में मधुकर पराग का लघुकथा संग्रह ‘एक सच यह भी’ प्रकाशित हुआ है। मोह. मुझनुदीन ‘अतहर’ सन् 1981 से लेकर सन् 2005 के मध्य अपनी लघुकथाओं के चार महत्वपूर्ण संग्रह लेकर आये, जिनमें ‘काँटे ही काँटे’ (1981), ‘शैतान की चाल’ (1990) ‘कैक्टस’ (2001) तथा ‘वर्तमान का सच’ (2005) हैं। संकलित लघुकथाओं में समसामायिक स्थितियों, बदलते जीवन मूल्यों, पारिवारिक सम्बन्धों में आ रहे स्वार्थजनित बदलावों तथा समाज में व्याप विसंगतियों, विद्युतपताओं के नानाविध चित्र देखने को मिलते हैं। जबलपुर में लघुकथा के विकास की दुन्दुभि सन् 1980 के आगमन के साथ ही ऊँची आवाज में सुनाई दी है। फलस्वरूप जबलपुर के अनेकानेक लघुकथाकार सन् 2000 के आरम्भ के साथ ही लघुकथा की रचनाशीलता के साथ जुड़े और ऐसे जुड़े कि जबलपुर में मानों लघुकथा लेखन की लम्बी परम्परा चल निकली, जो अद्यतन है।

जबलपुर के सन् 2000 के बाद लघुकथा के क्षेत्र में आये लघुकथाकारों में डॉ. कुँवर प्रेमिल सन् 2005 में ‘अनुवांशिकी’ तथा सन् 2011 में ‘अन्ततः’ लघुकथा संग्रह के साथ अपनी उपस्थिति दर्शाने में सफल हुए। इसके उपरांत सन् 2005 में रामप्रसाद अटल का लघुकथा संग्रह ‘नई सदी की लघुकथाएँ’, गुरुनाम सिंह रीहल का ‘तलाश’ (2007), प्रदीप शशांक का ‘वह अजनबी’ (2009), मनोहर शर्मा माया का ‘मकड़जाल’ (2010), सनातन वाजपेई का ‘चीखती लपटें’ (2011) श्रीमती लक्ष्मी शर्मा का ‘मुखौटे’ (2011), अविनाश दत्तात्रेय कस्तूरे का ‘आमने-सामने’ (2013), मधुकर पराग का ‘एक सच यह भी’ (2013), गीता गीत का ‘जामुन का पेड़’ (2013), राकेश भ्रमर का ‘उसके आँसू’ (2015) शशिकला सेन का ‘उजाले की किरण’ (2016), सुदेश तन्मय का ‘अन्दर एक समन्दर’, शशिकला सेन का ‘उजाले की किरण’ (2016), मनीषा गौतम का ‘इधर कुँआ उधर खाई’ (2018), राजकुमारी नायक का ‘युगाना’ (2018), छाया त्रिवेदी का ‘जुबैदा खाला की खीर’ (2019), मधु जैन का ‘एक कतरा रोशनी’ (2019), तथा पवन जैन का ‘फाउण्टेन पेन’ (2021) में प्रकाशित होकर सामने आये।

मोह. मुइनुद्दीन 'अतहर' द्वारा त्रैमासिक रूप में प्रकाशित पत्रिका 'लघुकथा अभिव्यक्ति' और इसी पत्रिका के समानान्तर कुँवर प्रेमिल द्वारा 'प्रतिनिधि लघुकथाएँ' का वार्षिकी रूप से क्रमिक प्रकाशन ने जबलपुर शहर में लघुकथा के लेखन कर्म में मानों क्रांति पैदा कर दी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान, सेठ गोविंद दास, ओशो, और व्यंग्य समाट हरिशंकर परसाई की रचनात्मक शक्ति से आंदोलित जबलपुर का साहित्य, संस्कृति और दर्शन विषयक परिवेश इतना प्रभावी रहा है कि यहाँ साहित्य की अन्यान्य विधाओं की भाँति लघुकथा-विधा को चमकाने वाले और भी ऐसे नाम हैं जिनका लघुकथा संकलन चाहे नहीं आया हो मगर उनका लघुकथा-लेखन समाज के विभिन्न रंगों-रूपों से ओतप्रोत हुआ। लघुकथा में सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण करने में ईमानदार बना हुआ है। इस शृंखला में प्रभात दुबे अग्रिम पंक्ति के लघुकथाकार हैं जिनकी अनेक लघुकथाएँ समय-समय पर देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं। सन् 2015 से सतत रूप से लघुकथा लिखने वाले पवन जैन की लघुकथाओं का प्रकाशन देश की अन्यान्य पत्रिकाओं के साथ 'साहित्य अमृत' के लघुकथा विशेषांक में भी हुआ है। अर्चना मलैया, आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल', सनातन कुमार वाजपेयी, मिथिलेश बिलगैयाँ, अशोक श्रीवास्तव 'सिफर', नीता कुमार, ओम प्रकाश बजाज, शशि पुरवार, सुमनलता श्रीवास्तव, सुरेंद्रसिंह पवार ऐसे नाम हैं जो लघुकथा लेखन में निरंतर संलग्न हैं।

नर्मदा तट का हर कंकर शंकर है। जबलपुर का हर लघुकथाकार अपनी लघुकथाओं में ज्यादातर सामाजिक मुद्दे को उठाकर सामने आया है। सामाजिक समस्याओं का निष्पादन लघुकथाओं में करना ही जबलपुर के लघुकथाकारों का मानो 'शगल' है और यहाँ वर्तमान में विच्छिन्न हो रहे समाज को मार्गदर्शन करने में जरूरी-सा जान पड़ता है।

ग्वालियर : संगीत और कला से छिद्रिल भूमि पर लघुकथा की उपज-

ग्वालियर के रामतनु हिन्दुस्तानी (तानसेन) शास्त्रीय संगीत के महानज्ञाता थे। संगीत सम्राट तानसेन की नगरी ग्वालियर के लिए कहावत प्रसिद्ध है कि 'यहाँ बच्चे रोते हैं', तो सुर में, और पत्थर लुढ़कते हैं, तो ताल में।' सुर और ताल की संगम स्थली ग्वालियर में लघुकथा-लेखन पनपते-पनपते ही पनपा है तथापि लघुकथा क्षेत्र में डॉ. नरेन्द्र लाहा का नाम इस कारण ऐतिहासिक है कि डॉ. लाहा ने विगत सदी के सातवें दशक यानी 1975-76 से ही लघुकथा लेखन प्रारम्भ कर दिया था। नतीजतन सन् 1985 में डॉ. लाहा का प्रथम लघुकथा संग्रह 'वापसी' प्रकाशित होकर सामने आया। डॉ. लाहा की लघुकथाओं में कहीं सामाजिक रंग की मिठास है तो कहीं उनकी लघुकथाओं में असामाजिक दंश से उपजे व्यंग्य की खटास है। सन् 1986 में डॉ. नरेन्द्र लाहा का दूसरा लघुकथा संग्रह प्रभात' प्रकाशित हुआ है तो इसी क्रम में एक लम्बे अन्तराल के बाद सन् 2003 में उनका त्रुतीय लघुकथा संकलन 'अनुभव' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। व्यक्ति और समाजमूलक चेतना के कई गहरे रंग डॉ. लाहा की लघुकथाओं में यत्र-तत्र बिखरे हुए मिलते हैं।

सामाजिक विसंगतियों का ताना-बाना बुनती हुई लघुकथाकार माता प्रसाद शुक्ल ने लघुकथाओं का एकल संग्रह 'लाईन हाजिर हैं' 2018 में जारी किया और इसी परम्परा में ग्वालियर की विख्यात महिला लघुकथाकार सीमा जैन की लघुकथाओं का संग्रह 'लम्हों की गाथा' सन् 2018 में प्रकाशित हुआ। 'लम्हों की गाथा' संग्रह की पाठकीय दृष्टि से लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि संग्रह की बढ़ती हुई माँग के कारण शीघ्र ही सन् 2019 में इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित होकर सामने आया। सीमा जैन की

लघुकथाओं में सामाजिक विद्रूपताओं, मानव के बीच अविश्वास की बढ़ती स्थितियों तथा मानवीय व्यवहार और नैतिक आचरणों में आई गिरावटों की विस्तृत दृष्टि देखने को मिलती है।

ग्वालियर के अन्य प्रमुख लघुकथाकार जो उनकी प्रतिनिधि लघुकथा के रूप में यत्र-तत्र प्रकाशित हुए हैं अथवा जाने जाते हैं उनमें रमेश कटारिया (जागरूकता), सुनीता पाठक (गँगा आत्म सम्मान), आरती खेड़कर (पगली, शान), भगवत भट्ट (बालमन), कुन्दा जोगलेकर (आईना), श्रीमती कमलेश 'कमल' (प्यासे रिश्ते) के नाम हैं, जो लघुकथा लेखन कार्य में निरन्तर संलग्न बने हुए हैं।

गंजबासोदा : पाराशरी और बेतवा नदी के बीच एक नदी लघुकथा की-

“लघुकथाकार द्वारा लघुकथा विधा को लघुकथाओं का योगदान” इस उक्ति के सन्दर्भ में यदि बात की जाये तो इसका सीधा अर्थ है गंजबासोदा के लघुकथाकार पारस दासोत द्वारा लघुकथा जगत को अपने प्रकाशित लघुकथा संग्रहों का बहुमूल्य अविस्मरणीय योगदान दिया गया है। ‘एक भरोसा, एक बल, एक आस-विश्वास’ की एकनिष्ठ धारणा से जुड़कर लघुकथाकार पारस दासोत ने केवल और केवल लघुकथा विधा को ही अपनाया और मृत्यु पर्यन्त इसी विधा में कलम के सिपाही बने रहे। अभी मेरी दृष्टि में लघुकथाकार पारस दासोत जैसा दूसरा लघुकथाकार नहीं आया है जिसने लघुकथा फलक पर पारस दासोत की तरह अद्वारह लघुकथा-संग्रहों के प्रकाशन की विजेता पारी खेली है।

लघुकथाकार पारस दासोत के प्रकाशित क्रमवार लघुकथा संग्रह इस प्रकार है; ‘एक और अभिमन्यु’ (1986), ‘प्रयोग’ (1990), ‘परसु’ (1990), ‘कदम बढ़ाती चूड़ियाँ’ (1990), ‘समक्ष’ (1991), ‘पुस्तक की आवाज’ (1991), ईश्वर (1993), ‘तेरी मेरी उसकी बात’ (1996), ‘सीटी वाला रबड़ का गुड़ा’ (पाकिस्तान से उर्दू अनुवाद प्रकाशित) (1998), ‘सीधी है भोली कला’ (2009), ‘मेरी मानवेतर’ लघुकथाएँ (2010), ‘यथास्थिति वाद के खिलाफ मेरी लघुकथाएँ’ (2012), ‘मेरी किञ्चर केन्द्रित लघुकथाएँ’ (2013), ‘मेरी अलंकारिक लघुकथाएँ’ (2014), ‘नारी मन-विज्ञान : मेरी लघुकथाएँ’ (2014), ‘मेरी प्रतीकात्मक लघुकथाएँ’ (2014), घायल इंकलाब (2014)।

लघुकथाकार पारस दासोत लघुकथा यात्रा पथ पर निरन्तर चलते हुए भी लघुकथा की जमीन पर अपना अंगदी पाँव टिकाये रहे। उनकी लघुकथाओं के आरोह-अवरोह पर कोई क्या कह रहा है, इससे सर्वथा अन्जान रहते हुए लघुकथा लेखन के लक्ष्य को जीवनभर साधते रहे। उनकी अधिकतर लघुकथाओं में ‘संवाद शैली’ देखी-परखी जा सकती है। ‘बड़ी बात को सांकेतिक रूप से कहना और छोटी बात को लघुकथा की सीमा में बड़ी बनाकर प्रस्तुत करना, यही शऊर पारस दासोत को लघुकथाकार पारस दासोत की संज्ञा से सम्मानित बनाने का आधार है। भारतभर के लघुकथाकारों के पास लघुकथा लेखन का हुनर हो सकता है, लेकिन पारस दासोत लघुकथा की तहजीब लिखने के पक्ष में ऐसा एक नाम है जो लघुकथा के इतिहास में अमूल्य योगदान देने के लिए सदा याद किया जायेगा।

मध्यप्रदेश के गाँव, कस्बे, शहर सभी लघुकथामय-

लघुकथा विधा के प्रति चुम्बकीय आकर्षण जिस संघन रूप में मध्यप्रदेश के लघुकथाकारों में देखा जा रहा है उसका वर्णन डाक-टिकिट के पीछे लिखना मध्यप्रदेश के लघुकथाकारों का लघुकथा-लेखन के प्रति औत्सुक्य को नजर अन्दाज करना है। वस्तुतः मध्यप्रदेश में लघुकथा-लेखन का जज्बा

पूर्णमासी के पूर्ण चाँद की तरह है जिसमें मध्यप्रदेश में लघुकथा लेखन की सोलह कलाएँ विद्यमान हैं।

‘डग-डग रोटी, पग-पग नीर’, डग-डग लघुकथा, पग-पग लघुकथाकार। यहाँ प्रस्तुत है मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थलों से आने वाले लघुकथाकारों के नाम सहित उनकी पहचान कायम करने वाली लघुकथाएँ— लघुकथा लेखन का तराना शुरू करते हैं ‘तराना’ के लघुकथाकार सुनील गाईड (लघुकथा : अपनी-अपनी फिक्र) के नाम से। आगे के क्रम में तराना के ही अरविन्द दीक्षित (दूध का कर्ज) पचौर के कृष्णमोहन अम्बोज (यह माँ है, टाईम) सेंवढ़ा की डॉ. कामिनी (हीरामन का अस्तित्व बोध, अन्नदाता की आँख से), मक्सी के अशोक आनन्द (डकार, भीड़), सुन्दरसी के डॉ. बी.एल. मालवीय (रिमाण्ड, समझ का फेर), जामनेर के बंशीधर बंधु (चिन्तनीय, निर्लज्ज), मनावर के गोविंद सेन (उपयोग, पराया सुख), महिदपुर के जगदीश ज्वलन्त (दो तलवारें, बादा), महिदपुर के ही जगदीश कश्यप (नागरिक, जानवर भी रोते हैं), भिण्ड के देवेन्द्रसिंह दाऊ (प्रसाद, खबरदार), बुरहानपुर के सन्तोष परिहार (भारत मेरा देश), गुना के सुगमचन्द्र जैन ‘नलिन’ (जल ही जीवन, गोली), गुना के ही मनोज कुमार शर्मा (दृष्टि कोण, गरीबों की प्याऊ) मण्डला के डॉ. शरद नारायण खरे (संवेदनाएँ), छिंदवाड़ा के गोवर्धन यादव (छोटी सी चिड़िया), छिंदवाड़ा के ही देवेन्द्र मिश्रा (गंगा की पुकार) छिंदवाड़ा के ही प्रभुदयाल शर्मा (सिद्धान्त का सवाल), झाबुआ के रामशंकर चंचल (झीतरा, रहस्य), मन्दसौर के राजमल डॉंगी (कथा मंच, भय, उदास), बैतूल के रामचरण यादव (परायी पीड़ा), सतना की तारा निगम (मैया), देवास के डॉ. प्रदीप उपाध्याय की (क्या लेना-देना), यशोधरा भटनागर की लघुकथा संग्रह ‘एलबम’ इत्यादि लघुकथाकारों की लघुकथाएँ समकालीन जीवन की विसंगतियों पर प्रकाश डालती हैं।

‘अन्त भला तो सब भला’ के आधार पर गुजरखेड़ा (महू) की लघुकथाकार नीता श्रीवास्तव का लघुकथा संग्रह ‘आईना’ (2019) प्रकाशित हो चुका है। संग्रह में ‘बहू है ना’, ‘नशा’, ‘छोटे लोग’ और ‘खैर करी रब्बा’ बहुचर्चित लघुकथाएँ हैं।

मध्यप्रदेश, भारतवर्ष का दिल है और इस दिल में धड़कती हैं लघुकथाएँ! लघुकथा लेखन का जिस तरह विशद कार्य मध्यप्रदेश में चल रहा है, लघुकथाओं की अन्तःवस्तु की तलाश में गम्भीरता के साथ संलग्न रहते हुए, गहन अनुसंधान के बूते लघुकथाओं का सृजन मध्यप्रदेशवासी दे रहे हैं, ऐसी लघुकथाओं की गुणवत्ता का पेटेण्ट या एकस्व’ होना जरूरी है। क्यों मगर? तो इसका जवाब यह कि कोई लघुकथाकार प्रदेश के लघुकथाकारों की लघुकथा विषयक रचनाशीलता को ‘चुराकर कहीं चेप ना जाए।’

मध्यप्रदेश में लघुकथा विषयक यदि सृजन कार्य का निश्चित समय निर्धारण करें तो अनिश्चितता के हाशिए पर खड़े माखनलाल चतुर्वेदी को छोड़ दिया जाए तो मध्यप्रदेश में लघुकथा लेखन/प्रकाशन का सूत्रपात रामनारायण उपाध्याय की लघुकथाओं ‘मजदूरी और मकान, आटा और सीमेण्ट’ से प्रामाणिक रूप में मिलता है, जिसकी नजीर यह कि यह दोनों लघुकथाएँ इन्दौर में स्थापित श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की विगत सन् 1927 से निरन्तर प्रकाशित हो रही ‘वीणा’ पत्रिका में सन् 1944 के नवम्बर अंक में पृष्ठ 21 पर छपी हुई मिलती है। महत्वपूर्ण बात यह कि लघुकथा लेखन की दृष्टि से मध्यप्रदेश में लघुकथा लेखन पचहत्तर वर्ष की यात्रा तय कर हीरक जयन्ती’ की कालावधि पूर्ण कर चुका है।

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.) मो. 9329581414

संतोष सुपेकर

उज्जैन और लघुकथा

भगवान महाकाल, कवि कालिदास और गुरु गोरखनाथ का नगर है उज्जैन। यहाँ प्रतिवर्ष भव्य 'कालिदास समारोह' का आयोजन होता है और प्रति बारह वर्ष में सिंहस्थ (कुंभ) मेला लगता है जिसमें करोड़ों श्रद्धालु आते हैं। मध्यप्रदेश के गठन के बाद सबसे पहले विश्वविद्यालय की स्थापना उज्जैन में ही हुई थी।

साहित्य की हर विधा की तरह लघुकथा में भी उज्जैन में काफी सृजन कार्य हुए हैं। 1981 में श्री राजेन्द्र सक्सेना (अब स्वर्गीय) का संग्रह 'महँगाई अदालत में हाजिर हो' प्रकाशित हुआ था। कुछ वर्षों के बाद 1990 में श्रीराम दवे के सम्पादन में लघुकथा फोल्डर 'भूख के डर से' प्रकाशित हुआ था। 1996 में डाक्टर शैलेन्द्र पाराशर के सम्पादन में साहित्य मंथन संस्था से लघुकथा संकलन 'सरोकार' का प्रकाशन हुआ था जिसमें 20 रचनाकार शामिल थे। सन् 2000 में स्व. श्री अरविंद नीमा 'जय' की लघुकथाओं का संग्रह 'गागर में सागर' नाम से प्रकाशित हुआ था जिसे उनके परिवार ने उनके देहावसान के बाद प्रकाशित करवाया था। इसमें उनकी 32 हिंदी और 22 मालवी बोली की लघुकथाएँ शामिल थीं। वर्ष 2002 में डाक्टर प्रभाकर शर्मा और सरस निर्मोही के सम्पादन में 'सागर के मोती' लघुकथा संकलन प्रकाशित हुआ जिसमें उस समय आयोजित एक लघुकथा प्रतियोगिता के विजेताओं की भी रचनाएँ शामिल थीं। 2003 में श्रीराम दवे के सम्पादन में 'त्रिवेणी' लघुकथा संकलन प्रकाशित हुआ जिसमें योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सुरेश शर्मा (अब स्वर्गीय) और प्रतापसिंह सोढ़ी की लघुकथाएँ शामिल थीं। बैंककर्मियों की साहित्यिक संस्था 'प्राची' ने सन् 2001-2002 के दरम्यान उज्जैन में लघुकथा गोष्ठियाँ आयोजित की थीं। इसी प्रकार श्री जगदीश तोमर के निर्देशन में प्रेमचंद सृजन पीठ, उज्जैन ने भी लघुकथा गोष्ठियाँ आयोजित की थीं। बाद के वर्षों में विभिन्न लघुकथाकारों के संग्रह/संकलन प्रकाशित हुए जिनका वर्णन निम्नानुसार है-

1. श्रीमती मीरा जैन का 'मीरा जैन की सौ लघुकथाएँ' वर्ष 2003 में,
2. सतीश राठी के सम्पादन में सन्तोष सुपेकर और राजेन्द्र नागर 'निरन्तर' का संयुक्त लघुकथा संकलन 'साथ चलते हुए' वर्ष 2004 में,
3. सन्तोष सुपेकर का 'हाशिये का आदमी' वर्ष 2007 में,
4. राधेश्याम पाठक 'उत्तम' का संग्रह 'पहचान' वर्ष 2008 में,
5. इसी वर्ष श्री पाठक का मालवी बोली में लघुकथा संग्रह 'नी तीन में, नी तेरा में',
6. 2009 में मोहम्मद आरिफ का 'अर्थ के आँसू' प्रकाशित हुआ।
7. सन 2009 में ही राधेश्याम पाठक 'उत्तम' का संग्रह 'बात करना बेकार है'
8. सन्तोष सुपेकर का 'बन्द आँखों का समाज' वर्ष 2010 में प्रकाशित हुआ।

9. 2010 में ही मीरा जैन का ‘101 लघुकथाएँ’,
10. मोहम्मद आरिफ का “‘गाँधीगिरी” लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुआ।
11. 2011 में शब्दप्रवाह साहित्यिक संस्था द्वारा 198 लघुकथाकारों की रचनाओं से युक्त लघुकथा विशेषांक संदीप ‘सृजन’ और कमलेश व्यास ‘कमल’ के सम्पादन में निकला।
12. वर्ष 2011 में ही राजेंद्र नागर ‘निरन्तर’ का ‘खूँटी पर लटका सच’ प्रकाशित हुआ।
13. वर्ष 2012 में प्रेमचंद सृजनपीठ, उज्जैन द्वारा प्रोफेसर बी.एल.आच्छा के सम्पादन में देशभर के 229 लघुकथाकारों का विशाल 242 पृष्ठों का लघुकथा संकलन ‘संवाद सृजन’ प्रकाशित हुआ। 14. सन् 2012 में ही डॉक्टर संदीप नाडकर्णी के संकलन ‘नौ दो ग्यारह’ में 11 लघुकथाएँ संकलित थी।
15. इसी वर्ष राधेश्याम पाठक ‘उत्तम’ का संग्रह ‘पहचान’ प्रकाशित हुआ।
16. वर्ष 2013 में सन्तोष सुपेकर का लघुकथा संग्रह ‘भ्रम के बाजार में’ प्रकाशित हुआ जिसमें 153 लघुकथाएँ थी।
17. वर्ष 2013 में ही सन्तोष सुपेकर के सम्पादन में राजेंद्र देवधरे ‘दर्पण’ और राधेश्याम पाठक ‘उत्तम’ की लघुकथाओं का फोल्डर ‘शब्द सफर के साथी’ प्रकाशित हुआ।
18. इसी वर्ष (2013 में) कोमल वाधवानी ‘प्रेरणा’ का संग्रह ‘नयन नीर’ प्रकाशित हुआ। उल्लेखनीय है कि ‘प्रेरणा’ जी दृष्टिबाधित रचनाकार हैं।
19. ‘बंद आँखों का समाज’ (सन्तोष सुपेकर) का मराठी संस्करण ‘डोलस पण अन्ध समाज’ (अनुवादक श्रीमती आरती कुलकर्णी) भी 2013 में निकला।
20. 2015 में ‘प्रेरणाजी’ का दूसरा लघुकथा संग्रह ‘कदम कदम पर’ निकला।
- 21-23. वर्ष 2016 में वाणी दवे का ‘अस्थायी चारदीवारी’, कोमल वाधवानी ‘प्रेरणा’ का ‘यादों का दस्तावेज़’, मीरा जैन का ‘सम्यक लघुकथाएँ’ लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए।
24. वर्ष 2017 में सन्तोष सुपेकर का चौथा लघुकथा संग्रह ‘हँसी की चीखें’ प्रकाशित हुआ।
25. 2018 में डॉक्टर वन्दना गुप्ता के संकलन ‘बर्फ में दबी आग’ में कुछ लघुकथाएँ संकलित थीं।
26. 2019 में मीरा जैन का ‘मानव मीत लघुकथाएँ’ प्रकाशित हुआ।
27. 2020 में सन्तोष सुपेकर का पाँचवा लघुकथा संग्रह ‘सातवें पत्रे की खबर’ प्रकाशित हुआ जिसमें 112 लघुकथाएँ संकलित हैं।
28. 2021 में उज्जैन के सन्तोष सुपेकर और इंदौर के राममूरत ‘राही’ के सम्पादन में, देश का पहला, अनाथ जीवन पर आधारित लघुकथा संकलन ‘अनाथ जीवन का दर्द’ अपना प्रकाशन भोपाल के सहयोग से प्रकाशित हुआ।
29. 2021 में ही उज्जैन के सन्तोष सुपेकर के सम्पादन, संयोजन में लघुकथा साक्षात्कार का संकलन ‘उत्कण्ठा के चलते’ एच आई पब्लिकेशन, उज्जैन से प्रकाशित हुआ जिसमें लघुकथा से जुड़े मध्यप्रदेश के सात लघुकथाकारों/समीक्षकों सर्वे श्री सूर्यकान्त नागर, सतीश राठी, डॉ शैलेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, कांता राय, वसुधा गाडगिल और अंतरा करवडे के साथ ही तीन अन्य

विधाओं से जुड़े और लघुकथा के एक सामान्य पाठक से भी लघुकथा को लेकर प्रश्न पूछे गए थे। 30. 2021 में ही डॉक्टर सन्दीप नाडकर्णी का लघुकथा संग्रह 'हम हिंदुस्तानी' प्रकाशित हुआ जिसमें 51 लघुकथाएँ हैं।

इनके अलावा संस्था 'सरल काव्यांजलि, उज्जैन' द्वारा वर्ष 2018 एवं 2019 में समय-समय पर लघुकथा कार्यशालाएँ आयोजित की गई जिसमें डॉक्टर उमेश महादोशी, श्यामसुंदर अग्रवाल, डॉक्टर बलराम अग्रवाल, जगदीश राय कुलारियाँ, माधव नागदा, सतीश राठी, बी. एल. आच्छा, रामयतन यादव, कांता रॉय जैसी लघुकथा जगत की ख्यात हस्तियों ने शिरकत की। सरल काव्यांजलि संस्था ने 2020 के हिन्दी दिवस, 14 सितंबर से देश के ख्यात लघुकथाकारों को सम्मानित करने का निश्चय किया। 2020 में सूर्यकान्त नागर, सतीश राठी, कांता रॉय और 2021 में योगराज प्रभाकर, डॉक्टर उमेश महादोशी और राममूरत 'राही' को डिजिटल सम्मान प्रदान किये गए। शहर के साहित्यकार सन्तोष सुपेकर ने अनेक रचनाकारों की लघुकथाओं का अंग्रेजी अनुवाद भी किया है जो प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में छपता रहा है। उन्होंने लघुकथा को पाठ्यक्रमों में शामिल करने हेतु केंद्र और राज्य सरकारों को पत्र भी लिखे हैं। सर्वश्री सतीश राठी, राजेन्द्र नागर 'निरन्तर' और सन्तोष सुपेकर की 20-20 लघुकथाओं का अनुवाद बांग्ला भाषा में हो चुका है। सन्तोष सुपेकर के लघुकथा अवदान पर लघुकथा कलश, पटियाला, पंजाब में आलेख भी प्रकाशित हुआ है। श्री सुपेकर की लघुकथाओं पर कनाडा के कुसुम झवाली और नेपाल की रचना शर्मा ने नेपाली भाषा में अभिनयात्मक वाचन किया है।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में डॉक्टर शैलेन्द्र कुमार शर्मा के निदेशन में कुमारी भारती ललवानी द्वारा 2003 में 'लघुकथा परम्परा में सतीश राठी का योगदान' विषय पर एम. फिल. स्तर का शोधकार्य हुआ। इसी प्रकार 'मीरा जैन की लघुकथाओं का अनुशीलन' विषय पर प्रशांत कुशवाहा ने डॉक्टर गीता नायक के निर्देशन में विक्रम विश्वविद्यालय में शोध प्रस्तुत किया। यहीं पर डॉक्टर धर्मेन्द्र वर्मा ने लघुकथाकार स्व. चन्द्रशेखर दुबे के साहित्य पर शोध किया। स्व.डॉ. सतीश दुबे पर भी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में शोध कार्य हुआ है। लघुकथा जगत के प्रमुख हस्ताक्षर श्री विक्रम सोनी (अब स्वर्गीय) भी उज्जैन से सम्बद्ध रहे हैं। संस्था 'सरल काव्यांजलि' ने वर्ष 2013 में उनके निवास पर जाकर श्री सोनी का सम्मान किया था। उज्जैन के ही आशीष जौहरी, आशागंगा शिरढोणकर, योगेन्द्र माथुर, श्रद्धा गुप्ता, आशीष जौहरी ने भी कई लघुकथाएँ लिखी हैं। इसी प्रकार सतीश राठी और श्याम गोविंद ने भी उज्जैन में रहकर लघुकथा क्षेत्र में काफी सृजन किया है। उज्जैन जिले के तराना से डॉक्टर इसाक 'अश्क' और श्री सुरेश शर्मा (अब दोनों स्वर्गीय) के संयुक्त सम्पादन में 'समांतर' पत्रिका का लघुकथा विशेषांक निकला था।

संपर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9424816096

घनश्याम मैथिल 'अमृत'

बालसाहित्य में बालमन की लघुकथाओं की उपस्थिति : एक विवेचन

कहानी, किस्सा, वृत्तान्त, कथा, लघुकथा सब गद्य परिवार के एक सदस्य हैं जिनमें जहाँ कहानी तत्व की समानता है वहीं शिल्पगत दृष्टि से बहुत से भेद भी हैं। कथा सृजन में भी उनके कथ्य और कथानक को लेकर पौराणिक कथाएँ, धार्मिक कथाएँ, नीति-कथाएँ, बोधकथाएँ, साहस कथाएँ, शिकार कथाएँ, हास्य कथाएँ, व्यंग्य कथाएँ, लघुकथाएँ जैसे अनेक भेद हैं।

यानी इन विविध कथाओं में इनके सृजन शिल्प को लेकर चाहे जो भेद हों परन्तु कथा तत्व सबमें अनिवार्य है। कथा-कहानी किस तरह से बच्चों को अपनी और आकर्षित करती है उन्हें जिज्ञासु बनाती है इसे समझने के लिए मुझे यहाँ वर्ष 1979 में आई एक फ़िल्म 'मिस्टर नटवर लाल' का वो मशहूर गाना स्मरण आ रहा है जिसमें सुप्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन बच्चों के साथ एक गाना गाते हैं- 'आओ बच्चो आज तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ / शेर की। कहानी सुनोगे / हूँ हूँ मेरे पास आओ मेरे दोस्तों एक किस्सा सुनो ..।' इस गाने में किस्सा सुनाने का तरीका, बालमन पर उसका पड़ने वाला प्रभाव, आगे जानने की जिज्ञासा, मनोरंजन आदि का बड़ा सुंदर और प्रभावी चित्रण है। आधुनिक लघुकथा पुरातन लघुकथाओं से कई दृष्टि से बिल्कुल अलग है। लघुकथा हमारी प्राचीन परंपरा और साहित्य का अनिवार्य हिस्सा रही है, यह हमारे प्राचीन वेदों, पुराणों ग्रन्थों, उपनिषदों, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि में नीतिकथा, बोधकथा, रूपक, दृष्टांत के रूप में सदैव उपस्थित रही है। यानी लघुकथा कोई नवीन शब्द अथवा विधा नहीं है, बस समकालीन लघुकथा पर अपने समय का प्रभाव पड़ा है और आज वह विसंगतियों विडम्बनाओं और विद्रूपताओं पर तीखा और पैना प्रहार करने वाली जन विधा बन गयी है।

वर्तमान लघुकथा के भी विविध स्वरूप हमारे सामने आते हैं जैसे स्त्री-विमर्श की लघुकथाएँ, दिव्यांग जगत की लघुकथाएँ, अंधविश्वास की लघुकथाएँ, हास्य-व्यंग्य की लघुकथाएँ, ज्ञान-विज्ञान की लघुकथाएँ, पर्यावरण और प्रकृति प्रेम की लघुकथाएँ, मानवेतर लघुकथाएँ बालमन की लघुकथाएँ आदि।

हमारे साहित्य में भी बालसाहित्य का विशिष्ट स्थान है। बच्चों का साहित्य कई दृष्टि से प्रौढ़ साहित्य से बिल्कुल अलग होता है और बालसाहित्य में भी आयु-वर्ग की दृष्टि से तीन भेद किये जाते हैं, क्योंकि हर आयु के बच्चे का मानसिक स्तर अलग होता है जो बच्चा 3 से 5 वर्ष की आयु का होता है वही बच्चा जब 6 से 10 वर्ष या 12 से 16 वर्ष का होता है तो उसकी आवश्यकताएँ, उसके सीखने की प्रवृत्ति एकदम बदल जाती है, अतः बच्चों के लिए सृजन करने से पूर्व हमें उस आयु वर्ग के बच्चे के मनोविज्ञान को समझना जरूरी होता है, तभी कहा गया है बच्चों के लिए लिखने के लिए लेखक को स्वयं बच्चा बनना पड़ता है, यह परकाया प्रवेश सहज नहीं होता।

बाल साहित्य की विविध विधाओं में कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि सभी पर्याप्त मात्रा में लिखे जा रहे हैं, परन्तु बालघुकथाओं के सृजन में अभी बहुत कम काम हुआ है, हम बाल लघुकथा सृजन द्वारा बच्चों में, अपने संस्कार और संस्कृति, राष्ट्र-प्रेम, परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्व, ज्ञान-विज्ञान आदि के प्रति सहज ही सम्बेदना के भाव के साथ दायित्वबोध जगा सकते हैं, बस बाललघुकथा बालमन के अनुरूप सहज सरल और रोचकता के गुण से भरपूर हो।

बच्चों के लिए जो साहित्य लघुकथाओं के विविध स्वरूपों में सदियों पूर्व से बच्चों के मनोरंजन के साथ उनमें नीति और ज्ञान का भाव जागृत करने का कार्य करता रहा है उसमें पण्डित विष्णु शर्मा रचित 'पंचतंत्र' का नाम सबसे ऊपर है। यह छोटी-छोटी नीति-कथाएँ बच्चों में ईमानदारी, नेतृत्व क्षमता, आपसी सौहार्दपूर्ण व्यवहार को बच्चों के कोमल मन पर गहराई से अंकित करने की अद्भुत क्षमता रखता है। इसी के साथ 'हितोपदेश' की कथाएँ जिनके रचयिता नारायण पण्डित हैं भी पशु-पक्षियों के माध्यम से बच्चों को जीवनोपयोगी उपदेश बहुत प्रभावी ढंग से देती हैं।

शौर्य और पराक्रम के प्रतीक राजा विक्रमादित्य एक महान आदर्श और प्रतापी राजा थे। महाकवि भट्ट द्वारा रचित 'बेताल-पच्चीसी' की रहस्यमयी कथाएँ आज भी बच्चों को अपनी और आकर्षित करती हैं, इसी के साथ 'सिंहासन-बत्तीसी' में बत्तीस पुतलियों की राजा विक्रमादित्य की विशेषता बताती लोक -कथाएँ आज भी न सिर्फ बच्चों को बल्कि बड़ों को भी मनोरंजन के साथ साहस शौर्य और कठिन समय में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने में सहायक हैं। इसके साथ ही आंध्रप्रदेश के विजयनगरम साम्राज्य के राजा कृष्णादेव राय और उनके अष्टदिग्गजों में से एक सबसे चतुर और कुशाग्र बुद्धि के तेनालीराम और राज दरबार के तथाचार्य और उनके शिष्य धनाचार्य के मध्य गहरे हास्य-बोध के साथ विभिन्न संकटों से उबरने के जो उपाय तेनालीरामा लाते हैं वे अनूठे रोचक और बड़े प्रभावी हैं। साथ ही बच्चों के बीच 'अकबर-बीरबल' के किस्से बीरबल की वाक्‌पटुता और चतुराई से भरे पड़े हैं, यह छोटे छोटे किस्से न सिर्फ बच्चों का मनोरंजन करते हैं बल्कि हँसते खेलते गुदगुदाते जीवन में प्रेरणादायी सीख भी दे जाते हैं।

बच्चों में मनोरंजन के साथ सीख देने में मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से भी अहम स्थान रखते हैं, मुल्ला एक दार्शनिक सूफी संत थे जो अपनी बुद्धिमत्ता के साथ हँसते-हँसते बड़ी से बड़ी समस्याओं से छुटकारे का सहज ही निदान अपनी बातों से कर जाते हैं, इसीके साथ 'अरेबियन नाइट्स' यानी अलिफ-लैला के किस्से जिसमें सिंदबाद जहाजी, अलादीन का जादुई चिराग, अलीबाबा चालीस चोर आदि घटनाएं तिलिस्म, रहस्य-रोमांच से भरपूर बाल मनोरंजन की कहानियों का प्रभावी प्रस्तुतिकरण है जो बच्चों को साहस के साथ मुश्किलों से लड़ने और ईमानदारी के साथ सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

प्रसिद्ध लेखक आर.के.नारायणन की कृति 'मालगुडी डेज' भी बच्चों के लोकप्रिय साहित्य में मील का पत्थर है, मालगुडी डेज बच्चों के साथ ही बड़ों का भी सर्वकालिक लोकप्रिय धारावाहिक

रहा है। ‘स्वामी एंड फ्रेंड्स’ तथा ‘वेंडर ऑफ स्वीट्स’ जैसी अमर बालकथाओं ने इसे लोकप्रियता के शिखर तक पहुँचाया और सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर.के.लक्ष्मण के व्यंग्य-चित्रों ने इस धारावाहिक को और प्रभावी तथा बच्चों के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ने वाले बनाया।

बच्चों में साहित्य के प्रति लगाव उत्पन्न करने में बाल-पत्र पत्रिकाओं का भी बड़ा योगदान रहा है, भले ही कुछ लोकप्रिय बाल पत्रिकाएँ समय के साथ अन्यान्य कारणों से बंद हो गयी हों अथवा अपने प्रकाशन अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हों उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता ऐसी ही अनेक पत्रिकाओं में से कुछ उल्लेखनीय नाम हैं चंदा मामा, लोटपोट, नन्हे-सम्राट, सुमन सौरभ, नन्दन, चंपक, देवपुत्र, बालवाणी, अपना देश, अभिनव बालमन, बाल प्रहरी, बालहंस, स्नेह, बालवाटिका, बाल युग, बालभास्कर अपना बचपन इत्यादि। इसके साथ ही साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश की पत्रिका ‘साक्षात्कार’ राजस्थान साहित्य अकादमी की पत्रिका ‘मधुमती’ समय-समय पर अपने बालसाहित्य विशेषांक भी प्रकाशित करती रही हैं। बाललघुकथाओं का सृजन लगभग सभी लघुकथाकारों ने किया है। भले आलोचक कुछ भी कहें परन्तु समकालीन लघुकथा की दृष्टि से तत्कालीन समय की कसौटी पर यह लघुकथाएँ पूरी तरह खरी उतरती हैं जैसे मुंशी प्रेमचंद की ‘मिट्ठू’, ‘पागल हाथी’, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की ‘महावीर और गाढ़ीवान’, सुपरिचित व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की ‘चूहा और मैं’, सुधार, ‘अकाल उत्सव’, ‘बाएँ क्यों चलें’ आदि लघुकथाएँ पाठक के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती हैं। अपने समय के ख्यात एक और व्यंग्यकार शरद जोशी की ‘बुद्धिजीवियों का दायित्व’, क्रमशः प्रगति’, ‘और शेर की गुफा में न्याय’ जैसी अनेक लघुकथाएँ बड़ी मारक व प्रेरक हैं। इसके साथ ही ‘अक्ल बड़ी या भैंस’, लघुकथा सुकेश साहनी, ‘अपना अपना जीवन’, लघुकथा रामेश्वर कंबोज हिमांशु सहित अनेक लघुकथाकारों की बाललघुकथाओं की बड़ी लम्बी व समृद्ध सूची है।

वरिष्ठ लघुकथाकार आलोचक डॉ. अशोक भाटिया का एकल लघुकथा संग्रह ‘बालकांड’ आया है जिसमें उनकी बालमनोभावों के अनुकूल सत्ताइस लघुकथाएँ संग्रहीत हैं। चित्ताकर्षक चित्रों के साथ यह लघुकथाएँ जिनके सभी पात्र बच्चे हैं हमें अपने आसपास के परिवेश, आज के बच्चों के मनोभावों, विचारों को रेखांकित करती सहज-सरल बाललघुकथायें हैं। इसके साथ ही एक अन्य एकल लघुकथा संग्रह वरिष्ठ और सुपरिचित लघुकथाकार डॉ. श्याम सुंदर दीसि का प्रकाशित हुआ जिसमें दीसि जी की उन्नीस महत्वपूर्ण बाललघुकथायें सम्मिलित हैं, अन्य एकल बाललघुकथा संग्रहों में ‘बेटी व अन्य लघुकथाएँ’ लघुकथाकार पद्मजा शर्मा, डॉ. लता अग्रवाल का ‘तितली फिर आये’ लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं। निश्चित ही ये लघुकथाएँ भी हमारे बाललघुकथा साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

लघुकथा शोध केंद्र की निदेशक वरिष्ठ लघुकथाकार कांता रॉय भी अपने सम्पादन में प्रकाशित होने वाले ‘लघुकथा वृत्त’ (मासिक) में ‘बालमन की लघुकथाओं का स्थायी स्तम्भ रखती हैं जिसमें देश-विदेश के लघुकथाकारों की चुनिंदा महत्वपूर्ण लघुकथाएँ पाठकों को पढ़ने को मिलती हैं। इसके साथ ही कांता रॉय के सम्पादन में ‘बालमन की लघुकथाएँ’ शीर्षक से एक

महत्त्वपूर्ण साझा संग्रह भी आया जिसमें देशभर के लगभग छत्तीस लघुकथाकारों की एक सौ साठ बालमन की महत्त्वपूर्ण लघुकथाएँ सम्मिलित हैं। इन लघुकथाकारों में अरुण कुमार गुप्ता, अरुण अर्णव खरे, अर्चना मिश्र, अनीता झा, अर्विना गहलोत, कल्पना मिश्र, कनक हरलालका, कृष्णा मनु, कुमकुम गुप्ता, कांता रॉय, कोमल वाधवानी, डॉ. चंद्रा सायता, ज्योति शर्मा, जया आर्य, प्रेरणा गुप्ता, वीणा शर्मा, महिमा वर्मा, मालती बसन्त, डॉ. मिथलेश दीक्षित, मित्री मिश्रा, डॉ. नीना छिब्बर, रेणु गुप्ता, वंदना सहाय, डॉ. वर्षा ढोबले, विभा रश्मि, विजय जोशी, डॉ. क्षमा सिसोदिया, सुनीता प्रकाश, संजय पठाड़े शेष, संजीव आहूजा, शेख शहजाद उस्मानी, शोभना श्याम, श्रद्धा दीक्षित, हेमंत राणा के नाम प्रमुख हैं।

इसके साथ ही घनश्याम मैथिल 'अमृत' की लघुकथा 'छोटू का स्कूल' (लघुकथा संग्रह 'जहाँ काम आवै सुई ...') तथा 'अँगूठा टेक विद्यार्थी' (लघुकथा संग्रह ...एक लोहार की।) का भी उल्लेख किया जा सकता है। 'चलें नीड़ की ओर' सम्पादक - श्रीमती कांता राय में श्रीमती मेघा मैथिल की 'अबोध' लघुकथा भी पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। इसके साथ ही 'दृष्टि' लघुकथा पत्रिका सम्पादक-अशोक जैन, 'क्षितिज' लघुकथा पत्रिका सम्पादक-सतीश राठी 'लघुकथा कलश', सम्पादक - योगराज प्रभाकर सहित लघुकथा की अन्य पत्र-पत्रिकाओं में बालमन की लघुकथाओं को स्थान मिलता रहता है। इंदौर से प्रकाशित 'वीणा' (मासिक) सम्पादक - राकेश शर्मा, भोपाल से प्रकाशित 'अक्षरा' (मासिक) सम्पादक - कैलाशचंद पन्त, 'कर्मनिष्ठा' (मासिक) सम्पादक - डॉ. मोहन तिवारी आनन्द सहित देश की अन्य महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ बालमन की लघुकथाओं को पूरे सम्मान के साथ प्रकाशित कर रही हैं।

अभी बालमन की लघुकथाओं पर महत्त्वपूर्ण सृजन होना शेष है। निश्चित ही बालमन की लघुकथाओं की ओर बच्चे आकर्षित होंगे। इनमें निहित संदेशों को सहज ग्राह्य कर राष्ट्र और समाज के निर्माण में अग्रणी भूमिका अदा करेंगे। बाललघुकथाओं से बच्चों का सहज ही कम समय में रुचिकर ढंग से मनोरंजन के साथ सर्वांगीण विकास होगा, बच्चों के लिए उनके मनोविज्ञान के अनुकूल उत्कृष्ट बाल लघुकथायें लिखी जाएँ इन्हें स्कूली पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाये, इसके लिए लघुकथाकारों पर एक बड़ी जिम्मेदारी है, यदि वे गम्भीरता से इस दिशा में आगे बढ़ेंगे तो निश्चित ही बाल लघुकथा और बच्चों का भविष्य उज्ज्वल होगा।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9589251250

कांता रॉय

भोपाल में लघुकथा का परिवेश

सन 2001 से 2021

भोपाल में लघुकथा पर गतिविधियाँ प्रोफेसर कृष्ण कमलेश जी के रहते भी न के बराबर ही रही थी। उन्होंने यहाँ अपने शहर में लघुकथा के लिए ऐसी कोई जमीन अथवा परंपरा की शुरुआत नहीं की जो उनके जाने के पश्चात् कायम रह पाता। हालाँकि उन्होंने इस दिशा में लेखन के लिए लोगों को प्रेरित किया। अंतर्देशीय लघुकथा पत्रिका के जो अंक उन्होंने निकाले, वे अवश्य लघुकथा के इतिहास में महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। हिंदी लेखिका संघ मध्यप्रदेश द्वारा डॉ. राजश्री रावत की अध्यक्षता में लघुकथा पर एक कार्यशाला 2006 में अवश्य करवाई गई लेकिन वह तात्कालिक तौर पर उतने में ही सिमट कर रह गई। इसके बाद लघुकथा पर किसी संस्थान द्वारा कोई पहल नहीं की गई थी। डॉ. मालती बसंत जी ने 2014 में एक पुरस्कार हिंदी लेखिका संघ में लघुकथा विधा पर स्थापित करवाया जो भोपाल में लघुकथा को बढ़ावा देने में एक सार्थक कोशिश साबित हुई।

दिनांक, 31 अगस्त 2016 को निराला सृजन पीठ, मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग, निदेशक डॉ. देवेन्द्र दीपक द्वारा 'तिलक-2' रचना पाठ के अंतर्गत कांता रॉय और श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' को रचना पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था। हिंदी लेखिका संघ भोपाल द्वारा दिनांक 23 जनवरी 2021 को लघुकथा पर एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से वरिष्ठ साहित्यकार श्री बलराम अग्रवाल उपस्थित रहे। इस आयोजन की संयोजिका कांता रॉय थी। तत्पश्चात् डॉ. मालती बसंत द्वारा स्थापित 'श्रीकृष्णकृपा मालती महावर बसंत परमार्थ न्यास' के तहत 'लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल' की स्थापना दिनांक 21 सितंबर 2017 को इंद्रपुरी के दफ्तर में रामवल्लभ आचार्य जी के कर कमलों से हुई। इस स्थापना दिवस के अवसर पर भोपाल के चौंतीस जाने-माने साहित्यकारों ने शिरकत की। नवंबर 2017 को डॉ. मालती बसंत द्वारा विशेष आग्रह करने पर लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल को न्यास से अलग कर इसे स्वतंत्र संस्थान के रूप में रूपांतरित कर दिया गया और इसका कार्यभार पूरी तरह से कांता रॉय के सुपुर्द कर दिया गया। कांता रॉय ने संस्थान की प्रतिस्थापना करते हुए बीस कार्यकारिणी सदस्यों को संगठित करते हुए मंत्री मंडल का विस्तार किया। मानस भवन, भोपाल के सभाकक्ष में प्रत्येक महीने के तीसरे शनिवार को यह बैठक संचालित होती है। इस बीच 2019 में कला मंदिर, भोपाल द्वारा लघुकथा गोष्ठी का संचालन किया गया। मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा 2018-19 एवं 2021 वर्ष के कैलेंडर में लघुकथा गोष्ठी को नियमित तौर पर शामिल किया गया। तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल निदेशक, डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद' द्वारा गीत, कहानी, व्यंग्य के साथ लघुकथा पाठ भी का आयोजन समय-समय पर करवाया जा रहा है। सन 2019 के जनवरी माह में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा लघुकथा प्रसंग का भव्य आयोजन किया गया। सन 2020 में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 14 सितंबर से 22 सितंबर को मनाया जाने वाले भाषा उत्सव शृंखला में एक विशेष सत्र 'लघुकथा रचनात्मकता की

संभावनाएँ, शिल्पगत विशेषताएँ, भाषा और मुहावरों का प्रयोग’ पर विमर्श रखा गया जिसमें वक्ता के तौर पर शामिल रहे डॉ. हरीश नवल, श्री सूर्यकांत नागर, श्री बलराम, प्रो.बी.एल. आच्छा एवं डॉ. अशोक भाटिया। हिंदी भवन, भोपाल द्वारा लघुकथा के पुस्तकों पर भी विभिन्न विधाओं के अंतर्गत पुरस्कार दिया जा रहा है। ‘अक्षरा’ मासिकी में लघुकथा को स्थान दिया जा रहा है।

सन 2018 में लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र ‘लघुकथा वृत्त’ का प्रकाशन लघुकथा टाइम्स के नाम से शुरू हुआ जिसका विमोचन 30 मई 2018 को साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश द्वारा निदेशक, प्रोफेसर उमेश कुमार सिंह ने करवाया। इस दिन साहित्य अकादमी में ‘एक लोहार की’ लेखक श्री घनश्याम मैथिल ‘अमृत’ लघुकथा संग्रह का विमोचन, रचनापाठ एवं परिचर्चा भी करवाई गयी। इस दिन अकादमी के निदेशक श्री सिंह ने लघुकथा को प्रोत्साहन देने हेतु साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश द्वारा प्रादेशिक पुरस्कार 50,000 रुपये के लिए भी ऐतिसाहिक घोषणा की, जिसे दो वर्ष बाद साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश के निदेशक श्री विकास दवे द्वारा लागू करवाया गया। सन 2018 से दुष्यंत कुमार पांडुलिपि स्मारक निदेशक, राजुरकर राज द्वारा लघुकथा पर प्रत्येक वर्ष लघुकथा गोष्ठी करवाई जा रही है। दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय भोपाल द्वारा ‘वाल्मीकि जयंती’ पर लघुकथा शोध केंद्र भोपाल के सहयोग से वर्ष 2021 अंजय तिवारी सभागार में विशिष्ट लघुकथा गोष्ठी एवं विमर्श का आयोजन किया गया।

वनमाली सृजनपीठ एवं रवींद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ‘विश्वरंग’ के पूर्व लघुकथा शोध केंद्र भोपाल के सहयोग से सन 2019 ‘समकालीन लघुकथाकारों की चुनिंदा लघुकथाओं का रचना पाठ’ महादेवी वर्मा कक्ष हिंदी भवन भोपाल में आयोजित किया गया। लघुकथा शोध केंद्र भोपाल द्वारा सन् 2019 में लघुकथा पर्व का आयोजन 19 जून को किया गया जिसमें माधवराव सप्रे के जन्मदिवस को लघुकथा दिवस मनाने की घोषणा की गई। इस घोषणा के अवसर पर मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक श्री कैलाशचंद्र पंत, मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के पूर्व निदेशक देवेंद्र दीपक, सप्रे संग्रहालय के संस्थापक एवं निदेशक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर सहित माधवराव सप्रे के सुपौत्र श्री अशोक सप्रे एवं सुपौत्री सुप्रिया सप्रे भी उपस्थित रहे। लघुकथा वृत्त, मासिक के नवंबर 2021 तक 34 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल से परिंदे पूछते हैं (प्रथम संस्करण), परिंदे पूछते हैं(द्वितीय संस्करण), दस्तावेज 2017-18, समय की दस्तक, चलें नीड़ की ओर, रजत श्रुंखला, मानवता की लड़ाई, समकालीन लघुकथाकारों का दस्तावेज इत्यादि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं एवं दो अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन भी संस्था द्वारा आयोजित किये जा चुके हैं।

लघुकथा शोध केंद्र भोपाल में कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम निम्न प्रकार से हैं – कांता रॉय-निदेशक, जया आर्य-उपाध्यक्ष, गोकुल सोनी-उपाध्यक्ष, घनश्याम मैथिल ‘अमृत’-सचिव, मुज़फ्फर इकबाल सिद्दीकी-सह सचिव, सुनीता प्रकाश-कोषाध्यक्ष, मालती बसंत-सदस्य, रंजना शर्मा-सदस्य, शशि बंसल-सदस्य, वर्षा चौबे-सदस्य, वर्षा ढोबले-सदस्य, नीना सिंह सोलंकी-सदस्य, मधुलिका सक्सेना-सदस्य, गिरिजेश सक्सेना-सदस्य, संजय पठाड़े ‘शेष’-सदस्य, शेफालिका श्रीवास्तव-सदस्य, मौसमी परिहार-सदस्य, सतीशचन्द्र श्रीवास्तव-सदस्य, मृदुल त्यागी-सदस्य, भूपिंदर कौर-सदस्य।

लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल के सन 2021 में प्रवेश करते-करते पचास मासिक गोष्ठी, दो विशेष

गोष्ठी, दो अखिल भारतीय सम्मेलन एवं गूगल मीट संगोष्ठी के पचास से अधिक शृंखला एवं 15 दिवसीय पुस्तक पखवाड़ा भी मनाया गया है।

सन 2015 में जब हमने भोपाल में लघुकथा पर काम करना शुरू किया तो पाया कि यहाँ जमीनी तौर पर लघुकथा पर गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। मालती बसंत जी से चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि वे यहाँ अकेली पड़ गई थीं। लघुकथा को समझने एवं समझाने वाले लोग यहाँ नहीं थे। अध्येताओं की कमी थी। कहीं किसी मंच पर चर्चा नहीं की जा रही थी, इस कारण उन्होंने भी बाल साहित्य की ओर अपनी दिशा मोड़ ली। साहित्य अकादमी में एक बार श्री अशोक मनवानी जी से भेंट हुई तो उन्होंने अपनी लघुकथा संग्रह मिथ्या मंजिल के बारे में बताया, जिसका प्रकाशन वर्ष 2004 था। इसी तरह डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद' ने अपनी लघुकथा संग्रह देश बिकाऊ है, प्रकाशन वर्ष 2012 के बारे में सूचना दी। जब मासिक गोष्ठियों का दौर शुरू हुआ तो धीरे-धीरे साहित्यकारों में लघुकथा के प्रति रुझान बढ़ा। स्थापित साहित्यकारों ने लघुकथा में निरंतरता से अपना योगदान देना शुरू किया जिसमें स्वर्गीय युगेश शर्मा, श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत', श्री गोकुल सोनी, पेशे से डॉक्टर-कर्नल गिरीजेश सक्सेना, श्रीमती जया आर्य, डॉ. रामवल्लभ आचार्य, श्री आनंद तिवारी, श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय', श्री अशोक धमेनियाँ, श्री संत कुमार मालवीय, डॉ. लता अग्रवाल, कल्पना भट्ट, डॉ. विनीता राहुरीकर, डॉ. वर्षा चौबे, डॉ. कुमकुम गुप्ता, मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी, अर्चना मिश्र, सतीशचंद्र श्रीवास्तव, सरिता बघेला, महिमा वर्मा, माया दुबे, मधुलिका सक्सेना, शेफालिका श्रीवास्तव, मधुलिका श्रीवास्तव, मौसमी परिहार, कपिल शास्त्री सहित रचनाकारों की लंबी फेहरिस्त आज मौजूद है जिनकी लघुकथा संग्रह भी प्रकाशित हुई एवं कई रचनाकारों की पुस्तक के प्रकाशन के कतार में होने की सूचना भी मिल रही है।

इधर कोरोना काल में आरुणि साहित्यिक समूह, संचालक डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' भोपाल द्वारा 151 लघुकथाकारों का 2020 में सतत लघुकथा पाठ का आयोजन सोशल मीडिया पर संपन्न कराया गया।

विश्व मैत्री मंच श्रीमती संतोष श्रीवास्तव द्वारा भोपाल में वर्ष 2019 से नियमित रूप से सासाहिक लघुकथा गोष्ठी एवं प्रस्तुत लघुकथाओं पर वरिष्ठ साहित्यकार समीक्षकों द्वारा प्रस्तुत लघुकथाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी का आयोजन करवाया जाता है।

भोपाल में ऐसा नहीं था कि लघुकथा लिखी नहीं जा रही थी लेकिन विमर्श के अभाव में यहाँ छोटी कहानी जो 300 शब्दों के अंदर हो, उसे लघुकथा मानकर लिख रहे थे तथा आकारगत लघु होने को ही लघुकथा मान रहे थे। ऐसी लघुकथा बनाम लघु कहानियों पर हिंदी लेखिका संघ द्वारा दो संकलन भी प्रकाशित किया गया। एक वरिष्ठ साहित्यकार श्री जयजयराम आनंद जी ने तो इस तरह से कई लघुकथा संग्रह प्रकाशित किए। लघुकथा के लिए कोई मंच ना होने का खामियाजाओं का भुगतान कर परिमार्जित कर लिया गया है। सन 2021 तक आते-आते अकेले भोपाल में ही करीब 60 के करीब साहित्यकार ऐसे हैं जो लघुकथा पर निरंतर कार्य कर रहे हैं ऐसे में भोपाल में लघुकथा का स्वर्णम दौर भविष्य के लिए तैयार होता दिखाई दे रहा है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.)

दीपक गिरकर

लघुकथा के परिदृश्य में इंदौर का लंबा सफर

आज के दौर में लघुकथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। मालवा और निमाड़ के क्षेत्र में लघुकथा लेखन की बहुत पुरानी परंपरा रही है। मालवा और निमाड़ क्षेत्र से लघुकथा विधा की परंपरा में जो नाम आते हैं उनमें श्रद्धेय माखनलाल चतुर्वेदी एवं पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय का नाम सर्वोपरि रूप से लिया जाता है। दोनों साहित्यकार खंडवा शहर के रहे हैं। मालवा निमाड़ के लघुकथा के पितृपुरुष पद्मश्री रामनारायण जी उपाध्याय ने लघुकथा विधा में दिल से काम किया है और इस विधा को समृद्ध किया। इंदौर शहर एक ऐसा शहर रहा जो लघुकथा को बहुत प्रेम करता रहा है। लघुकथा के परिदृश्य में इंदौर शहर का विपुल योगदान है। इंदौर में लघुकथा का लंबा सफर रहा है। इंदौर के प्रथम लघुकथाकार डॉ. श्यामसुंदर व्यास थे। उन्होंने अगस्त 1945 में मात्र 18 वर्ष की आयु में लघुकथा 'ध्वनि-प्रतिध्वनि' लिखी, जो श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर की पत्रिका 'वीणा' में प्रकाशित हुई थी। श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर की मुख्य पत्रिका वीणा में डॉ. श्याम सुंदर व्यास ने बतौर संपादक लंबे समय तक लघुकथाओं का प्रकाशन किया है। चंद्रशेखर दुबे इंदौर के प्रमुख लघुकथाकार के रूप में रहे।

डॉ. सतीश दुबे ने अपना पूरा जीवन एक प्रकार से लघुकथा के लिए ही समर्पित किया। डॉ. सतीश दुबे की प्रथम लघुकथा पोनीटेल थी जो 17 अप्रैल 1966 को सासाहिक हिन्दुस्तान दिल्ली में प्रकाशित हुई थी। 'सिसकता उजास' डॉ. सतीश दुबे का प्रथम लघुकथा संग्रह था, जो वर्ष 1974 में प्रकाशित हुआ था और बहुत अधिक चर्चित रहा था। 'भीड़ में छिपा आदमी', 'राजा भी लाचार है', 'प्रेक्षाप्रह' भी डॉ. सतीश दुबे के महत्वपूर्ण लघुकथा संग्रह रहे हैं। डॉ. सतीश दुबे के कुल 9 लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए। क्षितिज के साथी श्री सुरेश शर्मा भी लघुकथा के लिए बहुत सक्रिय रहे। बुजुर्ग जीवन की लघुकथाओं का उनका एक संग्रह और एक लघुकथा 'राजा नंगा है' बहुत चर्चित रही है। निरंजन जमीदार के द्वारा मालवी में भी लघुकथाएँ लिखी गईं। श्री रमेश सिंह छाबड़ा 'अस्थिवर' एक पत्रिका 'शब्दवर' का संपादन करते थे। श्री विक्रम सोनी पर लघुकथा एक जुनून की तरह हावी थी। उन्होंने निरंतर लघुकथाएँ लिखी थीं और पत्रिका को भी बड़े मन से निकाला। श्री अरविंद नीमा शारीरिक रूप से विकलांग थे, लेकिन मन से बहुत ही सशक्त थे। लघुकथाओं के क्षेत्र में उन्होंने बड़ा काम किया है। श्रीमती रेखा कारडा इंदौर से लघुकथाकार के रूप में रही। वर्ष 1977 में नरेंद्र मौर्य और नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के संपादन में 'समांतर लघुकथाएँ' पुस्तक भी इंदौर से ही प्रकाशित हुई थी। लघुकथा लेखन के क्षेत्र में क्षितिज संस्था के अध्यक्ष श्री सतीश राठी का प्रवेश वर्ष 1977 में हुआ। उन दिनों डॉ. सतीश दुबे एक साहित्यिक संस्था 'साहित्य संगम' की मासिक गोष्ठियाँ सुदामा नगर स्थित अपने आवास पर किया करते थे और उन गोष्ठियों में सतीश राठी का लघुकथा विधा से परिचय हुआ। उस समय डॉ. सतीश दुबे के मार्गदर्शन में सतीश राठी ने लघुकथाएँ लिखना प्रारम्भ की और सतीश राठी की पहली लघुकथा 'समाजवाद' 'लघु आघात' पत्रिका में प्रकाशित हुई। लघुकथा की पहली पत्रिका 'आघात' जो बाद में फिर से 'लघु आघात' के नाम से प्रकाशित हुई,

इंदौर शहर से ही प्रारंभ हुई। 'आघात' पत्रिका के मुख्य संपादक डॉ. सतीश दुबे और संपादक विक्रम सोनी थे। अन्य संपादकीय साथियों के रूप में सर्वश्री वेद हिमांशु, वसंत निर्गुणे, महेश भंडारी रहे। 'लघु आघात' पत्रिका के मुख्य संपादक डॉ. सतीश दुबे और संपादक विक्रम सोनी, उप संपादक वेद हिमांशु, सतीश राठी, राजेंद्र पांडेय उन्मुक्त एवं महेश भंडारी रहे। इस पत्रिका का अप्रैल जून 82 अंक महिला लघुकथा अंक के रूप में प्रकाशित हुआ। कुछ समय तक पत्रिका का नियमित त्रैमासिक प्रकाशन हुआ, फिर जनवरी 1989 में पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया।

सूर्यकांत नागर, चैतन्य त्रिवेदी, प्रताप सिंह सोढ़ी, ज्योति जैन, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सतीश राठी आज के समय के इंदौर के वरिष्ठ लघुकथाकार हैं। अशोक शर्मा भारती, डॉ. वसुधा गाडगिल, अंतरा करवड़े, डॉ. चंद्रा सायता, सीमा व्यास, राममूरत राही, ब्रजेश कानूनगो, चेतना भाटी, रश्मि प्रणय बागले, मनोज सेवलकर इंदौर के प्रमुख लघुकथाकार हैं जिनके लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त इंदौर से नन्दकिशोर बर्वे, डॉक्टर अखिलेश शर्मा, सुरेश बजाज, कविता वर्मा, जितेंद्र गुप्ता, विनीता शर्मा, ललित समतानी, आर. एस. माथुर, अदितिसिंह भदौरिया, सुरेश रायकवार, सुषमा व्यास राजनिधि, उमेश कुमार नीमा, विजयसिंह चौहान, आशा बड़नरे, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. संगीता तोमर, डॉ. संगीता भारूका, मुकेश तिवारी, देवेंद्रसिंह सिसोदिया, गरिमा दुबे, सुषमा दुबे, डॉ. पुष्पारानी गर्ग, डॉ. दीपा मनीष व्यास, दीपक गिरकर भी लघुकथाएँ लिखते हैं। डॉ. वसुधा गाडगिल और अंतरा करवड़े मौलिक लघुकथा लेखन के अलावा अनुवाद के क्षेत्र में भी काफी सक्रिय हैं। सतीश राठी, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, ज्योति जैन, अंतरा करवड़े, डॉ. वसुधा गाडगिल, अशोक शर्मा भारती, राममूरत राही की लघुकथाएँ विविध भाषाओं में अनुवादित हो रही हैं। इंदौर के डॉ. पुरुषोत्तम दुबे ने लघुकथा समालोचना के क्षेत्र में बहुत अधिक काम किया है। इंदौर के लघुकथाकारों द्वारा बेहतरीन लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं।

'क्षितिज' संस्था की स्थापना 26 जून वर्ष 1983 में की गई। क्षितिज कार्यकारिणी के प्रारंभिक सदस्यों के रूप में सतीश राठी, डॉक्टर अखिलेश शर्मा, श्री सुरेश बजाज, अनंत श्रीमाली सुभाष जैन, किशन शर्मा कौशल और सुभाष त्रिवेदी रहे। क्षितिज के सदस्यों ने यह तय किया कि लघुकथा को लेकर एक पत्रिका का प्रकाशन क्षितिज नाम से ही शुरू किया जाए। लघुकथा पत्रिका 'क्षितिज' का प्रथम अंक वर्ष 1984 में प्रकाशित किया गया। इस प्रवेशांक में एक अखिल भारतीय लघुकथा प्रतियोगिता आयोजित कर उसमें पुरस्कृत लघुकथाओं को प्रकाशित किया गया था, तथा इसका लोकार्पण कार्यक्रम पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय, कथाकार मालती जोशी और कथाकार विलास गुप्ते के सान्निध्य में किया गया था। यह अंक पारस दासोत एवं किशोर बागरे के रेखांकनों से सुसज्जित था। वर्ष 1985 में दूसरा अंक पुनः एक प्रतियोगिता अंक के रूप में प्रकाशित किया गया। क्षितिज के इन दोनों अंकों की प्रस्तुति लघुकथा के जगत में एक महत्वपूर्ण पत्रिका के रूप में हुई। देश के वरिष्ठ लघुकथाकारों की उत्कृष्ट लघुकथाओं का प्रकाशन इन अंकों में हुआ।

वर्ष 1986 में क्षितिज संस्था के द्वारा 1981 से 1985 तक की श्रेष्ठ लघुकथाओं का संकलन 'तीसरा क्षितिज' पंकज प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक उस समय की चर्चित लघुकथा पुस्तक के रूप में रही। वर्ष 1986 में ही क्षितिज का वार्षिक अंक में विभिन्न राज्यों के प्रमुख लघुकथाकारों

की उत्कृष्ट लघुकथाओं को प्रकाशित किया गया। वर्ष 1986 में क्षितिज के दो अंक एक साथ प्रकाशित हुए। वर्ष 1988 में क्षितिज का अंक लघुकथा की तकनीक एवं लघुकथा के मूल्यांकन पर केंद्रित रहा। वर्ष 1988 के अंक में 51 लघुकथाकारों के लघुकथा लेखन पर पांच वरिष्ठ समालोचकों की मूल्यांकन टिप्पणियों के साथ एवं चार विशिष्ट आलेखों को शामिल कर यह अंक प्रस्तुत किया गया। इसी अंक को पुस्तक रूप में ‘मनोबल’ के नाम से भी प्रकाशित किया गया।

वर्ष 1991 में मध्य प्रदेश के पाँच लघुकथाकारों की सौ लघुकथाओं का एक संकलन ‘समक्ष’ के नाम से सतीश राठी के संपादन में प्रस्तुत हुआ। सर्वश्री पारस दासोत, राजेंद्र पांडेय उन्मुक्त, अशोक शर्मा भारती, पवन शर्मा एवं सतीश राठी की 100 लघुकथाओं की यह पुस्तक पुनः चर्चा में रही। वर्ष 2002 में सतीश राठी का लघुकथा संग्रह ‘शब्द साक्षी हैं’ प्रकाशित हुआ और साथ ही क्षितिज का नया अंक भी प्रकाशित हुआ। इस अंक में डॉ. सतीश दुबे के षष्ठीपूर्ति प्रसंग पर उनकी लघुकथाओं को प्रकाशित किया गया। 2007 में क्षितिज का नया अंक स्त्री विषयक लघुकथाओं पर केंद्रित था। क्षितिज का वर्ष 2012 का अंक मध्यप्रदेश- पंजाब लघुकथा विशेषांक के रूप में सामने आया। वर्ष 2017 में क्षितिज का नवीन अंक श्रद्धांजलि अंक के रूप में प्रस्तुत हुआ। श्रद्धांजलि खंड में स्वर्गीय पारस दासोत, स्वर्गीय सुरेश शर्मा एवं स्वर्गीय डॉ. सतीश दुबे को श्रद्धांजलि देते हुए उनके चित्र परिचय के साथ उन पर एक आलेख और उनकी लघुकथाएँ प्रस्तुत की गई थीं। गंज बासौदा से पारस दासोत ने लघुकथा पर 14 से अधिक किताबें लिखी हैं, और साथ ही क्षितिज के समस्त अंकों में मुख पृष्ठ पारस दासोत ने ही प्रदान किया है।

क्षितिज की नियमित मासिक गतिविधियाँ जारी थीं, लेकिन एक बड़े आयोजन का सपना जो क्षितिज के वरिष्ठ सदस्यों के मन में पल रहा था, उसे क्रियान्वित करने का मौका वर्ष 2018 में प्राप्त हुआ और जून, 2018 में क्षितिज द्वारा अखिल भारतीय लघुकथा सम्मलेन का आयोजन इंदौर में किया गया। क्षितिज को वर्ष 2018 जून माह में पूरे 35 वर्ष पूर्ण हो रहे थे। इस प्रसंग पर 35 वर्ष की स्मृतियों को सँजोकर एक स्मृति स्वरूप पत्रिका ‘क्षितिज सफर 35 वर्षों का’ निकाला गया तथा क्षितिज का नियमित अंक 2011 से 2017 के मध्य रची गई श्रेष्ठ लघुकथाओं के संकलन के रूप में प्रकाशित किया गया। क्षितिज को लेकर अंतरा करवड़े द्वारा बनाई गई आधा घंटे की फिल्म और नंदकिशोर बर्वे टीम द्वारा लघुकथाओं का नाट्य मंचन और अनंदा जोगलेकर एवं किशोर बागरे के द्वारा बनाये गए लघुकथा पोस्टर ने इस आयोजन को भव्य और गरिमामय बना दिया। वर्ष 2018 के जून माह के आयोजन में ही क्षितिज संस्था के द्वारा लघुकथा के लिए स्थापित विभिन्न सम्मान प्रदान किए गए, जिसमें कथाकार बलराम, लघुकथाकार बलराम अग्रवाल, बी.एल. आच्छा, योगराज प्रभाकर, सतीशराज पुष्करण, अशोक भाटिया, सुभाष नीरव, भागीरथ, कपिल शास्त्री, श्यामसुंदर दीसि, रविन्द्र व्यास, नंदकिशोर बर्वे, संदीप राशिनकर, कांता रॉय, किशोर बागरे, अनंदा जोगलेकर आदि सम्मानित किए गए। इसी आयोजन प्रसंग में क्षितिज का 200 पृष्ठों का नियमित अंक भी लोकार्पित हुआ। इस प्रसंग पर प्रकाशित क्षितिज सफर 35 वर्षों का एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में सामने आया। वर्ष 2018 क्षितिज के लिए अविस्मरणीय हो गया।

2019 का क्षितिज का अंक लघुकथा की सार्थकता की विवेचना पर केंद्रित किया गया। क्षितिज के इस अंक की की सामग्री इतनी अधिक महत्वपूर्ण थी कि उसे पुस्तक के रूप में निकालना भी जरूरी लगा

और ‘सार्थक लघुकथाएँ’ शीर्षक से उसका पुस्तक आकार में प्रकाशन भी हुआ। पुस्तक का आवरण इंदौर के प्रसिद्ध चित्रकार श्री संदीप राशिनकर के द्वारा बनाया गया। सतीश राठी के संपादन में इंदौर के 10 लघुकथाकारों की 110 लघुकथाओं का संग्रह ‘शिखर पर बैठकर’ शीर्षक से प्रकाशित हुआ। क्षितिज संस्था के द्वारा वर्ष 2018 से प्रदेश स्तर का एक समग्र सम्मान भी प्रांभ किया गया था जो वर्ष 2018 में उज्जैन के लघुकथाकार संतोष सुपेकर को दिया गया था, एवं 2019 में भोपाल की लघुकथाकार कांता राय को दिया गया था। 24 नवंबर 2019 को किए गए इस एक दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा सम्मलेन में श्री सुकेश साहनी को क्षितिज लघुकथा शिखर सम्मान, श्री माधव नागदा को क्षितिज लघुकथा समालोचना सम्मान एवं श्री कुणाल शर्मा को क्षितिज लघुकथा नवलेखन सम्मान दिया गया। इस वर्ष एक विशिष्ट सम्मान क्षितिज लघुकथा शिखर सेतु सम्मान श्री श्यामसुंदर अग्रवाल को लघुकथा के लिए उनकी दीर्घकालीन सेवा के लिए प्रदान किया गया। कोरोना महामारी के चलते वर्ष 2020 केवल ऑनलाइन आयोजन के भरोसे निकला।

26 सितम्बर 2021 को एक दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा सम्मलेन आयोजित किया गया। इसमें डॉ. कमल चोपड़ा दिल्ली (वर्ष 2020), डॉ. रामकुमार घोटड, चुरु, राजस्थान को (वर्ष 2021) क्षितिज लघुकथा शिखर सम्मान, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे को लघुकथा समालोचना सम्मान (वर्ष 2020), ज्योति जैन (वर्ष 2020), डॉ. योगेंद्र नाथ शुक्ल (वर्ष 2021) को लघुकथा समग्र सम्मान, दिव्या राकेश शर्मा गुरुग्राम (वर्ष 2020), अंजू निगम देहरादून को (वर्ष 2021) लघुकथा नवलेखन सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर 103 लघुकथाकारों की संवादात्मक लघुकथाओं का क्षितिज का ‘संवादात्मक लघुकथा अंक’ निकाला गया। इसका संपादन सतीश राठी और दीपक गिरकर द्वारा किया गया। क्षितिज का प्रत्येक अंक नई दृष्टि के साथ प्रस्तुत होता है। क्षितिज के उत्कृष्ट अंकों को देखते हुए तार सप्तक के कवि गिरिजाकुमार माथुर ने एक अपनी सारगर्भित टिप्पणी में लिखा था कि ‘लघुकथा के विभिन्न क्षितिजों को तो क्षितिज ने रेखांकित किया ही है, उसने नई जमीन भी तोड़ी है। आज की जिंदगी की कशमकश की छोटी-बड़ी घटनाओं के लघु दृश्यबिंदुओं के माध्यम से उन्हें आदमी की संवेदना का हिस्सा बनाया है।’ क्षितिज के कुछ अंकों में वरिष्ठ लघुकथाकारों एवं वरिष्ठ समालोचकों के शोधपूर्ण आलेख भी प्रकाशित हुए हैं। क्षितिज के सभी अंक लघुकथा के पाठकों, समीक्षकों, समालोचकों के साथ ही शोधार्थियों हेतु भी अत्यंत उपयोगी हैं। अभी तक क्षितिज के सभी आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुए। क्षितिज से जुड़ने से कई नवांकुर रचनाकारों ने लघुकथा विधा को समझा, अपनी रचनाओं को परिष्कृत किया और ऐसे रचनाकारों ने लघुकथा विधा में अपने को स्थापित किया। खुशी की बात है कि क्षितिज के सदस्यों के क्षितिज के वरिष्ठ लघुकथाकारों के सहयोग तथा मार्गदर्शन से लघुकथा-संग्रह तक प्रकाशित हो चुके हैं। क्षितिज के कई सदस्यों की लघुकथाओं का अनुवाद विविध भाषाओं में हो चुका है। क्षितिज के कुछ सदस्यों की लघुकथाएँ स्कूल और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हो चुकी हैं। क्षितिज संस्था पूर्ण निष्ठा से लघुकथा विधा को गुणवत्तापूर्ण तरीके से समृद्ध करने का निरंतर प्रयास कर रही है। इंदौर में क्षितिज द्वारा लघुकथा विधा को लेकर जो मुहीम शुरू की गई थी वह अब धीरे-धीरे रंग ला रही है। क्षितिज के कई सदस्य अखिल भारतीय स्तर पर सम्मानित हो चुके हैं। क्षितिज के कई वरिष्ठ लघुकथाकारों की लघुकथाएँ साहित्य जगत में कालजयी रचनाओं के रूप में स्थापित हो चुकी हैं।

विचार प्रवाह साहित्य मंच इंदौर द्वारा भी लघुकथा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। इस मंच द्वारा इंदौर के लघुकथाकारों की लघुकथाओं का एक साझा संग्रह भी प्रकाशित किया गया है। विचार प्रवाह साहित्य मंच के तहत सुषमा दुबे, मुकेश तिवारी, देवेंद्रसिंह सिसोदिया लघुकथा विधा में अच्छा काम कर रहे हैं। इंदौर में स्व. डॉ. एस. एन. तिवारी की स्मृति में मुकेश तिवारी द्वारा प्रतिवर्ष उत्कृष्ट लघुकथा लेखकों को सम्मानित किया जाता है। कथा-दर्पण साहित्य मंच द्वारा सुपरिचित कथाकार श्री कमलचंद वर्मा की स्मृति में राष्ट्रीय लघुकथा प्रतियोगिता का मासिक आयोजन किया जाता है। इस मंच के अध्यक्ष श्री अजय वर्मा हैं। इस मंच के तहत सोमवार से बुधवार लघुकथा कार्यशाला, प्रति रविवार को शब्द / चित्र आधारित लघुकथा लेखन, माह के पहले रविवार को लघुकथा वाचन का आयोजन किया जाता है। इंदौर में वामा साहित्य मंच, इंदौर लेखिका संघ और मातृभाषा उन्नयन संस्थान भी लघुकथा विधा को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9425067036

रमेश बतरा

चलोगे

रास्ता पैदल का ही था, मगर मेरी तबीयत सुस्त थी। मैंने एक रिक्शावाले को रोक लिया।

चलोगे... स्टेशन? -चलूँगा जी, अपना काम ही चलना है। रिक्शावाला गद्दी से उतरकर बाइज्जृत बोला आइए, बैठिए। किसी रिक्शेवाले से इतना सम्मान पाकर मैं आत्ममुग्ध हो गया। मेरी आवाज का अन्दाज ही अजब हो उठा- कितने पैसे लेगा?

जो मरज़ी हो दे देना, साहब! रिक्शावाले ने कहा, मगर मुझे उसकी विनम्रता में कोई सदाशयता महसूस नहीं हुई, बल्कि वह मुझे संदेहास्पद प्रतीत होने लगा। रिक्शावाला और उसकी बोलचाल में इतना सलीका, इतनी लज्जत। ...जरूर गुंडई करेगा। बिना कुछ तय किए बैठा लेगा और स्टेशन पर पहुँचकर अपने साथियों के बीच ज्यादा पैसे माँगकर मुझे जलील करेगा। इसलिए मैंने कुछ खिश होकर कहा न, तू हमें पहले ही बता दे। अपने-आप पैसे देने का झंझट मैं नहीं पालता।

झंझट काहे का साहेब, बीस-पच्चीस पैडल-भर का तो रास्ता है... अब तक तो पहुँच भी जाते स्टेशन। -फिर तू बोल ही क्यों नहीं देता अपने मुँह से? मैं अपनी बात पर अड़ा रहा। रिक्शावाले ने मुझे निगाह-भर देखा और एकदम लापरवाह होता हुआ बोला- आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे मैं साला कोई 'मुहर' ही माँग लूँगा।... आइए बैठिए, मैं उधर ही जा रहा हूँ... आप वहाँ उतर जाइएगा... बस्स?

●●

डॉ. अशोक भाटिया

लघुकथा : रचनात्मकता के आयाम

हिन्दी लघुकथा का वर्तमान रूप समृद्ध भारतीय कथा-परंपरा की देन है। हमारे समाज में कथाएँ विविध प्रयोजनों के अनुरूप विभिन्न रूपों में मौजूद रही हैं। वैदिक कथा-सूत्र, उपनिषदों की कथाएँ, बौद्ध जातक कथाएँ, जैन कथाएँ, 'पंचतंत्र' (विष्णु शर्मा), 'हितोपदेश', 'कथासरित्सागर' (सोमदेव) आदि की कथाएँ भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। 'रामायण' और 'महाभारत' में भी उपकथाओं का भंडार मिलता है। इन कथाओं से आकार लेकर लघुकथा ने आधुनिक युग की आवश्यकतानुसार अपना वर्तमान रूप पाया है। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम वर्षों में लघुकथा छोटी-सी क्यारी में अंकुरित होकर लहकने लगी थी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'परिहासिनी' में 'अंगहीन धनी' और 'अद्भुत संवाद' इसके बड़े प्रमाण हैं। इनमें जो प्रतिरोध-चेतना है, उसे तद्युगीन साहित्य में व्याप्त सांस्कृतिक प्रतिरोध की चेतना से जोड़कर देखना चाहिए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का 'अंधेर नगरी' नाटक (1881) और बालमुकुन्द गुप्त का निबन्ध-संग्रह 'शिव शंभु के चिट्ठे' (1903 ई.) इसके प्रतिनिधि उदाहरण हैं। बीसवीं सदी लघुकथा के फलने-फूलने यानी पहचान बनने की अदम्य संघर्ष-यात्रा की साक्षी है, तो इक्कीसवीं सदी के पहले दो दशक इसके फैलाव पर मुहर लगाते हैं। इस सारे परिदृश्य के महत्वपूर्ण पड़ावों की, रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में, पड़ताल करना ज़रूरी है।

वर्तमान समय में सांस्कृतिक बहुलतावाद को सांप्रदायिक भूमियों की ओर धकेलने की प्रवृत्ति उभर कर आई है। अस्वस्थ पूँजीवाद से निकली सांस्कृतिक विश्रुंखलता ने मध्यम वर्ग में एक आक्रामक नरक पैदा किया है, जिसे वे स्वर्ग समान मान रहे हैं। अतीत के गौरवान्वीकरण के चलते मध्ययुगीन सामंती मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की आक्रामक कोशिशें हो रही हैं। आज समाज में फैल रही वाचाल और कर्कश अराजकता मध्यकाल से कहीं अधिक भयावह है। यहाँ वर्तमान हालात के सन्दर्भ में लघुकथा-साहित्य पर चर्चा करना ज़रूरी है।

सांप्रदायिक उन्माद पर भीष्म साहनी के बेंचमार्क उपन्यास 'तमस' (1975) के बाद विभूतिनारायण राय का 'शहर में कर्पर्यू' और भगवान सिंह के 'अपने-अपने राम' और 'उन्माद' आदि उपन्यास आए, तो युगल का 'फूलों वाली दूब' (2009) और कमल चौपड़ा का 'अनर्थ' (2015) आदि सांप्रदायिक सद्वाव पर केन्द्रित लघुकथा-संग्रह आए। इस विषय पर युगल की 'नामान्तरण' लघुकथा हमें भीष्म साहनी की 'पाली' कहानी का स्मरण करा देती है। वैसे कोई भी सांप्रदायिक अनुष्ठान तब तक पूरा नहीं होता, जब तक अपनी आत्मा को भी 'आग के हवाले' (अमरीक सिंह दीप) न कर दिया जाए। सांप्रदायिकता का 'सूअर' (रमेश बत्तरा) तो मनुष्य की सोच में लिथड़ा पड़ा है। 'मेढ़कों के बीच' (सुकेश साहनी) रहकर तो ऐसी सोच वाला आदमी ही बन सकता है। सांप्रदायिकता की यह 'शेष कथा' (युगल) लगता नहीं कि कभी अशेष भी होगी।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की प्रसिद्ध कहानी ‘दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी’ की संत्रस्त नायिका के दो सामयिक विकल्प हिन्दी लघुकथाओं में मिलते हैं। दोनों विकल्प दुच्चे समझौतों का प्रतिरोध करते हैं। एक अर्चना वर्मा की ‘गुनहगार’ है, जो नासमझ पति और दुनिया-दोनों छोड़ जाती है। दूसरी नायिका पति को छोड़ गई तो पति स्तब्ध रह गया कि ‘वह चली क्यों गई?’ (माधव नागदा)। तीनों रचनाओं में पुरुष की नासमझी ध्रुव-सत्य की तरह कायम है।

पुरुष की ‘ठंडी आग’ (कमला चमोला) का मनोवैज्ञानिक रहस्य गाँवों में बात-बात पर स्त्रियों को नंगा घुमाने की शोभा-यात्राओं में छिपा है। रचना में इस शर्मनाक परंपरा को बदलने की चाह का ज़िक्र है, लेकिन नई पीढ़ी के लेखक खेमकरण सोमन ‘अन्तिम चारा’ लघुकथा में इसे ज़मीनी हकीकत बना देते हैं। गाँव में सूखा पड़ने पर निर्वस्त्र होकर अपने खेतों में हल चलाने की शर्मनाक परम्परा को स्त्रियाँ अपने स्वाभिमानी निर्णय से पलट देती हैं। यह ‘गुलामी की सुरक्षा’ से बाहर निकलने का बड़ा कदम है।

स्त्री का यह प्रतिरोध इकीसवीं सदी की लघुकथाओं में अधिक मुखरता से उभरा है। नब्बे के दशक में हिन्दी साहित्य के लिए स्त्री की जो केन्द्रीय स्थिति बनी थी, उसका सकारात्मक प्रभाव हिन्दी लघुकथाओं में निरन्तर बना रहा है। स्त्री की अधिकार-सजगता के बढ़ते कदम ‘फैसला’ (मैत्रेयी पुष्टा), ‘कुच्ची का कानून’ (शिवमूर्ति), ‘मैं ही आई हूँ बाबा’ (निर्देश निधि) आदि अनेक कहानियों में दिखाई देते हैं। लघुकथाओं में भी हम ऐसी दस्तक सुन सकते हैं। इतिहास, शास्त्र और पुराण-सम्मत बातों को आज की (तार्किक सोच की) स्त्री आँख मूँदकर नहीं मानती। आज की स्त्री अपने निर्णय स्वयं करेगी। समय और हालात के अनुसार उसके पास विवेक भी है, जुबान भी। शास्त्र, पुराणादि में आई-छाई स्त्री-विरोधी छवि के विरुद्ध हिन्दी लघुकथाएँ आरम्भ से ही अपने बयान दर्ज करवाती रही हैं। ‘धरती में गड़ी स्त्रियाँ’ (हरभगवान चावला) और ‘जन्म-जन्मान्तर’ (संध्या तिवारी) जैसी अनेक समकालीन लघुकथाओं में स्त्री, रूढ़ियों के अंधकार को अपने तर्क से चीरकर, नया आलोक रच रही है। स्त्री आज तार्किक ‘आधुनिका’ (कमल कपूर) है, जो परम्परा को तर्क-तुला पर कसकर अपना मार्ग सुगम बनाने को तत्पर है। इसी आधार को लेकर वह द्वाराचार के समय सास की कर्मकांडी आज्ञाओं को स-तर्क निरस्त करती है। महेश दर्पण की ‘रोजी’, सुरेश बरनवाल की ‘सौदा’ इसी तर्क-प्रक्रिया की रचनाएँ हैं। हिन्दी में ‘लिहाफ़’ (छवि निगम) जैसी, जगाने की जुगत करने वाली, संवेदन-भरपूर श्रेष्ठ लघुकथाओं की बड़ी ज़रूरत है, जो अवचेतन और साहित्य के सम्बन्धों को नए सिरे से देखने-समझने की ओर संकेत करती हैं। प्रतिरोध के इससे आगे भी कई कदम हैं, जो पुरुष-सत्ता की रूढ़िग्रस्त सोच का प्रतिकार करते हैं। कथाकार बलराम द्वारा तर्क और सलीके से उठाया गया ‘बहू का सवाल’ आज भी, पितृसत्ता को चुनौती की मुद्रा में खड़ा, हम सबसे जवाब माँग रहा है। पिता पुचकारकर, भाई लताड़कर, पति गुराकर, पुत्र तरेकर, कवि दूध-पानी का हवाला देकर, गुरुजन मंत्रवादी शान्त स्वर में और समाज-वैज्ञानिक स्त्री को अबला कहकर सदियों से उसे उसकी औकात बताते रहे, तो इस दीर्घ निरंतर क्रिया की प्रतिक्रिया कभी तो होनी थी। ‘बिगड़ैल औरत’ (मधु संधु) कही जाने वाली स्त्री (प्रतिक्रिया में) समाज को कुछ बनकर दिखाती है, तो काम करने वाली स्त्री अपनी मालिकिन की तरह ‘कैद-बा-मशक्कत’ (कमल चोपड़ा) में नहीं जीती, इसलिए बदजुबान मालिक को खरी-खरी सुनाकर काम छोड़ देती है। एक तीसरा कदम भी

है, जिसे स्त्री (समाज के सामने ही) अपने बदनीयत अफसर के गाल पर चिपकाकर उसका 'स्वागत' (श्याम सुन्दर दीसि) करती है। इसका एक अन्य आयाम भी है। एक स्त्री (बेटी) दूसरी स्त्री (माँ) का किस चतुराई और तार्किकता से इस्तेमाल करती है, इसका श्रेष्ठ निर्दर्शन विकेश निझावन की 'आचार संहिता' में मिलता है।

तर्क, जीवन-पद्धति को दिशा और धार देता है। भारतीय समाज सदियों से जिन लौह-शृंखलाओं में जकड़ा है, उनमें अंधविश्वास भी है। अंधविश्वास की जानकारी न होना इसका एक और आपदामूलक आयाम है। ज्ञान की तर्क-शक्ति और इच्छा-शक्ति मिलकर क्रिया में ढलेंगी, तो ही 'फूली' (भगीरथ) जैसी ग्रामीण स्त्रियाँ अपने को आने वाले 'भाव' के पाखंड से मुक्त करा पाएँगी। इसके लिए उन क्षेत्रों में भी उत्तरना होगा, जहाँ रचना-सौंदर्य पर तर्क-सौंदर्य इक्कीस ठहरता हो। तभी 'चप्पल के बहाने' (संध्या तिवारी) और 'पोलियो वाला लड़का' (वीरेन्द्र भाटिया) जैसी लघुकथाएँ अपनी सामाजिक भूमिका निभा सकेंगी। रुदियाँ तोड़ने को खड़ी हो चुकी हर स्त्री आज किसी 'वीरांगना' (कमल कपूर) से कम नहीं। 'सत्य' और 'शिव' के विवेक से सम्पन्न तर्कणा-शक्ति रचना को किस प्रकार विश्वसनीयता का पुष्ट आधार प्रदान करती है—इसे भगीरथ की 'जरूरी चर्चा' लघुकथा में देख सकते हैं। इसके बाद पाठक के मानस-पटल पर छाए भ्रम के बादल (यदि हैं तो) छितरने में देर नहीं लगेगी।

आलोक धन्वा की एक चर्चित कविता है—'किसने मेरी आत्मा को बचाया?' हिन्दी कहानियों में पाठक की आत्मा को बचाने वाले ऐसे उदात्त चरित्र बहुत मिलेंगे। 'ईदगाह' (प्रेमचंद) कहानी के हामिद और 'झुटपुटा' (भीष्म साहनी) के सिख ड्राइवर की तरह लघुकथाओं में भी कुछ पात्र ऐसे हैं, जो अपनी भूमिका का आलोक फैलाकर यादगार चरित्र बन गए हैं। ऐसी कुछ लघुकथाएँ हैं—ईश्वर का चेहरा (विष्णु प्रभाकर), प्रेम-पत्र (राजेन्द्र यादव), पंजाबी पुत्र (सिमर सदोष), जहर के खिलाफ (शिवनारायण), ऊँचाई (रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'), गोभोजन कथा (बलराम अग्रवाल), रिश्ता (श्याम सुन्दर दीसि), इन्सानियत का स्वाद (महेन्द्र कुमार), डर (महेश शर्मा), मनीऑर्डर (खेमकरण सोमन), युग-मार्ग (अशोक भाटिया) आदि। ऐसी रचनाओं से पाठक के भीतर संवेदना की शीतल बयार और (अंधकार को तिरोहित करने में सक्षम) विवेक का प्रकाश घर कर जाता है।

वर्ग-भेद और वर्गीय चेतना हमारी सामाजिक संरचना के आधार हैं। प्रेमचन्द की 'नशा' और यशपाल की 'आदमी का बच्चा' व 'दुःख का अधिकार' इस संरचना की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं। इनके बाद आनन्द मोहन अवस्थी की 'इन्सान' लघुकथा पढ़ें, जहाँ निर्धन द्वारा धनिक का जीवन बचाने पर भी वर्गीय दीवार पर खरोंच तक नहीं पड़ती। लगे हाथ वर्ग-भेद पर दो भिन्न परिणतियों की लघुकथाओं—नासिरा शर्मा की 'रुतबा' और मार्टिन जॉन की 'वजूद अपना-अपना' का भी पाठ कर लें। इसके बाद मध्यवर्ग के 'नरक' (उदय प्रकाश) में विराजमान फरिश्तों की सोच ही देखनी बचती है।

अन्याय और जड़ता का विरोध समकालीन हिन्दी लघुकथा की प्रमुख प्रवृत्ति है। आनन्द की 'धरोहर' लघुकथा पढ़ने के बाद मन में फाँस-सी गड़ी रह जाती है। राजघरानों की धरोहर के तो संग्रहालय बने हैं, जबकि एक आम ग्रामीण की धरोहर तो साहूकार के पास गिरवी रखा उसके बाप का अँगूठा है, जिससे वह मुक्ति चाहता है। शोषण और बाजारवाद की प्रवृत्ति लघुकथा में अचानक नहीं आ गई, बल्कि

इसके बढ़ते कदमों को पहचाना जा सकता है। प्रेमचंद की ‘कश्मीरी सेब’ में बाजारवाद की जो संकोच-भरी झलक है, वह बिक्री की होड़ में पत्नी को ‘बाजार’ (अरुण कुमार) में दुकान पर बेधड़क बिठाने तक पहुँच गई। अब तीसरे कदम में ‘भूमंडलीकरण’ (आनन्द) का बन्दर दोनों की ज़मीन और निवाला छीन चुका है। ये नए दानव (भूमंडलीकरण, बाजारवाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ) सारी पृथ्वी को रोंद डालने पर आमादा हैं।

यथार्थ न तो यथास्थिति है, न सतह पर है, न ही जड़ और स्थिर है। विश्व के प्रमुख धर्मों का यथार्थ व्यक्त करने के लिए रचनाकारों ने ऊपर की ‘श्रद्धालु’ पर्त को हटाकर हमें वस्तुस्थिति के ‘दर्शन’ कराए हैं। विष्णु प्रभाकर की ‘भगवान और पुजारी’ लघुकथा में की गई तार्किक टिप्पणी हमारे मन में सहज ही उत्तर जाती है। ईश्वर, अब्दूत जाति के व्यक्ति को, घमंडी जातिवादी पुजारी के सामने, मंदिर के बारे कहता है—‘तुम वहाँ जाकर क्या करोगे? हजारों वर्ष बीत गए हैं, मैं भी वहाँ नहीं गया हूँ।’ पुजारी के बहाने यह भारतीय समाज की जातिगत संकीर्णता पर एक बड़े रचनाकार की गंभीर टिप्पणी है। वास्तव में शुद्धतावादी सोच और इसकी क्रियान्विति के पीछे भी अनदीखती हिंसा सक्रिय रहती है।

रामवृक्ष बेनीपुरी ने ‘पुरुष और परमेश्वर’ निबंध में लिखा है कि ‘परमेश्वर की उपासना बहुत हुई, अब मनुष्य मनुष्य की उपासना करे।’ हरभगवान चावला ‘ईश्वर से बातचीत’ लघुकथा में इससे आगे जाकर ईश्वर से ही मनुष्य को कहलवाते हैं—‘काश, तुमने मेरी प्रतिष्ठा के लिए नहीं, मनुष्यमात्र की प्रतिष्ठा के लिए कुछ लड़ाइयाँ लड़ी होतीं।’ वैसे, धर्म के लिए मरने-मारने का खेल ‘धर्म-युद्ध’ माना जाता है। लेकिन वास्तविक धर्म का खुलापन ‘आत्मा के पार’ (सुधीर द्विवेदी) जाकर ही महसूस होता है। वरना तो आजकल निरन्तर बढ़ रही ‘असहिष्णुता’ (मार्टिन जॉन) अपने आप ही ‘धर्मरक्षक’ (मार्टिन जॉन) की पोल खोल देती है। इन्हें पढ़ने के बाद हरभगवान चावला की ‘मोहल्ला द्रोह’ ही पढ़ सकते हैं। फिर उसके बाद विचारोद्वेलन और पुनर्विचार की प्रक्रिया शुरू होगी।

धर्म हमें तर्क या न्याय नहीं देता, अपराध-बोध देता है—यह हर दुनियावी धर्म का बुनियादी सिद्धांत है। इस सत्य को उभारने की प्रक्रिया में चैतन्य त्रिवेदी की ‘धर्म-पुस्तक’ लघुकथा वास्तविक धर्म-पुस्तक का दायित्व निभा जाती है। धर्म के आवरण के पीछे स्वार्थ और तज्जनित कुतर्क ही तो ‘धर्म की बात’ (सिमर सदोष) बने हुए हैं। इसमें (स्वार्थवश) अपनी कही बात के खिलाफ जाने की बेशर्मी भी शामिल है। सिमर सदोष की यह रचना अद्भुत चीनी लघुकथा ‘ऊँट के बालों की फतूही’ की तर्क-शृंखला का सहज स्मरण करा देती है। आखिर ‘गागर में सागर’ का अर्थ ‘अरथ अमित अरु आखर थोरे’ (तुलसीदास) ही तो है। माधव नागदा एक लघुकथा में ही स्पष्ट कर देते हैं कि योगी से बड़ा ‘कर्मयोगी’ होता है। इधर-उधर की बात की जरूरत ही क्या है?

समकालीन साहित्य का विश्लेषण और मूल्यांकन पुराने मानदंडों पर करना न तर्कसंगत है, न हमें किसी विवेकशील निष्कर्ष तक पहुँचा सकता है। लेकिन परम्परा की व्याख्या में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का रचनात्मक उपयोग बेहतर समाज की अभीप्सा का अवश्य परिचायक है। हिन्दी लघुकथाओं में इतिहास और पुराण के विविध संदर्भों को नई दृष्टि से वर्तमान यथार्थ के कठोर धरातल पर उकेरा गया है। अमरीक सिंह दीप की ‘ययाति’, बलराम की ‘महाभारत’ और ‘चुनाव-संग्राम’, रामकुमार

आत्रेय की 'एकलव्य की विडम्बना', संध्या तिवारी की 'एक और पुरु' आदि कितनी ही लघुकथाएँ पौराणिक सन्दर्भों में तार्किक हस्तक्षेप करती हैं और उसे वर्तमान से जोड़ नई अर्थान्वितियाँ रचती हैं। इस दृष्टि से पृथ्वीराज अरोड़ा की 'दया' और 'दुःख' लघुकथाओं में मौजूद वर्ग-भेद भी इनके प्रभाव को बढ़ाता है।

विश्व की सबसे बड़ी समस्याएँ भूख और युद्ध हैं। विडम्बना यह है कि युद्ध का कारण भूख नहीं, कुछ और ही होता है। भूख स्वयं में एक युद्ध है। पेट की यह भूख 'पेट का कछुआ' (युगल) पालने को भी विवश कर देती है। भूख से उबरने के लिए 'झूबते लोग' (युगल) स्त्री-देह भी दाँव पर लगा देने को विवश हैं। भूख और बेरोजगारी की तड़प, बेचैनी और अपमान सबसे ज्यादा जगदीश कश्यप की लघुकथाओं ('पहला गरीब', 'पहला उम्मीदवार' आदि) में मिलते हैं। अभावगत विवशता और तज्जनित अपमान हीरालाल नागर ('दस का नोट', 'अन्तिम अवसर') और भगवान वैद्य प्रखर ('फिर कभी') की लघुकथाओं में भी उसी अनुपात में मिलते हैं। इसके साथ जाति-सर्प का दंश, अपमान और उसका प्रतिकार सबसे ज्यादा विक्रम सोनी की 'जूते की जात', 'अन्तहीन सिलसिला' जैसी लघुकथाओं में प्रखरता के साथ व्यक्त हुआ है।

लघुकथा साहित्य में राजनीति पर बहुत कम, लेकिन बेहतर रचनाएँ मिलती हैं। वर्तमान राजनीतिज्ञों की मुद्राएँ बुद्ध की होती हैं, लेकिन भीतर 'शेर' (असगर वजाहत) बैठा होता है। इस राजनीतिक जंगल के 'राजा' (असगर वजाहत) दरअसल लोमड़ी की सन्तानें हैं। 'मसीहा की आँखें' (बलराम) हालाँकि बताती हैं कि सत्ता हथियाना और परिवर्तन-दो अलग मुद्दे हैं, फिर भी यदि सत्ता-मात्र ही लक्ष्य होगा तो 'महाभारत' (बलराम) होनी अवश्यंभावी है।

प्रमुख कवि भगवत रावत की कविता 'भइया आपसे नहीं' की पंक्तियाँ हैं-'धनिया पत्ती की दो डगातें/यूँ ही झोले में डलवाने के लिए/क्या कभी/किसी सब्जी वाले से/आपने पूछे हैं/उसके हाल-चाल।' इसके समकक्ष कमल गुप्त के कथानायक की 'होशियारी' देखें कि रिक्षा वाले से रोज उसके घर का हाल पूछ, अपनी सिगरेट के लिए उसे दो रुपए कम देकर खुद को होशियार मानता है।

शहरी मध्यवर्ग में संयुक्त परिवार कहीं बचे भी हैं तो निहित स्वार्थ और आर्थिक प्राथमिकताओं के चलते वहाँ दररें झाँकने लगी हैं। महादेवी वर्मा ने 'क्षणदा' (1956) के एक निबन्ध में इस 'निकटता की दूरी से सावधान रहने' को कहा था। पर वह दूरी भी अब 'इतनी दूर' (कमल चोपड़ा) जा चुकी है कि इमारत की एक मंजिल हजारों मील दूर हो गई है।

विभिन्न रचनाकार एक ही स्थिति को अपनी संवेदना, दृष्टि और शिल्प की भिन्नता के अनुसार बिल्कुल भिन्न रूप में रचते हैं। पिता की मृत्यु को लेकर रवीन्द्र वर्मा बताते हैं कि 'कोई अकेला नहीं है', तो मुकेश वर्मा 'आग' के ज़रिए संवेदना व्यक्त करते हैं। मुकेश वर्मा में तरल सघनता है, तो रवीन्द्र वर्मा में विलक्षणता। इसी विषय पर सत्यनारायण 'आईना' का बिम्ब और प्रतीक लेकर आते हैं। संवेदना जब सजग और रचनात्मक मार्ग पर हो, तो 'चिट्ठियाँ' (मुकेश वर्मा) जैसी रचना कहीं से भी उग-खिल सकती है। मुकेश वर्मा बया की तरह बारीक बुनते हैं। इसी प्रकार शिवनारायण युवा पीढ़ी को 'जहर के खिलाफ' जो रचनात्मक समझ देते हैं, वह काम किसी कहानी के बस का नहीं है।

आइए, घर-द्वार की ओर चलें। बंद घर के द्वार पर पहले रचनाकार की संवेदना और कल्पना की दस्तक पड़ती है, तभी ‘खुलता बंद घर’ (चैतन्य त्रिवेदी) आकार लेता है। इसके पीछे एक पिता की संवेदना सक्रिय है। महेश शर्मा की ‘पिता’ लघुकथा चुपके से, अर्थ-क्षम बुनावट में, बता जाती है कि कौन किसके पिता का, कैसा दायित्व निभा रहा है। एक और पिता है, जो ‘दिन-रात का फर्क’ (श्याम सुन्दर दीसि) जानता है; तभी दृढ़ निश्चय के साथ बेटे को अपने नए सुखी जीवन का निर्णय सुनाता है। यह नया यथार्थ है।

नए यथार्थ के और कई आयाम इधर की लघुकथाओं में उभर कर आए हैं। आज का समय ‘नेट-युग’ है, जो ‘ऊबे हुए सुखी’ (महेश दर्पण) लोगों की जमात पैदा कर रहा है। इसका ‘नया सपना’ (चित्रा राणा राघव) भी आभासी दुनिया में मैदान मारने तक सीमित है। आभासी संसार का ‘दीमक’ (सविता इन्द्र गुप्ता) वास्तविक जीवन को इस कदर खा रहा है कि सुहागरात भी फेसबुकिया मित्रों की चैटिंग और व्हाट्सऐप की बलि चढ़ जाती है। नई पीढ़ी देह की ‘परिधि’ (चित्रा राणा राघव) को सर्वोपरि न मान जीवन के प्रति अकुंठ और विवेकशील सोच बना रही है। आज की स्त्री सदियों से ढोया हुआ ‘जिंदा का बोझ’ (सुषमा गुप्ता) उतार फेंकना चाहती है, जो दरअसल धरती पर बोझ है। चन्द्रेश कुमार छतलानी ‘ह्यूमन हाइबरनेशन’ में आशंका व्यक्त करते हैं कि दो शताब्दियों बाद धरती पर शहद के अलावा सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

भारतीय परम्परा में शब्द को ‘ब्रह्म’ कहा गया है। जीवन और साहित्य में इसका समुचित प्रयोग सटीक अर्थ का संवाहक बनता है। लघुकथा के आकार और प्रकार को देखते हुए उसमें कथित के साथ अकथित को बुनने का उपक्रम यथार्थ के समाहार की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। वाल्टर बेंजामिन लिखते हैं—‘अनुपस्थिति उपस्थिति की उच्चतम कोटि है।’ इसके लिए जिस सूक्ष्मता और बेधकता की सामर्थ्य चाहिए, उसे विख्यात अरबी रचनाकार खलील जिब्रान के अलावा हिन्दी के अनेक लेखकों की लघुकथाओं में देख सकते हैं। जिब्रान की ‘आदमी की परतें’ में आदमी के व्यक्तित्व के सात पक्ष या ‘निद्राजीवी’ में माँ-बेटी के भीतर-बाहर की अंतर्विरोधी परतें लेखकीय सजगता व सामर्थ्य के कारण अचंभित करती हैं। विश्वविख्यात चित्रकार पिकासो का कथन—‘मैं जो सोचता हूँ उसे चित्रित करता हूँ उसे नहीं जो देखता हूँ’-विचारों के कलात्मक रूपान्तरण को रेखांकित करता है। कथा की निर्मिति में विषयवस्तु और वैचारिकता के साथ शिल्प की अन्विति से ही उसमें साहित्यिकता व कलात्मकता के गुण समाहित होने का मार्ग प्रशस्त होता है, जो उसे स्थायित्व दे जाता है। चिन्तन को वस्तु में तब्दील करने का यत्न कलात्मक तो होगा ही। ऐसी कुछ लघुकथाएँ देखें। भगीरथ की ‘जरूरी चर्चा’ लघुकथा के बने-बनाए चौखटे तोड़कर हमें वैचारिक आलोक में ले जाती है। वैचारिकता से विनिर्मित रचनाओं में महेन्द्र कुमार की ‘गुनाहों का हिसाब’, सुरेश बरनवाल की ‘बर्बर आदमी’, अशोक भाटिया की ‘पहचान’ आदि लघुकथाएँ बड़े आशयों का लघुकथा में सफल कलात्मक रूपान्तरण हैं। ‘बर्बर आदमी’ में कहा गया सच कोई कहानी इतने असरदार तरीके से नहीं कह सकती। रचना में अनुपस्थित सच अन्त में उपस्थित होकर पात्रों की चारित्रिक छवि को कैसे उलट देता है—इसे महेश शर्मा की ‘पिता’ लघुकथा में श्रेष्ठ रूप में देख सकते हैं।

काव्यात्मक प्रयोग की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद, नागार्जुन, अज्ञेय, मुक्तिबोध, धर्मबीर भारती, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु आदि की कहानियाँ व उपन्यास देख लें या कथात्मकता को कविता में साधने वाले विष्णु खरे, भगवत रावत, उदय प्रकाश, विष्णु नागर, नरेश सक्सेना आदि की कविताएँ पढ़ लें-इन सबका साहित्य कथा और काव्य के उभयनिष्ठ गुणों से समन्वित है, इसलिए भी वह अधिक समृद्ध अर्थगर्भी, आकर्षक बन पड़ा है। कवि जब कविता में कथा को साध सकता है (तब भी, जबकि कविता में खूब खुलापन है) तो लघुकथा में तो अभिव्यक्ति-सामर्थ्य बढ़ाने के लिए काव्य के उपादानों को साधना और भी ज़रूरी है। परिपक्व दृष्टिकोण से वयस्क शिल्प तक पहुँचे ऐसे प्रयासों में अवधेश कुमार से लेकर असगर वजाहत, रमेश बतरा, उदय प्रकाश, विष्णु नागर, सुकेश वर्मा, चैतन्य त्रिवेदी के बाद एक झलक बलराम अग्रवाल, अशोक भाटिया, सुकेश साहनी में मिलती है, फिर हरभगवान चावला और संध्या तिवारी अपनी महत्ती उपस्थिति दर्ज करते हैं। कुल मिलाकर ऐसे प्रयास कम हुए हैं। लघुकथा-क्षेत्र में विधा और लेखक-दोनों स्तरों पर जो रुद्धियाँ जड़ पकड़ चुकी हैं, उनसे पार पाने पर ही लघुकथा में ऐसे शैलिक प्रयोगों की तरफ ध्यान जा सकता है। यह काम लेखकों को ही करना होगा। निराला 'दिशा ज्ञात गत हो बहे गंध' केवल लिखते नहीं, बल्कि हर बंधन को एक हद तक तोड़कर आगे निकल जाते हैं। 'तुलसीदास' खंडकाव्य में मौलिक छंद निर्मित करने वाले निराला बाद में 'जूही की कली' कविता से हिन्दी की मुक्त छन्द की काव्यधारा का प्रारंभ करते हैं। इसके पीछे 'कहन' की सामर्थ्य बढ़ाने का मन्तव्य रहा होगा। लघुकथा की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति-सामर्थ्य तो यथार्थ के दबाव को अनुभव कर उसे व्यक्त करने की कलात्मक संभावनाएँ तलाश करने पर ही सामने आएगी। तभी बाहर (आकारगत) और भीतर (प्रकारगत)-दोनों धरातलों पर नई रचनात्मक परिणतियाँ सामने आ सकेंगी।

लेखक यथार्थ-मार्ग पर चलकर भी कहन का अपना अलग मार्ग चुनता है। यथार्थ कोई ठस्स पड़ी वस्तु नहीं, जिसे उठाकर 'कागज-पैन' के हवाले कर दिया जाए। उसे, दृष्टि की टॉर्च से, दूर बीहड़ में अँधेरों में भी, खोजना पड़ता है। उसके रेशे-रेशे से जो धागा बनता है, उससे 'जुलाहा', अन्ततः, रचना-वस्त्र बनाता है। रचना में यथार्थ का कोई नया आयाम हो या फिर परिचित यथार्थ को नूतन रूप में प्रस्तुत किया जाए; उसमें भी किसी नए कोण को उभारा जा सके, तो यह रचना-हित के साथ पाठक-हित में भी होगा। कुछ उदाहरण देखें। आदिवासी स्त्रियों के शोषण की गाथा लघुकथा में कहनी हो, तो 'लस्से' (जसबीर चावला) की सटीक शैली रचना को हमारी स्मृति में बसा देती है। लघुकथा में सांकेतिकता देखनी हो तो 'शेष कथा' (युगल), 'बिना नाल का घोड़ा' (बलराम अग्रवाल), 'गोशत की गंध' (सुकेश साहनी), 'धरती में गड़ी स्त्रियाँ' (हरभगवान चावला), 'पिता' (महेश वर्मा) आदि कितनी ही लघुकथाएँ स्मृतियों में जगह बना लेती हैं। समान्तर शैली का सौन्दर्य देखना हो, तो 'सौंदर्य बोध : अर्थबोध' (आनन्द), 'विचार और भावना' (कांता रॉय) सबसे पहले ध्यान में आती हैं। निर्वाहमूलक सौंदर्य देखना हो तो 'मुक्ति' (अर्चना वर्मा) का ट्रीटमेंट जुगनू, अँधेरे व रोशनी के जारिए कथा को बोधमूलकता और नीरसता-दोनों से बचाकर आपको यथार्थ के रोचक प्रतीक-पथ पर ले जाएगा। बिस्म और प्रतीक जहाँ मिल जाएँ, तो 'जादुई दुनिया का यथार्थ' (आनन्द) अपनी कला से हमें अभिभूत कर देता है। रचना के ही किसी उपकरण से कथा कहलवाने की शैलिक युक्ति देखनी हो तो 'कविता' (संध्या तिवारी) में

दीवार की साँकल और 'फाँस' (सीमा जैन) में खाने की मेज सबसे पहले ध्यान खींचती हैं। 'दूध' नाम से दो भिन्न लघुकथाएँ मिलती हैं। जहाँ चित्रा मुद्गल सुधड़ कौशल के साथ वक्रोक्ति का दामन थामती हैं, वहीं दीपक मशाल हमें संवेदना की नदी में उतार देते हैं।

ये लघुकथाएँ वस्तु और शिल्प के धरातल पर रूढ़ियों को तोड़कर ही इस रूप में सामने आ पाई हैं। लघुकथा के गले जो रूढ़ियाँ (उसके रचनात्मक धरातल के विरुद्ध) लटका दी गईं, उनमें से एक है- 'लघुकथा में परिवेश-चित्रण का वर्जित होना।' देखने में यह तर्कसंगत लगता है, लेकिन इस पर पुनर्विचार करना होगा। कहानी की तुलना में लघुकथा की आकारगत सीमाएँ रहती ही हैं। कथाकार युगल जब अकालग्रस्त बंगाल की पृष्ठभूमि पर 'झूबते लोग' लघुकथा लिखते हैं तो अत्यन्त मारक और हृदयस्पर्शी चित्रण के बावजूद उसमें अकाल की पृष्ठभूमि नहीं आ पाती। यह लघुकथा की एक सीमा है। किन्तु लघुकथा की बाह्य आकार की सीमा के भीतर परिवेश-चित्रण की सामर्थ्य को कुछ लघुकथाओं में खोज सकते हैं। यह विचारणीय है कि क्या लघुकथा में किसी पात्र की खूबी को उसके परिवेशगत प्रभावों के साथ नहीं उभारा जा सकता? ऐसे में परिवेश तो रचना में खुद ही उसका अनिवार्य अंग बनकर चला आएगा। ज़रा मुकेश वर्मा की 'मुक्त करो' और 'बलि' जैसी लघुकथाएँ देखें, जिनमें परिवेश कथा-कहन का अभिन्न अंग बन गया है। कोई भी रचना लेखकीय दृष्टिकोण और क्षमता से संचालित होती है, शर्तों से नहीं। चैतन्य त्रिवेदी की बहुचर्चित लघुकथा 'खुलता बंद घर' में घर के उपकरण ही रचना के उपकरण बन गए हैं। यहाँ सारी रचना घर का परिवेश निर्मित कर रही है और घर का परिवेश रचना को। विष्णु प्रभाकर की 'भगवान और पुजारी' की बुनावट देखें कि सामन्ती सोच वाले पुजारी तक लेखकीय मंतव्य कैसे पहुँचाया गया। लेखकीय सामर्थ्य हर देश व काल में ऐसी शर्तों को धता बताती रही है। लघुकथा में सीमित पात्र-संघ्या के पक्षधर हरिशंकर परसाई की 'बात' लघुकथा पर विचार करें कि आठ पात्रों के साथ मध्यवर्गीय मानसिकता को किस कौशल से उघाड़ा गया है। इतिहासकार बिहारी के दोहों की समाहार-शक्ति पर रीझते रहे हैं। इस दृष्टि से हिन्दी लघुकथाएँ भी निराश नहीं करतीं। चैतन्य त्रिवेदी की 'धर्म-पुस्तक' लघुकथा क्या स्वयं में धर्म-पुस्तक जितनी बात नहीं कहती? इतने पिन-प्वाइंटेड तर्क लघुकथा में अपनी पूरी रचनात्मक सामर्थ्य के साथ प्रस्तुत किए गए हैं। वरिष्ठ कथाकार रवीन्द्र वर्मा, पाठक का मन आलोकित करने के उद्देश्य से, 'पर्वतारोही' लघुकथा के अंत में रचना-निःसृत रूपक या 'कोई अकेला नहीं है' के अंत में एक आकर्षक निष्कर्ष रखते हैं। ऐसी अनेक लघुकथाएँ जो जड़ता तोड़ने का उपक्रम करती हैं, उन्हें विमर्श के साथ सामने लाने की जरूरत है।

सम्पर्क : करनाल (हरियाणा) मो. 9416152100

राधेलाल विजधावने

लघुकथाओं का सामाजिक दृष्टिकोण

जब मलयालम के कथाकार मित्र ने मुझे यह खुले मन से कहा- हिन्दी में लघुकथाएँ प्रामाणिक एवं प्रभावी ढंग से लिखी जा रही है। मलयालम भाषा में हिन्दी की लघुकथाओं का अनुवाद हो रहा है इससे लगता है हिन्दी की लघुकथाओं ने बहुत प्रगति की है तो मुझे भी हिन्दी लघुकथाओं की संतोषप्रद प्रगति पर गर्व हुआ। यह निर्विवाद सच है, हिन्दी की लघुकथाओं का सामाजिक कैनवास विस्तृत होता जा रहा है। ये मानवीय हितों, दुखों और परिवेश से पूरी तरह जुड़ गई हैं। मनुष्य और उसके आचरण के साथ ये लघुकथाएँ सम्मिलित होकर उनकी प्रकृति एवं प्रवृत्ति को यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आज हमें अपने को भारतीय कहने पर शर्म आने लगी है। इसकी वजह यह है कि भारतीय नागरिकों में नागरिकता की भावना विलोपित हो गई! नैतिक आदर्श, चारित्रिक स्तर और राष्ट्रीयता किसी में नहीं रही। अब धन से किसी भी आदमी को खरीदा और बेचा जा सकता है।

ऐसी स्थिति में लघुकथाओं का सामाजिक तथा नैतिक दायित्व ज्यादा जिम्मेदाराना हो जाता है। कारण- सबसे पहले जरूरत आज के आदमी को उसके नैतिक मूल्यों की पहचान कराकर सामाजिक कर्तव्यों तथा राष्ट्रीय हितों के प्रति आगाह कराना है ताकि जब समय बदले! वैयक्तिक हित के लिए राष्ट्रीय चेतना की बलि की गलत परम्पराओं में बदलाव आए।

सामाजिक दृष्टिकोण, नैतिक आदर्श राष्ट्रीय चरित्र के साथ ही साथ सामाजिक चारित्रिक मूल्यों की हिफाजत करना लघुकथाओं को जरूरी दैनिक कार्य है! चारित्रिक मूल्यों की हिफाजत करना लघुकथाओं को जरूरी दैनिक कार्य है! लघुकथाएँ यह कार्य जितनी रीडरशिप हासिल करने में सफल होंगी, उतने ही कारगर ढंग से सम्पादित करेंगी। इसलिए जरूरी है लघुकथाओं की रीडरशिप में आशातीत वृद्धि की जाए।

पिछले दशक में तथा इस दशक में लघुकथाओं की रीडरशिप तथा लघुकथाओं में जनरुचि निश्चित ही विकसित हुई है। परन्तु संपूर्ण विकास बिन्दु अभी प्राप्त नहीं हुआ है। सही परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो लघुकथाएँ अभी पूर्ण रूपेण विकसित नहीं हुई हैं। अभी पारम्परिक पड़ाव की यात्रा पूर्ण कर रही है। इसलिए अभी जो लघुकथाएँ आ रही हैं, उनमें अधिकांश कच्चे माल की तरह हैं, बहुत कम ऐसी लघुकथाएँ पाठकीय निगाह में आती हैं जो पूर्ण वैचारिक तथा गहरे चिन्तन और चिन्ताओं के प्रति सजग एवं सचेत हैं।

लघुकथाओं में, लघुकथा लेखक कहाँ रहता हैं, यह एक निश्चित ही विचारणीय सवाल है। लघुकथाओं में लघुकथाकार शब्द यात्रा करता हुआ अर्थों को खेलता है। शब्द, अर्थ, भाषा, संवेदना,

फन्तासी के बीच कारीगर की तरह रचना को गढ़ता हुआ उसे एक विशिष्ट शैली और शिल्प देता है तथा इसी के साथ वह जन जन के जीवन से जुड़ता हुआ उनके बीच के सुख-दुख, अतिवादी अत्याचार, अनैतिकता, शोषण, आपाधापी, अपराधी प्रवृत्तियों की समीक्षा करते हुए जन हितों की हिफाजत करता है। इसके साथ ही जन जागरण एवं नये वैचारिक आन्दोलन को ताकत देते हुए जन अपराध के विरुद्ध लड़ाई की पूर्ण तैयारी करता है। इसलिए एक जन बोधी लघुकथा निश्चित ही ईमानदार सैनिक का कर्तव्य पूर्ण जिम्मेदारी के साथ सम्पादित करती है।

साहित्यिक मूल्यांकन के अनेक मानदण्ड हैं! लेकिन खास तौर से लघुकथा के कथानक, भाषा, शैली, शिल्प, कलात्मकता तथा प्रस्तुतीकरण के तौर तरीके पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित होता है। इसके साथ ही उसका वैचारिक पक्ष एवं उद्देश्य लघुकथा के बेहतर मूल्य आकलन के औजार हैं।

मैक्सिम गोर्की का कथन है – ‘विचारों का सृजन धरती पर होता है, वे श्रम की मिट्टी से फूटते हैं और वे पर्यवेक्षण, तुलना, अध्ययन की सामग्री का और तथ्यों का बार-बार प्रयोग करते हैं।’ स्पष्ट है विचार-रचना की धरती पर खुद-बखुद फूट कर विकसित होते हैं। रचनाकार माटी की तरह इनको रचना में फूलवारी सा सहेजता है और इन्हें परिपक्व होने का पूरा-पूरा अवसर देता है। ‘सत्य हमेशा बुरा होता है।’ इसलिए सच्चाई भरी कथा की अक्सर उपेक्षा होती है। ठीक सच्चे आदमी की तरह। मैक्सिम गोर्की भी जानते हैं ‘जो कुछ बुरा है सत्य होगा।’

लघुकथाओं में कौशल का महत्व अत्यधिक है! कौशल कोई अलग नहीं होता! कौशल भाषा से ही शुरू होता है। कोन्स्टान्ट्सिन फेदिन ने इस संबंध ये स्पष्टतः लिखा है–‘लेखक के कौशल की बात भाषा से शुरू होती है। किसी भी कृति की मौलिक सामग्री हमेशा भाषा रहेगी। ललित साहित्य शब्दों की कला है। किसी साहित्यिक कृति का रचना विन्यास उसके कलात्मक रूप का अत्यधिक महत्व उससे अधिक निर्णायक है। भाषा को सबसे मजबूत बनाने का श्रेय शब्दों का है। शब्द को शक्ति देना और उसमें रचना कौशल लाना लेखकीय अनुभवों पर निर्भर रहता है। जो एक निश्चित कला है। अलेक्सेइ तोलस्तोय का कथन है–‘ऐसे शब्दों में जो स्वाद में, देखने में, सुनन्थ में अपने हैं, जन्म भूमि के हैं–इसी में है समस्त जातीय कला और यही चीजें हैं, जिनसे सच्ची कला जन्म लेती है।’

रचना लेखक का शब्द भंडार, संवेदनाएँ तथा अनुभूतियों का धनाद्य होना नितांत जरूरी है। शब्दों के इस्तेमाल की भी एक तकनीक होती है। जो रचना को ताकत देकर रोचकता प्रदान करती है। इस सम्बन्ध में ब्लादीमीर मयाकोव्स्की का कथन है–‘शब्द-संशोधन की अत्यन्त मौलिक तकनीक और विधियाँ, तो वर्षों से कठोर श्रम के बाद ही प्राप्त होती है।’

लेखन कला अथवा लेखन कौशल हासिल करना आसान नहीं इसके लिए वर्षों परिश्रम करना पड़ता है। तप तपाकर भाषा तैयार होती है। लेखन कौशल के संबंध में कोन्स्टान्ट्सिन फेदिन ने स्पष्टतः लिखा है–‘लेखन कौशल की प्राप्ति अवश्य ही कोई आसान काम नहीं।’

चेखव ने भी बढ़िया रचना लेखन के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए अपने एक पत्र में यह उल्लेख किया है–‘कोई चीज जितनी बढ़िया होगी उतनी ही आपको उसकी त्रुटियाँ देंगी और उतना ही कठिन उसको सुधारना होगा।’

कोई भी रचनाकार को किसी विधा विशेष में कुशलता हासिल करने के बाद उस पर काम करना बंद नहीं करना चाहिए क्योंकि कुशलता की सीमा नहीं होती। लघुकथा लेखन के लिए इन तमाम औजारों को दृष्टिकोण रखते हुए लघुआधात द्वारा वर्ष 1984 में आयोजित लघुकथा प्रतियोगिता के लिए प्राप्त लघुकथाओं का मूल्यांकन अपेक्षित मानदण्डों के अनुरूप हो सके, इस मूल्यांकन में कलासिक विश्लेषण पद्धति को नहीं अपनाते हुए सरलीकृत पद्धति को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत-कथ्य, भाषा, शैली, शिल्प, प्रभाव, उद्देश्य रोचकता को ही मापदंड में लिया गया है।

इस लघुकथा प्रतियोगिता में प्राप्त लघुकथाओं से गुजरते हुए यह बार बार अहसास हुआ कि लघुकथा लेखकों में उत्साह आत्म विश्वास अच्छा है। जिसे निरंतर बनाए रखने की इसलिए भी जरूरत है कि लघुकथा लेखन में उच्चस्तरीय कुशलता निरन्तर प्राप्त करने की कोशिश होती रहे।

प्रतियोगिता में सम्मिलित लघुकथाओं के टेक्स्चर से साक्षात्कार करते हुए यह अनुभव भी बड़ी शिद्दत के साथ हुआ कि ये लघुकथाएँ रचनात्मक स्तर पर, कन्टेन्ट पर टाँगे जाने पर ज्यादा विश्वास रखती हैं। इनमें भाषा अच्छी विकसित नहीं हो सकी है। शिल्प तथा शैली की तलाश में कोई विशेष कोशिश नहीं हुई है। जबकि कन्टेन्ट के साथ भाषा ही प्रमुख है। भाषा रचना को गूँगी बनाती है, वैचारिक भी अथवा कलात्मक एवं बूढ़ी भी। भाषा की टोन और भाषा के स्वभाव से रचना की वैचारिकता निर्धारित होती है। जिसमें शब्द चयन, शब्द शक्ति, शैली, शिल्प तथा कौशल सम्मिलित होता है। लघुकथा का प्रभाव एवं उसकी जीवटता भाषा पर ही निर्भर है। इसलिए भाषा पर अधिकार जरूरी है। इन लघुकथाओं में लघुकथाकारों का ध्यान भाषा, शिल्प, कौशल एवं शैली पर कम गया है ये यथार्थ पर ही केन्द्रित रहे हैं तथा कन्टेन्ट को प्रमुखता देते रहे हैं। अतएव इन लघुकथाओं का कारीगरी मूल्यांकन कम हो गया है।

नयी भाषा, कन्टेन्ट की नया बना देती है और पुरानी भाषा कथा को आउट डेटेड कर देती है। इसलिए सजग रचनाकार को भाषा के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा उसकी तैयारी निरन्तर करते हुए तरोताजा बनाए रखना नितांत आवश्यक है। भाषा ही कन्टेन्ट को ताकतवर बनाती है और वह ‘जन जागरण, जन चेतना में वृद्धि करती हुई जन मानसिकता को लगातार बदलती है।’ इन लघुकथाओं में समर्थ भाषा के विकसित होने की संभावना आँकी जा सकती है।’ इसके लिए लघुकथाकारों का लगातार ध्यान आकर्षित होते रहने की नितांत जरूरत है।

‘दुश्मन’ लघुकथा व्यापारिक ईर्ष्या का बेमिसाल नमूना है जो समान धन्धे के प्रतिद्वन्द्वी मानसिकता से उपजती है और चरित्र हनन को उत्प्रेरित करती है। इस लघुकथा का कन्टेन्ट भाषा का साथ देता है। शिल्प शक्ति प्रभावी न भी हो परन्तु प्रस्तुतीकरण का तौर तरीका मन में रचना के प्रति स्थान बनाने की कोशिश करता ही है।

‘नई नस्ल’ इस क्रम की अलग तरह का चरित्र धारित करने वाली लघुकथा है जो दोहरे संबंधों को जीती हुई आगे बढ़ाती है। विकास काल में चरित्र का पतन किस नेचर के साथ आ रहा है। यह लघुकथा इस मानसिकता का एक सशक्त उदाहरण है।

‘हिरासत’ अतिवादी तरीके से मध्यम वर्गीय नारी की इज्जत से खेलने की दौड़ पुलिस हिरासत

के दौरान लगातार हो रही है। इसकी सच्चाई को प्रामाणिक तरीके से प्रस्तुत करती है।

छोटे किसानों को शासन द्वारा दी जाने वाली भूमि को लेखपाल द्वारा हड़पने की नीति को 'प्रजातंत्र का नागरिक' अच्छी पड़ताल करती है।

'अपराध' अधिकारी वर्ग द्वारा कामगार महिला के साथ सेक्स संबंध के अपराध का जिन्दा बयान हैं। जबकि 'दोस्त' एक फर्ज का नाम है। 'तलाश' इन्सानियत की तलाश करती है, जो नहीं मिलती।

'तलाश' की भाषा कन्टेट के अनुरूप शुरू होती है लेकिन बाद में भाषा और कन्टेट तथा शिल्प एवं शैली गड़ुमड़ हो जाते हैं। जबकि 'नई नस्ल' 'हिरासत', 'प्रजातंत्र का नागरिक', 'उसका अपराध' तथा 'दोस्त' की भाषा, शैली तथा शिल्प कन्टेट से काम्बीनेशन करते हैं। यह काम्बीनेशन तलाश में नहीं है।

'पेट की शिक्षा' वर्ग चरित्र का हलफनामा है। जबकि 'वर्गीकरण' अनुशासन तथा व्यक्तित्व का नियन्त्रण। 'निर्यात' वर्ग चरित्र की दशा कथा है। जबकि 'नियुक्ति' इसी वर्ग चरित्र का वास्तविक मूल्यांकन। 'बीमार' में यह मूल्यांकन दलित भावना को प्रखर रूप में प्रस्तुत करता है जबकि 'खिलौना' साइन्स की विनाश लीला की प्रताङ्गना को झेलती है।

इन लघुकथाओं में स्ट्रक्चर, भाषा शिल्प के बजाय वास्तविकता की तरफ ज्यादा ध्यान दिया गया है फिर भी ये घटना, कथाएँ मन को बहुत अन्दर तक कसती हैं।

लघुआधात-लघुकथा प्रतियोगिता 1985 की लघुकथाओं में वैचारिक एवं बौद्धिक लघुकथाओं की कमी पाई गई हैं इसकी बजह कुछ भी हो सकती है। इस समय विचार कथाओं की जरूरत है। इन लघुकथाओं में विचार के साथ ही साथ मनोविज्ञान भी काम करता है, जो वैचारिक बदलाव में तेजी लाता है और विचार क्रान्ति को तेज करता है।

इतना जरूर है कोई भी रचना अपने आप में पूर्ण नहीं होती। उसमें ढूँढ़ने पर कुछ तो कमी अवश्य ही होती है। बावजूद इन कमियों के रचना अपना एक अलग वर्ग चरित्र और विचारधारा लेकर खड़ी होती है और सम्पूर्ण समाज का ध्यान उस ओर केन्द्रित करती है।

लघुआधात-लघुकथा प्रतियोगिता 1985 की लघुकथाएँ चाहे पुरस्कृत हुई हों अथवा नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि इनकी अपनी एक दृष्टि और विचारधारा है। इनका एक वर्ग तथा वर्ण चरित्र है। भाषा तथा परिवेश हैं इनका अपना निवास है। इसलिए इनके वर्ग तथा वर्ण चरित्र का नकारा नहीं जा सकता है। इसलिए इन लघुकथाओं में कमी की खोज के बजाय उनमें उनकी विशेषता तथा विशिष्टता की तलाश की जरूरत है।

सम्पर्क : भौपाल (म.प्र.) मो. 98266559989

भगीरथ परिहार

आरोप, चेतावनियाँ व कमजोरियाँ

नरेन्द्र कोहली लघुकथा लेखकों को चेतावनी देते हुए कहते हैं, ‘लघुकथा अनिवार्य रूप से संक्षिप्त होगी। इसके स्थूल रूप में कौशलहीन ढंग से अपनी बात उगल देने का लोभ किसी भी लेखक को होगा। किंतु इस लोभ का संवरण करना होगा, अन्यथा शिल्पहीनता का नाम लघुकथा हो जाएगा’, यानी लघुकथा की जगह घटना-कथा केन्द्र में आ जाएगी। किसी घटना की अखबार में रिपोर्टिंग और उस पर आधारित लघुकथा में फर्क तो होना चाहिए। वे रचनाएँ जो पाठक में ललित साहित्य के सौन्दर्यबोध को न जगा सकें निर्थक हैं।

लघुकथा के रूप में वे कथानक ढलते हैं जिन्हें चाहकर भी विस्तार नहीं दिया जा सकता जो अपने आप में एक सम्पूर्ण इकाई होते हैं। ऐसी स्थिति में संक्षिप्तीकरण का सहारा नहीं लिया जाता, बल्कि विस्तारित कथा को संक्षिप्त करना हो तो संक्षिप्तीकरण का सहारा लिया जाता है। सार-संक्षेप की शैली लघुकथा के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। जब नरेन्द्र कोहली ‘संक्षिप्त’ शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका अर्थ लघु या छोटी से ही है। लेखक, सावधानी बरते कि कहीं वह कहानी को तो लघुकथा नहीं बना रहा है, कहीं वह कौशलहीन ढंग से तो कथा नहीं कह रहा है। यह चेतावनी इसलिए जरूरी है कि लघुकथा लेखन अब भी इस प्रवृत्ति से ग्रसित है।

कथा में सहजता एवं प्रवहमानता होनी चाहिए। सारे कथन व संवाद कथा से निःसृत होने चाहिए। सूचनात्मक विवरण का समावेश होने पर कथा के सहज प्रवाह में बाधा पहुँचती है। लेखक का ऐसा प्रयास (सूचनात्मक विवरण) कथा में पैच वर्क सा लगता है, जो उसके सौन्दर्य को नष्ट कर देता है। सूचनाएँ कथा को उबाऊ, निर्जीव व सौन्दर्य हीन बना देती हैं। लघुता के लिए बिम्ब, प्रतीक, मुहावरे, छोटे व सार्थक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। दुर्घटना हो गई, कहने की बजाय दुर्घटना का संक्षिप्त किन्तु सटीक शब्द चित्र प्रस्तुत करना बेहतर होगा, अगर दुर्घटना लघुकथा की अहम घटना हो तो। लेखक को सीधे वास्तविक जीवन के परिदृश्य पर शब्द चित्र प्रस्तुत करने चाहिए। जगदीश कश्यप ऐसी रचनाओं को पूरे लघुकथा साहित्य पर प्रश्न चिन्ह मानते हैं। ‘ऐसी रचनाएँ- रिपोर्टिंग, डायरी, घटना कथा और रेखाचित्र बन जाती हैं।’

लघुकथा में असामान्य कथ्य एवं अतिरिंजित घटनाएँ या कथानक यथासम्भव नहीं होने चाहिए। जैसे सेक्स से संबंधित ऐसी घटनाएँ पढ़ने में आती हैं जिनमें नजदीकी वर्जित रिश्तों में सेक्स संबंध होते हैं, ऐसे कथानक सामान्य सामाजिक जीवन से परे हैं इसलिए त्याज्य हैं। साहित्य सामान्य अनुभव को सृजन क्षेत्र का विषय बनाता है असामान्य घटनाओं का समावेश लघुकथा को सत्यकथा के नजदीक ले जाएगा, जिनमें घटनाएँ महत्वपूर्ण हो जाएँगी। अनुभवजन्य संवेदना या कथ्य पीछे छूट जाएगा, अतः ऐसी घटनाओं का उल्लेख हो तो संवेदना, विचार या सामाजिक मूल्य व्यक्त करने के लिए हो, न कि घटना के विवरण के लिए।

लघुकथा कथ्य प्रधान विधा है और लेखक का सारा आयोजन कथ्य को पाठक तक संप्रेषित करने के लिए है। सामान्य कथ्य को व्यक्त करने के लिए अतिरंजना का उपयोग हो सकता है, जैसा व्यंग्य करता है। लेकिन असामान्य घटनाओं के निष्कर्ष अक्सर खतरनाक होते हैं। 'मुआवजा' लघुकथा में माँ-बाप अपने मरे बच्चे को बाढ़ में फेंककर मुआवजा माँगते हैं (चलो गनीमत है कि जिन्दा बच्चे को बाढ़ में फेंककर मुआवजा नहीं माँगा)। सहज मानवीय संवेदनाएँ क्या पूर्णतः समाप्त हो गई हैं? यह अतिरंजना हमें अनावश्यक ही भयभीत करती है, आशाओं पर तुषारापात करती है, कि अब जिंदा रहना अमानवीयता की शर्त पर ही सम्भव है।

नरेन्द्र कोहली ने एक बार चेतावनी देते हुए कहा था कि लघुकथा में चमत्कार के प्रति आग्रह बढ़ता जा रहा है और कहीं यह वीभत्सता को जन्म न दे दे। मुझे लगता है इस चेतावनी को ठीक से जेहन में उतारने की जरूरत है। हंसराज रहबर ने भी ऐसी चमत्कारिक लघुकथाओं पर टिप्पणी की थी कि यह प्रवृत्ति सड़क पर लालकोट पहन कर टहलने जैसी है, ध्यान आकृष्ट करने की सबसे सस्ती तरकीब है। मंटो का कथ्य तो खैर धारदार रहता था लेकिन आज लिखी जा रही लघुकथाएँ चौंकाने की प्रवृत्ति के साथ हास्य उत्पन्न कर, चुटकुले जैसी मालूम होती हैं। 'नवतारा' पत्रिका ने जब यह विवाद चलाया तो उसकी पृष्ठभूमि में ऐसी ही लघुकथाएँ थीं।

ज्ञानरंजन ने ऐसी ही लघुकथाओं को देखकर कहा था कि लघुकथाओं में झम्म से उतरता हुआ जादू मिलता है, या चमत्कार या मानवीय हाहाकार या आदर्श सूक्ष्म, जिसको वे हास्यास्पद मानते हैं। सत्य एवं रोमांचक कथाओं के सन्दर्भ में उपरोक्त बात को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। दो-तीन पंक्तियों की ऐसी लघुकथाएँ भी देखने में आई हैं जो सूक्ष्मियों के नजदीक चली जाती हैं।

मृणाल पाण्डे को लघुकथाएँ इंस्टेंट कहानियाँ (तात्कालिक कथाएँ) लगती हैं जो पूरे साहित्य पर भारी खतरा हैं। तात्कालिक लघुकथाएँ तुरत-फुरत रची जाने वाली, आज के परिदृश्य पर आधारित, अखबारों की रिपोर्टिंग या खबरें पढ़कर लिखने वाले तथाकथित कथाकार, उन्हें प्रकाशित करने वाले सम्पादक व पत्रिकाएँ लघुकथा के लिए खतरा हैं, क्योंकि वे लघुकथा के साहित्यिक गौरव को कम करती हैं। उन रचनाओं में अनुभव का ताप नहीं होता, लेखकीय कौशल नहीं होता, यथार्थ का आभ्यांतीकरण भी नहीं होता।

लघुकथा साहित्य की इसी कमजोरी की ओर इंगित करते हुए डॉक्टर कमल किशोर गोयनका कहते हैं कि लघुकथा के नाम पर 'सुने सुनाये चुटकुले, विनोद कथन, मुहावरे, पहेली आदि भी प्रकाशित हो रहे हैं। अधिकांश में अनुभूति का ताप नहीं, संवेदना की निजता, जीवन्तता तथा गहराई नहीं है इनके अभाव में कोई भी रचना कलाकृति नहीं बन सकती।'

लघुकथा एक लघुविधा है लेकिन इसके लिए इतनी ही घनीभूत एकाग्र, जीवन्त तथा गहरी संवेदना की आवश्यकता है। बिखरी-उथली संवेदना एक श्रेष्ठ लघुकथा को जन्म नहीं दे सकती।

घटना या सत्यकथा लघुकथा नहीं है। सुने-सुनाये किस्से और संस्मरण भी लघुकथा नहीं हैं। वास्तव में जब घटना लेखकीय प्रतिभा, संवेदनशीलता, व चिंतन का भीतरी हिस्सा बनकर उत्तरती है तब उसमें ललित साहित्य का सौन्दर्य दिखलाई पड़ता है। यान्त्रिक ढंग से लिखी जाने वाली लघुकथा

विसंगतियों के अन्तरविरोध को उघाड़ती तो है लेकिन बिल्कुल यान्त्रिक तरीके से, जैसे भारत के गोदाम गेहूँ-चावल से भरे हैं और लोग भूखे मर रहे हैं, या लोग भूखे मर रहे हैं और भारत अनाज निर्यात कर कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। कथनी-करनी के भेद जैसी सैकड़ों रचनाएँ लघुकथा साहित्य में मिल जाएँगी, उन्हें भी लेखक की संवेदना और सृजन का ताप मिलना चाहिए।

अगर चिंतन युक्त लघुकथाएँ अधिक लिखी जायें तो यह विधागत हर्ष का विषय है, लेकिन सत्य ऐसा नहीं है, जैसे-तैसे लिखकर कथाकारों की श्रेणी में अपना नाम दर्ज करा लेना मात्र उद्देश्य है। रामनारायण उपाध्याय कथाकार को सचेत करते हुए कहते हैं, ‘आज तुम लघुकथा के लिए चिन्तन नहीं करोगे तो कल लघुकथा तुम्हारे लिए चिन्ता नहीं करेगी।’

डॉ. चन्द्रेश्वर कर्ण की चेतावनी भी जेहन में उतारने की जरूरत है ‘लघुकथा प्रचारधर्मियों, यश लिप्मुओं, ध्वजधर्मियों, पण्डों और मठवादियों से घिर गयी है। इसे उनसे बचाना होगा, लघुकथा को लेकर अनेक छोटे-बड़े मठ स्थापित हैं, उनके अपने कर्मकाण्ड हैं, अपने पण्डे, संत महात्मा और चेले हैं, अपने-अपने आलोचक-समीक्षक भी हैं, जो उनके अनुरूप व्यवस्था देते हैं।’

आज स्थिति में परिवर्तन आया है, मठ ढह गये हैं या ढहने की कगार पर हैं, खूब दण्ड पेलने पर भी यशलिप्सा पूरी नहीं हुई। यश सृजन से प्राप्त होता है साहित्य में इसका कोई शॉर्टकट नहीं है।

श्रवण कुमार गोस्वामी ‘समीचीन’-1 में यही चेतावनी देते हैं, ‘मेरे जानते लघुकथा को सबसे अधिक खतरा लघुकथाकारों एवं उसके क्षेत्रीय ठेकेदारों से ही है, इसके प्रत्येक ठेकेदार के साथ लघुकथा लेखकों का एक बड़ा हुजूम भी है। यह हुजूम लघुकथा के नाम पर कुछ भी लिख रहा है। नयी कविता के जमाने में जैसी अराजकता देखी गई थी लगभग वैसी ही अराजकता आज लघुकथा के क्षेत्र में भी देखने को मिल रही है।’ श्रवण कुमार लघुकथा लेखकों को सचेत करते हुए आगे लिखते हैं – “लघुकथा के अनेक क्षेत्रीय शिविर बन गए हैं और शिविर के सूत्रधारों ने अपने आप को लघुकथा का जनक घोषित कर दिया है। परिणाम यह है कि ये सभी जनक अब एक-दूसरे से भिड़ने के लिए ताल ठोंक रहे हैं और अपने को चक्रवर्ती सिद्ध करवाने में लगे हैं। वक्त गुजरने के बाद चक्रवर्ती तो क्या एक सिपाही की हैसियत मिल जाए तो बहुत है। ऐसी प्रवृत्तियाँ साहित्य जगत में ज्यादा देर नहीं टिकतीं।

इस सन्दर्भ में डॉ. कमलकिशोर गोयनका का भी यही मत है, ‘लघुकथा में मठों की कमी नहीं है। ये मठ बड़े नहीं हैं, छोटे-छोटे हैं और इसीलिए चारों ओर बिखरे नजर आते हैं। लघुकथा प्रान्तों के आधार पर, वैचारिक गुटों के आधार पर, छोटे-छोटे मठों में बैंट गई है.... बिहार, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों में लघुकथा के कई-कई गुट हैं, जिनके बीच कई बार ऐसी प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो जाती है जैसे उनके बीच शीत युद्ध हो गया हो।’ डॉ. गोयनका स्वयं ऐसे ही एक मठ के शिकार रहे हैं और उसका जवाब देने के लिए ‘लघुकथा का व्याकरण’ पुस्तक के पचास पेज व्यर्थ कर दिए। शायद उन्होंने आवश्यक समझा हो, कि ऐसी प्रवृत्ति से लोहा लेना जरूरी है। श्याम बिहारी ‘श्यामल’ की चिंता -लघुकथा के सीने पर जमा होता कूड़े का यह पहाड़ कौन ढहायेगा? लघुकथा क्षेत्र के स्वघोषित मसीहाओं की भौं-भौं के आतंक से कैसे निपटा जाएगा? जो लघुकथा क्षेत्र में समीक्षकों को घुसने

नहीं देते। जैसे लघुकथा इनकी जागीर है। आज इस अराजक व्यूह को भेदना ही इस क्षेत्र की बड़ी चुनौती है।

विद्यानिवास मिश्र को लघुकथा की गम्भीरता पर संदेह है, कईयों का मानना है कि लघुकथा लेखन अगम्भीर है, इसमें मेहनत नहीं करनी पड़ती। आधे घंटे की सिटिंग में सरलता से लिख ली जाती है और लेखक होने का भ्रम भी पल जाता है। लघुकथा, साहित्यकार बनने का शॉर्टकट है, वे इसे आसान काम समझते हैं और कुछ लिखकर लेखक बनने का दिव्य स्वप्न पाल लेते हैं। इसी तरह के सरल लेखन ने लघुकथा साहित्य में कूड़े की समस्या पैदा कर दी है। राजेन्द्र यादव कहते हैं कि 'लघुकथा में अति हो रही है,' यही नहीं गोविन्द मिश्र तो उसकी पाठकीय भूमिका व गंभीरता पर संदेह व्यक्त करते हैं। इसकी भूमिका को शॉर्टकट देना मात्र मानते हैं। डॉ. कमलकिशोर गोयनका का मानना है कि 'साहित्य में शॉर्टकट नहीं चलता है, जो चलाते हैं, वे शॉर्ट होकर रह भी गये हैं।'

'कथात्मकता की प्रवृत्ति फैलने की है, संक्षिप्तीकरण उसे विकृत पंगु एवं नीरस बना देती है।' सूर्यनारायण रणसुभे यह कह कर लघुकथा पर ही प्रश्न चिह्न लगा देते हैं। अगर इनकी बात मान ली जाये या इस बात में दमखम हो तो लघुकथा को स्क्रेप करने में ही कथा साहित्य की भलाई है, क्योंकि ऐसी विकृत एवं नीरस रचनाओं को साहित्य में स्थान देने का कोई मतलब नहीं है। अगर कथा की प्रकृति फैलने की है तो फिर वृहद उपन्यास से उपन्यास, लघु-उपन्यास, लम्बी कहानी तक ही क्यों, कहानी और लघुकहानी तक क्यों आ गया साहित्य? क्यों आज कहानी साहित्य की केन्द्रीय विधा के रूप में स्थापित है? फिर लघुकथा किसी लम्बी कहानी का संक्षिप्तीकरण नहीं है। कोई जीवन प्रसंग अगर कम शब्दों में व्यक्त हो सकता है तो उसे विस्तार देना व्यर्थ होगा। कथानक का छोटा या बड़ा होना तय करता है कि रचना लघु होगी या दीर्घ। यह जानबूझ कर किया गया चुनाव नहीं है।

डॉ. रणसुभे के मत में, 'आरम्भ के दिनों में इस विधा ने जिस मुद्रा को धारण कर लिया था, आज वहाँ जोकर का चेहरा दिख रहा है। लघुकथा के नाम पर आजकल जो भी छप रहा है उनमें से अधिकतर को चुटकुले के अन्तर्गत ही रखा जा सकता है, अगर चुटकुला नहीं है तो किसी बीती घटना का नीरस शब्दांकन, घटित घटना की शाब्दिक अभिव्यक्ति ही लघुकथा है। नीरस निवेदन या हुबहू वर्णन के आगे इसकी शैली बढ़ नहीं पायी है। अलबत्ता कुछ कथाकारों ने प्रतीक, मिथक और रूपक का प्रयोग कर अप्रतिम लघुकथाएँ प्रस्तुत की हैं।' कथाकारों को सजग होना होगा, शैली को परिष्कृत करना होगा और लघुकथा के चेहरे पर जो जोकर का चेहरा लगा है उसे उतारना होगा तभी साहित्य जगत में इसे गम्भीरता से लिया जायेगा। लेकिन डॉ. रणसुभे अतिवादी कथन पर उतर आते हैं। प्रबुद्ध पाठक उस विधा को गंभीरता से ग्रहण नहीं करता। लघुकथा के जन्म ने कथात्मक साहित्य की गम्भीरता, संवेदनशीलता और कलात्मकता की हत्या कर दी है।' डॉ. रणसुभे ने घटिया लघुकथाओं तक ही यह मंतव्य सीमित किया होता तो बेहतर होता क्योंकि ल

घुकथा के बारे में कोई टिप्पणी श्रेष्ठ लघुकथाओं के आइने में भी होनी चाहिए। एक तरफा बयान अन्य तरह की प्रतिक्रिया पैदा करते हैं जो उचित नहीं कही जा सकती।

अमर गोस्वामी की लघुकथा के बारे में राय है, 'लघुकथा जीवन की भूमिका हो सकती है,

व्याख्या नहीं और बिना व्याख्या दिये रचनाकार श्रेष्ठ कृति नहीं दे सकता। जीवन और विचार में निरन्तर जूँझने की क्रिया तभी सम्भव हो सकती है, जब व्यक्ति का आकाश विस्तृत हो, वह उसमें ऊँची तथा लम्बी उड़ान भरने में समर्थ हो। अपने रचना के आकाश को सीमाबद्ध कर देने से या डैनों को फैलाकर उड़ने के डर से वह ज्ञान-विज्ञान की नूतन संभावनाओं से खुद को बंचित कर सकता है। किसी रचनाकार के लिए यह घातक स्थिति हो सकती है।' गद्य और पद्य की विधाएँ सिमट रही हैं महाकाव्य से कविता अब एक पेज तक आ गई है। यही हालत गद्य की भी है। हालाँकि गद्य में अभी उपन्यास लिखे जाते हैं। कहानियाँ भी लिखी जाती हैं लेकिन अब कहानियाँ एक सौ पन्द्रह पेज की नहीं लिखी जातीं चार-पाँच पेज में सिमट रही हैं। तो क्या वे जीवन के विभिन्न आयामों को नहीं छू रही हैं? क्या उन आयामों की व्याख्या उनमें नहीं है?

लघुकथा जीवन की भूमिका हो सकती है, व्याख्या क्यों नहीं? क्योंकि जीवन विशाल है, जिसे लघुकथा व्यक्त नहीं कर सकती। हाँ, एक अकेली लघुकथा नहीं कर सकती, सो तो कहानी भी नहीं कर सकी है और जीवन इतना विशाल है, कि एक वृहद् उपन्यास भी जीवन की व्याख्या नहीं कर सकता। कोई भी विधा जीवन के कुछ आयामों को ही छू सकती है। जीवन अति विशाल है उसके विविध आयाम हैं, जो निरन्तर गतिशील हैं, उसे एक पुस्तक तो क्या कई पुस्तकों में समेटना भी सम्भव नहीं है। तभी तो लेखक जीवन भर लिखता है। सैकड़ों कहानियाँ, उपन्यास फिर भी वह जीवन की व्याख्या कर पाता है? जीवन की व्याख्या करने के प्रयत्न हैं और सभी रचनाकार करते हैं। लघुकथा का सृजित साहित्य जीवन की खण्ड-खण्ड व्याख्या प्रस्तुत करने का सामर्थ्य रखता है।

राजेन्द्र यादव 'हंस' के सम्पादक रहे और उनकी नजरों से सैकड़ों लघुकथाएँ गुजरी हैं। उसी सन्दर्भ में उन्होंने कहा- 'इधर लघुकथाओं की बाढ़ आई है, राजनैतिक विडम्बनाओं से भरपूर। हर मंचीय कवि इनका इस्तेमाल करता है। शायद यह कहना सही होगा कि लघुकथाओं के नाम पर 99 प्रतिशत चुटकुले ही होते हैं। नेताओं के भ्रष्टाचार, आडम्बर, ढोंग, हृदयहीनता ही अनिवार्यतः इन चुटकुलों के कथ्य हैं। इससे लेखकों के सामाजिक सरोकार तो पता लगते हैं, मगर प्रायः दो विरोधी स्थितियों को रखकर ही यहाँ चमत्कार पैदा कर दिया जाता है - धार्मिक अनुष्ठानी नेता चकलाघर चलाते हैं और न्याय और अपरिग्रह की बात करने वाले स्मग्लिंग करते हैं। कभी-कभी तो फूहड़पने की यह स्थिति है कि नामों को लेकर 'लघुकथा' गढ़ दी जाती है जैसे दयाराम नाम के साहब मूलतः कितने क्रूर हैं। अक्सर हृदयहीनता ही इनके विषय होते हैं, भूखे मरते आदमी के लिए खाना नहीं है लेकिन कुत्तों और गायों को भोजन कराया जाता है। मैं नहीं कहता कि हमारा समाज इन भयावह स्थितियों से नहीं गुजर रहा, मगर अखबार की कतरनें लघुकथाएँ नहीं होतीं। इन लघुकथाओं का दूसरा प्रिय विषय है पशु-पक्षियों के माध्यम से राजनैतिक टिप्पणी। हालत यह है कि लघुकथाओं की दुनिया राजनैतिक भेड़ियों, सियारों, शेर-भालुओं, बंदरों और कुत्तों से भरी पड़ी है। लगता है, सारी लघुकथा मदारियों, सरकस-मालिकों और जू-व्यवस्थापकों के हाथों में चली गई हैं।' वस्तुतः लघुकथा आज गिने-चुने फार्मूलों का विस्तार होकर रह गई है। लघुकथाओं के वर्तमान परिदृश्य पर टिप्पणी को आगे बढ़ाते हुए राजेन्द्र यादव कहते हैं- हिन्दी में आज की लघुकथाओं में सामाजिक-राजनैतिक सरोकार

और बेचैनी तो बहुत है मगर प्रायः समकालीन जीवन स्थितियों के अनुभूति, स्पंदित क्षणों से बचने की प्रवृत्ति है। हममें से अधिकांश रूपक, प्रतीक, दृष्टांत जैसी 'तरकीबों' का सहारा लेना ज्यादा पसन्द करते हैं। वे मानते हैं कि लघुकथा के लिए अलग एप्रोच की जरूरत है।

इन्हीं चिंताओं को व्यक्त करते हुए बलराम अग्रवाल लिखते हैं - 'अधिकांश लघुकथा लेखकों द्वारा जीवनानुभव से रिक्ट पैटर्न-लिंक्ड लेखन करना इसकी कमजोरी बन गई है। एक ही पैटर्न पर एक लघुकथाकार की ढेरों रचनाएँ, फिर उसी पैटर्न को फॉलो करती हुई अन्य लेखकों की रचनाएँ, आपको लघुकथा साहित्य में उपलब्ध हो जाएँगी। इसे सृजनात्मकता का संकट कहें तो उचित होगा।'

राजेन्द्र यादव के इस कथन से सहमत नहीं हुआ जा सकता कि लघुकथा को रूपक, प्रतीक, दृष्टांत जैसी 'तरकीबों' से बचना चाहिए। ये तरकीबें नहीं हैं, बल्कि परम्परागत शिल्प है जिसमें पूर्ववर्ती लेखक आदर्श, नीति और उपदेश जैसी विषय वस्तु व्यक्त करते थे। आधुनिक लघुकथा यथार्थ की भूमि पर खड़ी है, यदि समकालीन यथार्थवादी कथ्य को व्यक्त करने में पारम्परिक शिल्प उपयोगी है, तो उनका निश्चित ही उपयोग करना चाहिए। समयानुसार उनमें परिवर्तन हो सकता है, और होना भी चाहिए। जीवन के व्यापक सत्य को संक्षिप्त में कह सकने की सामर्थ्य इन्हीं रूपक और प्रतीक कथाओं में होती है। इसी तरह शाश्वत एवं दार्शनिक विषय वस्तु भी रूपक, प्रतीक या काव्यमय भाषा में अधिक अच्छी तरह व्यक्त होती है।

सम्पर्क : रावतभाटा (राजस्थान) मो. 9414317654

शंकर पुणताम्बेकर

चुनाव

बच्चे से नतीजा सुनते ही स्कूल इंस्पेक्टर जीप से स्कूल की ओर दौड़ा और हेडमास्टर के कमरे में पहुँचते ही दहाड़ा, 'ए मास्टर के बच्चे, भूल गया कि मेरा बच्चा तेरे स्कूल में पढ़ता है?' हेडमास्टर ने फाइल से सिर उठाया और सहमे से एकदम खड़े होकर देखते रहे। 'अरे तूने मेरे बच्चे को छोड़ उस पुलिस इंस्पेक्टर के बच्चे को पहला नंबर कैसे दे दिया?' 'आप बैठिए तो श्रीमान।'

'अरे श्रीमान के बच्चे, क्या तू भूल गया कि मैंने तुझे अपने बच्चे की पहले ही याद करा दी थी?'

'भूला तो नहीं श्रीमान।' हेडमास्टर ने बिलकुल शांत स्वर में कहा, 'पर आपकी तरह पुलिस इंस्पेक्टर ने भी याद दिला दी थी। ऐसी हालत में मेरे सामने बड़ा सवाल खड़ा हुआ। जैसे नतीजा बच्चों का नहीं खुद का तैयार करना हो।' 'अपना ही नतीजा! क्या बकते हो?' 'बक नहीं रहा श्रीमान!... मुझे अपना नतीजा तैयार करना था कि रोटी और प्राणों के बीच किसे चुनूँ.... और आखिर मैंने प्राणों को चुना।'

●●

माधव नागदा

लघुकथा में शिल्प का प्रयोग

शिल्प ही किसी रचना की ताकत है और रचनाकार की पहचान भी। शिल्प यानी गढ़न, अंदाजे बयाँ, कहन पद्धति, रचना कौशल, प्रभावी सम्प्रेषण की तकनीक। इस तकनीक में भाषा की विभिन्न भंगिमाएँ भी आती हैं और कहन पद्धतियाँ अर्थात् शैलियाँ भी।

एक लघुकथाकार के लिए रूप की तलाश बहुत टेढ़ा काम है। वह उपन्यासकार या कहानीकार की तरह निश्चिंत होकर कल्पना के घोड़े नहीं दौड़ा सकता। वह इस प्रकार का एक भी वाक्य, एक भी शब्द, एक भी दृश्य, एक भी चित्रण, एक भी संवाद, एक भी हाव-भाव समाविष्ट नहीं कर सकता जो लघुकथा की कसावट को लुंजपुंज कर दे। यहाँ तक कि उसे एक कवि की भाँति इस बात के प्रति सचेत रहना पड़ता है कि कहाँ अर्द्ध विराम आयेगा, कहाँ पूर्ण विराम और किस स्थान पर प्रश्नवाचक व विस्मयादिबोधक चिह्न लगाये जाएँगे। उसे यह भी ध्यान रखना होता है कि कहाँ पैराग्राफ बदलना है और उसकी लंबाई कितनी रखनी होगी। इस तरह लघुकथा को उस मंज़िल पर पहुँचाना होता है जहाँ यदि एक शब्द भी निकाल दिया जाये तो लगे कि इमारत ढह जायेगी। सब कुछ बहुत कसा हुआ, सुगठित, मितव्ययता के साथ हो।

लघुकथा के तीन अंग होते हैं; क्या (कथ्य), कैसे (शिल्प) और क्यों (लक्ष्य, दृष्टिकोण या विचार)। शिल्प कथ्य और लक्ष्य के मध्य एक सेतु का कार्य करता है। शिल्प जितना आकर्षक होगा पाठकों की आवाजाही भी उतनी ही अधिक होगी। इस सेतुबंध के लिए लघुकथाकार कई-कई शैलियों का सहारा लेता है यथा वर्णनात्मक, संवादात्मक, प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, संस्मरणात्मक आदि। कुछ लघुकथाकार पत्र शैली, डायरी शैली व नाटक शैली का भी प्रयोग करते हैं, यद्यपि इस तरह के उदाहरण कम ही हैं। अनेक लघुकथाओं में जातक कथा, लोककथा, फैंटेसी, फ्लैश बैक, पौराणिक आख्यान के कथा शिल्प भी प्रयुक्त हुए हैं जिनके माध्यम से समसामयिक परिदृश्य का खूबसूरती से उद्घाटन हो सका है। इसी प्रकार भाषा की भी विभिन्न भंगिमाएँ हो सकती हैं यथा; प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक, मुहावरेदार, अलंकारिक, काव्यात्मक, सादगीपूर्ण आदि। भाषा के दो पैर होते हैं; कथ्य और शैली। भाषा कथ्य के अनुसार अपना चोला बदलती है और शैली के अनुसार शृंगार करती है। भाषा लेखक की अँगुलियों के निशान हैं। लघुकथा की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सम्प्रेषण में सहायक हो न कि बाधक।

लघुकथा का आरंभ और अंत भी शिल्प का एक अहम हिस्सा है जिसे नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता। लघुकथाकार इन दो बिन्दुओं को लेकर जितना ऊहापोह में रहता है उतना मध्य को लेकर नहीं। प्रभावी आरंभ और सटीक समापन अलग कौशल की अपेक्षा रखते हैं। लघुकथा का आरंभ चाहे संवाद से हो, चाहे वर्णन से या फिर चरित्र-चित्रण से; परंतु कुछ ऐसे हो कि इसमें रचनाकार का सम्पूर्ण रचना-कौशल दिखाई दे, पाठक बँधकर रह जाए। जैसा कि हम रत्नकुमार सांभरिया, पुष्पलता कश्यप, आभा सिंह, रामेश्वर काम्बोज ‘हिमांशु’, संतोष सुपेकर की लघुकथाओं में देख सकते हैं।

लघुकथा के मध्य भाग पर काम करते हुए सदैव यह खतरा रहता है कि अनावश्यक विस्तार न हो जाए, लघुकथा अपने शिल्प का अतिक्रमण करते हुए कहानी के क्षेत्र में प्रवेश न कर जाए, लफ़ाज़ी का

शिकार न हो जाए, रूप के बोझ तले दबकर कराह न उठे। मध्य भाग रीढ़ की हड्डी है। लघुकथा की रीढ़ नाजुक होती है, इस पर कहानी की तरह अधिक बोझ वांछित नहीं है। इसीलिए निष्णात लघुकथाकार ऊपर वर्णित शैलियों के दायरे में रहते हुए भी संक्षिप्तता, सांकेतिकता व कलात्मकता का संतुलन बनाए रखता है। कभी-कभी तो वह रूढ़ कथा शैलियों के पार जाकर बिलकुल मौलिक कथा पद्धति आविष्कृत कर लेता है जो मील का पत्थर सिद्ध होती है। गुलशन बालानी की लघुकथा 'गुस सूचना' का शिल्प देखते ही बनता है। यहाँ कथ्य केवल तीन फोन कॉल में सिमटा हुआ है। पूरी लघुकथा मात्र आठ पंक्तियों की है परंतु शिल्प की कसावट के चलते बहुत प्रभावी बन पड़ी है। कुशल लघुकथा शिल्पी अधिक विस्तार में न जाकर केवल कुछ संवाद, पात्रों के हाव-भाव या प्रतीक से ही अपनी बात कह देता है। उसे अलग से चरित्र या परिवेश चित्रण की आवश्यकता नहीं पड़ती। आनंद बिल्थरे की संवाद शैली में रचित लघुकथा 'पक्की रिपोर्ट' के आरंभिक कुछ संवादों से ही परिवेश के साथ-साथ पात्रों के चरित्र साकार हो उठते हैं। संवाद शैली में पारस दासोत ने प्रचुर लघुकथाएँ लिखी हैं जो उनके संग्रह 'मेरी अलंकारिक लघुकथाएँ' में संकलित हैं। इनकी लघुकथाओं में आये संवाद टट्के, संक्षिप्त और मारक हैं। हाल ही में प्रकाशित क्षितिज का अंक (संपादक : सतीश राठी) संवाद शैली की लघुकथाओं पर आधारित है जिसमें कई उल्लेखनीय लघुकथाएँ उपस्थित हैं।

शिल्प की दृष्टि से सतीश राठी की 'मूर्ति रहस्य', 'जिस्मों का तिलिस्म', सुभाष नीरव की 'बारिश', 'मकड़ी', सुकेश साहनी की 'मेढ़कों के बीच', अशोक भाटिया की 'तीसरा चित्र' पठनीय हैं। कमल चौपड़ा की लघुकथाएँ कथ्य और संवाद की प्रस्तुति के रूप में आदर्श हैं। स्वाति तिवारी की लघुकथाओं में लगातार शिल्प के नवीन प्रयोग देखने को मिलते हैं। अशोक जैन, कुमार नरेंद्र, योगराज प्रभाकर जैसे लघुकथाकारों ने भी भाषा और शिल्प की दृष्टि से कुछ हटकर लिखा है। बलराम अग्रवाल की 'समंदर : एक प्रेमकथा' तथा प्रियंवद की 'एक शायर की मौत' सपाट वर्णनात्मक शैली की जमीन तोड़ते हुए सर्वथा अछूते बिंबों का सृजन करती हैं। प्रेम विषय को लेकर लिखी गई ये दोनों अद्भुत लघुकथाएँ हैं। बलराम की 'पाप और प्रायशिच्त', 'मशाल और मशाल' तथा 'और रुकी हुई हँसिनी कहीं नहीं पहुँचती' इस बात का प्रमाण हैं कि लघुकथा में भी कहानी की ही तरह शिल्प के अछूते प्रयोग किए जा सकते हैं।

दरअसल शिल्प का उपयोग जमूरे की डुगडुगी के रूप में नहीं होना चाहिए। शिल्प मकबरे के ऊपर की नक्काशी नहीं बल्कि उस भवन की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना होता है जिसमें ज़िंदगी की हलचल निवास करती है। यहाँ विचारों की गरमाहट, मानवीय संवेदनाओं की खुशबू, लोकजीवन के संघर्ष, रिश्तों के बनते-बिंदूते समीकरण और समाज की धड़कनें आबाद रहती हैं। इन सबके बिना खालिस शिल्प का कोई अर्थ नहीं। डॉ. विद्या भूषण के अनुसार, 'कथ्य शिल्प की नोक पर चढ़कर ही पाठक के मर्म को भेद पाता है। किन्तु जहाँ शिल्प की नोक कृत्रिम और खुरदरी होती है वहाँ वह पाठक के मर्म को न भेदकर स्वयं रचना को ही भेद जाती है।'

शिल्प का कार्य है लघुकथा को अधिक से अधिक संप्रेषणीय बनाना ताकि इसमें समाहित युगीनबोध ठीक उसी रूप में पाठकों तक पहुँच सके जिस रूप में लघुकथाकार चाहता है। कहना न होगा कि आज का लघुकथाकार शिल्प की भूमिका के प्रति सचेत है।

सम्पर्क : लालमादड़ी (नाथद्वारा) (राज.) मो. 9829588494

लघुकथाकार श्री सतीश राठी से डॉ. विकास दवे की बातचीत

डॉ. विकास दवे : आपने लेखन की शुरुआत कितने वर्ष पहले की?

श्री सतीश राठी : मेरे पिताजी भी साहित्य रचा करते थे अतः लेखन के बीज मेरे जींस में थे। मैंने पहली कविता कक्षा 6 में वर्ष 1965 में लिखी थी। उसके बाद स्कूल की पत्रिका में हर वर्ष कविता लिखता रहा, फिर कॉलेज की पत्रिका और विभिन्न साहित्यिक समाचार पत्रों पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित होती रही। कविताएँ लिखीं, ग़ज़ल लिखीं, गीत लिखे। वर्ष 1977 से लघुकथा के क्षेत्र में मेरा प्रवेश हुआ मेरी पहली लघुकथा 'समाजवाद' वर्ष 1978 में 'आधात' नामक लघुकथा पत्रिका में प्रकाशित हुई, जिसके संपादक स्वर्गीय विक्रम सोनी थे। उसके बाद निरंतर लेखन और प्रकाशन चलता रहा। बहुत सारी पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ शामिल होती रहीं और बहुत सारे लघुकथा संग्रह में भी लघुकथाएँ शामिल हुईं।

डॉ. विकास दवे : आपने अभी तक कितनी लघुकथाएँ लिखी हैं?

श्री सतीश राठी : मेरी लगभग 200 लघुकथाएँ प्रकाशित हैं। एक लघुकथा संग्रह एवं तीन साझा संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें एक संकलन बांग्ला भाषा में अनुवादित भी है। एक लघुकथा संग्रह प्रकाशनाधीन है।

डॉ. विकास दवे : आप शुरू से किन लेखकों से विशेष रूप से प्रभावित रहे हैं। लघुकथा लेखन में आप अपना किसे आदर्श मानते हैं?

श्री सतीश राठी : लघुकथा लेखन में मेरा आदर्श दादा राम नारायण उपाध्याय, डॉ. श्यामसुंदर व्यास एवं डॉ. सतीश दुबे रहे। मेरी समकालीन लघुकथा लेखन की पीढ़ी में भाणीरथ, श्याम सुंदर अग्रवाल, बलराम, अशोक भाटिया, बलराम अग्रवाल, सुभाष नीरव का लघुकथा लेखन मुझे प्रभावित करता है।

डॉ. विकास दवे : आपकी लघुकथाएँ अभी तक किन-किन समाचार पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं?

श्री सतीश राठी : प्रकाशन की शृंखला में बहुत लंबी संख्या है। लगभग 300 से अधिक पत्रिकाओं और 50 से अधिक संग्रहों में लघुकथाएँ शामिल हैं। सभी के नाम यहाँ पर देना संभव नहीं है।

डॉ. विकास दवे : क्या हिंदी लघुकथा पर कुछ फिल्मों का निर्माण भी हुआ है? कई स्थानों पर लघुकथाओं का नाट्य मंचन भी हुआ है। आपका इस बारे में क्या कहना है?

श्री सतीश राठी : सिरसा हरियाणा में वर्ष 1986 में आयोजित लघुकथा सम्मेलन में लघुकथाओं का मंचन देखने में आया था। वहाँ पर मेरी भी एक लघुकथा 'बीज का असर' का मंचन हुआ था। मेरी

अब तक चार लघुकथाओं का नाट्य मंचन हो चुका है। वर्ष 1918 में 'क्षितिज' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन में भी श्री सतीश क्षोत्रिय एवं नंदकिशोर वर्बे के नाट्य समूह 'पथिक' द्वारा 18 लघुकथाओं का मंचन किया गया था। मुंबई के फिल्मकार राजेश राठी ने सदाशिव कौतुक की दो लघुकथाओं पर फिल्मों का निर्माण किया है। प्रसिद्ध नाट्य कर्मी नंदकिशोर वर्बे द्वारा मेरी एक लघुकथा 'राशन' पर एक लघु फिल्म का निर्माण किया गया है। यह फिल्म एक लघु फिल्म समारोह में पुरस्कृत हो चुकी है। इंदौर में सीमा व्यास की लघुकथाओं पर भी फिल्म निर्माण हो चुका है तथा मनोहर दुबे द्वारा उनकी लघुकथाओं का मंचन भी किया गया है।

डॉ. विकास दवे : हमारे प्रदेश में लघुकथाओं के ऊपर शोध कार्य की क्या स्थिति है?

श्री सतीश राठी : देवी अहित्या विश्वविद्यालय इंदौर एवं विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में लघुकथाओं पर कुछ शोध के कार्य किए गए हैं, लेकिन जितनी गंभीरता से इस कार्य को आगे बढ़ाया जाना था वह अब रुक चुका है। इतना सारा लघुकथा साहित्य सामने आ चुका है कि अब लघुकथाकारों के व्यक्तिगत लेखन पर भी पीएचडी की जा सकती है। इस दिशा में फिलहाल अधिक कार्य नहीं हुआ है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मेरी लघुकथाओं पर एम फिल में भारती ललवानी द्वारा थिसिस प्रस्तुत की गई है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से ही डॉ मनीषा पुरोहित द्वारा की गई पी एच डी में मेरा एक अध्याय में विशेष उल्लेख किया गया है। मालवा पर केंद्रित पीएचडी की कुछ थीसिस में मेरा उल्लेख है, लेकिन जितने प्रभावशाली तरीके से यह कार्य आगे बढ़ाया जाना था वह नहीं हो पाया है।

डॉ. विकास दवे : साहित्य लेखन के लिए आपको कितनी बार सम्मानित किया जा चुका है?

श्री सतीश राठी : साहित्य कलश, इंदौर के द्वारा लघुकथा संग्रह 'शब्द साक्षी हैं' पर राज्यस्तरीय ईश्वर पार्वती स्मृति सम्मान वर्ष 2006, में प्राप्त। लघुकथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए माँ शरबती देवी स्मृति सम्मान 2012, मित्री पत्रिका एवं पंजाबी साहित्य अकादमी से बनीखेत में वर्ष 2012 में प्राप्त। सरल काव्यांजलि, उज्जैन से वर्ष 2018 में सम्मानित किया गया है। वर्ष 2020 में लघुकथा शोध केंद्र भोपाल के द्वारा लघुकथा के लिए मुझे दादा रामनारायण उपाध्याय स्मृति अलंकरण प्रदान किया गया है। अनुवाद कार्य में सक्रिय संस्था 'भाषा सखी' के द्वारा वर्ष 2021 में साहित्य रत्न सम्मान लघुकथा के क्षेत्र में प्रदान किया गया है।

डॉ. विकास दवे : आपने क्या कभी किसी पत्रिका का संपादन किया है?

श्री सतीश राठी : मेरे द्वारा वर्ष 1984 से निरंतर लघुकथा की अनियतकालीन पत्रिका 'क्षितिज' का संपादन किया गया है। यह पत्रिका अभी भी हर वर्ष प्रकाशित हो रही है। वर्ष 2021 में क्षितिज पत्रिका का संवादात्मक लघुकथा अंक प्रकाशित हुआ है, जो बहुत चर्चा में है। भोपाल से प्रकाशित 'कर्मेव जयते' के लघुकथा विशेषांक का भी संपादन किया है। अनियतकालीन पत्रिका 'लकीर' का भी संपादन किया है।

डॉ. विकास दवे : आप वर्ष 1977 से इंदौर शहर के लघुकथा परिदृश्य से जुड़े हुए हैं और बहुत सारी स्मृतियां आपके मन में होंगी। लघुकथा को लेकर इंदौर कैसा रहा है और आज क्या स्थिति है? इस पर कुछ विचार अभिव्यक्त करें।

श्री सतीश राठी : क्षितिज संस्था का वर्ष 1983 से निरंतर अध्यक्ष रहा हूँ, तथा लघुकथा पर तीन

अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन इंदौर शहर में जून 2018, नवंबर 2019 एवं सितंबर 2021 में कर चुका हूँ। क्षितिज के द्वारा आयोजित इन लघुकथा सम्मेलनों में अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न लघुकथाकारों को भिन्न-भिन्न सम्मानों से सम्मानित किया गया है। क्षितिज द्वारा सम्मानित लघुकथाकारों में सर्वश्री बलराम अग्रवाल, बी.एल. आच्छा, बलराम, श्यामसुंदर अग्रवाल, सुकेश साहनी, माधव नागदा, रामकुमार घोटड, पुरुषोत्तम दुबे, भगीरथ, अशोक भाटिया, योगराज प्रभाकर, सुभाष नीरव, सतीशराज पुष्करण, संतोष सुपेकर, कांता रॉय, योगेंद्र नाथ शुक्ल, ज्योति जैन, अंजू निगम, दिव्या राकेश शर्मा, कपिल शास्त्री, कुणाल शर्मा, अंतरा करवडे, वसुधा गाडगिल जैसे लोग तो सम्मानित किए ही गए हैं, इसके अतिरिक्त समग्र जीवन साहित्यिक अवदान सम्मान से सूर्यकांत नागर, शरद पगारे एवं मालव गौरव सम्मान से नरहरी पटेल को भी सम्मानित किया गया है। इनके अतिरिक्त भी कई सारे लघुकथाकार, रचनाकार, पत्रकार, संपादक क्षितिज संस्था के द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं। क्षितिज एकमात्र ऐसी संस्था रही है जिसने नगर की प्रतिभाओं को और नगर के वरिष्ठजनों को तो सम्मानित किया ही है लेकिन देश के भी प्रमुख रचनाकारों को आरंभित कर सम्मान प्रदान किया है।

डॉ. विकास दवे : इंदौर का लघुकथा परिदृश्य बहुत समृद्ध है। वर्ष 2017 में स्थापित वामा संस्था भी महिलाओं के साथ मिलकर लघुकथा के क्षेत्र में विशेष काम कर रही है।

श्री सतीश राठी : इंदौर शहर एक ऐसा शहर रहा है जो लघुकथा को बहुत प्रेम करता है। प्रारंभिक समय में निरंजन जमीदार के द्वारा मालवी में भी लघुकथाएँ लिखी गईं। चंद्रशेखर दुबे इंदौर के प्रमुख लघुकथाकार के रूप में रहे। डॉ. सतीश दुबे ने अपना पूरा जीवन एक प्रकार से लघुकथा के लिए ही समर्पित किया। क्षितिज के साथी श्री सुरेश शर्मा भी लघुकथा के लिए बहुत सक्रिय रहे। बुजुर्ग जीवन की लघुकथाओं का उनका एक संग्रह बहुत चर्चा में रहा। आज जब हम अपने सारे दिवंगत लघुकथाकार साथियों का स्मरण कर रहे हैं, तो यह देख रहे हैं कि एक लंबी कड़ी इंदौर की रही है। श्री रमेश सिंह छाबड़ा ‘अस्थिवर’ पत्रिका शब्दवर का संपादन करते थे। स्वयं वर्ष 1977 से लघुकथा के इस आंदोलन से संलग्न रहा हूँ और उस समय की सारी घटनाओं का साक्षी भी। जब भी वीणा कार्यालय जाना होता, डॉ. व्यास ऊपर कार्यालय में बुला लेते और आगे होकर कहते, ‘राठी जी लघुकथा भेजो, वीणा में छापना है’। इतने सहज और सरल व्यक्तित्व। इसी प्रकार डॉ. सतीश दुबे सदैव लघुकथाएँ लिखने के लिए प्रेरित करते रहे। चंद्रशेखर दुबे जब भी मिलते अपनी कोई नई लघुकथा सुना देते। साहित्य संगम संस्था की श्री निरंजन जमीदार के यहाँ पर जब गोष्ठी होती तो वह अपनी कोई लघुकथा जरूर सुनाते। श्री विक्रम सोनी पर लघुकथा एक जुनून की तरह हावी थी। उन्होंने निरंतर लघुकथाएँ लिखीं भी और पत्रिका ‘लघु आघात’ को भी बड़े मन से निकाला। श्रीमती रेखा कारडा इंदौर से लघुकथाकार के रूप में रहीं।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा से आपकी क्या अपेक्षाएँ हैं? इसकी रचना प्रक्रिया पर आप कुछ कहना चाहेंगे?

श्री सतीश राठी : लघुकथा को रचा जाना किसी भी प्रकार के जड़त्व की बात नहीं है, यह चैतन्यता की बात है, सजगता की बात है। लेखक अपने आसपास के वातावरण के प्रति अधिक संवेदनशील, अधिक जागरूक, अधिक चैतन्य होता है।

लघुकथा को आज संस्कार की जरूरत है। उसे सुसंस्कृत करना और लघुकथा लेखकों को पढ़ने की आदत डाल कर लघुकथा के मूलभूत संस्कार से परिचित करवाना, आज की सबसे बड़ी जरूरत लग रही है। लघुकथा की रचना और रचना प्रक्रिया की तथा उसके संस्कारों की, उसकी प्रस्तुति की, उसके विचार पक्ष की बात की जाना अब जरूरी लग रहा है। एक और सबसे महत्वपूर्ण बात लघुकथा की रचना प्रक्रिया को लेकर है। इसे लेखक को बड़ी ही गहराई के साथ समझना पड़ेगा। लघुकथा का विचार पक्ष तभी मजबूत होगा, जब किसी विषय को लेकर लेखक का चिंतन उसकी रचना प्रक्रिया में जुड़ेगा और मजबूती के साथ रचना का जन्म होगा। मूलतः प्रत्येक साहित्यकार में यह विशेषताएँ विद्यमान रहती हैं। लघुकथा के प्रारंभिक परिदृश्य को जब हम उठा कर देखते हैं, तो यह पाते हैं कि, उस समय का कालखंड, उस समय का सामाजिक वातावरण, उस समय की राजनीतिक स्थितियाँ, उस समय की शोषण की स्थितियाँ, समाज में व्यास ऊँच-नीच यह सब लेखकों के चिंतन में बने रहने के कारण उनके रचनाकर्म के विषय रहे हैं। कोई विषय किसी लेखक के मस्तिष्क में कब जागृत होगा, इसका कोई समय निर्धारित नहीं होता। एक वैचारिक कौंध उसके मन में, उसके मस्तिष्क में आती है और रचना का उसके माध्यम से जन्म हो जाता है।

इसके लिए कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए और लेखक के साथ-साथ संपादक को भी उसके संस्कार से परिचित करवाना चाहिए। यदि संभव हो तो समाचार पत्रों के साहित्यिक संपादक भी ऐसे आयोजनों में उपस्थित हो, इसका प्रयास होना चाहिए। यदि कोई रचना लघुकथा नहीं है और कोई समाचार पत्र उसे लघुकथा के रूप में छाप रहा है तो कहीं ना कहीं समाचार पत्र के साहित्यिक संपादक का भी विधा के प्रति ज्ञान कम है और उसे भी बढ़ाया जाना चाहिए। हालाँकि यह कठिन काम है क्योंकि समाचारों में साहित्य संपादक अपने आप को सर्वाधिक बुद्धिमान मानते हुए काम करते हैं और उनको लघुकथा के बारे में ज्ञान देना शायद उन्हें रुचिकर नहीं लगे। बहरहाल यह सब बातें लघुकथा का नुकसान कर रही हैं। खुशी की बात सिर्फ यही है कि कई सारे जागरूक समूह एवं चिंतन करने वाले लघुकथाकार इस स्थिति को सुधारने में लगे हुए हैं। क्षितिज संस्था ने भी कार्यशाला के आयोजन की रूपरेखा तैयार की है और भविष्य में यह आयोजन किए जाएंगे।

एक बात यहाँ पर और कहना चाहूँगा। पिछले तीन सालों में धड़ल्ले से लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो रहे हैं। अधिकांश में गुणवत्ता का ह्वास हो रहा है। इस स्थिति को सुधारने की जिम्मेदारी भी ली जाना जरूरी है। कई सारे आभासी जगत के समूह लघुकथा को लेकर ढेर सारा काम कर रहे हैं। उनमें कुछ काम बहुत अच्छा भी हो रहा है, लेकिन उसमें भी ढेर सारा कचरा देखने में आता है।

लघुकथा की चर्चा का बहुत सारा महत्वपूर्ण काम लघुकथा डॉट कॉम के माध्यम से भाई सुकेश साहनी और रामेश्वर कांबोज हिमांशु कर रहे हैं। लघुकथा साहित्य पर बलराम गुणवत्ता को सामने लाने एवं विश्वविद्यालय स्तर पर भी लघुकथा को स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। राजेश उत्साही भी अपने स्तर पर कुछ अच्छे तरीके से बातों को प्रस्तुत कर लघुकथा को समृद्ध करने का काम कर रहे हैं। वर्तमान जनगाथा एवं लघुकथा साहित्य के माध्यम से बलराम अग्रवाल तथा विभिन्न माध्यमों से अशोक भाटिया सतत् इस सुधार प्रक्रिया में लगे हुए हैं। लघुकथा शोध केंद्र के माध्यम से भोपाल में कांता रोय सतत् लगी हुई हैं और लघुकथा को विस्तारित करने के लिए प्रयास कर रही हैं। लघुकथा कलश के

माध्यम से योगराज प्रभाकर भी यह काम कर रहे हैं। दृष्टि के संपादक अशोक जैन, अविराम साहित्यिकी के संपादक उमेश महादोषी और दिल्ली से अनिल शूर आजाद अपने स्तर पर लघुकथा को समृद्ध करने का महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। लघुकथा के अलग-अलग शहरों में विभिन्न केंद्र बन गए हैं।

अपने ब्लॉग के माध्यम से और अन्य विभिन्न संसाधनों से चंद्रेश कुमार छत्तलानी तथा दिव्या राकेश शर्मा भी यह काम करने में लगे हुए हैं। क्षितिज पत्रिका भी सतत् अपनी टीम के साथ लगी हुई है। पड़ाव और पड़ताल के विविध खंडों के माध्यम से मधुदीप ने श्रेष्ठ लघुकथाओं का एक पूरा संसार खड़ा किया है, जिसे अच्छी लघुकथाओं को लिखने के लिए पढ़ना, लघुकथा लेखकों के लिए अत्यंत जरूरी बात है। अन्य समूहों में भी यह प्रवृत्ति लागू की जाना जरूरी है। सिर्फ संभ्या बढ़ाकर या ढेर सारे लोगों को प्रस्तुत कर लघुकथा के प्रति अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो सकती।

लघुकथा को लेकर मेरा विचार यह भी है कि उसमें उद्देश्यपरकता होना चाहिए। यदि लघुकथा किसी उद्देश्य को लेकर लिखी गई है, तो वह समाज में उचित रूप से संप्रेषित होगी और समाज उससे प्रभावित होगा। लेकिन यदि कोई लघुकथा बिना किसी उद्देश्य के रखी गई है, तो फिर उसकी सार्थकता भी समाप्त हो जाएगी। समाज में परिवर्तन के लिए उसका कोई उपयोग नहीं होगा। अभी जो समय कोरोना का चल रहा है, उस कोरोना काल में इस लॉकडाउन की विसंगतियों, विडंबनाओं, इसके दुख, इसके दर्द को लेकर बहुत सारी लघुकथाओं का सृजन हुआ है। बहुत सारी लघुकथाएँ किताबों के रूप में भी आई हैं। यह उनकी उद्देश्यपरकता है और इसलिए ऐसी लघुकथाओं को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने, समाचार पत्रों ने तथा पाठकों ने हाथों-हाथ ग्रहण किया है। कई संपादकों के द्वारा विभिन्न विषयों को लेकर पुस्तकें संपादित कर निकाली गई हैं। पिछले दिनों एक संग्रह किसानों के दुख-दर्द को लेकर सामने आया था। इसके पूर्व किनारों की तकलीफों पर भी लघुकथाएँ सामने आई हैं। सुकेश साहनी ने देह व्यापार पर केंद्रित लघुकथाएँ पुस्तक के रूप में निकाली हैं। उनका निरंतर कार्य लघुकथा विधा को समृद्ध कर रहा है। स्वर्गीय सुरेश शर्मा ने बुजुर्ग जीवन पर केंद्रित लघुकथाओं को पुस्तक के रूप में निकाला था।

इस प्रकार लघुकथाओं में समाज की विभिन्न चिंताओं पर केंद्रित लघुकथाओं का अलग-अलग पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाकर, समाज में उस विषय में जागरूकता पैदा करने का काम किया गया है। श्री रामकुमार घोटड ने भी इस तरह का काम किया है। कमल चोपड़ा, अशोक जैन, रूप देवगुण, उमेश महादोषी, अशोक भाटिया, कांता रॉय, योगराज प्रभाकर ने भी इस तरह के कार्यों को प्राथमिकता दी है। अभी-अभी लघुकथा कलश का राष्ट्रीय चेतना से संबंधित लघुकथाओं पर केंद्रित अंक प्रकाशित हुआ है। स्वर्गीय पारस दासोत ने किसी समय में विभिन्न विषयों पर लघुकथाएँ रच कर इस विधा को बहुत समृद्ध किया है। श्री संतोष सुपेकर एवं श्री राम मूरत राही ने भी अनाथ जीवन की लघुकथाओं को लेकर एक संग्रह ‘अनाथ जीवन का दर्द’ प्रस्तुत किया है लेखन का बीज जब बिना चिंतन रूपी खाद-पानी के अंकुरित होता है, तब वह एक पुष्ट और स्वस्थ पौधे के रूप में हमारे सामने नहीं आता। भीड़तंत्र की लघुकथाएँ दृष्टि संपत्ति के साथ लिखी गई लघुकथाएँ नहीं होती हैं। उद्देश्य विहीन रचनाओं का लेखन दिशा भ्रम पैदा करने वाला लेखन होता है, इसलिए लघुकथा में एक उद्देश्य लेकर किया गया लेखन आवश्यक होता है। लघुकथा के भीतर संस्कार और उसकी संवेदना का होना भी जरूरी होता है।

लघुकथा की विकास यात्रा में एक निरंतर प्रयोगधर्मिता बनी हुई है। आकार भिन्नता के कारण लघुकथा में वर्णित संवेदना की प्रभावगत क्षमता एवं तीक्ष्णता बड़ी ही तेजी के साथ सामने आई है।

अंतिम और सबसे महत्त्वपूर्ण बात लघुकथा की रचना प्रक्रिया को लेकर है। इसे लेखक को बड़ी ही गहराई के साथ समझना पड़ेगा। लघुकथा का विचार पक्ष तभी मजबूत होगा, जब किसी विषय को लेकर लेखक का चिंतन उसकी रचना प्रक्रिया में जुड़ेगा और मजबूती के साथ रचना का जन्म होगा।

डॉ. विकास दवे : भारतीय लघुकथा और वैश्विक लघुकथा के बारे में आपके क्या विचार हैं?

श्री सतीश राठी : वैश्विक लघुकथाओं को जब हम देखते हैं तो शेक्सपियर, लुसुन, सामरसेट माम, फ्रेंज काफका, खलील जिब्रान, तुर्गनेव, कार्ल सैंडबर्ग, ओ हेनरी, ब्रेख्ट, गोर्की आदि कई लेखकों की लघुकथाएँ सामने आती हैं, जो अप्रत्याशित रूप से अपने समापन के द्वारा पाठकों को चौंका देती हैं। यह पाठक की पूर्ण तन्मयता की माँग करती हैं, और तभी इनकी दुरुहता स्पष्ट हो पाती है। उनके माध्यम से हो सकता है कि कुछ भारतीय लघुकथाओं में उसी प्रकार की तकनीक विकसित हुई हो, लेकिन मूलतः भारतीय लघुकथा की आत्मा अपनी परंपरा से जुड़कर आगे बढ़ती है। सम्वेदनाओं का प्रस्फुटन विदेशी और भारतीय लघुकथाओं में लगभग एक जैसा है। विदेशी लघुकथाओं के संवादों का शिल्प अनूठा है, और भारतीय लघुकथा अभी उस क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। शिल्प के स्तर पर वैश्विक एवं भारतीय लघुकथाओं में निरंतर नए-नए प्रयोग हो रहे हैं, जो विधा की लोकप्रियता बढ़ाने के साथ ही उसे परिपक्व भी कर रहे हैं। यह भविष्य के लिए एक स्वस्थ संकेत है, और भारतीय लघुकथा के प्रति हम बहुत आशावान हैं।

डॉ. विकास दवे : आधुनिक हिंदी-लघुकथा का आरम्भ आप कबसे मानते हैं.. छठा, सातवाँ या आठवाँ दशक से अथवा कोई अन्य?

श्री सतीश राठी : पारंपरिक लघुकथा का काल तो तकरीबन 1876 से प्रारंभ होकर लगभग 1970 तक रहा। वैसे प्रो. भवभूति मिश्र ने सर्वप्रथम 1954 में 'लघुकथा' शब्द का प्रयोग ऐसी रचनाओं के लिए किया था। पर वर्तमान में जो हिंदी लघुकथा लिखी जा रही है, उसका प्रारंभ हम सातवें दशक से याने वर्ष 1971 से मानते हैं। इसके बाद में जो भी कार्य हुआ है वह विधागत स्थापनाओं के साथ हुआ है। आज की तारीख में इसे सर्वमान्यता भी मिल गई है।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा के आकार को लेकर बहस की स्थिति सदैव रही है, लघुवादी-लघुकथा जैसे आंदोलन तक चले हैं। आप आदर्श लघुकथा की शब्दसीमा क्या मानते हैं?

श्री सतीश राठी : उपन्यास को लें अथवा कहानी को, उनमें आज तक कोई शब्द सीमा का निर्धारण नहीं हुआ है। फिर यह आग्रह लघुकथा के लिए भी नहीं होना चाहिए। दोहों के समान इसका कोई छान्दिक व्याकरण भी निर्धारित नहीं है और ना ही ऐसा होना चाहिए। लघुकथा में कथ्य की जरूरत के अनुसार शब्दों का रचाव स्वयंमेव हो जाता है। उसका शिल्प अतिरिक्त भाषा को वैसे ही बाहर कर देता है और अधिकतम के लिए कहें कि वह अपने लघु रूप की स्थापना करते हुए ही समाप्त भी हो जाती है, अतः ऐसी कोई आदर्श लघुकथा की शब्द सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती।

डॉ. विकास दवे : कृपया स्पष्ट करें कि बोधकथा, संस्मरण, कहानी, व्यंग्य आदि से लघुकथा किस तरह भिन्न हैं?

श्री सतीश राठी : संस्मरण और कहानी, लघुकथा से बिल्कुल अलग हैं। बोध कथा अवश्य इस विधा के पूर्वज काल में विद्यमान रही है। समय के साथ-साथ लघुकथा की भाषा और उसका शिल्प निरंतर परिवर्तित होता जा रहा है। नवीन को अपनाने के लिए यह सबसे आतुर विधा है। संस्मरण में तो लेखक का पूर्ण प्रवेश रहता है और कहानी में भी कहीं-कहीं। व्यंग्य एक भाव है जो लघुकथा में, कहानी में अथवा संस्मरण, निबंध में भी आ सकता है। लघुकथा की भिन्नता इन सबसे अलग हटकर उसके सूक्ष्म शिल्प में है।

डॉ. विकास दवे : लघुकथा में कालदोष क्या बला है?

श्री सतीश राठी : 'कालदोष पर कई सारी धारणाएँ अलग-अलग स्थानों पर आई हैं। यह सिर्फ लघुकथा रचने की चतुराई ही है कि कभी-कभी अलग कालखंड को समेटकर भी वह कालदोष से मुक्त हो जाती है, और कभी-कभी विभिन्न काल को समाहित करने के बाद अपनी सपट बयानी और अकुशल शिल्प के कारण वह कालदोष से युक्त भी हो जाती है।

डॉ. विकास दवे : विशेषतया लघुकथा के विधागत विकास में सोशल मीडिया की भूमिका पर आप क्या कहना चाहेंगे?

श्री सतीश राठी : लघुकथा के विधागत विकास में सोशल मीडिया की क्या भूमिका हो सकती है। जानकार सम्पादक लघुकथा के स्वरूप को पहचान कर उसे छापता है और नादान चुटकुले को भी लघुकथा बनाकर। सोशल मीडिया विधागत घटनाओं को, विज्ञापनों के दबाव से बचाता हुआ कितना समेट पाया है यह तो सभी जानते हैं।

डॉ. विकास दवे : देखने में आता है कि जुम्मा-जुम्मा चार दिन की हुई इस विधा में खेमेबाजी की खींचतान, अपनों-अपनों का महिमामंडन करने तथा अन्यों की निंदा, उपेक्षा करने जैसी हरकतें फिर बढ़ने लगी हैं। इसका विधा पर क्या असर पड़ता है, पड़ सकता है?

श्री सतीश राठी : आधुनिक लघुकथा की शुरुआत यदि हम 1971 से मानें तो इसे 47 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। पूर्वाग्रहों से मुक्त समर्पण और आत्म प्रशंसा से मुक्ति ही इसे आगे ले जा सकती है। जो समर्पित हैं उनका कार्य स्वतः पहचान में आ जाता है, और खेमेबाज धीरे-धीरे स्वतः नकार दिए जाते हैं। इस पर इतना चिंतित होने की जरूरत मुझे नहीं लगती।

डॉ. विकास दवे : आपको क्या लगता है कहानी, उपन्यास, नाटक या एकांकी की तरह कभी लघुकथा भी अपना सम्मानित स्थान बनाने में सफल हो पाएगी? हाँ तो.. कब तक?

श्री सतीश राठी : मैं तो आज के समय में लघुकथा को सर्वत्र सम्मानित और लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित पाता हूँ। 1971 से विकास यात्रा के एक कड़े संघर्ष को झेलकर वह आज इस रूप में स्थापित हो पाई है कि, बड़े-बड़े समालोचक इस पर पुस्तकें दे रहे हैं। यह एक पूरी पीढ़ी का श्रम है। सृजन की स्तरीयता इसे और आगे लेकर जाएगी। लघुकथा के उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9425067204

जयशंकर प्रसाद

प्रसाद

मधुप अभी किसलय-शव्या पर, मकरन्त-मदिरा पान किये सो रहे थे। सुन्दरी के मुख-मण्डल पर प्रस्वेद बिन्दु के समान फूलों के ओस अभी सूखने न पाये थे। अरुण की स्वर्ण-किरणों ने उन्हें गरमी न पहुँचायी थी। फूल कुछ खिल चुके थे! परन्तु थे अर्ध-विकसित। ऐसे सौरभपूर्ण सुमन सवेरे ही जाकर उपवन से चुन लिये थे। पर्ण-पुट का उन्हें पवित्र वेष्टन देकर अञ्चल में छिपाये हुए सरला देव-मन्दिर में पहुँची। घण्टा अपने दम्भ का घोर नाद कर रहा था। चन्दन और केसर की चहल-पहल हो रही थी। अगुरु-धूप-गन्ध से तोरण और प्राचीर परिपूर्ण था। स्थान-स्थान पर स्वर्ण-शृंगार और रजत के नैवेद्य-पात्र, बड़ी-बड़ी आरतियाँ, फूल-चंगेर सजाये हुए धरे थे। देव-प्रतिमा रत्न-आभूषणों से लदी हुई थी।

सरला ने भीड़ में घुस कर उसका दर्शन किया और देखा कि वहाँ मल्लिका की माला, पारिजात के हार, मालती की मालिका, और भी अनेक प्रकार के सौरभित सुमन देव-प्रतिमा के पदतल में विकीर्ण हैं। शतदल लोट रहे हैं और कला की अभिव्यक्तिपूर्ण देव-प्रतिमा के ओष्ठाधार में रत्न की ज्योति के साथ बिजली-सी मुसक्यान-रेखा खेल रही थी, जैसे उन फूलों का उपहास कर रही हो। सरला को यही विदित हुआ कि फूलों की यहाँ गिनती नहीं, पूछ नहीं। सरला अपने पाणि-पल्लव में पर्णपुट लिये कोने में खड़ी हो गयी।

भक्तवृन्द अपने नैवेद्य, उपहार देवता को अर्पण करते थे, रत्न-खण्ड, स्वर्ण-मुद्राएँ देवता के चरणों में गिरती थीं। पुजारी भक्तों को फल-फूलों का प्रसाद देते थे। वे प्रसन्न होकर जाते थे। सरला से न रहा गया। उसने अपने अर्ध-विकसित फूलों का पर्ण-पुट खोला भी नहीं। बड़ी लज्जा से, जिसमें कोई देखे नहीं, ज्यों-का-त्यों, फेंक दिया; परन्तु वह गिरा ठीक देवता के चरणों पर। पुजारी ने सब की आँख बचा कर रख लिया। सरला फिर कोने में जाकर खड़ी हो गयी। देर तक दर्शकों का आना, दर्शन करना, घण्टे का बजाना, फूलों का रौंद, चन्दन-केसर की कीच और रत्न-स्वर्ण की क्रीड़ा होती रही। सरला चुपचाप खड़ी देखती रही।

शयन आरती का समय हुआ। दर्शक बाहर हो गये। रत्न-जटित स्वर्ण आरती लेकर पुजारी ने आरती आरम्भ करने के पहले देव-प्रतिमा के पास के फूल हटाये। रत्न-आभूषण उतारे, उपहार के स्वर्ण-रत्न बटोरे। मूर्ति नग्न और विरल-शृंगार थी। अकस्मात् पुजारी का ध्यान उस पर्ण-पुट की ओर गया। उसने खोल कर उन थोड़े-से अर्ध-विकसित कुसुमों को, जो अवहेलना से सूखा ही चाहते थे, भगवान् के नग्न शरीर पर यथावकाश सजा दिया। कई जन्म का अतृत्य शिल्पी ही जैसे पुजारी होकर आया है। मूर्ति की पूर्णता का उद्योग कर रहा है। शिल्पी की शेष कला की पूर्ति हो गयी। पुजारी विशेष भावापन्न होकर आरती

करने लगा। सरला को देखकर भी किसी ने न देखा, न पूछा कि ‘तुम इस समय मन्दिर में क्यों हो?’

आरती हो रही थी, बाहर का घण्टा बज रहा था। सरला मन में सोच रही थी, मैं दो-चार फूल-पत्ते ही लेकर आयी। परन्तु चढ़ाने का, अर्पण करने का हृदय में गौरव था। दान की सो भी किसे! भगवान को! मन में उत्साह था। परन्तु हाय! ‘प्रसाद’ की आशा ने, शुभ कामना के बदले की लिप्सा ने मुझे छोटा बनाकर अभी तक रोक रखा। सब दर्शक चले गये, मैं खड़ी हूँ, किस लिए। अपने उन्हीं अर्पण किये हुए दो-चार फूल लौटा लेने के लिए, ‘तो चलूँ।’

अकस्मात् आरती बन्द हुई। सरला ने जाने के लिए आशा का उत्सर्ग करके एक बार देव-प्रतिमा की ओर देखा। देखा कि उसके फूल भगवान के अंग पर सुशोभित हैं। वह ठिक गयी। पुजारी ने सहसा घूम कर देखा और कहा,-‘अरे तुम! अभी यहाँ हो, तुम्हें प्रसाद नहीं मिला, लो।’ जान में या अनजान में, पुजारी ने भगवान् की एकावली सरला के नत गले में डाल दी। प्रतिमा प्रसन्न होकर हँस पड़ी।

●●

माधवराव सप्रे

एक टोकरी-भर मिट्टी

किसी श्रीमान् जर्मींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोपड़ी थी। जर्मींदार साहब को अपने महल का हाता उस झोपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहाँ बसी थी; उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोपड़ी में मर गया था। पतोहूँ भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुःख के फूट-फूट रोने लगती थी। और जबसे उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोपड़ी में उसका मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी जर्मींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोपड़ी पर अपना कब्जा करा लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान् उस झोपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़कर बोली, ‘महाराज, अब तो यह झोपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।’ जर्मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, ‘जब से यह झोपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत-कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहाँ रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोपड़ी में से एक टोकरी-भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी

पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले आऊँ।' श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दुःख को किसी तरह सँभालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान् से प्रार्थना करने लगी, 'महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।' जर्मांदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्योंही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्योंही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, 'नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।'

यह सुनकर विधवा ने कहा, 'महाराज, नाराज न हों, आपसे एक टोकरी-भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं। उसका भार आप जन्म-भर क्योंकर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।' जर्मांदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गयीं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोपड़ी वापिस दे दी।

●●

शरद जोशी

क्रमशः प्रगति

खरगोश का एक जोड़ा था, जिनके पाँच बच्चे थे। एक दिन भेड़िया जीप में बैठकर आया और बोला— 'असामाजिक तत्वों तुम्हें पता नहीं सरकार ने तीन बच्चों का लक्ष्य रखा है' और दो बच्चे कम करके चला गया। कुछ दिनों बाद भेड़िया फिर आया और बोला कि 'सरकार ने लक्ष्य बदल दिया' और एक बच्चे को और कम कर चला गया। खरगोश के जोड़े ने सोचा, जो हुआ सो हुआ, अब हम शांति से रहेंगे। मगर तभी जंगल में इमर्जेंसी लग गई। कुछ दिन बाद भेड़िये ने खरगोश के जोड़े को थाने पर बुलाया और कहा कि सुना है, तुम लोग असंतुष्ट हो सरकारी निर्णयों से और गुस रूप से कोई घट्यंत्र कर रहे हो? खरगोश ने साफ इनकार करते हुए सफाई देनी चाही, पर तभी भेड़िये ने बताया कि इमर्जेंसी के नियमों के तहत सफाई सुनी नहीं जाएगी। उस रोज थाने में जोड़ा कम हो गया। दो बच्चे बचे। मूर्ख थे। माँ-बाप को तलाशने खुद थाने पहुँच गए। भेड़िया उनका इंतजार कर रहा था। यदि थाने नहीं जाते तो वे इमर्जेंसी के बावजूद कुछ दिन और जीवित रह सकते थे।

●●

जगदीश चन्द्र मिश्र

मिट्टी के आदमी

एक राजा एक दिन घूमता हुआ नदी के किनारे जा निकला। वहाँ आकर उसने देखा-एक पागल सा आदमी नदी के किनारे पक्की ईटों के छोटे-छोटे मकान, छोटी-छोटी सड़कें, छोटी-छोटी नदियाँ और उनके ऊपर छोटे-छोटे पुल बना रहा है।

राजा ने उसके निकट जाकर पूछा, 'तुम यह क्या कर रहे हो?'

'अपनी प्रजा के लिए एक सुन्दर नगर बना रहा हूँ।' उसने उत्तर दिया।

'तेरे प्रजाजन कहाँ हैं?' राजा ने फिर पूछा।

वह आदमी राजा का हाथ पकड़कर कुछ दूर एक छोटे-से टीले पर ले गया और कहा, 'यह देखो, टीले के ऊपर एक कतार में ये सब मेरे प्रजाजन खड़े हैं।' राजा ने देखा-टीले के ऊपर एक कतार में बहुत से मिट्टी के बने निर्जीव आदमी खड़े हैं। राजा ने किन्चित् मुस्कुराते हुए पूछा, 'ये तेरे मिट्टी के आदमी इन सड़कों और इन नदी पुलों को कैसे पार करेंगे?'

राजा की यह बात सुनकर वह आदमी राजा का हाथ पकड़कर उसे टीले के दूसरे पार ले गया। राजा ने उस जगह जाकर देखा-वहाँ लोहे की एक बड़ी मशीन रखी हुई है। उसे दिखाकर उस आदमी ने कहा, 'यह विज्ञान का युग है। जो काम आदमी अपने आप नहीं कर सकता, वह आज विज्ञान के द्वारा सरलता से हो जाता है। मेरे प्रजाजन भी इस लोहे की मशीन पर बैठकर सरलता से इस नगर की सड़कें और नदी पुल पार करेंगे।'

राजा ने उसे धिक्कारते हुए कहा, 'ये तेरे आदमी वैसे जीवित कहाँ हैं, जैसे नगरों में रहनेवाले मनुष्य होते हैं?' राजा की बात सुनकर वह आदमी दो क्षण को अप्रतिभ और चिन्तित सा हुआ। उसके बाद उसने राजा से पूछा, 'तेरे नगर में राजा वैसे जीवित मनुष्य हैं?'

'हाँ।' राजा ने उत्तर दिया।

'चल, मुझे दिखा?' उस आदमी ने कहा।

राजा उसे लेकर अपने नगर में आया और उसने उस नगर में रहनेवाले चलते-फिरते आदमियों को उसे दिखाया। वह आदमी उन्हें देखकर कुछ देर सोचता रहा। उसके बाद वह तेजी से उछला और दौड़-दौड़कर उसने किसी के मुँह पर चपत मारा, किसी के मुँह पर घूँसा और किसी की कमर पर दो लात।

अकस्मात् इस प्रकार निर्भीकता से उसे मार-पीट करते देख उस नगर के लोग भय से भाग-भागकर अपने-अपने घरों में घुस गए, पर किसी ने उसे कुछ कहा नहीं।

राजा उसकी इस अनुचित बात पर अपना रोष प्रकट करना चाहता था, परन्तु उससे पहले ही उसने राजा से कहा, 'ये तेरे इस नगर के चलते-फिरते आदमी जीवित कहाँ हैं, राजा? इस संसार में जीवित तो वही कहलाते हैं, जो किसी दूसरे से अपना अपमान नहीं सहते। ये तो सब मरे हुए हैं। जिन्दा आदमियों की लाशें हैं, जो तुम्हें चलती-फिरती दिखाई दे रही हैं। चल, लौटकर देख तेरे इन जीवित आदमियों से तो मेरे

मिट्टी के आदमी कितने अच्छे हैं, जो मिट्टी के बने होने पर भी किसी का किया अपमान नहीं सह सकते।’
राजा को उसकी बात पर आश्चर्य हुआ। वह उसके साथ लौटकर फिर नदी के किनारे आया।

नदी के किनारे पहुँचते ही उसने राजा को टीले के सामने ले जाकर कहा..

‘अरे, मार तो तू मेरे इन मिट्टी के आदमियों के शरीर पर मेरी तरह चपत, तू लात, घूँसे।’

राजा ने उसके कहते ही उछलकर उन मिट्टी के आदमियों के ऊपर चपत, घूँसे और लातें मारनी आरम्भ कर दीं। राजा के घूँसे और लात जिस पर लगते गए, वही मिट्टी का आदमी चूर-चूर होकर पृथ्वी पर गिरता गया।

उनके गिरते ही उस आदमी ने चिल्लाकर कहा, ‘देखा, तेरे आदमी जीवित होते तो अपने अपमान का प्रतिकार करते-बदला लेते या मर जाते। उन्होंने अपना अपमान सहा; पर इन आदमियों ने नहीं सहा। मिट्टी के थे, इसलिए तुमसे अपने अपमान का बदला तो नहीं ले सके, किन्तु उन्होंने अपमान सहकर जीवित रहने की अपेक्षा, अपने शरीर नष्ट कर दिए।’

●●

जगदीश कश्यप

साँपों के बीच

जब उसने दुकानदार से इस बात पर जिरह की कि तेल खत्म हुए बिना उसने दुकान का शटर क्यों गिराया तो लोगों का विशाल झुँड चिल्ला उठा-‘ये बाबूजी ठीक कहते हैं, पुलिस को फोन करो, साला बेईमान, तेल का ब्लैक करेगा।’ ‘मैंने कह दिया न स्टाक खत्म हो गया है। जाओ बुला लाओ पुलिस को।’ मोटी तोंद वाला दुकानदार चिल्लाया-‘लो, मैं ही फोन करता हूँ।’

पुलिस आई। सप्लाई विभाग का एक निरीक्षक भी आया। बाद में वह निरीक्षक बाहर आकर बोला-‘जितना स्टाक में माल है, मिलेगा, सब लाइन लगा लो।’

यह कहते ही उसने डकार ली। चाय-समोसे वाली। लोगों को तेल मिलने लगा। दुकानदार खड़े युवक से बोला-‘तुझे तेल नहीं लेने दूँगा। हराम के बच्चे, जा कर मेरी शिकायत मिनिस्टर के पास।’

‘तुम लोगों को फाँसी लगनी चाहिए चौराहे पर।’ वह युवक अब बुरी तरह उत्तेजित हो गया था। जिस कारण उसके हाथ का मिट्टी के तेल का खाली पीपा हवा में लहरा उठा।

दुकानदार ने गुस्से और ताव में नौकर को तेल की पर्ची बनाने से रोक दिया और माँग की कि जब तक उस देशभक्त को वहाँ से नहीं हटाया जाता, वह तेल नहीं बाँटेगा। लोगों में से एक ने सहानुभूतिपूर्वक कहा-‘तुम पढ़े-लिखे हो बेटे, उन नेताओं को पकड़ो जो एक-एक लाख रुपये में लाइसेंस बाँटते हैं। महँगाई बढ़ाते हैं। इस बेचारे लाला ने आपका क्या बिगाड़ा है।’

उस बुजुर्ग की बात का जब पूरी पंक्ति ने समर्थन किया तो उसे लगा कि वह साँपों के बीच खड़ा है और प्रत्येक साँप उसकी ओर दुमुँही जीभ लपलपा रहा है।

●●

भवभूति मिश्र

बच्ची-खुची सम्पत्ति

‘अनन्त सौन्दर्य और अखण्ड रूप-माधुरी लेकर भी तुम भीख माँगने चली हो सुन्दरी!’ कहते हुए धनी युवा की सरृष्टा आँखें उसके मुखमण्डल पर जम गईं।

वह मुस्कराने लगा और साथ-ही-साथ विचित्र भाव-भंगिमा भी दिखलाने लगा। युवती के कोमल कपोल रोब और लज्जा से लाल-लाल हो उठे। उसकी आँखें, पैर के नीचे, भूमि में छिपे किसी सत्य के अन्वेषण में लग गईं। युवक ने पूछा, ‘भीख माँगने में क्या मिलेगा? पैसा, दो पैसा या चार पैसा, इतना ही न? क्या तुम इतने से ही अपने पति को क्षयरोग से मुक्त कर लोगी? याद रखो, यह राजरोग है और इसकी चिकित्सा के लिए चाहिए रूपया, काफी रूपए, हाँ!’

‘तो फिर और क्या करूँ बाबूजी?’ दबे स्वर में युवती ने पूछा। युवक ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा, ‘और क्या करोगी? मुझी से पूछती है? यह सरस अधर, सुरीला कण्ठ-स्वर, कोमल बाँहें-किस दिन ये काम देंगे? कहता हूँ। हाथ फैलाओगी तो तांबे के टुकड़े पाओगी और बाँहें फैलाओगी तो पाओगी हीरे-जवाहरात।’ इतना कहकर युवक ने अपनी तिजोरी खोल दी।

उस रमणी ने उन्हें देखा। आँखें उनके झिलमिल प्रकाश में न ठहर सकीं। वह चुप रह गई। उसका सारा शरीर पीला पड़ गया। उसे लग रहा था, उसके ये शब्द सदा से अपरिचित हों।

कुछ देर तक वह इसी प्रकार स्तब्ध भीत-सी खड़ी रह गई। अन्त में अपने बिखरे साहस को समेटकर उसने उत्तर दिया, ‘बाबूजी, इसी हिन्दुस्तान में आने के लिए अपनी सारी सम्पत्ति तो पाकिस्तान में गँवा आई हूँ। क्या हिन्दुस्तान पहुँचकर भी अपनी बच्ची-खुची सम्पत्ति को गँवा दूँ? नहीं बाबू यह नहीं होने का। माफ कीजिए। यह बहुत बड़ा देश है। एक-एक पैसा तो मिल ही जाएगा। यही बहुत है।’ कहती हुई वह शीघ्रता से बाहर निकल गई।

●●

सतीश दुबे

राजा भी लाचार है

उसे पता लगा कि नया राजा हर शख्स को आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने की घोषणा पर अमल कर रहा है। ताज्जुब है, इसके बावजूद दरबारी होकर भी वह हर चीज के लिए तरसा करता है। उसे विश्वास हो गया कि उसे तरसाने के पीछे बिचौलियों की साजिश काम कर रही है।

वह स्वयं राजा के पास पहुँच गया तथा गुहार लगाई, “राजा! राजा! आम दो!”

राजा ने एक बार उसकी तरफ हवाई नजर फेंकी तथा जवाब दिया, “आम! आम तो सरकार के हैं...।”

जवाब सुनकर उसे एकदम झटका लगा। जाँचने के लिए राजा की आँखों में झाँककर धीरे से अर्ज किया, “पर हुजूर, हम भी तो दरबार के हैं।”

“तो क्या हुआ! सरकार की काली कुत्ती तो सबको काटती है, तुमको भी काटेगी।”

पलक झपकते ही उसकी समझ में सब माज़रा आ गया। आँखें घुमाकर धीरे से फुसफुसाया, “धी की रोटी डालकर उसको वश में कर लेंगे हुजूर...”

“और यदि घोड़ी ने लत्ती मारी तो?”

“तो उसको भी चंदी-चारा डाल देंगे।”

“फिर तो आपको आम मिलेंगे।”

राजा के इशारे पर एक गुलाम तश्तरी में आम लेकर हाजिर हो गया।

राजा ने दरबारी को आदेश दिया, “एक आम उठा लो।”

उसने उठाकर रस चूसा।

“हुजूर, यह तो खट्टा है।”

“दूसरा उठाओ।”

“हाँ, यह मीठा है।”

उसके बाद उसने जो आम उठाया, वह फिर खट्टा लगा।

उसने राजा की ओर जिज्ञासा-भरी नजर से देखा। राजा ने उसकी भाषा को समझकर ठहाका लगाया, “मूर्ख! दरबारी होकर भी इतना नहीं समझता कि राजा और सरकार के कुत्तों को धी की रोटी और घोड़ों को चंदी-चारा डालने पर भी सब आम मीठे नहीं मिलते। समझे? जाओ भागो यहाँ से!”

एक बार गौर से उसने राजा का चेहरा देखा और उसे लगा-अरे! यह तो वही बरसों पुराना राजा का लाचार चेहरा है। चेहरा समझ में आते ही वह दुलकी लगाकर वहाँ से भागा।

●●

सतीशराज पुष्करणा

चूक

चिन्तन बाबू पूरी रात सो नहीं सके। सुबह उठे तो मन-मिजाज़ थका-थका-सा लगा। कल वाली बात उन्हें रह-रहकर परेशान कर रही थी। उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उनका बेटा अभिनन्दन उनके साथ इस बेहूदगी से पेश आएगा। वह सोचने लगे कि उन्होंने आखिर ऐसा क्या कहा कि उसने कह दिया, यदि वह उन्हें घर के मुख्य-द्वार के ठीक अन्दर में कमरे बनाने नहीं देंगे तो वह उन्हें जान से मार देगा।

क्या आदमी इस हद तक स्वार्थी हो सकता है, अभिनन्दन को उन्होंने पढ़ाया-लिखाया। नौकरी लगवा दी। अच्छे घर में शादी करा दी। रहने को घर बनवा दिया। उससे कभी कोई अपेक्षा नहीं रखी। जो संभव हुआ किया और करते ही जा रहे हैं। फिर भी समझ नहीं पा रहे हैं कि जीवन में अभिनन्दन के पालन-पोषण में उनसे कहाँ चूक हो गयी?

समाज में उनकी इज्ज़त है, प्रतिष्ठा है, उन्होंने अपने तन-बदन तक को सँवारने में कभी ध्यान नहीं दिया। अभिनन्दन को कभी अभाव का एहसास तक नहीं होने दिया। उन्होंने बड़े शौक से घर बनवाया।

बड़े-से मुख्य-द्वार को ढंग से सजाया-सँवारा। उन्होंने लाख समझाया कि ‘बेटा! कमरे अन्दर खाली पड़ी जगह पर बनवा ले, घर की शोभा नष्ट न कर ... मैंने इतना ही तो कहा था न ! यहाँ नहीं, वहाँ उधर बनवा ले ... घर की शोभा बनी रहने दे।’ उत्तर में उसने कहा दिया, ‘आप सठिया गये हैं। अन्दर कहीं कोचिंग चलेगा? मैंने रोड पर रहेगा तो छात्रा-छात्राओं का ध्यान अधिक जायेगा।’

मैंने कहा था, ‘बेटा! पढ़ाई अच्छी हो, तो छात्रा-छात्राएँ सुदूर जंगलों में भी पढ़ने चले जाते हैं। अपने में वो बात पैदा करो।’ उसने कितनी आसानी से कह दिया था, ‘आप यदि मेरे रास्ते में आए तो मैं आपको जान से मार दूँगा।’ ‘आप नाहक परेशान बैठे हैं। परेशान न हों! बेटा है, आज का युवा है। क्रोध में कह गया है, वह आप पर हाथ नहीं उठा सकता, आपने आज तक उसकी हर बात पूरी की है, यह भी मान लीजिए।’ पली से समझाया।

‘बस यहीं चूक हो गयी... इकलौता होने के कारण उसकी हर बात मानता गया... जो माननी चाहिए थी वह भी.... जो नहीं माननी चाहिए थी वह भी।’ ‘... तो फिर आज क्यों नहीं मान रहे हैं?’

वह हँस पड़े। उन्हें समझ में आ गया, उनसे चूक कहाँ हो गयी। इस चूक का खामियाजा तो भुगतना ही पड़ेगा। अभी वह ये सब सोच ही रहे थे कि पोते पर उनकी नजर पड़ गयी, उन्हें अभिनन्दन का भविष्य भी दिखायी देने लगा। पोता अपने पिता से ज़िद कर रहा था कि यदि आज मेरी साइकिल नहीं लाए, तो मैं आपसे बात भी नहीं करूँगा।

उत्तर में अभिनन्दन ने कहा था, ‘नहीं बेटा! ऐसे नहीं बोलते, मैं आपके लिए साइकिल ज़रूर लेकर आऊँगा, आप तो मेरे राजा बेटे हैं न।’ उन्हें अभिनन्दन का बचपन और अपनी जवानी के दिन स्मरण हो आए।

●●

युगल

रास्ता

उसके सोते कई दिन गुजर गये थे। घर के लोग उठाकर थक गये थे और अंत में झुँझलाकर उठाना ही छोड़ दिया था। लेकिन जब वह उठा, तो उसे लगा कि दूर-दूर तक धुंध छाई हुई है। हवा भारी और कड़वी है। उसने गहरी साँस ली, तो कलेजे में जलन होने लगी। बाहर आया, तो देखा, वादियों में कँटीली झाड़ियाँ उगी हैं, एक-दूसरे में ऐसी गुँथी हैं कि राह खोजना मुहाल। ऊपर से गहराती मोटे पर्दे-सी धुंध।

उसने एक निर्णय लिया और पाँव आगे बढ़ाये। उसे ठोकर लगी और पाँव में काँटे चुभ गये। उसने काँटे निकालने का प्रयास किया और देखा कि उसके पाँव खून से भीग चुके हैं। खून से सने हाथ को दामन से पोंछना चाहा, तो पाया कि उसके दामन तार-तार हो चुके हैं। उसने आवाज लगायी – “लोगों, बाहर आओ, धुएँ और धुंध के पार जाने के लिए, अँधेरे से लड़ने के लिए।”

उसे आश्चर्य हुआ कि लोगों ने आवाज सुनकर अपने-अपने दरवाजे बंद कर लिये। उसने दरवाजों पर दस्तक दी और पुकारा – “दरवाजा खोलो, तुम्हारे चारों ओर जहरीला रिसाव हो रहा है। तुम नहीं

निकलोगे, तो तुम्हारे बच्चे घुट-घुट कर मरेंगे। अपने बच्चों के लिए, अगली पीढ़ी के लिए बाहर निकलो।

लेकिन कोई नहीं निकला, तो उसने मुँडेरों पर चढ़कर देखा कि हर घर में ऊँट उकडू बैठे हैं और जहरीले रिसाव से अपने को बचाने के लिए बालुओं के ढेर में अपना थुथना गाड़े हैं। उस धुंध में वह निर्णय नहीं कर सका कि वे ऊँट ही थे या आदमी थे। फिर वह उस अँधेरे के पार जाने के लिए भागने लगा। वह रोना चाहता था, लेकिन उसकी रुलाई प्रार्थना बन गयी – भगवान्! प्रकाश दो! अँधेरे से बचाओ! हमें काँटों के पार ले चलो! तब उसके सामने एक आकृति प्रकट हुई। उसके बस्त्र धवल थे। आकृति चिकनी थी और होठों पर मुस्कान थी। देवदूत की तरह वह बोला – “मैं तुम्हें इस अँधेरे के पार ले चलूँगा। मेरे पीछे आओ!” और वह पत्थरों से टकराता, काटों से उलझता, रक्ताविल चरणों से उसके पीछे चलता रहा चलता रहा। कि उसने एक चमकती हुई अद्वालिका देखी, जो बाहर-भीतर से जगमगा रही थी। सारा प्रकाश वहीं कैद था और उसके ऊपर की चिमनी से जहरीला रिसाव हो रहा था। जिस आदमी के पीछे वह चल रहा था, वह उस अद्वालिका के अंदर चला गया और दरवाजा स्वतः बंद हो गया।

यद्यपि चलते-चलते उस आदमी के पाँव थक चुके थे, फिर भी उसने उस बंद दरवाजे पर पाँव से प्रहार करना शुरू किया। उसने किसी को पुकारा नहीं, किसी से प्रार्थना नहीं की। उस अद्वालिका में कैद प्रकाश की मुक्ति का उसके सामने वही रास्ता था।

●●

शकुन्तला किरण

सामाहिक भविष्य-फल

रितु को अपने भविष्य-फल पर अटूट विश्वास रहता था। पत्र-पत्रिकाओं में भी वह भविष्य-फल ही खोजती रहती। इस बार के अखबार में वर्णित सातों ही दिन विशेष थे, जो सही भी रहे। रवि को असफल यात्रा : राशन की दुकान अचानक बंद मिलने से, उसकी घर से वहाँ तक की यात्रा असफल ही रही थी। सोम को दुर्घटना : सफाई करते समय अचानक एक महँगा कप टूट जाना, किसी दुर्घटना से कम नहीं था। मंगल को विशेष प्रतिष्ठा : पार्टी में, पड़ोसन की कीमती जरीवाली साड़ी पहनकर जाने से, सब पर विशेष रोब तो पड़ा ही था। बुध को गृह-कलह : महरी ने बिना बात आकस्मिक छुट्टी मना ली...फलस्वरूप क्रोध उत्तरा पति पर, और बैठे-बिठाए गृह-कलह हो ही गई। बृहस्पति को अप्रिय घटना : दूधबाला सुबह-सुबह सबके सामने इज्जत उतार गया था। पिछला हिसाब चुकता हुए बिना अब दूध नहीं मिलेगा। शुक्र को शत्रुओं पर विजय : बहुत नुकसान करते रहने वाले....शत्रु....दोनों मोटे चूहे.....कल ही तो पिंजरे में फँसे थे, पर आज शनि को ‘आकस्मिक धन-लाभ’ कहाँ से होगा? कहीं से, किसी भी तरह की, कोई भी तो संभावना नहीं है, पर....जब लिखा है तो मिलेगा ही....इसी सोच में दोपहर भी निकल गई और वह निराश होती जा रही थी.....तब....? अनायास नजरें टिकट पर गई....वह मुस्कुराई, तुरंत टिकट उतार लिए, दो टिकट सीलरहित थे, उसे पूरे एक रूपए का आकस्मिक धन लाभ हुआ था। भविष्य-फल गलत नहीं हो सकता था।

●●

डॉ. रामकुमार घोटड़

लघुकथा आयोजनों के द्वारोखे से मध्य प्रदेश

सतीश राठी (इन्दौर—मध्यप्रदेश) के अनुसार, शुरुआती दौर में ही मध्यप्रदेश के विभिन्न शहरों में, श्यामसुन्दर व्यास, सतीश दुबे, सूर्यकान्त नागर, सतीश राठी जैसे वरिष्ठ लघुकथाकारों के सानिध्य में इन्दौर, विक्रम सोनी के संयोजन में खण्डवा, उज्जैन, कृष्ण कमलेश के संचालन में भोपाल में स्थानीय संस्थाओं द्वारा समय-समय पर लघुकथा पर चर्चा-गोष्ठियाँ होती रही हैं। पत्र-पत्रिकाओं के लघुकथांक के प्रकाशन पर, लघुकथा पुस्तकों के विमोचन और आयोजित लघुकथा प्रतियोगिताओं के पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान करने के उपलक्ष्य में स्थानीय संस्थाओं द्वारा आयोजित समारोहों में लघुकथा विषयक चर्चाएँ लघुकथा पठन जैसी गतिविधियाँ, एक सामान्य कार्यक्रम की तरह होते रहे हैं। यहाँ मैंने आधुनिक हिन्दी लघुकथा काल से अब तक (1971-2021) 50 वर्षों का लघुकथा विषयक सम्मान समारोह, सम्मेलन एवं गोष्ठियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूँ, जिसमें सतीश राठी, डॉ. मालती बसन्त, सूर्यकान्त नागर, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सन्तोष सुपेकर, कान्ता राय, प्रतापसिंह सोढ़ी, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, डॉ. कुंवर प्रेमिल एवं अन्य लघुकथा मनीषियों का सहयोग प्रशंसनीय रहा है।

वर्ष 1973 में ‘नवज्योति साहित्य परिषद्’ की ओर से इन्दौर में डॉ. सतीश दुबे की अध्यक्षता में एक गोष्ठी हुई, जिससे लघुकथा पर विचार-विमर्श किया गया।

वर्ष 1974, 10 सितम्बर को ‘नवज्योति साहित्य परिषद्—इन्दौर’ के द्वारा साहित्यिक केन्द्र ‘बड़ा रावला’ में डॉ. सतीश दुबे के लघुकथा-संग्रह ‘सिसकता उजास’ के विमोचन पर मनीषराय की अध्यक्षता में एक गोष्ठी रखी गयी, जिसमें विनायक दामोदर सदन तथा डॉ. श्यामसुन्दर व्यास, डॉ. रामकिशन सोमाणी, मनीषराय यादव एवं वेद ‘हिमांशु’ ने ‘सिसकता उजास’ की प्रशंसा करते हुए ‘लघुकथा के स्वरूप, महत्त्व एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।’

वर्ष 1975, 25 जून को ‘वैष्णव विविध शिल्पकला, महाविद्यालय—इन्दौर’ के छात्रावास में युवा कथाकारों की एक गोष्ठी डॉ. सतीश दुबे की अध्यक्षता में हुई। इसमें लघुकथा के सही स्वरूप व उसकी भूमिका पर गम्भीरता से विचार-विमर्श किया गया। इस गोष्ठी में राजेन्द्र जोशी, सुधीर जोशी, शलभ चतुर्वेदी व डॉ. सतीश दुबे की लघुकथाएँ विशेष प्रशंसित हुईं।

वर्ष 1977, 17 जुलाई को जबलपुर में ‘मित्र-संघ’ संस्था के तत्वावधान में जानकी रमण महाविद्यालय—जबलपुर में श्रीराम ठाकुर ‘दादा’ के लघुकथा संग्रह ‘अभिमन्यु का सत्ताव्यूह’ का विमोचन समारोह मायाराम सुरजन की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें हरिशंकर परसाई, डॉ. रामशंकर मिश्र, पं. भवानी प्रसाद तिवारी, प्रो. महेश दत्त मिश्र, प्रो. हनुमान शर्मा ने लघुकथा सम्बन्धी विचार प्रकट किये।

वर्ष 1977, 21 जुलाई को जाल संगोष्ठी कक्ष इन्दौर में डॉ. सतीश दुबे, सूर्यकान्त नागर द्वारा सम्पादित लघुकथा संकलन ‘प्रतिनिधि लघुकथाएँ’ पुस्तक का विमोचन श्याम व्यास की अध्यक्षता एवं डॉ. नेमीचन्द जैन के प्रमुख अतिथित्व में किया गया। इस संकलन की भूमिका प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने लिखी थी। इस विमोचन समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. श्यामसुन्दर व्यास थे। इस अवसर पर डॉ. सतीश दुबे व सूर्यकान्त नागर के अतिरिक्त पवन मिश्र, अशोक वक्र उज्जैन और स्थानीय रचनाकार उपस्थित थे।

वर्ष 1977, 14, 15, 16 अक्टूबर, मनीष राय के प्रयासों से दमोह (मध्यप्रदेश) में ‘सृजना-77’, के अन्तर्गत अखिल भारतीय लघुकथा-सम्मेलन का त्रिदिवसीय आयोजन हुआ। यह प्रथम आयोजन था जिसमें खुले मंच में कमलेश्वर, सतीश दुबे, बलराम, श्रीकान्त चौधरी, नरेन्द्र मौर्य, सूर्यकान्त नागर आदि ने ‘लघुकथा प्रवृत्तियाँ तथा स्थायीत्व’ पर बलराम द्वारा पढ़े गये आलेख पर चर्चा की। गोष्ठी में इनके अलावा शंकर पुणताम्बेकर, जवाहर सिंह चौधरी, शान्ता वर्मा, राजन दामोदर सदन, मधुकर सिंह, डॉ. श्यामसुन्दर व्यास, सुबोधकुमार श्रीवास्तव आदि रचनाकार उपस्थित थे।

वर्ष 1980, 12 फरवरी को ‘साहित्य संगम’ के द्वारा ‘श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति—इन्दौर’ के सभागृह में ‘आठवें दशक की लघुकथाएँ’ सं.- डॉ. सतीश दुबे की पुस्तक का विमोचन समारोह श्रीमान् रामेश्वर पटेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ और पुस्तक का विमोचन श्री राजेन्द्र माथुर ने किया। राजकेशवान ने लघुकथा विषयक आलेख तथा सोमदत्त व अन्य वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. सतीश दुबे को लघुकथा का एक समर्पित योद्धा बताया और डॉ. सतीश दुबे ने अपने हृदयोदगार रखते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

वर्ष 1980, 22-23 नवम्बर को होशंगाबाद में एक वृहद् लघुकथा सम्मेलन हुआ। इससे पूर्व सन् 1977 से लेकर 1979 तक लघुकथा एवं लघु कहानी नाम को लेकर काफी विवाद होता रहा। 22-23 नवंबर, 1980 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में हुए इस सम्मेलन में यह विवाद लगभग समाप्त हुआ और तय हुआ कि ‘लघुकथा’ को लघुकथा ही रहने दिया जाये। तब से लघुकथा नाम सर्वसम्मति से स्वीकृत हो पाया। होशंगाबाद के ‘लघुकथा सम्मेलन’ से लघुकथा-जगत् में सम्मेलनों की शक्ति को पहचाना गया और ‘लघुकथा’ एक सशक्त ‘लघुकथा’ नाम से उभरकर साहित्यजगत् में आयी। फिर भी कुछ साथियों की मानसिकता में बदलाव आने में समय लगा। यह विराट लघुकथा सम्मेलन बृजेश परसाइ के संयोजन में ‘प्रयोग’ संस्था द्वारा रखा गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमान् ‘श्रोतिय’ ने की थी तथा कन्हैयालाल नन्दन, शंकर पुणताम्बेकर, बलराम, सतीश दुबे, भगीरथ, लक्ष्मीकान्त वैष्णव, कृष्ण कमलेश, वेद हिमांशु, हरि जोशी, सुबोध श्रीवास्तव, उत्साही, श्रीराम मीना, सनन्त मिश्र, मालती महावर और अखिल पगारे जैसे राष्ट्रीय स्तर के रचनाकार उपस्थित थे। अगले वर्ष सन् 1981 में भी होशंगाबाद में एक और ‘लघुकथा आयोजन’ हुआ तथा यह दूसरा आयोजन भी सफल रहा।

वर्ष 1981, 10 अक्टूबर, श्रीयुत हीरालाल शर्मा सम्पादक ‘इन्दौर समाचार’ की अध्यक्षता में इन्दौर में लघुकथा विषय पर एक कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम का प्रथम हिस्सा लघुकथा पाठ से प्रारम्भ हुआ। सर्वश्री डॉ. राजेन्द्रकुमार शर्मा, सूर्यकान्त नागर, बसन्त निरगुण, सतीश राठी, राजेन्द्र उन्मुक्त, महेश भण्डारी, रमेश जाघव, कला बाढोतिया और विक्रम सोनी ने अपनी बेहतरीन लघुकथाओं का पाठ किया। दूमरे सत्र में मुख्य

अतिथि डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने पुरस्कृत कथाकार डॉ. सतीश दुबे का पुष्टाहार से स्वागत किया तथा अध्यक्ष हीरालाल शर्मा ने अभिनदन-पत्र एवं मंजूषा का अनावरण करते हुए डॉ. सतीश दुबे को स्वरचित पुस्तकों व लन्दन म्यूजियम 'सरस्वती' मूर्ति का छायाचित्र भेंट किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय कथाकारों के साथ कृष्णकान्त निलोसे, ओम पंड्या, जगदीश वैरागी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे।

वर्ष 1981, 26 नवम्बर, इन्दौर के साहित्यिक इतिहास में, लघुकथा विषय पर एक सामान्य आयोजन रखा गया जो इन्दौर नगर का प्रथम एवं राज्य प्रदेश प्रान्त का तीसरा लघुकथा सन्दर्भित आयोजन था। इससे पूर्व में होशंगाबाद में दो सम्मेलन हो चुके हैं। इस आयोजन की अध्यक्षता डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने की, जिसमें नगर के प्रतिष्ठित दस रचनाकारों ने अपनी लघुकथाओं का पाठ किया। इस आयोजन के विशिष्ट अतिथि रामनारायण उपाध्याय थे तथा विक्रम सोनी, सतीश दुबे, सूर्यकान्त नागर, राजेन्द्र शर्मा, सुरेश शर्मा और बसन्त निरगुणे जैसे सम्मानित लघुकथाकार उपस्थित थे। यह एक सामान्य-सा आयोजन था। अगर सम्मेलन न कहकर एक लघुकथा साहित्यिक गोष्ठी कह दिया जाये तो आयोजन की महत्ता कम नहीं होगी।

वर्ष 1981, 6 दिसम्बर, को रात्रि आठ बजे, मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर में 'लघुआघात' प्रकाशन पर एक विचारगोष्ठी रखी गई, जिसकी अध्यक्षता श्री जानकीरमण महाविद्यालय-जबलपुर के प्राचार्य पं. हरिकृष्ण त्रिपाठी ने की। मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन-जबलपुर, जिला-शाखा के तत्वावधान में आयोजित गोष्ठी के संयोजक व्यंग्यकार श्रीराम ठाकुर 'दादा' थे। संस्कारधानी, जबलपुर में लघुकथा विषयक इस प्रथम गोष्ठी में उपस्थित साहित्यकारों ने विक्रम सोनी द्वारा सम्पादित त्रैमासिक पत्रिका 'आघात' (लघुआघात) के माध्यम से दिये गये लघुकथा में योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। गोष्ठी में सर्वश्री श्रीराम ठाकुर 'दादा' गुप्तेश्वरप्रसाद गुप्ता, मो. मोईनुद्दीन 'अतहर' कुमार सोनी, तेजपाल चौधरी, रासबिहारी पाण्डेय सहित अन्य कुछ स्थानीय रचनाकारों ने भागीदारी निभाते हुए 'लघुकथा' के वर्तमान एवं 'भविष्य' विषय पर अपने-अपने विचार रखे। हर दृष्टिकोण से लघुकथा सन्दर्भित यह गोष्ठी सफल रही।

वर्ष 1981, 19 दिसम्बर, को 'बैंक कर्मचारियों का साहित्यिक मंच—सम्पर्क' के द्वारा 'सम्पर्क स्मारिका' का विमोचन आयोजन 'इन्दौर' में रखा गया जिसमें विमोचनकर्ता लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार श्रीमान् शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अपने उद्बोधन में चर्चित विधा लघुकथा पर बोलते हुए कहा कि—“लघुकथा विधा तो है, किन्तु इन दिनों जो चुटकलेबाजी की जा रही है वह लघुकथा नहीं है। लघुकथा लिखना उतना सहज नहीं जितना, कहानी लिखना...।” साथ ही उन्होंने टैगोर जी की लघुकथा का वृहद विश्लेषण कर लघुकथा की बारीकियों को समझाया तथा एक अन्य रचनाकार की लघुकथा में मार्मिक सम्बेदनात्मक प्रस्तुतिकरण की प्रशंसा की। आयोजन में बैंकिंग अधिकारी, कर्मचारी स्थानीय रचनाकार सहित राजेन्द्र पाण्डेय 'उन्मुक्त' और सतीश राठी भी उपस्थित थे।

वर्ष 1981, दिसम्बर माह में, 'साहित्य संगम संस्था-इन्दौर' के द्वारा श्रीमान् निरंजन जर्मींदार के संयोजन में 'लघुआघात' पत्रिका सन्दर्भित 'रचना की ओर से लेखक की ओर' विषय पर संस्कृति केन्द्र—बड़ा रावला (इन्दौर) में एक चर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें साहित्यिकता के लिए संघर्षरत लघुकथा व लघुकथा के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाली लघु पत्र-पत्रिकाओं के योगदान पर खुलकर चर्चा हुई। इन्दौर की अर्धवार्षिक साहित्यिक गतिविधियों का यह एक यादगार कार्यक्रम था। इस

चर्चा गोष्ठी में विक्रम कुमार, महेश भण्डारी, सतीश राठी, जयन्तिलाल जैन, निरंजन जर्मीदार ने बढ़-चढ़कर लघुकथा पर अपने विचार रखे। गोष्ठी का संचालन श्रीमान् राजेन्द्र पाण्डेय 'उन्मुक्त' ने किया।

वर्ष 1982, फागोत्सव के दौरान, ग्वालियर में मध्यप्रदेश, हिन्दी साहित्यसभा-ग्वालियर ने मध्य भारत साहित्य सम्मेलन में एक लघुकथा गोष्ठी आयोजित की जिसकी अध्यक्षता श्री प्रकाश दीक्षित ने की और मुख्य अतिथि राम त्रिपाठी थे। इस गोष्ठी में 'गिरीमोहन गुरु', रमेश मनोहरा, सुरेश आनन्द, जगदीश तोमर, आजाद रायपुरी, रायबहादुर 'पदम', भुपेन्द्र विकल, विजयकृष्ण योगी के अलावा राज्यस्तरीय लगभग पन्द्रह रचनाकारों ने अपनी लघुकथाओं का पठन किया तथा श्री आजाद रायपुरी ने लघुकथा विषय पर एक आलेख पढ़ा।

वर्ष 1985, 16 फरवरी को साहित्यिक संस्था 'क्षितिज मंच' इन्दौर द्वारा, डॉ. कमल चौपड़ा के सम्पादन में प्रकाशित लघुकथा-संकलन 'प्रतिवाद' पर एक चर्चागोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए डॉ. विलास गुप्ते ने कहा कि, "लघुकथा साहित्य में आलोचकों की कमी है अतः लघुकथाकारों को ही इस क्षेत्र में अगुवाई करनी होगी।" विशिष्ट अतिथि एवं लघुप्रतिष्ठित लघुकथाकार सूर्यकान्त नागर ने लघुकथाकारों को खेमेबाजी से दूर रहकर, लघुकथा के स्वरूप एवं रचनात्मक ढाँचे पर गंभीरतापूर्वक चर्चा करने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि एवं 'लघुआघात' के सम्पादक श्रीमान् विक्रम सोनी लघुकथा के संरचनात्मक स्वरूप बोलते हुए कहा कि, श्रेष्ठतम कथानक भी प्राणवान पात्र के बिना बेकार होता है, कथानक की विश्वसनीयता भी जरूरी है। श्रीमान् सोनी ने 'प्रतिवाद' संकलन की लघुकथाओं के लेखन को विभिन्न श्रेणियों के आधार पर वर्गीकरण करते हुए शिल्प वैशिष्ट्य पर अपने विचार रखे। सोनी का कहना था कि लघुकथा का निदान एक विश्वसनीय बिम्ब द्वारा होना चाहिए। प्रमुख वक्ता श्री राजेन्द्र पाण्डेय 'उन्मुक्त' ने 'प्रतिवाद' लघुकथा पुस्तक की लघुकथाओं पर समग्र चर्चा करते हुए कहा कि, लघुकथा को साहित्यिक सिंहासन पर बैठाना जरूरी है। लघुकथा संकलन 'प्रतिवाद' में रमेश बतरा के आलेख पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि यह सूक्ष्म है एवं तीन बैसाखियों पर टिकी दूरबीन का काम करता है। इस चर्चा-परिचर्चा गोष्ठी में उपस्थित सभी समीक्षकों ने संकलन की 'अनुमान', 'कपालक्रिया', 'माँ', 'भगवान की मर्जी', 'नींव', 'झूठ', 'तरकीब', 'भारत', 'वनैले सूअर', 'पहरा' लघुकथाओं को श्रेष्ठ लघुकथाएँ बताया। गोष्ठी का संचालन सतीश राठी ने किया और अन्त में सुरेश बजाज ने सभी भागीदार महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

1981, दिसम्बर माह में, 'साहित्यिक संगम संस्था', इन्दौर के द्वारा श्रीमान् निरंजन जर्मीदार के संयोजन में 'लघुआघात' पत्रिका सन्दर्भित 'रचना की ओर से लेखक की ओर' विषय पर संस्कृति केन्द्र-बड़ा रावला (इन्दौर) में एक चर्चागोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें साहित्यिकता के लिए संघर्षरत लघुकथा व लघुकथा के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाली लघु पत्र-पत्रिकाओं के योगदान पर खुलकर चर्चा हुई। इन्दौर की अर्धवार्षिक साहित्यिक गतिविधियों का यह एक यादगार कार्यक्रम था। इस चर्चागोष्ठी में विक्रम कुमार, महेश भण्डारी, सतीश राठी, जयन्तिलाल जैन, निरंजन जर्मीदार ने बढ़-चढ़कर लघुकथा पर अपने विचार रखे। गोष्ठी का संचालन श्रीमान् राजेन्द्र पाण्डेय 'उन्मुक्त' ने किया।

वर्ष 1986, युवा रचनाकार समिति एवं व्यंग्यकार परिषद—जबलपुर के संयुक्त आयोजन में श्री

जानकीरमण महाविद्यालय—जबलपुर के परिसर में एक सम्मेलन रखा गया, जिसकी अध्यक्षता श्री हरिकृष्ण त्रिपाठी ने की। अपने विचार रखते हुए डॉ. शंकर पुणताम्बेकर ने कहा कि—“अभी तक लघुकथा आँगन में खेलती रही लेकिन अब उसकी आयु 15-16 वर्ष के ऊपर हो गई है, इसलिए इसकी लज्जा की रक्षा करना लघुकथाकारों का कर्तव्य है तथा प्रारम्भ में हरिशंकर परसाई द्वारा शुभकामना सन्देश श्री रासबिहारी पाण्डेय ने पढ़कर सुनाया। कार्यक्रम के प्रमुख श्री विक्रम सोनी ने ‘लघुकथा : लेखन एवं समीक्षा’ हेतु आलेख व्याख्या सहित प्रस्तुत किया। श्रीराम ठाकुर ‘दादा’ ने चिन्तन आलेख का जिक्र करते हुए लघुकथा की उन्नति एवं विकास की चर्चा की। श्यामसुन्दर सुँल्लरे ने समीक्षात्मक आलेख पढ़कर सुनाया।” सम्मेलन के द्वितीय चरण में विजयकृष्ण ठाकुर, श्रीराम ठाकुर ‘दादा’ विक्रम सोनी, गुरनाम सिंह रीहल, मो. मोइनुद्दीन अतहर, सुरेश माहेश्वरी, दोपदी डोकवानी, शैलजा उटवाल तथा रमेश सैनी ने अपनी-अपनी सशक्त लघुकथाकारों का पाठ किया, जिसकी विस्तृत समीक्षा शंकर पुणताम्बेकर ने की और अन्त में मो. मोइनुद्दीन अतहर ने आभार व्यक्त किया।

वर्ष 1986, 15 सितम्बर को क्षितिज मंच—इन्दौर ने ‘लघुकथा लेखन स्थिति समीक्षा एवं भविष्य पर विचार’ विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। इस विचार गोष्ठी में प्रख्यात साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने कहा कि—“लेखकों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए। अचेतन मस्तिष्क को निरन्तर काम करते रहने देना चाहिए।” लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार रामनारायण उपाध्याय ने कहा—“लघुकथा एक विधा है, इसे आन्दोलन नहीं माना जाना चाहिए।” गोष्ठी में अन्य लघुकथा रचनाकारों ने भी अपने विचार रखे। गोष्ठी की शुरुआत ‘क्षितिज-86’ व अशोक शर्मा के काव्य संग्रह के विमोचन कार्यक्रम से हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. श्यामसुन्दर व्यास की। सतीश राठी ने उपस्थित रचनाकारों का परिचय कराया। संचालन सूर्यकान्त नागर ने किया और अन्त में आभार अनन्त श्रीमाली द्वारा व्यक्त किया गया।

वर्ष 1990, दिसम्बर माह में उज्जैन में एक साहित्यिक गोष्ठी की गयी। जिसमें ‘क्षितिज’ (अनियमितकालीन पत्रिका) के सम्पादक श्रीमान् सतीश राठी ने लघुकथाओं का पाठ किया और अन्य स्थानीय साहित्यकारों सर्वश्री देवीप्रसाद मौर्य ने कविताएँ, डॉ. हंसादीप ने कहानी व डॉ. विकास गुप्ते ने अपने लघु नाटक का वाचन किया। मध्यप्रदेश भारत का एक विशाल हिन्दी भाषी क्षेत्र है, यहाँ हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं के साथ, ‘लघुकथा विधा’ भी पाठकों द्वारा अच्छे माहौल में अपनाई गयी है और सम्मानित दृष्टि से रुचि के साथ पढ़ी जाती है। उत्तरोत्तर बदलते समय के साथ लघुकथा इस प्रदेश की भूमि पर एक सकारात्मक सोच के साथ पनपी है, फैली है और एक पूर्णरूपेण विधा के रूप में साहित्यिक रुचिकर आमजन तक दिलोदिमाग में छवि बनाई है। डॉ. श्यामसुन्दर व्यास, रामनारायण उपाध्याय, विक्रम सोनी, सतीश दुबे, मालती बसंत, सतीश राठी, प्रतापसिंह सोढ़ी, सुरेश शर्मा, सूर्यकान्त नागर सरीखे विद्वत्जनों ने हिन्दी लघुकथा को साहित्यिक जगत् में पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों द्वारा साहित्यिक पटल पर रखा है जिसमें लघुकथा सम्मेलन, गोष्ठियाँ एवं सम्मान समारोह माध्यम रहे हैं, उन्हें यहाँ में वर्षवार रख रहा हूँ—

वर्ष 1992, 1 जनवरी नववर्ष के शुभारम्भ के उपलक्ष्य में उज्जैन में एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन रखा जिसमें सतीश राठी ने लघुकथाओं व अपनी कविताओं तथा विकास गुप्ते का नाटक ‘नरकगाथा’ का पाठ

किया और इस कार्यक्रम में लेखिका हंसादीप एवं धर्मपाल महेन्द्र जैन द्वारा रचनाओं पर चर्चा की गई।

वर्ष 1994, 20 फरवरी को जबलपुर में अखिल भारतीय लघुकथा समारोह का आयोजन हुआ जिसके मुख्य अतिथि बालेन्दुशेखर तिवारी थे। इस सफल आयोजन में राष्ट्रीय स्तर के लघुकथाकार डॉ. श्रीराम ठाकुर 'दादा', मो. मोइनुद्दीन 'अतहर', डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र', गिरिश पंकज, राजेन्द्र सोनी, जयप्रकाश 'मानस', सन्दीप शर्मा, मोहन शशि, डॉ. कुंवर प्रेमिल, धीरेन्द्र बाबू, दिनेश नन्दन तिवारी, शैलेन्द्र पाण्डे सहित अनेक स्थानीय रचनाकार उपस्थित थे। संस्कारधानी संस्था, जबलपुर द्वारा आयोजित इस गरिमामयी आयोजन में लघुकथाकारों द्वारा लघुकथाओं का पठन के साथ एक लघुकथा प्रतियोगिता में आयोजित की गयी थी। इस उत्कृष्ट आयोजन की अध्यक्षता पं. हरिकृष्ण त्रिपाठी ने की।

वर्ष 1996, मार्च को शासकीय कला एवं वाणिज्यिक महाविद्यालय, इन्दौर के सभागार में योगेन्द्रनाथ शुक्ल के सौजन्य में एक लघुकथा गोष्ठी का आयोजन किया। इस गोष्ठी के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर एवं साहित्यकार श्री मनोज श्रीवास्तव थे तथा अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. खरे ने की। गोष्ठी में 'लघुकथा का वर्तमान और भविष्य' विषय बिन्दु पर उपस्थित लघुकथा विद्वानों डॉ. श्यामकुमार व्यास, डॉ. कृष्ण कमलेश, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सूर्यकान्त नागर, मधुदीप ने अपने-अपने विद्वत्तापूर्ण विचार रखे। तीन घण्टे चलने वाली इस गोष्ठी में महाविद्यालय के सदस्यों एवं स्थानीय रचनाकारों ने भी अपनी-अपनी वांछित भूमिका निभाई।

वर्ष 1996, मार्च को श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के सौजन्य से वीणा कार्यालय इन्दौर के सभागार में एक लघुकथा गोष्ठी का आयोजन मार्च, 1996 के प्रथम सप्ताह में रखा गया। जिसमें मधुदीप के लघुकथा-संग्रह 'मेरी बात-तेरी बात' का विमोचन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने की। पुस्तक चर्चा में सतीश दुबे, सूर्यकान्त नागर, जवाहर चौधरी, योगेन्द्रनाथ शुक्ल और जगदीश बैरागी ने भाग लिया और अपने-अपने विचार रखे। इस सफल लघुकथा गोष्ठी में लगभग 20-25 स्थानीय रचनाकार भी उपस्थित थे।

वर्ष 1998, 13 जुलाई को मध्यप्रदेश लेखक संघ 'पहचान' के तत्वावधान में 'हिन्दी साहित्य समिति' में डॉ. सतीश दुबे की लघुकथाओं पर एक समीक्षात्मक चर्चा गोष्ठी रखी गई, जिसमें सर्वश्री सूर्यकान्त नागर, श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री, सुश्री आशा कोटिया, प्रवीण जोशी ने डॉ. सतीश दुबे की लघुकथाओं पर समीक्षात्मक आलेख पढ़े तथा सदाशिव कौतुक ने डॉ. दुबे के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। डॉ. सतीश दुबे ने उपस्थित सभी श्रोताओं के समक्ष लघुकथा के गहन बिन्दुओं पर अपने विद्वत्तापूर्ण विचार रखे। मंचीय गोष्ठी का संचालन विकास दवे ने किया और गोष्ठी के अन्त में सुश्री उमा तोमर ने उपस्थित सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

वर्ष 1999, फरवरी में बैंकर्कर्मियों की साहित्यिक संस्था- 'प्राची' द्वारा उज्जैन शहर में एक साहित्यिक आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सतीश दुबे की पुस्तक 'प्रेक्षागृह' का विमोचन भी कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री श्यामगोविन्द व मुख्य अतिथि डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी के करकमलों द्वारा किया गया। इस सफल साहित्यिक कार्यक्रम में पुस्तक 'प्रेक्षागृह' की सार्थकता पर श्रीराम दवे, उमा वाजपेयी, सतीश राठी, डॉ. भगीरथ बड़बोले, श्री रामरत्न ज्वेल, डॉ. उर्मि शर्मा, मनमोहन ने अपने-अपने विचार

रखे और आयोजन में सर्वश्री प्रमोद त्रिवेदी, मनमोहन द्विवेदी, सरस निर्मली, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एवं स्वामी शंकर रावत भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री जयन्तिलाल जैन द्वारा किया गया और अन्त में प्राची संस्था की ओर से आगंतुक महानुभावों का आभार सतीश राठी ने किया।

वर्ष 1999, 21 जून को साहित्य संगम संस्था, इन्दौर ने डॉ. सतीश दुबे के लघुकथा-संग्रह ‘प्रेक्षण्‌ह (1998)’ पर बातचीत कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें राष्ट्रीय स्तर के लघुकथाकार उपस्थित हुए जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने की तथा डॉ. शंकर पुण्याम्बेकर, डॉ. शरद पगारे, नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, मनोज पाण्डया वचाल ने सतीश दुबे की लघुकथाओं पर अपनी-अपनी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियाँ रखी। पधारे हुए विद्वान् साहित्यकारों का संस्था अध्यक्ष सदाशिव कौतुक ने प्रारम्भ में स्वागत किया। डॉ. सतीश दुबे ने लेखक साथियों के अपनी कृत्यज्ञता व्यक्त करते हुए ऐसे ही सम्बल व आत्मीयता देते रहने का आग्रह किया तथा संचालन प्रो. श्यामसुन्दर पतौड़ ने व अन्त में प्रदीप नवीन ने आभार व्यक्त किया।

वर्ष 1999, 31 अक्टूबर को विद्यानगर कम्युनिटी हॉल- उज्जैन में ‘प्रांची’ एवं ‘सार्वभौम मानव विकास संस्थान’ के संयुक्त तत्वाधान में एक साहित्यिक आयोजन रखा गया जिसमें सूर्यकान्त नागर और गजानन देशमुख द्वारा सम्पादित लघुकथा संकलन ‘तीसरी आँख’ का विमोचन किया गया तथा संभागीय आयुक्त डॉ. मोहनगुप्त को डी.लिट. उपाधि अर्जित किये जाने पर आयोजकों द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्ष सूर्यकान्त नागर मुख्य अतिथि डॉ. मोहन गुप्त व विशिष्ट अतिथि निबन्धकार नर्मदाप्रसाद उपाध्याय थे। समारोह में विमोचित पुस्तक ‘तीसरी आँख’ पर श्रीमान् बी.एल. आछा, समीक्षक श्रीराम दवे, राजेश सक्सेना ने अपने-अपने आलेख पढ़े तथा डॉ. हरिश प्रधान, डॉ. प्रभाकर शर्मा, पिलकेन्द्र अरोड़ा, हरीशकुमार सिंह, मनहर परदेशी, शैलेन्द्र पाराशर, मंगल प्रसाद बानी, जी.सी. माहेश्वरी, डॉ. शिव चौरसिया, चिन्तामण सेठिया, श्रीधर व्यास, आदि ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा कार्यक्रम का संचालन सतीश राठी ने किया और सभी आगंतुक प्रबुद्धजनों का आभार शैलेन्द्र पाराशर द्वारा किया गया।

वर्ष 2000, 14 मई को श्रीमान् सतीश मेहता के संयोजन में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के हिन्दी भवन- भोपाल में एक लघुकथा साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री कृष्ण कमलेश थे। इस लघुकथा गोष्ठी में लघुकथा विषय पर चर्चा-परिचर्चा के साथ सर्वश्री रचना पाठक, निशा व्यास, मालती बसंत और अलका रिसवुड ने अपनी-अपनी लघुकथाओं का पठन भी किया।

वर्ष 2006 में हिन्दी लेखिका संघ, मध्य प्रदेश द्वारा भोपाल में डॉ. राजश्री रावत की अध्यक्षता में लघुकथा पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

वर्ष 2007, 26 अक्टूबर को ‘मिनी’ संस्था- अमृतसर, पंजाब के सौजन्य से इमली साहब गुरुद्वारा, इन्दौर के सभागार में राष्ट्रीय स्तर का एक लघुकथा आयोजन, श्रीमान् प्रतापसिंह सोढ़ी, सूर्यकान्त नागर और सुरेश शर्मा के संयोजन में सम्पन्न हुआ जिसमें डॉ. सतीश दुबे का सम्मान किया गया। सम्मेलन में श्यामसुन्दर अग्रवाल, बलराम अग्रवाल, अशोक भाटिया, हरभजनसिंह खेमकरणी, सतीश दुबे, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, सुरेश शर्मा, सूर्यकान्त नागर, प्रतापसिंह सोढ़ी, सतीश राठी, संतोष सुपेकर, डॉ. सतीश दुबे, छ्यात लघुकथाकारों सहित अनेक स्थानीय लघुकथाकारों ने शिरकत की।

वर्ष 2009, 20 सितम्बर को जबलपुर में हिन्दी लेखिका संघ की सदस्याओं ने एक लघुकथा गोष्ठी का आयोजन रखा जिसकी अध्यक्षता वीणा तिवारी ने की। इस लघुकथा गोष्ठी में लक्ष्मी शर्मा, संध्या जैन श्रुति, छाया त्रिवेदी, अर्चना मलैया, श्यामली, विनीता श्रीवास्तव, रत्ना ओझा, डॉ. शोभा सिंह, राधा उपाध्याय, तान्या सराफ, किरण सराफ आदि ने अपनी स्वरचित लघुकथाओं का वाचन किया।

वर्ष 2010, 21 फरवरी को ड्रीमलैण्ड फनपार्क, जबलपुर में मध्यप्रदेश, लघुकथाकार परिषद, जबलपुर के रजत जयन्ती अवसर पर एक लघुकथा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. एडीएन वाजपेई व अध्यक्ष प्रो. जवाहरलाल तरुण एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' थे। इस अवसर पर डॉ. सतीशराज पुष्करण को 'सरस्वती पुत्र' सम्मान, प्रतापसिंह सोढ़ी को रासबिहारी पाण्डेय कथा सम्मान, अंजिव अंजुम को श्रीराम ठाकुर 'दादा' सम्मान से सम्मानित किया गया। समारोह में मो. मोइनुद्दीन 'अतहर', डॉ. कुंवर प्रेमिल, राजेन्द्र पाठक 'प्रवीण' सहित स्थानीय लघुकथाकारों सहित आसपास जिलों के साहित्यकार उपस्थित थे।

वर्ष 2011, जून माह में होटल अरिहन्त, जबलपुर के सभागार में एक विमोचन समारोह रखा गया जिसमें प्रतिनिधि लघुकथाएँ (वार्षिकी सं. डॉ. कुंवर प्रेमिल) का विमोचन हुआ। इस लोकार्पण समारोह में पत्रिका सम्पादक डॉ. कुंवर प्रेमिल सहित मो. मोइनुद्दीन 'अतहर', डॉ. तनुजा चैधरी, डॉ. हरिराज सिंह 'नूर', डॉ. सुमित्र, मनोहर शर्मा 'माया' एवं अन्य रचनाकार उपस्थित थे।

वर्ष 2011, 24 जुलाई को ड्रीमलैण्ड फनपार्क, जबलपुर में एक पुस्तक विमोचन समारोह रखा गया, जिसमें 'प्रतिनिधि लघुकथाएँ' के सम्पादक डॉ. कुंवर प्रेमिल के 'अन्ततः' लघुकथा संग्रह सहित चार पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। अध्यक्ष डॉ. गार्गीशरण मराल, विशिष्ट अतिथि डॉ. 'सुमित्र', प्रो. डॉ. जवाहरलाल चैरसिया 'तरुण', एस.पी. श्रीवास्तव, डॉ. कुन्दन सिंह परिहार, प्रभात दुबे, मो. मोइनुद्दीन अतहर उपस्थित थे। इन पुस्तकों के अलावा दिनेश नन्दन तिवारी द्वारा सम्पादित 'सत्यनारायण साईनाथ' का भी विमोचन किया गया।

वर्ष 2012, 19 फरवरी को रानी दुर्गावती संग्रहालय कलाविधिका, जबलपुर में मध्यप्रदेश लघुकथाकार परिषद, जबलपुर के 27वें स्थापना दिवस पर एक भव्य आयोजन रखा गया, जिसमें अध्यक्ष डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' तथा मंचासीन अतिथि श्रीमान् प्रतापसिंह सोढ़ी व डॉ. लीला मोरे धुलधोये शामिल थे। इस सफल आयोजन में लघुकथा क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करनेवाले रमेश मनोहर, किशनलाल शर्मा, डॉ. कुंवर प्रेमिल, ज्योति जैन, प्रभा विश्वकर्मा 'शील', मिथिलेश नायक, सुनीता मिश्रा, सुनील अविनाथ दत्तात्रेय कस्तुरे, दिनेशनन्दन तिवारी, अशोक श्रीवास्तव, लक्ष्मी शर्मा, शशिकला सेन को सम्मानित किया गया तथा 'फूल और कॉट', 'मुखौटा', 'मध्यप्रदेश की लघुकथाएँ', 'ककुभ', 'काजल पाखी', प्रतिनिधि लघुकथाएँ कृतियों का भी विमोचन हुआ। इस अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन में लगभग एक सैकड़ा साहित्यकारों ने भाग लिया।

वर्ष 2013, 10 फरवरी को 'मध्यप्रदेश लघुकथाकार परिषद्, जबलपुर' के 28वें स्थापना दिवस पर संस्था द्वारा जानकीरमण कॉलेज जबलपुर के सभागार में एक अखिल भारतीय लघुकथाकार सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, राधेश्याम पाठक 'उत्तम', मोहन लोधिया, छाया त्रिवेदी, अभय गौड़, मिथिलेश नायक, डॉ. शैलेन्द्र पाण्डेय, प्रो. एच.एस. पटेल, डॉ. अभिजातकृष्ण त्रिपाठी, प्रो.

आनन्दसिंह राणा जैसे उत्कृष्ट साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। इस गरिमामयी आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ. रामनिवास मानव थे तथा ‘मानव जी’ को भी ‘पाथेय साहित्य कला अकादमी’ द्वारा सम्मानित किया तथा समारोह के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार तिवारी ‘सुमित्र’ सहित ‘मोइनुदीन अतहर’, कुंवर प्रेमिल, राजीव गुप्ता, अशोक श्रीवास्तव, राजकुमार ठाकुर प्रभा विश्वकर्मा, राजेश पाठक व शहर के गणमान्य प्रतिष्ठित विद्वान् नागरिकों एवं दूरदराज अंचल से पधारे रचनाकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

वर्ष 2013, 16 जून को लघुकथा मंच इन्दौर के द्वारा प्रीतमलाल दुआ सभागृह, गाँधी चैक, इन्दौर में एक सादे समारोह के दौरान सुरेश शर्मा की पुस्तक ‘अंधे बहरे लोग’ लघुकथा संग्रह का लोकार्पण हुआ। इस लोकार्पण समारोह के अध्यक्ष सूर्यकान्त नागर व मुख्य अतिथि डॉ. जवाहर चैधरी थे। इस दौरान पुस्तक की लघुकथाओं पर राकेश शर्मा, वेद हिमांशु जैसे वरिष्ठ रचनाकारों ने समीक्षात्मक आलेख पढ़े। कार्यक्रम के संचालनकर्ता कवि त्रिवेदी तथा हरिराम वाजपेई और संयोजक राजीव शर्मा थे।

वर्ष 2013, 20 जून को भैंवरलाल उद्यान, जबलपुर में त्रिवेणी परिषद् द्वारा लक्ष्मी-दुर्गा बलिदान सप्ताह के दौरान डॉ. रोमा चटर्जी की स्मृति में कथा पाठ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सुशीला दीवान ने की। आयोजन में मिथिलेश नायक, मनीषा गौतम, रत्न ओझा, गायत्री तिवारी, डॉ. पूनम शर्मा, राजकुमारी नायक ने अपनी लघुकथाओं का पाठ किया। तत्पश्चात् स्थापित लघुकथाकारों में मो. मोइनुदीन ‘अतहर’, डॉ. कुंवर प्रेमिल, दिनेशनन्दन तिवारी ने लघुकथा विषय पर विद्वत्तापूर्ण अपने विचार रखें। इस सफलतम आयोजन में सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्राकुमारी चैहान की पुत्रवधू श्रीमती मनोरमा चैहान, आशा रिछारिया सहित स्थानीय महिला एवं पुरुष रचनाकार अच्छीखासी संख्या में उपस्थित थे।

वर्ष 2013, 3 दिसम्बर को हितकारिणी नर्सिंग कॉलेज, जबलपुर के सभागार में स्व. पं. रामेन्द्र तिवारी के जन्म दिवस के अवसर पर साहित्यिक संस्था कादम्बरी द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में डॉ. गीता ‘गीत’ को उनके लघुकथा संग्रह ‘जामुन के पेड़’ कृति पर कादम्बरी सम्मान से अलंकृत किया गया तथा साथ में देश के ख्यातनाम 27 साहित्यकारों व पत्रकारों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. डी.पी. लोकवानी एवं अध्यक्ष डॉ. गंगाशरण मिश्र ‘मराल’ तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. आनन्द सुमन सिंह थे। समारोह में अतिथियों सहित स्थानीय रचनाकार एवं नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

वर्ष 2014, 2 मार्च को मध्यप्रदेश लेखिका संघ- भोपाल में आयोजित सम्मेलन के दौरान गीता ‘गीत’ के लघुकथा संग्रह ‘जामुन के पेड़’ के लिए धनवंती पूर्णचन्द स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। आयोजन की मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका मेहरुनिसा परवेज एवं अध्यक्षा मालती जोशी थी। राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मेलन में मालती बसंत, वीणा गाडेकर सहित अनेक महिला साहित्यकार उपस्थित थीं।

वर्ष 2016, 31 अगस्त को निराला सृजन पीठ, मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग, निदेशक डॉ. देवेन्द्र दीपक द्वारा ‘तिलक-2’ रचना पाठ के अंतर्गत श्रीमती कान्ता रौय और श्री घनश्याम मैथिल ‘अमृत’ को रचना पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था।

वर्ष 2016, 10 सितम्बर को सरल काव्यांजलि संस्था, उज्जैन में एक सम्मान गोष्ठी के माध्यम से लघुकथा विधा के प्रथम पर्किं के हस्ताक्षर, नब्बे के दशक की लघुआघात पत्रिका के सम्पादक रहे वरिष्ठ लघुकथाकार विक्रम सोनी के घर जाकर उनको शॉल, श्रीफल एवं स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित

किया गया। इस सम्मान गोष्ठी में श्रीमान् सन्तोष सुपेकर, राजेन्द्र देवभरे, डॉ. प्रभाकर ठाकुर, डॉ. संजय नागर, रमेशचन्द्र शर्मा, हरदयालसिंह ठाकुर, पी.डी. शर्मा, राधेश्याम पाठक 'उत्तम', अनिल चैबे, राजेश राठौर एवं विकासचन्द्र उपाध्याय उपस्थित रहे।

वर्ष 2017, 23 जुलाई को हिंदी लेखिका संघ भोपाल द्वारा लघुकथा पर एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से वरिष्ठ साहित्यकार श्री बलराम अग्रवाल उपस्थित रहे। इस आयोजन की संयोजिका श्रीमती कांता रॉय थी।

वर्ष 2017, 27 सितम्बर से लघुकथा शोध केन्द्र, भोपाल की स्थापना के पश्चात् कान्ता राय के प्रयास से सतत प्रतिमाह लघुकथा गोष्ठी का आयोजन होता रहा है।

वर्ष 2017, 7 नवम्बर को सरल सरल काव्यांजलि संस्था, उज्जैन के द्वारा आयोजित गोष्ठी में चैनर्ई से आये ख्यात समीक्षक प्रो. बी.एल. आच्छा ने कहा कि "जीवन से साक्षात्कार के लिए अपनी जमीन तलाशने की ज़रूरत लघुकथाकारों को आज भी है।" गोष्ठी में सन्तोष सुपेकर, डॉ. प्रभाकर शर्मा, राधेश्याम पाठक 'उत्तम', डॉ. पुष्पा चैरसिया, कोमल वाधवाणी प्रेरण तथा आशागंगा शिरढोणकर द्वारा अपनी प्रतिनिधि रचनाओं का पाठ भी किया गया और संचालन सन्तोष सुपेकर ने व गोष्ठी में उपस्थित सभी साहित्यकारों का आभार डॉ. संजय सागर द्वारा किया गया।

वर्ष 2018 से दुष्यन्त कुमार पाण्डुलिपि स्मारक, निदेशक राजूकर 'राज' द्वारा लघुकथा पर प्रत्येक वर्ष लघुकथा गोष्ठी करवाई जा रही है।

वर्ष 2018, 2-3 जून को इन्दौर, मध्यप्रदेश में क्षितिज संस्था द्वारा माहेश्वरी भवन में दो दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन का आयोजन किया गया। आयोजन की पार्श्वभूमि में स्पष्ट उद्देश्य था-लघुकथा विधा को लेकर किये जा रहे संस्था के प्रयासों का रेखांकन, लघुकथा बिरादरी को एक छत के नीचे लाकर सार्थक चिंतन, जिससे विधा का विकास व पोषण सुनिश्चित किया जा सके, स्थापित रचनाकार व आलोचक-चिंतक आदि के प्रति आदर-भाव के साथ उनसे मार्गदर्शन की मंशा व अभी इस विधा के साथ चल रहे लेखकों की नवीन पौध में ऊर्जा का संचार करना। आयोजन का शुभारंभ क्षितिज के स्तंभ पुरुष सतीश राठी द्वारा सम्मेलन की घोषणा और डॉ. पुरुषोत्तम दुबे को उद्घाटन समारोह की कमान थामने हेतु आमन्त्रित किया गया। मंच पर श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर के प्रधानमंत्री प्रो. सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ कथाकार, प्रधान संपादक 'लोकायत' पाक्षिक, दिल्ली श्री बलराम के मुख्य आतिथ्य में, अतिथि बलराम अग्रवाल, बी.एल.आच्छा, सतीशराज पुष्करणा, श्यामसुंदर दीपि, सूर्यकांत नागर थे। आयोजन में क्षितिज लघुकथा सम्मानों में लघुकथा शिखर सम्मान डॉ. बलराम अग्रवाल, लघुकथा समालोचना सम्मान डॉ. बी.एल. आच्छा, लघुकथा समग्र सम्मान सन्तोष सुपेकर तथा लघुकथा नवलेखन सम्मान कपिल शास्त्री सहित डॉ. सतीशराज पुष्करणा, भगीरथ, अशोक भाटिया, योगराज प्रभाकर, सुभाष नीरव, शैलेन्द्र शर्मा को क्षितिज लघुकथा सम्मान से सम्मानित किया गया। इस सफल अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन में लघुकथा के विभिन्न बिन्दुओं पर तर्कसंगत, विद्वत्तापूर्ण चर्चा करते हुए लघुकथा विधा पर गम्भीरतापूर्वक कार्य करने पर विचार-विमर्श हुआ।

वर्ष 2018, 6 जून को श्री कृष्ण सरल जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत, सरल काव्यांजलि द्वारा

उज्जैन शहर में ही एक लघुकथा गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली से आये सम्मानित लघुकथाकार बलराम अग्रवाल ने लघुकथा में ‘शीर्षक’ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि “शीर्षक एक संकेत है, इसमें जिज्ञासा होनी चाहिए और अन्त तक जिज्ञासा खुलनी नहीं चाहिए, शीर्षक रचना की खुंटी है।” इस आयोजित लघुकथा गोष्ठी एवं कार्यशाला में लघुकथा विषयक काफी विचार-विमर्श में संतोष सुपेकर, प्रतापसिंह सोढ़ी, श्रीराम दवे, राजेन्द्र नागर ‘निरन्तर’, दिलीप जैन, आशागंगा शिरदोणकर, डॉ. प्रभाकर शर्मा, राजेन्द्र देवधरे आदि रचनाकारों ने भाग लिया।

वर्ष 2018, 7 अक्टूबर को ‘श्री कृष्णकृपा मालती महावर बसन्त परमार्थ न्यास’ भोपाल के द्वारा हिन्दी भवन भोपाल के सभागार में वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ. रामकुमार घोटड़ को ‘धनवन्ती देवी स्मृति सम्मान’ से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. मालती बसन्त, कान्ता राय, लता अग्रवाल, डॉ. सन्तोष श्रीवास्तव, कपिल शास्त्री सहित लगभग 5-6 दर्जन स्थानीय महिला एवं पुरुष साहित्यकार उपस्थित थे।

वर्ष 2019 में बनमाली सृजनपीठ एवं रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ‘विश्वरंग’ के पूर्व लघुकथा शोध केंद्र भोपाल के सहयोग से ‘समकालीन लघुकथाकारों की चुनिंदा लघुकथाओं’ का रचना पाठ महादेवी वर्मा कक्ष हिंदी भवन भोपाल में आयोजित किया गया।

वर्ष 2019, 19 जून को लघुकथा शोध केन्द्र, भोपाल द्वारा लघुकथा पर्व का एक दिवसीय आयोजन किया गया जिसमें माधवराव सप्रे के जन्मदिन 19 जून को प्रतिवर्ष लघुकथा दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की गई। इस सफल आयोजन में माधवराव सप्रे के सुपौत्र डॉ. अशोक सप्रे, सुपौत्री सुप्रिया सप्रे सहित राष्ट्रीय स्तर के लघुकथाकार भगीरथ, अशोक भाटिया, सुभाष नीरव, बलराम अग्रवाल तथा स्थानीय साहित्यकार भी उपस्थित थे।

वर्ष 2019, 10 जुलाई को सुदामानगर, उज्जैन में सरल काव्यांजलि संस्था द्वारा आयोजित एक लघुकथा गोष्ठी में शिक्षाविद एवं साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी को राष्ट्रकवि स्व. श्री कृष्ण सरल पर डोक्युमेन्ट्री फिल्म ‘आशीर्वाद’ बनाने के लिए सम्मानित किया गया तथा गोष्ठी में पधारे चिरपरिचित लघुकथाकारों सर्वश्री सुपेकर, कोमल वाधवानी, राधेश्याम पाठक ‘उत्तम’, डी.के. जैन, डॉ. प्रभाकर शर्मा, आशागंगा शिरदोणकर ने लघुकथा विषयक विद्वत्तापूरक अपने विचार रखे।

वर्ष 2019, 24 नवम्बर को मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के सभागार में ‘क्षितिज साहित्यिक संस्था, इन्दौर’ द्वारा एक दो दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस गरिमामयी आयोजन में क्षितिज लघुकथा शिखर सम्मान, वरिष्ठ लघुकथाकार सुकेश साहनी, लघुकथा समालोचना सम्मान- माधव नागदा, लघुकथा समग्र सम्मान कान्ता राय तथा नवलेखन लघुकथा सम्मान कुणाल शर्मा को प्रदान किये गये। इस अवसर पर लघुकथा की विभिन्न प्रवृत्तियों के आलेखों एवं लघुकथा विषय पर चर्चा-परिचर्चा हुई। इस अवसर पर बलराम अग्रवाल, श्यामसुन्दर अग्रवाल, जगदीश कुलरिया, माधव नागदा, कुणाल शर्मा, कान्ता राय, सुकेश साहनी सहित राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर के लघुकथार उपस्थित थे।

वर्ष 2020 में डॉ. मीनू पांडेय ‘नयन’ आरुणि साहित्यिक समूह भोपाल द्वारा 151 लघुकथाकारों द्वारा सतत लघुकथा पाठ का आयोजन किया गया।

वर्ष 2020-21 में विश्व मैत्री मंच श्रीमती संतोष श्रीवास्तव द्वारा नियमित रूप से सासाहिक लघुकथा गोष्ठी एवं प्रस्तुत लघुकथाओं पर वरिष्ठ साहित्यकार समीक्षकों द्वारा प्रस्तुत लघुकथाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी का आयोजन किया गया।

वर्ष 2021, 26 सितम्बर को क्षितिज संस्था, इन्दौर द्वारा मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के सभागार में एक दिवसीय अखिल भारतीय क्षितिज लघुकथा सम्मान (2020-21) समारोह आयोजित किया गया। इस गरिमामयी आयोजन में डॉ. कमल चोपड़ा (दिल्ली) को क्षितिज लघुकथा शिखर सम्मान-2020 और डॉ. रामकुमार घोटड़ (चूरू), राजस्थान को क्षितिज लघुकथा शिखर सम्मान-2021, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे को लघुकथा समालोचना सम्मान, डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ला, ज्योति जैन को लघुकथा समग्र सम्मान, दिव्या राकेश शर्मा (गुरुग्राम), अंजू निगम (देहरादून) को लघुकथा नवलेखन सम्मान प्रदान किया गया। सरस्वती वंदना विनीता शर्मा द्वारा प्रस्तुत की गई। संस्था अध्यक्ष सतीश राठी ने स्वागत भाषण दिया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान् विकास दवे और अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार नरहरि पटेल थे। अपने अध्यक्षीय उद्घोषन में नरहरि पटेल ने साहित्य मनीषी श्यामसुंदरदास सुमनजी, सतीश दुबेजी, सुरेश शर्मा का पुण्यस्मरण किया। इस चारसत्रीय आयोजन के सम्मान शृंखला में साहित्यिक अवदान के लिए नरहरि पटेल को क्षितिज मालव गौरव सम्मान, शरद पगारे एवं सत्यनारायण व्यास को क्षितिज समग्र जीवन साहित्यिक अवदान सम्मान, डॉ. विकास दवे को साहित्य गौरव सम्मान, डॉ. अर्पण जैन को भाषा सारथी सम्मान प्रदान किए गए। राजनारायण बोहरे, नंदकिशोर बर्वे, चरणसिंह आमी, अंतरा करवडे, डॉ. वसुधा गाडगिल को भी विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित किया गया। इसी शृंखला में क्षितिज की अनुवाद उपक्रम संस्था, भाषा सखी द्वारा सतीश राठी, अश्विनी कुमार दुबे, दीपक गिरकर, राममूरत राही को भी सम्मान प्रदान किए गए। इसके पश्चात् क्षितिज संस्था के द्वारा प्रकाशित संवादात्मक लघुकथा अंक एवं विभिन्न विधाओं में लिखी गई कुछ पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ तथा दर्जनभर लघुकथाकारों में अपनी लघुकथाओं का पाठ किया। सत्र का संचालन हिंदी सेवी अंतरा करवडे ने किया।

वर्ष 2021, 27 सितम्बर को साहित्यिक संस्था, सरला काव्यांजलि ने एक लघुकथाकार सम्मान गोष्ठी रखी, जिसमें सादुलपुर (चूरू) राजस्थान से आये वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ. रामकुमार घोटड़ को श्रीफल, स्मृतिचिह्न प्रदान करते हुए शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस सफल गोष्ठी में डॉ. घोटड़ ने कहा कि “जीवन के छूटते क्षणों की सशक्त बयानी ही लघुकथा है। यह कहानी का छोटा रूप नहीं है, बल्कि स्वयं एक समर्थ विधा है।” इस अवसर पर संतोष सुपेकर, श्रीमती मीरा जैन, डॉ. बन्दना, राजेन्द्र नागर, हेमन्त गुप्ता ने अपनी लघुकथाओं का पाठ किया तथा अतिथि स्वागत हरदयालसिंह ठाकुर, विनय अंजू कुमार, नितिन पोल, प्रताप नागर, विजय गहलोत, बरखा नागर, रूबी कुरैशी एवं आशीष जौहरी ने किया।

वर्ष 2021, 28 अक्टूबर को सरल काव्यांजलि संस्था, उज्जैन द्वारा एक लघुकथा, व्यंग्य कार्यशाला का आयोजन रखा गया जिसमें डॉ. बी.एल. आच्छा द्वारा लघुकथा के विभिन्न विन्दुओं पर विद्वत्तापूर्ण अपने विचार रखे। इस कार्यशाला में संस्था सचिव डॉ. संजय नागर सहित नगर के गणमान्य प्रतिष्ठित नागरिक एवं स्थानीय रचनाकार उपस्थित थे।

सम्पर्क : सादुलपुर, जिला-चूरू, मो. 9414086800, 7976194765

असगर वजाहत

कुत्ते

शहर में जब कुत्तों ने गड़बड़ करनी शुरू की और वहाँ भौंकने लगे जहाँ उन्हें दुम हिलानी चाहिए थी तो पाया कि कुत्तों से मुक्ति पाने का यही तरीका है कि उनके खिलाफ भी उसी तरह अभियान छेड़ दिया जाये जैसा इससे पहले मच्छरों के खिलाफ छेड़ा गया था। मच्छरमार दवा बनाने वाली कंपनी ने घोषणा की कि उसने कुत्तामार दवा भी बना ली है और उन लोगों ने, जो प्रत्येक वर्ष कुत्तों की प्रदर्शनी लगाया करते थे, कुत्तों को पकड़ने का ठेका लेने की दरखास्त में लिखा है कि चूँकि वे इससे पहले भी कुत्तों को पकड़ने का काम करते थे, हालाँकि लक्ष्य दूसरा होता था, पर लक्ष्य में परिवर्तन आ जाने के बावजूद कुत्ते फँसाने का उनको इतना अभ्यास है कि ठेका उन्हीं को मिलना चाहिए। बात सही भी है। कुत्ते पकड़ना एक कला है और कला कुछ दिनों का काम नहीं, निरंतर अभ्यास जो उसके लिए दरकार होती है, उनके पास था और उन्होंने उसका अच्छा इस्तेमाल किया।

ऐसी बात नहीं कि कुत्तों को इसकी खबर नहीं थी। खबर थी, पर वे कुत्ते थे और सामान्य फैशन के अनुसार उन्हें सिर्फ भौंकना सिखाया गया था और लगातार न काटने से उनके दाँत झड़ गए थे। यहाँ तक कि नए पैदा हुए पिल्लों के तो दाँत ही न थे, यह बात दूसरी है कि वे, जहाँ जी चाहता, टाँग उठाकर मूत देते।

एक कुत्ता, जिसे कई बार खाज हुई थी और बिना किसी दवा-इलाज के ठीक हुई थी, फटी-फटी आँखें, खरखराती हुई पीठ और चार गज लंबी जबान वाला यतीम था। ‘कुत्तों से शहर को बचाओ’ अभियान वाले जब उसके पास पहुँचे तो उसे पकड़ने में बड़ी परेशानी हुई। हुआ यह कि वह कहने लगा कि वह कुत्ता ही नहीं है।

जब पूछा गया कि वह क्या है तो उसने कहा कि वह आदमी है। कुत्ते के अपने-आपको अदमी कहने पर कुत्ता पकड़ने वालों में यह बहस छिड़ते-छिड़ते बची कि कुत्ते का अपने-आपको आदमी कहना कुत्तों के लिए अपमानजनक है या आदमियों के लिए। अगर यह बात छिड़ जाती तो इसका कोई अंत न होता। आखिरकार किसी बुद्धिमान ने सुझाया कि कुत्ते और आदमी के फरक को समझने के लिए डॉक्टरी परीक्षा ही एकमात्र रास्ता है।

उसे अस्पताल ले जाने से पहले यह बहस भी हुई कि उसे जानवरों के अस्पताल ले जाया जाए या आदमियों के। फिर सर्वसम्मति से तय पाया कि कोई फरक नहीं पड़ता और वे उसे अस्पताल ले गए।

डॉक्टर ने गंभीरता से परीक्षा के बाद निर्णय किया कि वह न आदमी है और न कुत्ता। डॉक्टरों के इस निर्णय के कारण 'शहर को कुत्तों से बचाओ' अभियान वालों ने डॉक्टर के पीछे यह शक किया कि डॉक्टर भी आदमी नहीं है और वे छिपकर डॉक्टर की निगरानी करने लगे। आखिर एक दिन पता नहीं अपने हैलुसिनेशन के कारण या वास्तव में, उन्होंने एकांत में डॉक्टर को भौंकते हुए पाया और समझ गए कि डॉक्टर भी कुत्ता था। अगले दिन कुत्ते और उस कुत्ते को, जो कुछ दिन पहले डॉक्टर था, 'शहर को कुत्तों से बचाओ' अभियान वाले पकड़कर ले गए। लेकिन डॉक्टर के कुत्ता साबित होने से शहर में सनसनी फैल गई। 'शहर को कुत्तों से बचाओ' अभियान वाले सोचने लगे कि कुत्ते की पहचान, कुत्ता ही होना नहीं है।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9818149015

●●

डॉ. अशोक भाटिया

अंतिम कथा

रोज़ की तरह, दोनों बच्चों ने कहा- 'दादा जी, कितनी देर हो गई, अब जल्दी कहानी सुनाओ...'

दादा जी कहानी सुनाने लगे - 'एक राजा था, शिवि। वह बहुत दयालु था। एक दिन वह आँगन में बैठा आराम कर रहा था कि अचानक एक तड़पता हुआ कबूतर उसकी गोद में आ गिरा। कबूतर के पीछे-पीछे ही, एक बाज भी आ गया। बाज ने कहा, कि यह कबूतर मेरा शिकार है, इसलिये इस पर मेरा हक है। राजा ने कहा, कि यह मेरी शरण में आया है, इसलिये यह तुम्हें नहीं मिल सकता। तब बाज ने कहा, फिर इसके बदले में आप मुझे अपना माँस दे दें। राजा अपना माँस काटकर तौलने लगा। बहुत काटने पर भी तौल में राजा का माँस कबूतर के बराबर नहीं हुआ, तो राजा खुद ही तराजू के पलड़े में बैठ गया। तभी भगवान प्रगट हुए और...'

बच्चों का मज़ा किरकिरा होने लगा। पहले ने कहा - 'दादा जी, आपके शरीर पर तो इतना सारा माँस है! आपने कभी किसी कबूतर की जान नहीं बचाई?'

दादा जी ने दूसरे पोते की तरफ़ देखा।

वह बोला - 'दादा जी, हमें तो भर-पेट रोटी भी नहीं मिलती। हमारी बाँहों पर माँस नहीं है। हम बड़े होकर किसी कबूतर की जान कैसे बचायेंगे?'

दादा जी आकाश की ओर देखने लगे। उस दिन उठकर गये दोनों बच्चे आज तक उनसे कहानी सुनने नहीं आये।

सम्पर्क : करनाल (हरियाणा) मो. 9416152100

●●

अशोक मनवानी

हुक्कू बंदर

चिड़ियाघर के एक पिंजरे में कैद विदेशी प्रजाति के उस विशेष बंदर को देखने रोजाना हजारों लोग आते थे। हुक्कू नाम से मशहूर इस बौने प्राणी की विशेषता हुक्कू-हुक्कू की ध्वनियाँ निकालना था। रोज ऐसी आवाजों से वह चिड़ियाघर घूमने आए लोगों को आकर्षित करता था। ‘अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण हुक्कू बंदर लोगों के चिढ़ाने पर और जोर-जोर से हुक्कू-हुक्कू की आवाज लगाता था। उसके पिंजरे के बाहर चिड़ियाघर प्रबंधक ने एक तख्ती लगा रखी थी, जिसमें हिदायत दी गई थी कि कृपया इस बंदर को हुक्कू-हुक्कू की आवाजें देकर न चिढ़ाएँ, इससे यह बंदर भी ऐसी आवाजें निकालने पर विवश हो जाता है जिससे इस बंदर के फेफड़ों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, फलस्वरूप उसका जीवन कम हो जाएगा। लोग आते, तख्ती पर लिखी हिदायत पढ़ते, लेकिन हुक्कू-हुक्कू की आवाजें निकालने से बाज नहीं आते। इसी तरह बरसों बीत गए। हुक्कू दिनों-दिन दुर्बल और लाचार होता रहा। चिड़ियाघर प्रबंधन ने फिर एक नई तरकीब निकाली और दूसरी तख्ती लगा दी – ‘कृपया इस बंदर की नकल कर आवाजें न निकालें। चिकित्सकों के अनुसार इससे आपके फेफड़ों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है और इससे आपके जीवन की अवधि भी कम हो सकती है।’ अब तो हुक्कू ने भी हुक्कू-हुक्कू की आवाज लगाना बंद कर दिया था।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.)

●●

अर्चना मंडलोई

तुलसी का बिरवा

छोटा सा गाँव खपरैल का मकान और आँगन में तुलसी का चबुतरा। सबेरे माँ स्नान कर तांबे के लोटे में जल लेकर चढ़ाती। प्रार्थना करती। बच्चे साथ खड़े ध्यान से देखते। तुलसी का बिरवा झूम उठता।

साँझ होते ही घी का छोटा सा दीप जलाकर माँ तुलसी के चौरे पर रख देती। बच्चे प्रार्थना करते, घर आँगन अलौकिक हो जाता।

समय बदला तुलसी की कृपा से बच्चे बड़े हो गए, मकान पक्का बन गया। शिक्षा ने और भी सभ्य बना दिया।

समय बदला आँगन छोटा हो गया। तुलसी के बिरवे के स्थान पर मेज कुर्सी लग गई। न माँ का आँचल रहा, न धूप-दीप की सुगंध। परिवार बिखर गया।

वृद्धा माँ की स्मृति में फिर वही खपरैल का मकान, तुलसी का बिरवा और आँचल पकड़े बच्चे आ गए। लेकिन जलपात्र के स्थान पर आँचल में आँसू लुढ़क गए।

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.) मो. 9406616871

●●

अशोक गुजराती

शहादत

पुलिस ने उस पर अदालत में फौजदारी नालिश दायर की थी। उसने पिछले तीन महीनों के दरम्यान दस क़ल्ल अंजाम दिये थे। उसे कड़ी से कड़ी सज़ा मृत्युदंड या आजीवन कारावास के सिवा क्या हो सकती थी..।

वह एक आम भला आदमी था- शिक्षक। जी हाँ, उसने अपने जीवन में कभी एक मक्खी भी नहीं मारी थी। फिर अचानक क्या हुआ कि वह खून पर खून करता गया...।

वह अनवरत देखता रहा कि बड़े से बड़ा गुनहगार या तो निर्दोष छूट जाता है अथवा फिर उसे नाम मात्र का दण्ड मिलता है। हत्या और बलात्कार लोगों के लिए खेल हो गये हैं। नाबालिग् तो नृशंस बलात्कार- वह भी छोटी-छोटी बच्चियों के साथ मज़े से कर गुज़रते हैं- बेखौफ और उनके लिए क़ानून में सिर्फ तीन साल की ताज़ीर तय की गयी है ताकि वे बाहर आकर आगामी जिंदगी में माह भर की बच्ची से लेकर साठ वर्ष की औरत का यौन-शोषण आराम के साथ कर सके।

उसे बहुत गुस्सा आता रहा। उसने इस-उससे मालूम कर पिस्तौल का बन्दोबस्त किया। और जेल से या कोर्ट ले जाती पुलिस की गिरफ्त से फ़रार होने वाले, पैरोल पर छूट कर आये या कम सज़ा पाकर आज़ाद घूम रहे सारे खतरनाक मुज़रिमों की टोह में वह रहने लगा। मौका मिलते ही वह उनका काम तमाम करता रहा।

वह जानता था कि वह जल्द ही पकड़ लिया जायेगा, वह कोई शातिर अपराधी तो था नहीं। लेकिन तब तक जितने ज्यादा से ज्यादा समाज के दुश्मनों को वह- जो हमारा क़ानून नहीं दे सकता -ऐसी सज़ा, खुद तज़वीज़ करेगा। उसे फाँसी होगी तो क्या, वह इस युद्ध में मुट्ठी-भर ही सही, कातिलों और बलात्कारियों को उससे पूर्व फाँसी दे चुका होगा।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9971744164.



आशा शैली

परम्परा

“देखिए चाचा जी, आप ही समझाइए न बाबू जी को। हर रोज़ कामना से किसी न किसी बात पर ठान लेते हैं और निपटना मुझे पड़ता है। दफ्तर से लौटते ही उसका रोना झेला नहीं जाता।”

“बेटा, कामना को भी तो समझाओ कि वह बड़ों से सभ्यता से बात किया करे।”

“चाचा जी, कामना नए ज़माने की लड़की है, उसे पुरानी परम्पराएँ रास नहीं आतीं तो बाबू जी को ही समझौता करना पड़ेगा न? आज हर युवा पुरानी परम्पराएँ तोड़ रहा है, अगर कामना भी कुछ ऐसा ही करती है तो...” कमल ने बात अधूरी छोड़ दी।

“ठीक है मैं भाई साहब से बात करूँगा, लेकिन मैं गारन्टी नहीं दे सकता कि वह मेरी बात मान ही लें।”

“देखिए चाचा जी, कामना को तो मैं नाराज़ कर नहीं सकता। आखिर मुझे उसके साथ जिन्दगी गुजारनी है। बाबूजी तो वैसे भी अब बूढ़े हो चुके हैं। दो नहीं तो चार-छः साल और हैं। आप उन्हें समझाइए, आखिर बिना पुत्र के उनको अग्नि कौन देगा?”

“कहते तो तुम ठीक हो, देखो, कोशिश करता हूँ।” कहकर रामदास खाट से उठ गए। वैसे उन्हें इस हल्की सर्दी में धूप में बैठना अच्छा लग रहा था।

इशारा समझकर कमल भी उठ गया और मूँछों पर ताव देता हुआ घर की ओर हो लिया। भीतर जाकर उन्होंने बहू से भोजन माँगा, तो बहू ने दूसरे कमरे से ही उन्हें सुनाते हुए कहा, “कोल्हू का बैल समझते हैं, जब इनको जरूरत पड़े तभी भोजन-पानी चाहिए।” फिर जोर से चिल्लाते हुए बोली, “लाती हूँ,” और थाली जोर से मेज पर पटक कर वापस चली गई। रामदास सोच रहे थे कि वह भाई से क्या कहेंगे। उन्हें भी तो मुखागिन चाहिए।

थोड़ी देर बाद जब दोनों भाई इस समस्या पर बात करने बैठे तो बड़े भाई ने कहा, “राम! यदि परम्परा बदलने की ही बात है तो चलो अस्पताल चलते हैं।”

“क्यों भईया?”

“अरे तुम चलो तो सही।” और दोनों भाई रिक्षा पर बैठकर जिला अस्पताल चल दिए। वहाँ जाकर बड़े भईया ने अधिकारी से बात करके देहदान के दो फार्म भरवाए और दोनों भईयों ने उन पर हस्ताक्षर करके अस्पताल को अपने शरीर दान कर दिए। घर लौटते समय दोनों भाई अपने को बहुत हल्का अनुभव कर रहे थे।

सम्पर्क : नैनीताल (उत्तराखण्ड) मो. 9456717150, 8958110859

●●

आशा भाटी

अतिशयोक्ति

मैं अपनी एक सहेली के यहाँ अचानक पहुँची तो घर की अस्त-व्यस्त हालत को देखकर हक्की-बक्की रह गई। पूरा सामान जहाँ-तहाँ फैला पड़ा था। ऐसा लगता था जैसे असामाजिक तत्वों ने लूटपाट की और फिर पिछली गली से नौ दो ग्यारह हो गये हों।

‘सरला ओ सरला-’ मैंने दो-तीन आवाजें देकर सरला को बुलाना चाहा।

जब कोई उत्तर नहीं मिला तो परेशान हो गई। पड़ोसियों से हालात जानने के लिये जिज्ञासावश बाहर निकलने लगी तो अंतःपुर से आती सिसकियों की आवाजें ने अंदर तक झकझोर दिया।

‘जरूर लुटेरे गृहस्वामिनी को लूटकर भाग निकले हैं।’ मैंने अपना विश्वास पक्का करते हुए सोचा। फिर रसोई घर की तरफ आवाजों का अनुसरण करती हुई चल दी।

‘क्या हुआ? क्यों रो रही हो?’ मैंने सरला को कंधे से पकड़कर धैर्य बँधाते हुए पूछा। सरला फफक कर रो पड़ी। उसके सब्र का बाँध फिर फूट चला था। वह बमुशिकल अपने पति से झगड़े की बात बता पाई।

‘माई गाड! मैं तो कुछ और समझी थी। घर का यह हाल तुम्हारे पति ने किया है। बाप रे! चलो उठो बिल्कुल नमूना लग रही हो...कहाँ गये तुम्हरे पति?’

‘दफ्तर...’

‘दफ्तर... और वह भी तुम्हें ऐसी हालत में छोड़कर! तुमसे पूछा भी नहीं कि तुम्हारे सिर में यह चोट कैसे लगी। कोई डॉक्टर... वॉक्टर...’

‘कहाँ का डॉक्टर बहिन... एक-एक दिन बड़ी मुशिकल में जी रही हूँ। रोजमरा की बातें हैं ये। कोई एक घाव हो तो दिखलाऊँ...’

‘क्या...?’ जैसे मैं आसमान से उड़ते-उड़ते जमीन पर आ गिरी।

‘रोज-रोज पीकर आते हैं। जुआ अलग खेलते हैं। रोकती हूँ तो परिणाम सामने है। मुझे तो डर लगता है कि एक दिन मेरी बसी बसाई गृहस्थी जरूर चौपट होकर रहेगी।

‘और कुछ बाकी रह गया हो तो ब्लाउज हटाकर मेरी पीठ देखो... देख लो, कदम से कदम मिलाकर चलने वाला आदम आज हव्वा से कैसे-कैसे बदले ले रहा है।

‘तुम लेखिका हो न। लिख दो मेरी यह कहानी। समझा दो पूरी नारी जाति को इस अत्याचार की कहानी। एक न एक दिन उनके साथ भी यही होना है। औरत का जन्म लेना इस पृथ्वी पर कितना कष्टकर हो गया है।’

थोड़ा बोलने वाली सरला आज बम के माफिक फट पड़ रही थी। सचमुच नारी आज भी असहाय है। शराबी पुरुष न तो बच्चों की उचित देखभाल करता है और न पत्नी की भावनाओं का समुचित आदर। स्त्री लतभंजन कर यह पुरुष पौरुषमय हो जाता है, उफ!

एक समय था जब घर-घर में स्त्रियों का आदर हुआ करता था। स्त्रियाँ भी अपनी गृहस्थी, पति और बच्चों के प्रति पूरी तरह समर्पित होती थीं। बहुत गंभीर और उदार होता था पुरुष, पत्नी को अर्धांगिनी समझनेवाला पति, पत्नी के सुख-दुख में बराबर का भागीदार होता था। न तो उसे तब दहेज की जरूरत होती थी, न उधार के ठाट-बाट की। वह अपने बाहुबल पर विश्वास करता था। उसे अपनी कमाई पर पूरा-पूरा भरोसा हुआ करता था। पर आज... आज ऐसा नहीं है। पाश्चात्य सभ्यता में ढूबी यह नई पीढ़ी पूरी तरह गुमराह है। उसे खुद अपना भार बहन करना नहीं आता। पत्नी को लेकर क्या खाक चलेगा वह। ऊपर से दर्जनों व्यसन।

चमक-दमक में कुछ साल बिताकर हमेशा का दुख-दर्द गले में बाँधनेवाला पुरुष बाद में पत्नी का दुश्मन हो जाता है। उस पत्नी की दुर्दशा तब सरला बहिन जैसी हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिये..।

सम्पर्क : जबलपुर (म.प्र.)

●●

अशोक शर्मा भारती आदमी

शिक्षक ने सामान्य ज्ञान की कक्षा में बच्चों से पूछा, 'अच्छा बच्चों बताओ, सबसे जहरीला कौन सा जानवर होता है?'

'साँप।' एक बच्चे ने तत्काल जवाब दिया।

'वह कैसे?'

'क्योंकि साँप जहरीला होता है।' बच्चे ने जवाब दिया।

'लक्ष्मण तुम बताओ।' शिक्षक ने पूछा- 'क्या साँप के काटने पर आदमी मर जाता है?'

'नहीं..। लक्ष्मण ने जवाब दिया।

'क्यों?' शिक्षक ने आश्चर्य चकित होकर लक्ष्मण की ओर देखा।

'इसलिए कि अब साँप में जहर नहीं होता।'

'फिर किसमें होता है?'

'आदमी में।'

'वह कैसे?'

'मेरी माँ को एक आदमी ने काट खाया था जिससे वह उसी समय मर गयी।' लक्ष्मण सूरज सा लाल हो उठा। शिक्षक स्तंभित होकर लक्ष्मण की ओर देखने लगे।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9425900869

●●

आनंद कुमार तिवारी निर्थक पश्चाताप

नीरज का चयन आई.ए.एस. के लिए होने पर अति प्रसन्नता और श्रद्धापूर्वक उसने अपनी विमाता के चरणों में शीशा झुकाकर आशीर्वाद की अपेक्षा की, किन्तु उन्होंने मुँह बिचकाकर अपने पैर पीछे खींच लिये। आशीर्वाद देने के लिए न तो उनके हाथ उठे और न ही मुँह से कोई शब्द ही निकले, यहाँ तक कि उनकी आँखें भी घृणा वृष्टि करती रहीं। बूढ़े ससुर क्रोधित होकर बड़बड़ाए- “बहू शरीर के सभी अंग भगवान का वरदान हैं, इनका सदुपयोग करो। न मालूम कब वे इन्हें वापस ले लें या इनकी कार्यक्षमता कम कर दें।”

ससुर के उपदेशों का बहू पर न तो कोई प्रभाव पड़ा और न ही उसने अपना स्वभाव बदला। समय बीतता रहा। एक दिन नीरज की विमाता को लकवा मार गया। नीरज ने उसका बहुत इलाज करवाया, परन्तु वह ठीक न हो सकीं। अब नीरज की लकवा पीड़ित विमाता के न तो पैर हिलते हैं और न ही हाथ। चाह कर भी उनके मुँह से कोई शब्द नहीं निकलते हैं। सक्रिय हैं तो केवल उनकी आँखें जो स्वयं की विवशता पर पश्चाताप के आँसू बहाती रहती हैं, लेकिन यह पश्चाताप भी अब निर्थक है, क्योंकि इसका कोई प्रायश्चित ही नहीं है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9827362053

●●

अंजू खरबंदा

गरीबी

रक्तदान का दिन आखिर आ ही गया। पर कोरोना वायरस अभी चारों ओर इस कदर फैला था कि कोई भी नहीं आ रहा था। सुबह से शाम होने को आई। डॉक्टर साहब का चेहरा एकदम शांत था क्योंकि उन्हें पता था कि कोई नहीं आएगा! अचानक थम-थम की आवाज उनके कानों में पड़ी। वे देखते हैं कि एक फटे कपड़े में पतला सा इंसान उनकी तरफ आ रहा है। खैर! उन्होंने फटाफट अपनी ‘पी पी ई किट’ पहनी और अपना काम शुरू कर दिया। रक्तदान की शुरुआत हो चुकी थी। उन्होंने पैसे मेज़ पर रख दिए। जब वह गरीब व्यक्ति पैसे लेकर जाने लगा, तब उन्होंने एक सवाल किया, जो उनको बहुत देर से परेशान कर रहा था।

‘क्या तुम्हें कोरोना से डर नहीं लगता?’

‘हम गरीब की झोली में भगवान डर शब्द डालना भूल गए थे।’ कहकर उस व्यक्ति ने ठंडी साँस ली।

‘साहब इन्हीं पैसों से आज़ मेरे घर में चूल्हा जलेगा।’ रूपए लेकर वह वहाँ से चला गया और डॉक्टर साहब उसको दूर जाते हुए देखने लगे।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9582404164

●●

आशागंगा प्रमोट शिरदोणकर

उसके बाद

‘हैलो ११..हैलो ११... पांडे जी? कैसे हो भई पांडे?’

‘अरे! सर जी आप ! प्रणाम.....प्रणाम सर प्रणाम !’

‘अब तो ‘सर’ कहना छोड़ दो पांडे!’

‘क्या करूँ सर? सर’ कहने की आदत पड़ गई है इस जुबान को।’

‘नया वर्ष शुभ हो !’

‘आपको...आपको भी नए वर्ष की शुभकामनाएँ सर !’

‘वैसे तो एक जनवरी को सबसे पहले आपका ही एस.एम.एस. आया करता था...सोचा आपकी तबीयत भी पूछ लूँ और शुभकामनाएँ भी दे दूँ।’

‘सॉरी सर! सॉरी! कैंसर से कमला के बाद...ऊपर से ये रिटायरमेंट भी...दिल-दिमाग् को कुछ सूझाता ही नहीं।’ ‘खुद को तो सँभालना ही पड़ेगा न पांडे? सुषमा के जाने के बाद...अब मैं भी आपकी केटेगरी में आ गया हूँ। पंद्रह साल हो गए रिटायर हुए, पर यह आपका बड़प्पन ही है कि मुझसे आपने कॉन्ट्रेक्ट बनाए रखा।’ ‘सर! आप जैसा बॉस मिलना हर किसी की किस्मत में नहीं होता सर जी !’

‘अब ये बॉस-वॉस छोड़ो... अब हम हमर्द दोस्त हैं। ठीक है? अब बताओ, दीपेंद्र और उसकी पत्नी कैसे हैं? आपका ध्यान तो रखते हैं न?’

‘दीपेंद्र? दीपेंद्र तो हमें बहुत पूछता है... अभी भी। जब तक कमला थी, कहना नहीं पड़ता था। मक्के-बाजरे की रोटियाँ दिल्ली में ठंड पड़ते ही नियम से बनाती रहती थीं... मेरी पसंद का कितना खयाल था उसे ! अब हम दीपेंद्र की घरवाली से फ़रमाइश करें तो अच्छा नहीं दिखता.. जुबान के चोचले हैं... कभी खत्म होने से रहे। मुझे तो अकसर आपकी चिंता लगती है सर !’

‘मैंने तो एक टाइम का टिफ़िन लगा लिया है। शाम को पोहे, उपमा, दलिया जैसी सीधी-सादी-सरल चीज़ों पर हाथ आजमा लेता हूँ। कभी कोई कोर-कसर रह जाती है तो किसे टोकूँ किस किससे कहूँ? इसलिए मन बहलाने को कहता ज़रुर हूँ - सुषमा, उपमा नीचे से ज़रा जल नहीं गई?... सुषमा, तू पोहे में नमक डालना तो भूल ही गई रे!... सुषमा... सुषमा ११... सु... ष... !’

‘हैलो ११... स्स ११... सर जी ! क्या हुआ स...?’

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 94068 86611



आशीष दलाल

बेटी का सुख

‘मनीष जी, समय की नजाकत परखते हुए आपको अब फैसला ले ही लेना चाहिए। अब आप जब तक आपकी संपत्ति का झगड़ा अपने भाई और पिताजी के संग सुलझा नहीं लेते मैं अपनी बेटी को तब तक आपके संग वापस नहीं भेजूँगा।’ एक फैसला सुनाते हुए वह उसकी तरफ मुखातिब हुए।

‘पापा जी, ये मसला बड़ा ही उलझा हुआ है। भैया पुश्तैनी मकान छोड़ेगा नहीं और समस्या सुलझेगी नहीं।’ अपने ससुर की बात सुनकर वह बोला। ‘तो आप अपनी जिद छोड़ दीजिए। वैसे भी उस मकान के एक जैसे आपको मन चाही रकम तो मिल रही है।’ ससुर ने उसे समझाते हुए पीछे हट जाने को कहा।

‘भविष्य में गाँव के पास से बुलेट ट्रेन निकलने वाली है तब उस मकान की जमीन के भाव करोड़ों में आयेंगे। ऐसे कैसे छोड़ दूँ?’ उसके दिमाग में गिनती चलने लगी।

‘मनीष जी, देखिए आपके माता-पिता आपके भाई के साथ उस पुश्तैनी मकान की वजह से ही रह रहे हैं। ऐसे में उनके सारे खर्चे और बीमारी में देखभाल की जिम्मेदारी आपके भाई की ही बन जाती है। आपके हिस्से अगर वह मकान आ भी गया तो उसके साथ आपके माता-पिता का खर्चा और उनकी जिम्मेदारी भी आ जाएगी। ऐसे में आप दोनों की स्वतंत्रता जाती रहेगी। मैं तो कहता हूँ उस मकान को छोड़ देने में ही आपकी भलाई है।’ उन्हें अपनी बेटी के भविष्य की चिन्ता सता रही थी।

‘पापा, आपने तो कभी भी बेटे और बेटी में भेद नहीं किया।’ वह अपने ससुर की बात का कोई जवाब दे पाता उससे पहले ही उनकी बातें सुन रही बेटी बोल उठी। दोनों उसके कहने का भावार्थ न समझ पाने की वजह से उसका चेहरा ताकने लगे। ‘इनकी जगह आज अनुज भैया होते तो क्या आप उन्हें भी यही सलाह देते?’ अपनी बात रखकर अब बेटी उनका चेहरा पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

सम्पर्क : बड़ौदा (गुजरात) मो. 9664652771



अनिल जनविजय

धर्मनिरपेक्ष

रेल के डिब्बे में एक अंधा भिखारी चढ़ आया था। वह गा-गा कर भीख माँग रहा था। कुल चार गाने उसने गाये। पहले में हिन्दू देवी-देवताओं से दया की प्रार्थना की थी तो दूसरे में खुदा और मक्का-मदीना का गुणगान। तीसरे में गुरु गोविंद सिंह की कृपा का अनुरोध था तो चौथे में प्रभु ईसा मसीह से शांति की प्रार्थना। जब वह चारों गीत गा चुका और लोगों से पैसे इकट्ठे करते हुए मेरे पास आया तो मैंने पूछा - 'सूरदास, किस जाति के हो? कौन से धर्म को मानते हो?'

उसका उत्तर था - 'बाबूजी, हमारे लिए तो हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी बराबर हैं। सभी दाता हैं। इसलिए बाबूजी, हम तो धर्मनिरपेक्ष हैं।'

सम्पर्क : दिल्ली

●●

अंजना अनिल

घास के फूल

सिगरेट की राख को हिमेश ने बॉलकनी से नीचे झाड़ दिया। प्रश्न-दर-प्रश्न उसे कोड़े मारने लगे। एक आह सीने से निकली और पत्थरों की शक्ति अछियार करने लगी।

'ओह! क्यों आता है ये दिन?'

आज हिमेश की पत्नी की छठी बरसी है। उसने दृष्टि घुमा ली। बेटी शुचिता हॉस्टल में जाते वक्त कितना रोई थी...माँ के बगैर उसे यहाँ सँभालता भी कौन?

हिमेश सिगरेट की राख फिर से झाड़ने को थे कि कामवाली बाई की बेटी चन्द्रा आ गयी.. 'साब...नीचे के फ्लैटवाले अंकल बरामदे में ही बैठे हैं...कहीं यह राख उनके....?'

'ओह!' हिमेश चुपचाप वहीं खड़े रहे, 'लेकिन तुम्हारी माँ को बुखार था न, अब वो कैसी है?'

'साब...माँ ज्यादा बीमार है। शायद बचे...ना बचे। पिताजी तो पहले जा चुके थे...' चन्द्रा ने लम्बी साँस खींची।

'तुम पढ़ती-वढ़ती हो क्या?'

'हाँ...जी...ग्यारहवीं पास कर ली। अब बारहवीं में आई हूँ।' हिमेश के नेत्र आश्चर्य से फैल गये, 'अच्छा!'

'साब...मैं तो जिन्दगानी में अकेली ही रहूँगी, मैंने फैसला कर लिया है! मेरी माँ कहवे हैं...जिनगानी तो बगीचे के बरोबर होवे हैं। उसे अच्छे कामों से जितना भी संचो...सुख-शान्ति देगी...! मेरी माँ कहवे हैं...जितना कोई साथ दे दे...उतना ही भला! जब शरीर गंगा की धार में उतरे हैं तो मन भी वैसा ही हो जावे...मेरी माँ कहवे हैं साब! शुचिता बेबी...आपकी बगिया का सुन्दर-सा फूल हैं न साब! एक बात कहूँ मैं।'

‘आज अपनी मेम साब की बरसी है न? साब अपने आपको अँधेरे में मत रखना साब...कभी-कभी तो नदिया का पानी भी सूख जावे है साब...! मेरी माँ ने ये सब आपको कहलवाया है मुझसे...’

चन्द्रा चौका-बर्तन करने अन्दर चली गयी।

हिमेश बॉलकनी में खड़े दूर-दूर तक फैले मैदान को देखते रहे। घास ही घास...घास पर सफेद फूल किसने उगाये?

चन्द्रा काम निबटाकर सीढ़ियाँ उतर गयी।

सम्पर्क : अलवर (राजस्थान) मो. 9414017289

●●

अंजू निगम

मन के छाले

गली से निकलते रेहड़ी वाले से कंबल खरीद अंदर आती शांति को बहू ने देख लिया था। शांति के कमरे की देहरी तक आ बहू रुक गयी।

‘आपका भी कमाल है। यहाँ पैसों की नदियाँ बह रही हैं जो आये दिन आपकी खरीदारी खत्म नहीं होती। बेटा मेहनत कर कमाए और आप बैठ उड़ायें। बलिहारी है।’ बहू की जुबान बेलगाम होती जा रही थी।

शांति चुप बैठी रही। वैसे भी बहू से किसी तरह का जवाब-तलब करना वो कबका छोड़ चुकी है।

‘कौन से बेटे के पैसे? मैंने कभी बेटे की पगार देखी ही नहीं। न बेटे ने कभी पूछा, न मैंने कभी हाथ फैलाये। अच्छा हुआ कि ये अपने जीते जी ‘मासिक आय योजना’ से मेरी पगार बाँध गये।’ शांति ने सोचा।

शांति को मालूम था कि बात यहीं थमी नहीं, अभी बेटा आयेगा उसे नसीहत देने। शाम को कान का कच्चा बेटा हाजिर था। एक तरफा बयान बाजी से बिफरा, ‘क्या माँ, आप आये दिन एक नया बखेड़ा खड़ा करती हैं। क्या जरूरत थी नया कंबल खरीदने की जब घर में इतने.....’ आगे के शब्द उसके गले में फँस गये।

शांति को मालूम तो था अधूरे वाक्य का पूरा सच। ‘बेटा ये कंबल मैंने अपने लिए नहीं लिया।’

‘अपने लिए नहीं! तो फिर किसके लिए।’

‘तेरे लिए। इसे सँभाल कर रख ले। जब मेरी उम्र तक पहुँचेगा, तब तेरे काम आयेगा।’

‘पर मुझे कमी किस बात की होगी जो मुझे इसकी जरूरत पड़ेगी?’ बेटा हैरान था।

‘तेरे पापा भी यहीं सोचते थे। पर देखो!’ कह शांति ने अपना कंबल बेटे के आगे कर दिया। चारों ओर पट्टी लगा किसी तरह कंबल को बिखरने से रोका गया था।

‘मेरे तो जाड़े निकल रहे हैं पर तू शुरू से कमजोर है, तुझसे ये जाड़े नहीं निकल पाएँगे।’

कह शांति एक पुरानी साड़ी में कंबल लपेटने लगी।

सम्पर्क : नई दिल्ली

●●

अनुराग शर्मा पुरानी दोस्ती

इस बार उसका फोन कई साल बाद आया। ताबड़तोड़ प्रोन्हति के बाद अब वह बड़ा अफसर हो गया है। एक जमाने में हम दोनों निगम के स्कूल में एकसाथ काम करते थे। मिड डे मील पकाने से लेकर चुनाव आयोग की ड्यूटी बजाने तक सभी काम हमारे जिम्मे थे। ऊपर से अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। इन सब से कभी समय बच जाता था तो बच्चों की क्लास भी ले लेते थे।

उसे अपने असली दिल्लीवाला होने का गर्व था। मुझे हमेशा ‘ओए बिहारी’ कहकर ही बुलाता था। दिल का बुरा नहीं था लेकिन हज़ार बुराइयाँ भी उसे सामान्य ही लगती थीं। अपनी तो मास्टरी चलती रही लेकिन वह असिस्टेंट ग्रेड पास करके सचिवालय में लग गया। अब तो बहुत आगे पहुँच गया है। आज मूड ऑफ था उसका। अपने पुराने दोस्त से बात करके मन हल्का करना चाहता था सो फोन किया।

‘कैसा है तू?’

‘हम ठीक हैं। आप कैसे हैं?’

‘गुड ... और तेरी बिहारिन कैसी है?’

इतने साल बाद बात होने पर भी उसका यह लहजा सुनकर बुरा लगा। मुझे लगा था कि उम्र बढ़ाने के साथ उसने कुछ तमीज़ सीखी होगी। सोचा कि उसे उसी के तरीके से समझाया जा सकता है। मैं आग का सही, उसका इलाका तो दिल्ली देहात ही था।

‘हाँ, हम सब ठीक हैं, तू बता, तेरी देहातिन कैसी है?’

‘ओए बिहारी, ये तू तड़क मुझे बिलकुल पसंद नहीं। और ये क्या तरीका है अपनी भाभी के बारे में बात करने का?’

फोन कट गया था। बरसों की दोस्ती चंद मिनटों में खत्म हो गई थी।

सम्पर्क : पिट्सबर्ग, पीए 15237

●●

अखिलेश शर्मा

आचरण

रात्रि के दो बजे नशे में धुत्त लौटे बेटे से उसकी माँ ने कहा, ‘बेटा तेरी शादी के विषय में मेरी सहेली कुसुम आज फिर ‘बार’ में कह रही थी। उसकी बेटी के संबंध में तूने क्या निर्णय लिया?’

जुएँ में ज्यादा रुपये हार जाने के कारण बेटे ने सामान्य से अधिक पीली थी।

उसने झल्लाकर कहा, ‘कल बुढ़िया को इन्कार कर देना। उसकी बेटी का केरेक्टर अच्छा नहीं है।’

सम्पर्क : इन्डौर (म.प्र.) मो. 9826291827

●●

अनिल शूर आजाद

अनाम पल

वह चौंक उठा !

सचमुच उसका अपना ही चित्र था जो ट्रेन के दरवाजे के साथ बैठी उस नवयुवती के मोबाइल-स्क्रीन पर चमक रहा था । वह एक नामी लेखक है, जरूर वह उसकी कोई फैन होगी ।

सहसा वह रोमांच से भर उठा ।.. अब वह कोई फ़ेसबुक-संदेश ‘शायद..उसी के वास्ते’ टाइप कर रही थी ! दूरी के बावजूद प्रयासपूर्वक थोड़े-बहुत शब्द वह, पढ़ भी पा रहा था । दरवाजे की ओट में खड़े उसे एक सुंदर हाथ.. तथा उसमें पकड़ा मोबाइल ही बस दिखाई दे रहा था ।

उसका मन हुआ कि सामने आकर उससे कहे कि ‘जिस अविनाश को आप सन्देश भेज रही हो, वह सामने उपस्थित है ।’ या फिर.. जरा आगे बढ़कर कम-से-कम उसका चेहरा ही देख ले । पर नहीं.. बलात् उसने स्वयं को रोक लिया । उस भली औरत के निजी पलों में झाँकने की गुस्ताखी तो वह कर ही चुका था । अब सरेराह उसे तथा स्वयं को यों बेपर्दा करना.. उसे गँवारा न हुआ ।

गाड़ी.. फिर धीमी हो रही थी, उसका स्टेशन आ गया था । बिना अपनी अनाम मित्र का चेहरा देखे.. वह प्लेटफार्म पर उतर गया ।

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9871357136

●●

अनीता रश्मि

थोड़ी सी पत्तियाँ

वे जब भी सब्जियाँ खरीदतीं, मुफ्त का धनिया, मिर्ची, अदरक लेने से कभी नहीं चूकतीं । उनकी कार या स्कूटी जैसे ही बाजार के किनारे लगती, सब्जीवालों के चेहरे पर दबी मुस्कान थिरक उठती । सभी की मंद मुस्कान में उनकी आदत का भेद छुपा था ।

आज भी लाल कार बाजार के किनारे लगी । वे उतरीं । थैला सँभालते हुए आगे बढ़ीं । बैंगन, तोरई, टमाटर, कट्टू के साथ वापस लौट पड़ीं । सब चौंके । एक की आवाज – मेमसाब ! आप कुछ भूल रही हैं ।

- नहीं ! आज बस इतना ही ।

- आज धनिया पत्ती या मिर्च मुफ्त । मैं नहीं लेंगी ?

सब्जीवाले ने थोड़ी सी पत्तियाँ हाथ में उठा लीं । दूसरे ने मिर्च की ओर इशारा किया ।

- नहीं !....

सबके चेहरे पर छिपी मुस्कान नहीं, आश्चर्य था ।

आगे कहा, मैं कल खेत पर गई थी । किसानों की अथक मेहनत देखी थी ।

सम्पर्क : राँची (झारखण्ड)

●●

अनिल मकरिया

टूटी चप्पल

‘पता नहीं ये सामने वाला सेठ हफ्ते में 3-4 बार अपनी चप्पल कैसे तोड़ आता है?’

मोची बुदबुदाया नजर सामने की बड़ी किराना दुकान पर बैठे मोटे सेठ पर थी।

हर बार जब उस मोची के पास कोई काम ना होता तो उस सेठ का नौकर सेठ की टूटी चप्पल बनाने को दे जाता। मोची अपनी पूरी लगन से वो चप्पल सी देता कि अब तो 2-3 महीने नहीं टूटने वाली।

सेठ का नौकर आता और बिना मोलभाव किये पैसे देकर उस मोची से चप्पल ले जाता।

पर 2-3 दिन बाद फिर वही चप्पल टूटी हुई उस मोची के पास पहुँच जाती।

आज फिर सुबह हुई, फिर सूरज निकला।

सेठ का नौकर दुकान की झाड़ू लगा रहा था।

और सेठ.....

अपनी चप्पल तोड़ने में लगा था, पूरी मशक्कत के बाद जब चप्पल न टूटी तो उसने नौकर को आवाज लगाई- ‘अरे रामधन इसका कुछ कर, ये मंगू भी पता नहीं कौनसे धागे से चप्पल सीता है, टूटती ही नहीं।’

रामधन आज सारी गाँठे खोल लेना चाहता था- ‘सेठ जी मुझे तो आपका ये हर बार का नाटक समझ में नहीं आता। खुद ही चप्पल तोड़ते हो फिर खुद ही जुड़वाने के लिए उस मंगू के पास भेज देते हो।’ सेठ को चप्पल तोड़ने में सफलता मिल चुकी थी।

उसने टूटी चप्पल रामधन को थमाई और रहस्य की परतें खोलीं- ‘देख रामधन जिसदिन मंगू के पास कोई ग्राहक नहीं आता उस दिन ही मैं अपनी चप्पल तोड़ता हूँ क्यौंकि मुझे पता है मंगू गरीब है पर स्वाभिमानी है, मेरे इस नाटक से अगर उसका स्वाभिमान और मेरी मदद दोनों शर्मिंदा होने से बच जाते हैं तो क्या बुरा है।’ आसमान साफ था पर रामधन की आँखों के बादल बरसने को बेक़रार थे।

सम्पर्क : जलगाँव (महाराष्ट्र) मो. 9372992611

●●

अनीता राकेश

नूतन आयाम

चढ़ते-चढ़ते आज वह बहुत ऊँचा चढ़ चुका है। बहुत ऊँची मीनार की चोटी पर अब अपने को पाता है। नीचे देखता है- सभी पीछे ही नहीं छूटे बल्कि सभी बहुत अदने से भी नजर आ रहे हैं। गर्व से तना बैठा है, बड़ा संतुष्ट है- अहं भाव में गोते लगा रहा है। बाँटना चाहता है अपने इस आनंद को - पर किसे? वह तो अकेला है। अब दुखी होता है, दर्द साझा करना चाहता है- पर किसे? वह अब भी अकेला है। घबराहट में अब उतरना चाहता है- लोगों के बीच आने के लिये, अपने उन लोगों के बीच जिन्हें हीन समझ तिरस्कृत किया। पर उतर नहीं पाता। बुर्ज की अनी में फँस गया। अब साँसें टैंगी हैं, दिल धड़क रहा है, तन ढीला पड़ रहा है। तभी ठहाके लगाता अतीत आ खड़ा होता है- “अब तो यहीं बुर्ज पर ही तुम्हें

चील-कौए खायेंगे, किसी को तुम्हरे बारे में कुछ पता भी नहीं चलेगा।”

अदृश्य ईश्वर एवं प्रत्यक्ष अतीत के समक्ष हाथ जोड़ पूरी शक्ति से चिल्ला-चिल्लाकर क्षमा-याचना करना चाहता है। किंतु घबराहट में धिन्धी बँध जाती है। बुर्ज की अनी में फँसा शरीर जोर-जोर से हिल रहा है। मृत्यु की ऐसी भयावह आशंका से त्रस्त मानो हृदय-गति ही रुक जायेगी। तभी किसी के बार-बार झकझोरे जाने के कारण उसकी नींद खुलती है। सबको भय-मिश्रित नजरों से अविश्वास भाव में देख रहा है। परिजन पूछ रहे हैं— “अरे ! क्या सपना देख रहा था? इसका पसीना तो देखो।” “थरथरा क्यों रहा है?” कोई माथा सहला रहा है, कोई पानी ले कर खड़ा है। पूरे परिवार के बीच अपने को पाकर मानों वह बुर्ज से नीचे आ गया। और, “कुछ खास नहीं” कहता हुआ जीवन के नूतन आयाम के लिए संकल्पित हो सबके बीच से निकल गया है।

सम्पर्क : पटना (बिहार) मो. 9835093696

●●

आर.बी.भंडारकर

बेटी मान है सम्मान है

सुमति राय की बिटिया बड़ी शालीन; किसी भी परिस्थिति में किसी भी बात पर कभी भी पिता को पलट कर जवाब नहीं दिया। बिटिया के इस स्वभाव पर पिता निहाल।

शादी की बात चली, उपयुक्त घर, वर की तलाश होने लगी। घर में बातें चलतीं, राय मशविरा होता; बिटिया सब सुनती पर कभी कोई प्रतिक्रिया नहीं की। इसी बीच एक संयोग यह हुआ कि सुमति राय को बिटिया के लिए सामाजिक-आर्थिक स्तर की दृष्टि से एक अच्छा घर, वर मिल गया। बिटिया के होने वाले ससुर पूर्व परिचित थे सो वह जानते थे कि सुमति राय मेरी प्रतिष्ठा के अनुसार दहेज नहीं दे पाएँगे इसलिए उन्होंने एक तरकीब निकाली कि वे तिलक के समय सुमति राय को पाँच लाख रुपये दे देंगे, वही रकम सुमतिराय तिलक पर रख दें। इससे दोनों की प्रतिष्ठा रह जायेगी।

दहेज के सख्त विरोधी सुमति राय को यह पेशकश अच्छी नहीं लगी पर उनके होने वाले समधी अड़ गए— ‘आपको यह तो करना ही पड़ेगा राय साहब।...देखिए इसमें आपको तो कोई नफा-नुकसान है नहीं पर मेरी तो प्रतिष्ठा दाँव पर लगी है।’ पिता को कई दिनों से से चिंता में डूबा देखकर बेटी ने एक दिन पिता से इसका कारण जानना चाहा तो अवसाद-ग्रस्त हो चुके पिता ने सम्पूर्ण हकीकत बयाँ कर दी।

आक्रोशित बेटी ने कहा कि— ‘पिता जी मेरे पिता की प्रतिष्ठा और उनके सिद्धांतों की मर्यादा सर्वोपरि है। जो परिवार अपनी झूठी प्रतिष्ठा के लिए मेरे पिता की मर्यादा का हनन करे मुझे ऐसे परिवार का सदस्य बनना कर्तव्य स्वीकार नहीं; आप उन लोगों तुरन्त यह बात सूचित कर दीजिए।’

कभी किसी बात का प्रतिकार न करने वाली अपनी बिटिया के मुँह से यह सुनकर पिता अवाक् होकर बेटी को ताकने लगे।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.)

●●

अखिलेश पालरिया

रिश्ते

मैं कॉलोनी में नया-नया आया था। यह कॉलोनी स्वच्छता एवं भव्यता की दृष्टि से काफी अच्छी थी किन्तु शहर से दूर पड़ती थी। कॉलोनी में एक छोटा किन्तु आकर्षक शॉपिंग सेन्टर था, जिसमें परचूनी सामान की तीन दुकानें थीं, एक-दूसरे से सटी हुईं। आवश्यक घरेलू सामान के क्रय हेतु मैं प्रथम बार इन तीन दुकानों में से पहली में गया और दुकानदार को सामान की लिस्ट पकड़ा दी। ‘इतनी बड़ी कॉलोनी में केवल ये तीन ही परचूनी की दुकानें हैं?’ मैंने पूछा। ‘हूँ’ दुकानदार ने मुझे नया जानकार ऊपर से नीचे तक घूरा और रहस्योद्घाटन कर कहा, ‘साहब, बाकी दोनों तो चोर हैं। आप सामान यहीं से खरीदा करें।’ ‘बहुत अच्छा।’

मैंने हाँ में हाँ मिलाई और घर लौट आया। अगली बार जैसे ही पहली दुकान में घुसने को हुआ, दूसरी दुकान के मालिक ने संकेत से मुझे आमंत्रित किया। बिना सोचे समझे मैं दूसरी दुकान में प्रवेश कर गया। अपना मत प्रकट कर वह बोला, ‘बाबूजी, अच्छा ही हुआ जो आप उधर न गए, वरना...?’ ‘वरना..?’ मुझे सकपकाया देख उसने सफाई दी, ‘आजू-बाजू वाले दोनों धूर्त हैं। अधिक दाम लेकर कम तोलने वाले लोग हैं ये।’ अगले महीने मैं घर से सोच कर निकला था कि इस बार सीधे तीसरी दुकान में ही जाऊँगा। न जाने क्यों, तीसरे की प्रतिक्रिया भी जानने की उत्सुकता बनी हुई थी। प्रथम दोनों दुकानदारों के संकेतों से आकृष्ट हुए बिना मैं तीसरी दुकान में प्रविष्ट हुआ व सामान की लिस्ट आगे कर दी। दुकान मालिक ने बगैर कुछ कहे-सुने सामान पैक कर मुझे थमा दिया तो उसकी इस सरलता पर मुझे झुँझलाहट हुई। मैंने बात छेड़ी, ‘अन्य दो दुकानों से आपकी दुकान अपेक्षाकृत बड़ी है।’ ‘साहब, वे दुकानें भी अपनी ही समझियेगा।’ उसने प्रसन्नता व्यक्त कर कहा, ‘वे दोनों भाई जो हैं।’ अर्चभित सा मैं दुकान के बाहर निकल आया।

सम्पर्क : अजमेर (राज.) मो. 9610540526

●●

आशा खत्री

चेहरा

फटे पुराने मैले कपड़े, मैल से सना सूखा बदन, उलझे बाल और हाथ में कूड़ा-साईकिल का हत्था! उसे देखकर किसी के भी मन में करुणा ऊपर सकती है। उसे देख वह भी दौड़कर अंदर गया और कैमरा ले आया। ‘फोटो खींचता हूँ’ कहा तो कूड़े वाले के चेहरे की स्थायी उदासी एकाएक लुप्त हो गयी और अनायास ही एक मधुर मुस्कान के साथ उसके होंठ फ़ैल गए।

‘मुस्कुरा मत यार।’

उसकी आँखों में प्रश्न उभर आया- ‘तुम फ़ोटू खींच रहे हो तो मुस्कुराऊँ कैसे नहीं, फ़ोटू खिंचाने का सपना पहली बार सच हो रहा है।’

‘नहीं यार गंभीर होकर दिखाओ, जो दर्द, जो अभाव, तुम्हारे भीतर हैं चेहरे पर झलकने चाहिये। मैं इस चेहरे को दुनिया के सामने लाऊँगा फिर देखना मेरी इस पोस्ट पर कितने लाइक, कमेंट आते हैं।’

कैमरे वाला मन ही मन खुश हो रहा था। उसने कैमरा कूड़े वाले के चेहरे से हटा लिया। ऐसा करते ही उसका चेहरा फिर पहले सा हो गया।

‘हाँ अब ठीक है’ यह कहते हुए उसने पुनः कैमरा उसकी ओर किया। ऐसा करते ही फिर उसके चेहरे पर मुस्कान तैर गयी। ऐसा कई बार हुआ तो कैमरे वाला झल्ला पड़ा और दाँत भींचते हुए बोला—‘मुस्कुरा मत यार’। कूड़े वाला मैली आस्टीन से भीगी आँख पोंछता, पेट में दौड़ते चूहों से लड़ता हुआ कूड़ा गाड़ी आगे बढ़ा ले गया। कैमरे वाला भी पैर पटकता घर में घुस गया।

सम्पर्क : रोहतक

●●

अर्पणा गुप्ता

सेठानी

तेज गरमी की वज़ह से चक्कर सा आने लगा। लाइन लम्बी थी, बाहर बैंक के बैंच पर आकर बैठ गई।

पिछली बार बैंक में आई थी इनके साथ। शादी के बाद से लेकर अब तक जब भी जरूरत होती इनसे माँग कर काम चल रहा था। कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि अचानक यूँ अकेला छोड़कर चले जाओगे।

मुझे सेठानी कहकर चिढ़ाया करते थे तुम... कभी कुछ कहा तो—‘अरे मकान तुम्हारे नाम, जमीन तुम्हारे नाम, इत्ते जेवर तुम्हारे लिये, क्या चाहिए और तुम्हें! लेकिन मैंने कभी खर्चे के अलावा रखा ही नहीं अपने पास। सारे बिल, सारे बड़े खर्चे, तुम ही निपटाते थे।

तुम्हारे बाद के तीन महीने ऐसे ही निकल गये। दोनों बेटियाँ अपने-अपने घर चली गईं।

अब मैं सेठानी यहाँ लाइन में लगी हूँ...।

सम्पर्क : लखनऊ (उ.प्र.) मो. 9793318465

●●

अर्चना मिश्र

आप तब कहाँ थे पापा

आदरणीय डैडी,

सादर प्रणाम!

आज मैं उम्र के पचासवें मोड़ पर खड़ी हूँ, लेकिन वो छः साल की बच्ची आज भी मेरे अंदर जीवित है, जो आपसे बहुत सारे सवाल करना चाहती है, लेकिन आज भी डरती है। इसलिये आपको पत्र लिख रही हूँ। मैं छः साल की थी जब आप मेरे लिये ‘नयी माँ’ लाये थे। आप ने मुझे सिखाया था कि मैं आपको ‘पापा’ कहूँ।

लेकिन नयी माँ ‘मम्मी’ सुनते ही मुझ पर बुरी तरह बिफ़र गयी थीं। अपने बाप को ‘पापा’ बोलो। मैं तुम्हारी ‘माँ’ नहीं हूँ। पहली बार नन्हीं बच्ची सहम गई। डरकर फिर आपको ‘पापा’ भी नहीं कह पायी। आप अपनी मधुयामिनी में इतने मशगूल हो गये कि माँ आयी दूसरी तो बाप हुए तीसरे। इस कहावत का

अक्षरशः पालन करने लगे। मैं ‘पापा’ की जगह आपको ‘डैडी’ क्यों कहने लगी आपने इस पर कभी ध्यान तक नहीं दिया। माँ को हमारे बीच का दुभाषिया बना आपने अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली।

मेरे लिये माँ लाना भी आपका मेरी खुशियों के निहित था। लेकिन आपने कभी जानना चाहा कि मैं खुश हूँ या नहीं..?’

सिर्फ जरूरत पूरी करना रिश्तों को बाँधता तो है, लेकिन बेहद कच्चे धागों से। आपको याद होगा, कि मैं हमेशा कक्षा में प्रथम आती थी। सिर्फ इसलिए कि आप मुझे सराहें, प्यार करें। मैं बचपन की अतृप्ति इच्छा लिये आज भी गलबहियाँ डाल आपके गले में झूलना चाहती हूँ। आपको प्यारे पापा कहना चाहती हूँ। लेकिन आपने इस दूरी को इतना बढ़ा लिया कि अब कोई सेतु नहीं बचा। आप नयी माँ के साथ मेरे नये पिता बन गये। उनकी दिखायी दुनिया को देखते आप कब मुझसे दूर हो गए, आप स्वयं नहीं जान पाये।

शादी के बाद मेरी विदाई आपको याद है डैडी? उस दिन रस्म अनुसार मैं आपके सीने से लगायी गयी थी। लेकिन आप वैसे ही खड़े रहे। न बाँहें फैला गले लगाया, न कोई आशीर्वाद दिया; न ही कोई नसीहत। आपके अंदर का पिता उस दिन भी बाहर नहीं आया। कर्नल का तमगा हमेशा पिता के सीने पर टैंगा रहा।

शादी के बाद भी आपने मुझे कभी फ़ोन नहीं किया। पूरी ज़िंदगी हमारी दुभाषिये पर चलती रही। अब आप मुझे रोज़ फ़ोन करते हैं। ‘क्या इतने वर्षों का अपराधबोध विवश करता है आपको या आपका मन भी अपनी बेटी से प्यार करने को तड़पता है?’

इस बात का उत्तर जरूर दीजियेगा पापा।

आपके स्नेह की अभिलाषी

आपकी बेटी

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9893423095

●●

अरुण अर्नंब खरे

इंजेक्शन

रघु फिर सासाहिक हाट से निराश लौटा था। उसे जितनी उम्मीद थी उससे बहुत कम दाम में ही उसकी सब्जियाँ बिकीं थी। पत्नी परबतिया को बता रहा था – ‘बड़ी मुश्किल से लागत ही निकल रही है, अपनी मेहनत का तो कोई मोल ही नहीं, ननकू पिछले सप्ताह शहर से कोई इंजेक्शन लाया था जिसे सब्जियों में लगाने से रात भर में ही उनका वजन ढाई-तीन गुना बढ़ जाता है और साइज भी अच्छी-खासी बड़ी हो जाती है। हाथों हाथ उसकी सब्जियाँ बिक जाती हैं और उसे मुनाफा भी खूब हो रहा है।’

‘तो आप भी ननकू से पूछकर वह दवा ले आओ बाजार से, नहीं तो हमें भी मजूरी करने दूसरे शहर जाना पड़ेगा।’ पाँच साल का पंचम दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था कि अचानक बोल पड़ा – ‘हाँ बापू! मताई सही कह रही है। आप शहर से दो इंजेक्शन ले कर आना, एक सब्जी को लगाना और दूसरा मुझे जिससे मैं भी जल्दी से बड़ा हो कर आपका हाथ बटा सकूँ।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9893007744

●●

अर्पणा शर्मा

नागवार

‘मेरे पापा जी ने टिकट बुक करा लिए हैं। मेरी सहेली की शादी है और हम सब वहाँ से घूम भी आएँगे’, खुशी से चहकती रम्या उसके गले लग गई। अपनी केवल चार माह पुरानी नववधु की दमघोंटू बाँहों को छुड़ाते हुए अरिजित ने उसे पानी लाने भेज दिया।

‘क्या हुआ यार, ये मुँह क्यों लटका लिया’, वहाँ पास बैठा उसका घनिष्ठ दोस्त सुदीप पूछ बैठा।

‘रम्या का लगभग पूरा दिन अपने मायके बालों से फोन पर बात करने या उन सबके साथ कहीं घूम आने में चला जाता है। घर में नई बहू का सबको बहुत चाव है पर वो एक ही शहर में होने के कारण इसे कभी भी बुला लेते हैं और हमसे कभी पूछना भी जरूरी नहीं समझते। ना ही रम्या को कभी लगा कि इस घर और हमारे प्रति भी उसकी कुछ जिम्मेदारी है।’ अरिजित की आवाज सदमे से भरी लग रही थी।

माँ ने सुना तो वे भी गहरी साँस लेकर रह गई। उनको आज तक याद है कि कैसे उन्होंने सब इंतजाम कर नववधु को पहली रसोई छुआने की रस्म के लिए बुलाया था पर रम्या ने तो साफ हाथ झटक लिये थे, ‘ये सब हमसे नहीं होगा।’

ये पहला और सुस्पष्ट संकेत था, समझदार को इशारा। माँ का अपमान अरिजित सह नहीं पाएगा और घर में कलह से बचने वे चुप रह गई। ‘रम्या को बोल दो, गुंजन को भी साथ ले जाए, आखिर उसे भी तो नई भाभी का इतना चाव है, पर बेचारी घर में अकेली रह जाती है।’

‘हाँ माँ, मैं उसका भी टिकट करा देता हूँ।’ अरिजित को अपनी छोटी बहन का मायूस चेहरा याद आया।

रम्या ने सुना तो बिफर उठी – ‘हर जगह मैं उसे नहीं चिपकाए रख सकती, आखिर मेरी सहेली की शादी है और मेरे घरवालों के साथ उसका क्या काम?’ वह पैर पटकती अपने कमरे में चली गई।

सुदीप ये सब देखसुनकर हतप्रभ रह गया और रोष में भरकर अरिजित से बोल पड़ा – ‘आखिर ऐसा क्यों कि जो लड़की ब्याहने के बाद भी अपना मायका नहीं छोड़ती उसे अपने ससुराल में अपनी ननद गवारा नहीं.... !’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 7691985478

अमरजीत कौंके

भूख

दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शताब्दी पहुँचने में अभी आधा घंटा बाकी था। मेरा दोस्त कहने लगा।

‘यार अभी बहुत टाइम पड़ा, चलो दो-दो भट्टूरे ही खा लें।’

‘ठीक है.. वो सामने भट्टूरों का स्टाल है। वहाँ दो दो भट्टूरे खा लेते हैं।’

कह कर हम दोनों उधर स्टाल की तरफ चल पड़े।

भट्टूरे वाले ने हमे दो-दो भट्टूरे और पत्तों के दोने में कुछ चने डाल कर दे दिए।

हम वहीं बैंच पर बैठ कर भट्टूरे खाने लगे।

हमे भट्टूरे खाते सामने दो छोटे-छोटे बच्चे गंदे चीथड़े कपड़ों में हमारी तरफ लालची निगाहों से देख रहे थे। मेरा दोस्त बोला, ‘यार ये ऐसे क्यों देख रहे हमारी तरफ, भूखी निगाहों से?’

मैंने कहा, ‘वैसे ही भट्टूरे खाने को मन कर रहा होगा।’

मैं मन में सोच रहा था कि खुद खत्म कर के इन को पूछ लेंगे अगर कहेंगे तो इन्हें भी दो फ्लैट ले देंगे।

हम ने भट्टूरे खत्म कर के अपने दोने सामने पढ़े एक खुले डस्टबिन में फेंक कर उन्हें बुलाने ही लगे थे कि इससे पहले दोनों बच्चे एक दम एक-दूसरे से आगे बिजली की तेज़ी से भागे और डस्टबिन में फेंके हमारे दोने उठा कर उनसे लगे चने चाटने लगे।

हम दोनों अवाक् देख रहे थे...

सम्पर्क : पटिआला (पंजाब) मो. 98142 31698

●●

अशोक जैन

अपने-अपने दुःख

थकी-हारी शकुन बस से उतरते ही कोलतार की पिघलती सड़क पर लगभग सरकते हुए अपनी सोसायटी के गेट पर पहुँची।

गार्ड ने उसे रोका – ‘बी जी, खत आया है आपका। ऊपर फ्लैट पर कोई था नहीं, सो डाकिया मुझे दे गया।’ शकुन ने पत्र लिया और हाथ में झुलाते हुए फ्लैट की ओर मुड़ गयी। दरवाजा खोलते ही उसकी आह-सी गर्म हवा से उसका सामना हुआ। बैग को मेज पर रख कर वह सोफे पर धम्म से बैठ गयी।

...फ्लैट पर कोई हो तो होगा न! ...पिता की मौत के बाद माँ व छोटी बहन की जिम्मेदारी.... कस्बे से शहर में नौकरी... सुबह से शाम वही रुटीन... सोचने का समय ही नहीं मिला... तभी दरवाजे की घंटी से उसकी तंद्रा भंग हुई। काशीबाई आई थी। वाशबेसिन पर पहुँच आँखों पर छाटे मारते हुए काशी को चाय के लिए कहा और माँ का खत खोला। पत्र खोलते ही माँ की आड़ी तिरछी लाइनें उसे स्पष्ट हो उठीं।

...लुधियाना से रिश्ता आया है। विधुर है, बहुत बड़ी उम्र का नहीं है। अब भी सोच लो लाडो! पूरी जिंदगी सामने पड़ी है तेरी। कौन करेगा तेरा...?

कितनी बार कहा है माँ को ‘अब और नहीं।’

उस समय नहीं सोचा शादी का तो अब क्या? वह उठी और कुछ सोचकर मेज पर जा बैठी पत्र लिखने – ‘माँ! बस अब और नहीं। क्या मैं इसी लायक हूँ? अब शादी नहीं करूँगी। यह मेरा निश्चय है। हाँ, सुरेखा की शादी समय से होगी। पढ़ लिख गयी है। नौकरी भी करने लगी है। उसके लिए एक अच्छा सा रिश्ता हूँड़ो। बस ...।’

खिड़की के पार बिछे विशाल लॉन में लगे बरगद के पत्ते मुरझाने लगे थे। उसकी उम्र चालीस पार कर रही थी।

सम्पर्क : गुरुग्राम, दूरभाष : 0124-4373908

●●

ओम नीरव

एक तेरे लिए

‘पाँव अटपटे परत हैं देखि गाँव के रुख’ – यह उक्ति रज्जन पर सार्थक सिद्ध हो रही थी। दिल्ली से कोई चार सौ किलोमीटर पैदल चल कर गाँव की ड्योढ़ी देखते ही रज्जन और उसकी घरवाली के पाँव प्रसन्नता से उछलने लगे थे। घर की ड्योढ़ी पर पहुँचते ही उन्होंने एक साथ चिल्ला कर कुण्डी खटका दी– ‘अम्मा! अम्मा! ओ अम्मा! दरवाजा खोलो!’

दरवाजा तो खुला नहीं, दरवाजे के पास की खिड़की अवश्य खुली। सामने उनकी ‘अम्मा’ थीं। दोनों झट से खिड़की पर आ कर बोले– ‘दरवाला खोलो न अम्मा!’

‘तुम दोनों दिल्ली से कैसे आ गये?’ अम्मा ने पूछ लिया।

‘अरे मत पूछो अम्मा! पैदल चलते-चलते, कब रात हुई कब दिन-कुछ पता नहीं! कब कहाँ सो गये, कब जागे और फिर चल दिये। रास्ते में पुलिस से बचते-बचाते कैसे पहुँचे हैं यहाँ तक। बस मत पूछो!’

‘इतना सब करने की क्या आवश्यकता थी? दिल्ली में रहता! क्या कठिनाई थी?’

रज्जन हक्का-बक्का अम्मा को देखता रह गया, उससे कुछ बोला न गया।

उसकी अम्मा कह रही थी– ‘लॉक डाउन लगाने वाले सब पागल हैं क्या? तू अधिक बुद्धिमान है? क्यों कानून तोड़ा? क्यों सबको धता बताया? मीडिया वालों से भी क्यों झूठ बोला?’

‘मीडिया वाली बात तुमको कैसे पता?’

‘मैंने टी वी में देखा था, तू कह रहा था ‘खाने को कुछ नहीं, पैसे भी नहीं, घर जाना मजबूरी है’ जबकि मैं जानती हूँ तेरे पास अच्छी ख़ासी रकम है जो घर भेजने वाला था। फिर क्यों बोला इतना बड़ा झूठ?’

‘गलती हो गयी अम्मा! कान पकड़ता हूँ। दरवाजा खोल दो।’

‘खोल दूँ? लेकिन यह तो बता कि यदि तू कोरोना लेकर आया हो तो क्या पूरे घर में वह नहीं फैलेगा? घर से फिर गाँव भर में नहीं फैलेगा? क्या तेरे एक के लिए पूरे परिवार, पूरे गाँव को खतरे में डाल दूँ?’

रज्जन निरुत्तर कभी अम्मा को देखता, कभी धरती को।

‘तेरा मोबाइल नहीं लग रहा था, नहीं तो मैं तुझे कैसे भी आगे नहीं बढ़ने देती। समझा?’

‘अब क्या करूँ अम्मा?’

‘बाहर ही बैठ जाओ तुम दोनों। वहीं पर कुछ खिलाये-पिलाये दे रही हूँ। तबतक सरकारी गाड़ी आ रही होगी।’

‘सरकारी गाड़ी? क्यों? कैसे?’

‘तेरे बाबू ने सरकारी नंबर पर फोन कर सारी बात बता दी है। वे लोग आते ही होंगे।’

रज्जन की आँखें डबडबा आर्या – ‘मैं नहीं जानता था, तुम इतनी कठोर हो सकती हो।’

‘होना पड़ता है। मैं एक तेरे लिए पूरे गाँव को कोरोना के खतरे में झोंक नहीं सकती।’

सम्पर्क : लखनऊ (उ.प्र.) मो. 8299034545

●●

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' जीते जी

यहाँ उस की उपस्थिति अप्रत्याक्षित थी। वह दौड़-दौड़ कर लकड़ी ला रहा था। जब मुखाग्नि दे कर लोग बैठ गए तो उस ने उमेश से कहा, 'साहबजी! एक बात कहूँ?'

'जी! कहिए,' उमेश ने उस अनजान व्यक्ति की ओर देख कर पूछा, 'मैं आप को पहचान नहीं पाया?'

'साहब! इन माँजी से पहचान थी। कभी-कभी मेरे यहाँ सब्जी लेने आ जाती थीं। मेरी पत्नी के पास घंटों बैठा करती थीं।' उसने कहा, 'मैं उनकी निशानी एक शाल ले जा सकता हूँ? ये शमशान में यूँ ही पड़ी-पड़ी सड़ जाएगी?' उसने उमेश से धीरे से कहा।

उमेश जानता था कि शमशान की कोई चीज काम नहीं आती है। यह महँगी शाल भी यहाँ पड़ी-पड़ी सड़-गल जाएगी। मगर, उसने जिज्ञासावश पूछ लिया, 'इस शाल का क्या करोगे?' 'मेरी एक बूढ़ी माँ है। उसको एक अच्छी शाल की जरूरत है।' वह बड़ी मुश्किल से भूमिका बाँध कर बोला पाया। 'हाँ-हाँ। ले जाओ!' उमेश की आँख में आँसू आ गए। उसने आँसू भरी आँखों से शमशान में जलती चिता और उसके पास खड़े बेटे को देख कर धीरे से कहा, 'सभी शाल ले जाओ भाई। किसी को बाँट देना। कम से कम शाल के अभाव में कोई माँ तो ठण्ड से बेमौत नहीं मरेगी!' कहते हुए उमेश ने आँसू पौँछ लिए।

सम्पर्क : नीमच (म.प्र.) मो. 9424079675

●●

ओजेंद्र तिवारी प्रीतिभोज

विवाह के उपलक्ष्य में प्रीतिभोज का आयोजन चल रहा था। हाल के प्रवेश द्वार पर कुछ गरीब बच्चे आए। वे साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए थे। उनमें से एक ने कहा "भाई जी क्या हम लोग भी भोजन कर लें।" आयोजकों ने बच्चों को डॉटकर कहा— "चलो भागो यहाँ से।" प्रवेश द्वार पर अतिथियों के स्वागत हेतु खड़े दिनेश भैया ने अपने साथ खड़े लोगों से हँसकर कहा, "इन आवारा लड़कों को यदि भोजन करने देते तो भोजन कम पड़ सकता था?" बच्चों के उदास व हताशा से भरे चेहरों को देखकर दिनेश के एक मित्र को यह ठीक न लगा उसके हृदय में यह बात काँटे की तरह चुभ गई। उसने कहा, "तुम्हारा यह कार्य उचित नहीं है। क्या गरीब बच्चों की इच्छा अच्छा भोजन करने की नहीं होती। वे बच्चे तो आपसे अनुमति लेकर अन्दर आ रहे थे। बच्चों को भोजन करने से नहीं रोकना था।" इससे अच्छा होता भोजन की बर्बादी रोकने हेतु एक बोर्ड लगा दिया जाता इस बोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा जाता, "आवश्यकता से अधिक भोजन प्लेटों में न लें, भोजन प्लेटों में छोड़कर अन्न की बर्बादी न करें। इससे कई लोगों का पेट भर सकता है। भोजन प्रेम से करें और भोजन से प्रीति रखें। तभी यह सच्चा प्रीतिभोज होगा।" अपने मित्र की बातों को सुनकर दिनेश ने आँखें उठाकर दूर तक देखा, किन्तु तब तक वे बच्चे वहाँ से ओझल हो गए थे।

सम्पर्क : दमोह (म.प्र.) मो. 9993534521

●●

उषा जायसवाल

चुनाव

बंदर-बँदरिया कूदते-फाँदते, मौज-मस्ती करते, कभी इस डाल से उस डाल पर कूद जाते मानो सावन में झूला-झूलते। कभी पद यात्रा करते तो कभी थककर सुस्ताने बैठ जाते। ऐसा लगता मानो लम्बी यात्रा करके आ रहे हैं। भूख लगने पर उचक-उचककर पेड़ों के फलों का रसास्वादन करते प्यास लगने पर पोखर का, तालाब का पानी पीते। घूमते-घूमते बंदर-बँदरिया एक सुन्दर वन में पहुँचे जहाँ तालाब के किनारे मधुर फलों से लदे सुन्दर वृक्ष दिखाई दिए। दोपहर हो रही थी भूख लग गई थी। पहले तो भर पेट भोजन करने की इच्छा जताई, बँदरिया ने और बंदर की सहमति से पेट की क्षुधा शान्त की और फिर पानी पिया....।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9329767818

●●

उमेश महादोशी

पिंजड़े को पकड़कर झूलती चिड़िया

“क्या कहा तुमने...? ...तुम मुझे तलाक भी नहीं देने दोगी...?”

“हाँ, ठीक सुना तुमने! तुम सोचते हो कि शादी अपनी मर्जी से करोगे और तलाक भी अपनी मर्जी से दे दोगे, तो तुम गलत हो। जो तुम आज मेरे साथ कर रहे हो, वही कल किसी और के साथ करने के लिए मैं तुम्हें खुला छोड़ने वाली नहीं हूँ।”

“जब तुम मेरे साथ खुश नहीं हो, मेरा व्यवहार तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तलाक लेकर मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ती?”

“हाँ वीरेश, मैं तुम्हारे साथ खुश नहीं हूँ लेकिन खुश रहना चाहती हूँ। तुम्हारा व्यवहार मेरे प्रति अच्छा नहीं है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करो। तुम मेरा सम्मान नहीं करते लेकिन मैं तुमसे सम्मान पाना चाहती हूँ।... जो मैं तुमसे पाना चाहती हूँ, वो मुझे तलाक देकर तो मिल नहीं सकता। यदि मिल पायेगा तो इस रिश्ते को बचाकर और तुम्हें सुधारकर ही मिल पायेगा।”

“...और रिश्ता हमारा बचने से रहा। मैं भी, जैसा हूँ, वैसा ही रहने वाला हूँ।”

“मैं एक औरत हूँ और मुझे अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास है... तुम समझते रहो मुझे कमजोर...”

“दीक्षा मैडम! मैं शहर का जाना-माना वकील हूँ। इस पर भी विश्वास है न तुम्हें...?”

“मेरा तो इस बात पर भी विश्वास है कि वकालत की शक्ति इन्सानियत और रिश्तों की सामाजिकता से ऊपर नहीं हो सकती...!”

“तो फिर ठीक है, कल भिजवाता हूँ तुम्हें नोटिस... तैयार रहना कोर्ट में दुष्चरित्र सिद्ध होने के लिए...”

“ऐसा ही सही। लेकिन कोर्ट में मुझे बुलाने से पहले अच्छे से सोच लेना कि तुम्हारे मान-अपमान

के लिए तुम्हीं जिम्मेवार होगे... ऐसा न हो कि घिसे-पिटे फार्मूले के ध्वस्त होने पर वकालत करने के योग्य ही न बचो...”

दोस्तो, इस कथा में मैं एक पात्र होता और कोर्ट में मौजूद रहा होता तो आगे की कथा जरूर सुनाता। पर मैंने सरसराती हवा में एक पिंजड़े को बाहर से पकड़कर झूलती चिड़िया से कल जो सुना, वो आपसे साझा करना चाहता हूँ।

करीब छ: महीने बाद माननीय न्यायाधीश के कक्ष से बाहर आते युगल में से जो पत्नी थी, वह बहुत खुश थी। न्यायाधीश महोदय ने उसे अपने ‘पति’ नामक रिश्ते को सुधारने के लिए दो वर्ष का समय दे दिया था।

सम्पर्क : बरेली (उ.प्र.) मो. 9458929004

●●

उपमा शर्मा

ममता

‘न जाने कितनी देर में खुलेगा ये फाटक। एक गाढ़ी निकल गई लगता है अब दूसरी आ रही है।’

‘हाँ, लग तो ऐसा ही रहा है।’

ये डुगू इतना क्यों रो रहा है तन्ही? आस - पास वाले सब इधर ही देखने लगे हैं। एक बच्चा नहीं सँभलता तुमसे।’ स्वर में झुँझलाहट स्पष्ट दिख रही थी पीयूष के।

‘भूखा है। जो दूध साथ में लाई थी गर्मी से खराब हो गया है।’ पत्नी के स्वर में दुख और बेबसी की स्पष्ट झलक थी।

‘ये रेलवे फाटक भी ऐसी जगह है जहाँ दूर-दूर तक दूध मिलने की सम्भावना नहीं। और फाटक बंद से ये जाम। तुम भी दूध अच्छी तरह गर्म करके नहीं रख सकती थों जब जानती हो तुम्हारे आँचल में कुदरत ने दूध दिया ही नहीं तुम्हारे बच्चे के लिए।’ सारी खीझ तनु पर उतार दी।

‘रखा तो सही से ही था पीयूष। रास्ते में जाम में ज्यादा ही देर हो गई है।’

‘इसको भी भूख से इसी जंगल में रोना था। और तुम क्या यहाँ खिड़की पर खड़ी हो? जाओ यहाँ से। चले आते हैं न जाने कहाँ से भिखारी।’

‘कुछ मेरे बच्चे को दे दो बाबूजी। भगवान तुम्हारा भला करेंगे।’ कार की खिड़की पर बच्चे को गोद में लिए वो भिखारन अब भी रिरिया रही थी।

‘चलो हटो। वैसे ही दिमाग खराब हो रहा है। जाओ आगे बढ़ो।’ पीयूष गुस्से में बोला।

‘बीबीजी ये मुझा क्यों रो रहा है इतना? शायद भूख से।’ बुरी तरह फटकार खाकर भी कदम ठिठक गये उस भिखारिन के। ‘हाँ भूखा ही है।’ पीयूष के गुस्से से डरती हुई तनु ने जबाब दिया।

‘तुम गयी नहीं अब तक। और ये क्या कर लेगी तनु जो तुम इसको बता रही हो। खुद भीख माँग रही है, तुम्हारी क्या मदद करेगी?’ हिकारत से बोला पीयूष।

भिखारिन अब तिरस्कार से भर उठी फिर भी अनसुनी कर बोली -

‘बहन मुझे को मुझे दे दो। मैंने आपकी बातें सुन ली हैं। मेरे आँचल में दूध है इसके लिए।’

‘ये इस भिखारिन का दूध पियेगा तनु?’ पीयूष गुस्से से बोला तनु ने अनसुनी कर कार का दरवाजा खोल उसे बुला लिया। संतुष्टि के भाव से अब मुन्हा मुस्कुरा दिया। भिखारिन कार से उतर चुपचाप आगे चल दी।

‘सुनो ये लो।’

‘ये क्या साहब? पैसे पर एक दृष्टि डालते हुए उस भिखारिन ने कहा ‘रख लो, तुम्हरे काम आयेंगे।’

‘साहब किसी दूसरे गरीब को दे दीजिए। माँ की ममता का कोई मोल नहीं होता।’

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 8826270597

●●

ऊषा भद्रौरिया

सिक्सटी प्लस

‘डॉक्टर, अब कैसी हैं वो?’ हाँफते हुए उसने पूछा।

‘अब ठीक हैं। माइनर स्ट्रोक था। ये लोग उन्हें सही समय पर ले आये, वरना कुछ भी हो सकता था।’ डॉ. ने पीछे बैंच पर बैठे दो बुजुर्गों की तरफ इशारा कर के जवाब दिया।

‘रिसेशन से फॉर्म इत्यादि की फॉर्मलिटी करनी है अब आपको।’ डॉ. ने जारी रखा।

‘थैंक यू डॉ. वो सब काम मेरी सेक्रेटरी कर रही हैं।’ अब वो रिलैक्स था।

‘थैंक्स अंकल, पर मैंने आप दोनों को नहीं पहचाना।’ उसने उन दोनों बुजुर्गों की तरफ देखते हुए बोला।

‘बेटा, तुम नहीं पहचानोगे क्योंकि हम तुम्हारी माँ के वाट्सअप फ्रेंड हैं।’ एक ने बोला।

‘व्हाट, वाट्सअप फ्रेंड?’ चिंता छोड़, उसे अब, अचानक से अपनी माँ पर गुस्सा आया।

‘सिक्सटी प्लस वाट्सप ग्रुप है हमारा।’

‘सिक्सटी प्लस नाम के इस ग्रुप में साठ साल व इससे ज्यादा उम्र के लोग जुड़े हुए हैं। इससे जुड़े हर मेम्बर को उसमें रोज एक मेसेज भेज कर अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होती है।’

‘साथ ही अपने आस-पास के बुजुर्गों को इसमें जोड़ने की भी जिम्मेदारी दी जाती है।’

‘महीने में एक दिन हम सब मिलने का भी प्रोग्राम बनाते हैं।’

‘जिस किसी दिन कोई मेसेज नहीं भेजता है तो उसी दिन उससे लिंक लोगों द्वारा, उसके घर पर, उसके हाल-चाल का पता लगाया जाता है।’

वह गम्भीरता से सुन रहा था।

‘पर माँ ने तो कभी नहीं बताया।’ उसने धीरे से कहा।

‘माँ से अंतिम बार बात ही कब की थी बेटा? क्या तुम्हें याद है?’ एक ने पूछा।

बिज़नेस में उलझा, तीस मिनट की दूरी पर बने माँ के घर जाने का समय निकालना कितना

मुश्किल बना लिया था खुद उसने। पिछली दीपावली को ही तो मिला था वह उनसे गिफ्ट देने के नाम पर।

‘बेटा, तुम सबकी दी हुई सुख-सुविधाओं के बीच, अब कोई और कंकाल न बन जाए किसी घर में ... बस यही सोच ये गुप बनाया है हमने। वरना दीवारों से बात करने की तो हम सब की आदत पड़ चुकी है।’ उसके सिर पर हाथ फेर, दोनों अस्पताल से बाहर की ओर निकल पड़े।

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. +44-7459946476

●●

उर्मि कृष्ण

रूप जाल

थककर चूर हुई, हाँफती दौड़ती वह तपस्वी के चरणों में गिर पड़ी। “महात्मा आपके दर्शनों को बड़ी दूर से चलकर आई हूँ।” कपड़े अस्त-व्यस्त, बाल रुखे, आँखों से बह रही थी जलधारा। “तपस्वी मुझ पर दया करो। मैं बहुत दूर से कष्ट सहते चलकर आपके चरणों में आई हूँ। मुझे अपनी शरण में स्थान दो तपस्वी।” तपस्वी के नेत्र उस स्त्री पर टिक कर पथरा गए थे। “महात्मा आपका दूर-दूर तक नाम है। आप सबके उद्धारक हो तपस्वी। मैं अकिञ्चन बहुत कष्ट सहकर यहाँ तक आपके दर्शन को पहुँची हूँ। मेरे पैर पथरीले मार्ग पर चढ़ते-चढ़ते लहूलुहान हो गए हैं। मैं थककर हार गई हूँ। जीवन बड़ा कष्टप्रद है। आपकी शरण में हूँ अब। मेरा उद्धार आपके हाथ है। हे तपस्वी आप तो बहुत ऊँचे जग को जीते हुए महात्मा हैं। पुरुषोत्तम हैं, जग में आपका गुणगान हो रहा है... आप बहुत पहुँचे हुए तपस्वी हैं।” ...अश्रुधारा से भीग रही थी वह। तपस्वी ने पलकें झपकाई। पलकें गिराने का यत्न किया पर व्यर्थ। वे अस्फुट शब्दों में उस अनिंद्य सुंदरी से बोले, महात्मा! पहुँचा हुआ! था सुन्दरी। अब नहीं.....

सम्पर्क : अम्बाला छावनी (हरियाणा) मो. 9896077317

●●

ऋचा शर्मा

नॉट रीचेबल

पत्नी का देहांत हुए महीना भर ही हुआ था। घर में बड़ा अकेलापन महसूस कर रहे थे। बेटा-बहू बच्चे अपना-अपना लैपटॉप लेकर कमरों में बंद हो जाते थे। घर खाने को दौड़ रहा था। पत्नी के जाते ही हाथ-पाँव जैसे कट से गए थे, कुछ सूझ ही नहीं रहा था। अब समझ में आ रहा है कि बेटे-बहू की बातें भी वह अपने तक ही रखती थी। समय रहते कद्र नहीं समझी मैंने उसकी, गुमसुम बैठ सोच रहे थे। तभी बेटा आकर बोला-पापा! एक बात करनी थी आपसे। असल में ऑनलाइन क्लास के लिए सबको अलग कमरा चाहिए। मम्मी रही नहीं तो अब वे चश्मा उतारकर उसे देखने लगे?

क्या है सुमन आपके साथ कम्फर्टेबिल फील नहीं करती।

गैरेज के पास जो कमरा है आप उसमें रह लेंगे क्या?

हाँ... उन्होंने गहरी साँस ली। अगले दिन वे फ्लाइट्स के चार टिकट ले आए। बहू से बोले-बेटी! बहुत दिनों से तुम लोग कहीं घूमने नहीं गए हो। मैंने केरल में होटल की बुकिंग करवा दी है, खर्चे की चिंता मत करना। बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस हैं और तुम दोनों का काम भी घर से ही हो रहा है तो तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। सब खुश हो गए। बेटा भौंचका था, बोला-पापा आप नाराज नहीं हैं ना मुझसे? मुझे लगा था कि ...

अरे! अपने बच्चों से भी कोई नाराज होता है - वे मुस्कुराकर बोले।

बेटे-बहू के जाने के बाद दूसरे दिन ही मकान के खरीदार आ गए। अपना बंगला बेचकर वे वन बेडरूम के छोटे फ्लैट में शिफ्ट हो गए। बेटा घूमकर लौटा तो वॉचमैन ने बेटे को एक पत्र दिया जिसमें बेटे के किराए के फ्लैट का पता लिखा हुआ था। पिता का फोन नॉटरीचेबल बता रहा था।

सम्पर्क : अहमदनगर (महाराष्ट्र) मो. 9370288414



कमल चोपड़ा

बताया गया रास्ता

सब को कोई न कोई लेने आ पहुँचा था। स्कूल के बन्द मेन गेट के सीखचों के पार खड़ी स्तुति की नहीं सी आँखों में डर और खौफ की किरचें चुभी हुई थीं। उसे लेने कौन आयेगा? मम्मी अस्पताल में दाखिल है, पापा उधर ही गये हुए होंगे! रजापुर जहाँ कि आज अचानक दंगा भड़क उठा था। शैफू (रिक्शेवाले) का घर उसी इलाके में था। कैसे आ पायेगा? सुबह तो वह उसे ठीक बक्त पर स्कूल छोड़ गया था, अब लेने आ पायेगा या नहीं? वह स्वयं ठीक ठाक भी है या...? स्तुति का चेहरा रुआँसा और पीला जर्द हो आया था। वह अब रो देगी कि तब...।

निधि के पापा भी अपनी बेटी को लेने चले आये थे। उनकी नजर स्तुति पर पड़ी तो बोले - स्तुति बेटा तू भी हमारे साथ चल। तुझे रास्ते में तेरे घर छोड़ दूँगा।'' स्तुति जड़वत खड़ी रही। पिछली गली में रहने वाले गुसा अंकल भी आये हुए थे अपनी बेटी को लेने। उन्होंने भी उसे अपने साथ चलने के लिये कहा पर स्तुति की नजरें सामने फैली सड़क पर बिछी हुई थीं। उसके पापा ने स्कूल के नजदीक रहने वाले अपने एक मित्र को फोन करके कहा कि वह स्तुति को स्कूल से अपने घर ले आये। शाम को वे स्वयं आकर उसे उनके घर से ले जायेंगे। वे भी स्तुति को लेने चले आये थे। लेकिन वह चुपचाप, गुमसुम और निःसत्त्व सी खड़ी थी। एकाएक उसे सामने से शैफू (रिक्शेवाला) आता हुआ दिखाई दिया। घनी बदली से भरी नहीं आँखों में बिजली की कोईंध के साथ बूँदें छलक आईं। शहर में फैली दहशत और तनाव के बावजूद वह स्तुति को लेने आया है। सवालों से भरी सब की नजरें रिक्शे वाले पर टिकी हुई थीं। स्कूल के चौकीदार ने स्तुति को परे ले जाकर कहा - बेटा माहौल बहुत खराब है। मुसलमान लोग दंगे कर रहे हैं। ये रिक्शेवाला भी मुसलमान है। तुम किसी के भी साथ चली जाओ पर इस मुसलमान रिक्शेवाले के साथ मत जाओ।

खिलखिलाती हुई स्तुति बोली- ये मुसलमान थोड़ा ही हैं! ये तो मेरे शैफू चाचा हैं। सुना नहीं अभी मुझे बेटी कहकर बुला रहे थे...। उसे लेने आये जान-पहचान वालों की ओर उसने बारी-बारी से देखा

फिर एकाएक उछलकर शैफू के रिक्षे पर चढ़कर बैठ गई।

वह जल्दी से जल्दी स्तुति को घर पहुँचा देना चाहता था। वह तेज-तेज पैदल मार रहा था। सड़के धीरे-धीरे वीरान हो रही थीं। दूर से आती-जाती पुलिस वालों के चीखने की आवाजें माहौल को तपिश और दहशत से भर रही थीं। एकाएक गाँधी तिराहे पर आकर रुक गया वह। दायर्यों ओर हिन्दू मुहल्ला पड़ता था और बायर्यों ओर मुस्लिम मुहल्ला। किस तरफ मोड़े वह अपने रिक्षे को? दायर्यों ओर का रास्ता पकड़ता है तो रास्ते में हिन्दुओं के हत्थे चढ़ गया तो स्तुति तो हिन्दू होने के कारण बच जायेगी पर वह नहीं बच पायेगा...! बायर्यों ओर का रास्ता पकड़ता है और मुसलमानों ने घेर लिया तो मुसलमान होने के कारण वह तो बच जायेगा पर स्तुति...? उसने नहीं के मासूम चेहरे पर नजर डाली - खुदा न करे इस नहीं फरिशते को कुछ हो। इतनी जान-पहचान वालों को नकार कर मुझ पर भरोसा किया। अगर इसे कुछ हो गया तो मेरे साथ मेरा मजहब भी बदनाम हो सकता है। वैसे भी मुझे मजहब के दिखाये रास्ते पर चलना है।

और उसने अपने रिक्षे को दायर्यों ओर मोड़ दिया।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9999945679

●●

किशनलाल शर्मा

मौत

“क्या हुआ?” घर्घर की आवाज के साथ मेटाडोर के रुकने पर एक साथ कई आवाजें उभरी थीं।

“देखता हूँ”, ड्राइवर ट्रक से उतरते हुये बोला।

नाइजीरिया पिछले कई सालों से गृहयुद्ध की चपेट में था। देश में अफरा तफरी, मारकाट मची हुई थी। अपने ही अपनों के दुश्मन हो गये थे। इसलिये हर पल मौत का खतरा मँडराता रहता था। आपसी संघर्ष में रोज सैकड़ों लोग मारे जा रहे थे। कोई नहीं जानता था, कब किसकी मौत हो जाये? मौत के डर से गाँव के ज्यादातर लोग पलायन कर चुके थे। कुछ लोगों ने इस उम्मीद में गाँव नहीं छोड़ा था कि एक न एक दिन देश के हालात सुधरेंगे और फिर से अमन शान्ति कायम होगी। लेकिन हालात सुधरने की जगह बद से बदतर होते जा रहे थे। हर पल सिर पर मँडराते मौत के खतरे से बचने के लिये गाँव में बचे लोगों ने पड़ासी देश लीबिया में शरण लेने का निर्णय लिया।

गाँव से लीबिया की सीमा लगभग पाँच सौ किलोमीटर दूर थी। इतनी दूर पैदल नहीं जाया जा सकता था। गाँव के लोगों ने कई ट्रक बस वालों से बात की, लेकिन देश में मची मारकाट के कारण कोई भी अपनी जान जोखिम में डालकर उन्हें ले जाने को तैयार नहीं हुआ। काफी प्रयासों के बाद एक मेटाडोर वाला मुँहमाणी कीमत पर, उन्हें ले जाने को तैयार हो गया।

जिस मेटाडोर में मुश्किल से बीस लोग आ सकते थे, उसमें पचास बूढ़े, जवान, बच्चे, औरतें भेड़-बकरियों की तरह जैसे-तैसे टुँस गये। वे रात को चले थे। रात को मौसम बेहद सुहाना था। ठन्डी-ठन्डी हवा चल रही थी। लेकिन आधी दूरी पार करते करते सूरज आसमान में आ चुका था। और अब ज्यों-ज्यों मेटाडोर आगे बढ़ रही थी, त्यों-त्यों सूरज का आग उगलना बढ़ता जा रहा था। लू के थपेड़े,

उड़ते रेत के टीले और गर्म होती रेत। ऐसे में सहारा के रेगिस्तान का सफर बेहद कठिन था। लेकिन जिंदगी की आस में सारे दुख-दर्द, कष्ट वे हँसकर सहने को तैयार थे।

गाँव से चलते समय वे भयभीत थे। मौत का डर उनके अन्दर समाया हुआ था, जो उनके चेहरे से स्पष्ट प्रतिलिप्ति हो रहा था। ज्यों-ज्यों वे गाँव से दूर होते गये मौत का डर कम होता गया। और उनके चेहरे पर वर्षों बाद रंगत लौट आई। गाँव से इतनी दूर आकर वे पूर्णतया आश्वस्त हो चुके थे कि अब वे मरेंगे नहीं। लेकिन अचानक मेटाडोर ...

“लगता है, ठीक नहीं होगी”। ड्राइवर क्लीनर की काफी देर तक कोशिश के बाद भी मेटाडोर स्टार्ट नहीं हुई, तो एक बूढ़ा बोला था।

आसमान से सूरज आग उगल रहा था। जितना पानी वे लेकर चले थे, खत्म हो चुका था। धूप-गर्मी, लू के थपेड़े, शरीर से निकलता पसीना और प्यास से सूखता गला। दूसरा बुजुर्ग बोला, “यहाँ खड़े रहे, तो हम सब मर जायेंगे”।

और पचास लोगों का काफिला, जीने की आस में पैदल ही सहारा के रेगिस्तान में चल पड़ा। अभी लीबिया की सीमा पचास किलोमीटर दूर थी। दूर-दूर तक कोई गाँव नजर नहीं आ रहा था। रेगिस्तान में पानी का तो सवाल ही नहीं था। उन पचास लोगों में दो औरतों के पास नवजात शिशु भी थे।

मौत से बचने के लिये वे भागे थे। लेकिन सहारा के रेगिस्तान को पार करते हुये गर्मी-प्यास से एक-एक करके गिरते रहे। मौत के डर से जीवन ठहरता नहीं। मरने वालों के लिये भी कोई रुका नहीं। पचास में से सिर्फ़ छः लोग धूप-गर्मी-प्यास से लड़कर सहारा का रेगिस्तान पार करके लीबिया पहुँचे थे।

सम्पर्क : आगारा (उ.प्र.) मो. 9760617001, 9458740196



किशोर श्रीवास्तव

जिगर के टुकड़े

नगर में मासूम बच्चों की लगातार हो रही अपहरण की घटनाओं से कामकाजी पति-पत्नी परेशान थे। वे अब अपने मासूम बच्चे को नौकरानी के भरोसे घर में अकेला छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते थे। इसी कारण वे दो-चार दिन छुट्टी पर भी रहे। पर ऐसे कब तक चलता। समस्या का समाधान ढूँढ़ती पत्नी को आज अपना संयुक्त परिवार तोड़कर अलग रहने पर कोफ़्त महसूस हो रही थी। अगर उसने अपने सास-ससुर को वापस गाँव जाने पर मज़बूर न किया होता और जेठ-जिठानी से लड़-झगड़ कर उन्हें अलग मकान लेकर रहने पर मज़बूर नहीं किया होता तो कम से कम आज उसे इस तरह की समस्या का सामना तो नहीं करना पड़ता। काफी सोच-विचार के बाद रात में सोते समय पत्नी, पति के कानों के पास आकर धीरे से फुसफुसाई, ‘क्यों न अम्मा-बाबू जी को फिर से गाँव से बुला लिया जाए। जब तक अपना बेटा थोड़ा बड़ा नहीं हो जाता, हम उन्हें अपने पास ही रखते हैं।’

पत्नी की बातें पति को जँच गई। अगले ही दिन उसने अम्मा-बाबू को पत्र लिखा, ‘अम्मा-बाबूजी, नादानी में आकर हमने आप लोगों को गाँव तो भेज दिया पर सच तो यही है कि आप दोनों के

बगैर हम लोग ज्यादा समय तक रह ही नहीं सकते। आप लोग हमें क्षमा कर दें और हमारे पास वापस आ जाएँ। मैं यहाँ से अपने किसी परिचित को आप लोगों के पास भेज रहा हूँ। आप लोग उसी के साथ यहाँ चले आयें। आपकी बहू भी पश्चाताप की आग में जल रही है।'

बेटे का पत्र पाकर विपन्न अवस्था में अकेले रह रहे माँ-बाप के चेहरे खिल उठे। वे बुद्बुदाये, 'भला, वे हमारे बगैर रह भी कैसे सकते थे। कोई पराये तो हैं नहीं, आखिर हैं तो हमारे अपने ही.. हमारे जिगर के टुकड़े...'।

सम्पर्क : नई दिल्ली

●●

कृष्णा अग्निहोत्री

न्याय

एक गाँव में रईस किसान के तीन बेटे थे! तीनों पिता को बहुत प्यारे थे। किसान स्वस्थ व जिंदादिल था। जिन्दगी हँसी-खुशी से चल रही थी कि अचानक वो रात में हार्टफेल से गुजर गया! अब शुरू हुई यह रेस कि पिता जी ने वसीयत में क्या-क्या किसे दिया है। बहुत ढूँढ़ा सबने पर वसीयत खोजी पर वह तो नहीं मिली, क्योंकि पिता ने वसीयत की ही नहीं थी! बड़े भाई ने सबसे कहा- हमी लोग बँटवारा कर लेते हैं।' रात में तीनों भाइयों ने खुसर-फुसर कर आपस में ज्यादा हिस्सा ले छोटे विनम्र व शरीर से कमजोर भाई को एक टूटा-फूटा मकान व खराब स्कूटी दे कहा "पता नहीं पिताजी ने तो बैंक में कुछ रु. जमा ही नहीं किये।"

निर्बल सीधे रमेश ने टूटे मकान को ठीक-ठाक कर वर्हीं रहना स्वीकारा। उसकी पत्नी व बेटे सुरेश ने पिता को अन्याय के विरुद्ध न्यायालय जाने की सलाह दी। समयानुसार रमेश ने एक नामी वकील के माध्यम से मुकदमा चला दिया। ईश्वर कृपा से वहाँ जीत गया तो भाइयों ने पुनः उसे हाईकोर्ट भेज दिया। वह सैशन में तो पाँच वर्षों में न्याय मिल गया, पर हाईकोर्ट में लड़ते-लड़ते बीस वर्ष गुजर गये पर उसका वकील फीस तो लेता रहा पर यही कहता 'केस अपडेट नहीं हुआ। अगले सोमवार को ही पुनः कोशिश करूँगा। कभी जस्टिस छुट्टी पर चले जाते तो कभी बीमार हो जाते, तो कभी कोर्ट की छुट्टी हो जाती।

रमेश छोटा सा था। कोर्ट में लड़ते-लड़ते एकदम कंगाल हो गया। अब न कुछ निगलते बने ना उगलते। इस चिंता ने उसे बीमार कर दिया। उसने अपने बीस वर्ष के पुत्र को बुला कहा "बेटा तू हाईकोर्ट जाना न भूलना, पता नहीं कब केस अपडेट हो जाये और मुझे न्याय मिल जाये।"

- हाँ बाबूजी मैं इसी ब्रह्मस्पत को गया था, तो वकील सा. ने आश्वासन दिया कि अगली पेशी पर सब ठीक हो जायेगा।- अच्छा! अब रमेश, सुरेश, रमा रोज आशा से हाथ जोड़ कहते हैं - "भगवान न्याय दे! हर पेशी पर कोर्ट जाते हैं, पर वकील वही वाक्य दुहराता है!" "बस अगली पेशी पर सब ठीक हो जायेगा। तुम्हें न्याय मिलेगा।- हाँ वे अभी भी न्याय की प्रतीक्षा में वकील की फीस जुटाने हेतु कुछ बेचते हैं, कुछ कमाते हैं।

सम्पर्क : इन्डौर (म.प्र.)

●●

कमलेश भारतीय

सात ताले और चाबी

-अरी लड़की कहाँ हो?

-सात तालों में बंद।

-हैं?

कौन से ताले?

-पहले ताला-माँ की कोख पर। मुश्किल से तोड़ कर जीवन पाया।

-दूसरा?-भाई के बीच प्यार का ताला। लड़का लाड़ला और लड़की जैसे कोई मजबूरी माँ-बाप की। परिवार की।

-तीसरा ताला?-शिक्षा के द्वारों पर ताले मेरे लिए।

-आगे?

-मेरे रंगीन, खूबसूरत कपड़ों पर भी ताले। यह नहीं पहनोगी। वह नहीं पहनोगी। अच्छे घराने की लड़कियों की तरह रहा करो। ऐसे कपड़े पहनती हैं लड़कियाँ?

-और आगे?

-समाज की निगाहों के पहरे। कैसी चलती है? कहाँ जाती है? क्यों ऐसा करती है? क्यों वैसा करती है?

-और?

-गाय की तरह धकेल कर शादी। मेरी पसंद पर ताले ही ताले। चुपचाप जहाँ कहा वहाँ शादी कर ले। और हमारा पीछा छोड़।

-और?

-पत्नी बन कर भी ताले ही ताले। यह नहीं करोगी। वह नहीं करोगी। मेरे पंखों और सपनों पर ताले। कोई उड़ान नहीं भर सकती। पाबंदी ही पाबंदी।

-अब हो कहाँ?

-सात तालों में बंद।

-ये ताले लगाये किसने?

-बताया तो। जिसका भी बस चला उसने लगा दिये।

-खोलेगा कौन?

-मैं ही खोलूँगी। और कौन?

-वाह। यह हुई न बात।

-शुक्रिया।

सम्पर्क : हिसार (हरियाणा) मो. 9416047075



कमल कपूर

सहारे

वह मेज पर धरे उस बड़े से पार्सल को निर्लिप्त दृष्टि से देख रही थी, जो उसके बेटे ने अपने एक प्रवासी मित्र के हाथ भेजा था। दरअसल लगभग दो महीने पहले उसने उसे खत लिखा था-

‘प्रिय रोहित बेटा!

तुम बिदेस चले गये और तुम्हारे पापा साँचे देस। रह गई इतने बड़े घर में मैं अकेली जान। बेटे! अब ये पहाड़ से भारी दिन-रात नहीं कटते इसलिए या तो तुम लौट आओ या मुझे वहीं बुला लो। मुझे तुम्हारे सहारे की सख्त जरूरत है।

तम्हारी माँ

याद कर माँ ने एक ठंडी साँस ली और पार्सल उठाया, साथ में एक खत भी था। भीगे नयनों से उसने खत पढ़ा, ‘मेरी अच्छी माँ!

मेरा अब लौट कर आना किसी भी तरह मुमकिन नहीं। बड़ी मेहनत से मैंने यहाँ पाँव जमाए हैं। बच्चों का भविष्य भी यहीं पर है। कैसे आ जाएँ हम सब छोड़ कर और रही बात आपको बुलाने की तो माँ! आप यहाँ की जीवन-शैली में फिट नहीं हो सकतीं। और माँ! भला मैं क्या सहारा दे सकता हूँ आपको। कुछ सामान भेज रहा हूँ। और भी जब जो चाहिए हो बता दें।

आपका रोहित

माँ ने काँपते हाथों से पार्सल खोला। अब उसके सामने थे, एक फोलिडंग छड़ी, महँगी घड़ी, सुनहरे फ्रेम का चश्मा, एक मखमली कोट, बेटे की पत्नी और बच्चों के साथ ढेर-सी रंगीन तस्वीरें और चंद डॉलर, ये वो सहारे थे, जिनके सहारे उसे अपनी जिंदगी के बचे हुए पहाड़ से भारी दिन और समंदर-सी लंबी रातें गुज़ारनी थीं।

सम्पर्क : फरीदाबाद (हरियाणा) मो. 9873967455

●●

कुँवर प्रेमिल

पैसा...पैसा...पैसा...

‘पैसा, पैसा, पैसा!’ पैसा बड़ी बुरी चीज है। हर कोई इसका खाहिशमंद है। हर कोई येन-केन-प्रकारेण पैसा हथियाना चाहता है। यह भाई-भाई में तकरार पैदा करता है। माँ-बेटा, पति-पत्नी के संबंधों को मटियामेट कर देता है।

‘यह बिना फन का नाग है। इसके काटे की न कोई दवा है और न कोई मंत्र ही है।’

शास्त्री जी, आसंदी पर बैठकर प्रवचन कर रहे थे। उनकी वाणी में साक्षात् सरस्वती विराज रही थी। ऐसे-ऐसे उदाहरण देकर पैसे की लानत-मलामत कर रहे थे कि पूर्णमत एक बार तो सभी के दिलों

में पैसे के लिए वैराग्य ही पैदा हो गया था, मानो।

शास्त्री जी आगे बोले, ‘जग मिथ्या है। हानि-लाभ का जखीरा है। आदमी स्वार्थ की चक्की में पिसता रहता है और लोभ की चासनी में ढूबकर अपना लोक-परलोक दोनों बिगड़ लेता है। पैसा आदमी का ईमान खराब कर रहा है।’

‘वाह!’ जन समूह शास्त्री जी की तारीफ करने से अपने आपको रोक नहीं पा रहा था।

अगले दिन शास्त्री जी और यजमान के बीच पैसे को लेकर नोंक-झोंक हो गई। यजमान के पास कुछ पैसे कम पड़ गए, तो शास्त्री जी का पारा सातवें आसमान पर जा पहुँचा। वह अपने तय पारिश्रमिक से एक पैसा भी कम करने के लिए तैयार नहीं थे। यजमान हाथ जोड़कर बोला, ‘महाराज, आपका एक दिन का पारिश्रमिक भगवान की सेवा में लगा दिया है। आपको इसका पुण्य भी मिलेगा महाराज।’

‘भाड़ में गया पुण्य और पुण्य लाभ। पूरा पैसा नहीं मिला तो मैं आज भोजन नहीं करूँगा, तुम्हें बहुआ भी खूब दूँगा। तुम्हारे इस आयोजन की मिट्टी पलीद हो जाएगी।’

यजमान बोला, ‘महाराज, आप ही तो कह रहे थे कि पैसा बड़ी बुरी चीज है। ईमान खराब करता है। ऐसे पैसे के लिए आप हाय-तौबा मचा रहे हैं। ताज्जुब है महाराज।’

अब शास्त्री जी अपने ही जाल में फँसकर छटपटा रहे थे। पैसे के मोह ने उनके प्रवचन पर पानी फेर दिया था मानो।

सम्पर्क : जबलपुर (म.प्र.) मो. 9301822782

●●

कुमार सुरेश

श्रद्धांजलि भोज

सुदेश और अमन दो दोस्त साथ-साथ पढ़े लिखे थे। अमन था परंपरावादी और सुदेश कुछ प्रगतिशील विचारों का। सुदेश का रुझान काफी कुछ वामपंथी अंदोलन की तरफ भी था। एक दिन दोनों मिले और मृत्युभोज पर चर्चा होने लगी।

“मृत्युभोज, बड़ा बिना शब्द है। पढ़ कर लगता है जैसे मृत्यु का आनंद मनाया जा रहा है। मैं तो इस तरह के कार्यक्रम में कभी नहीं जाता। यह एक सामाजिक बुराई है। इसे जल्दी से जल्दी मिटा देना चाहिये।” कहते हुए सुदेश के माथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं।

अमन सुदेश की बात शांति से सुन रहा था। बात पूरी होने पर उसने पूछा – “तुम्हारी बात पूरी हो गयी हो तो मैं कुछ कहूँ?”

“अब आप मृत्यु भोज के समर्थन में तो कुछ कह नहीं पाएँगे। आपको भी बहिष्कार के इस अभियान का समर्थन करना चाहिए।” सुदेश ने जोश में कहा।

“सुदेश पहले मेरी पूरी बात सुन लो उसके बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना ठीक रहेगा।” अमन ने जोर देकर कहा।

“अच्छा आप अपनी बात रखिए।” सुदेश बोला।

“भाई, दरअसल ये एक जटिल मसला है। एक ‘सीधी-साधी मानवीय और सामाजिक जरूरत’ को बदनाम करने का मामला ज्यादा है।” अमन ने कहा।

“अरे वाह, सीधी साधी मानवीय और सामाजिक जरूरत! भाई साहब आप से ऐसी प्रतिगामी बात की आशा नहीं थी।” सुदेश ने किंचित क्रोध प्रकट किया।

“अरे भाई मेरी पूरी बात तो सुन लो! ये बीच में टोका-टोकी मुझे नापसंद है।” अमन ने भी असंतोष प्रकट किया।

“अच्छा कहिए!” सुदेश ने हथियार डाल दिये।

“भाई मेरा भी मानना है कि मृत्यु भोज जैसा कोई आयोजन अनिवार्य नहीं होना चाहिये। इसे आयोजित करने का कोई सामाजिक या धार्मिक बंधन भी नहीं होना चाहिए। लेकिन अगर कोई मिजाज पुरसी करने आये अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को स्वेच्छा से खाना खिलाता है तो इसमें किसी को आपत्ति भी नहीं होना चाहिये।”

कुछ रुक कर अमन ने आगे कहा—“इसके अलावा दुखी व्यक्ति का मित्रों के साथ खाना भारतीय दर्शन के अनुसार एक सांकेतिक महत्व भी रखता है। इस संसार में कोई किसी के जाने पर कितना भी दुखी हो ले, गया हुआ वापस नहीं लौटता। भोज के बहाने मित्र रिश्तेदार मिलने आते हैं। दुनियादारी की बातें होती हैं। आदमी अपना दुख भूल जाता है। इससे यह संदेश भी मिलता है कि जिंदगी एक बहता हुआ झरना है और इसमें बहते चले जाना है।”

अमन ने अपनी बात पूरी की।

“ये सारी दक्षिणांशी बातें हैं। इन तर्कों से आप सच को नहीं दबा सकते हो। मृत्युभोज एक बुराई है, इस पर दो राय हो ही नहीं सकती। मैं कभी किसी मृत्यु भोज में नहीं जाता हूँ।” सुदेश ने जैसे अपना निर्णय सुनाया।

“ये तुम्हारा अधिकार है सुदेश, लेकिन निमंत्रण मिलते ही उसे अस्वीकार करना चाहिये। निमंत्रण स्वीकार करके नहीं जाना अशिष्टता होती है। इससे बुलाने वाले को दुख पहुँचता है। तैयार खाना भी फिकता है।” अमन ने अपना तर्क रखा।

“मैं नहीं मानता। ये सब बेकार की बातें हैं। इस मामले में आपका कोई भी तर्क मेरा इरादा बदल नहीं सकता है।” सुदेश ने बात समाप्त करते हुये कहा।

कुछ दिनों बाद अमन नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहर चला गया। बहुत दिनों तक उसकी सुदेश की मुलाकात नहीं हो सकी। एक दिन किसी ने उसे खबर दी कि सुदेश के पिताजी नहीं रहे हैं। खबर मिलने के लगभग दस दिन बाद अमन अपने शहर लौटा तो सुदेश से मिलने उसके घर पहुँचा।

देखा कि घर के बाहर बड़ा सा टेंट लगा हुआ है। मुख्य द्वार पर एक फ्लैक्स टैंगा है, जिस पर लिखा है—“स्वर्गीय श्री मायाराम जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा”。 भीतर सुदेश के स्व.पिता जी की फूलमाला चढ़ी बड़ी सी तस्वीर एक चौकी पर रखी है। इसके पास ही थाली में फूल रखे हैं। आगंतुक आते ही तस्वीर पर फूल चढ़ा कर तस्वीर को हाथ जोड़ कर प्रणाम करता है। टैंट के एक किनारे पर ‘बुफे सिस्टम’ से खाने का इंतजाम है। कुछ लोग हाथ में प्लेट थामे खाना खा रहे हैं। अमन ने भी तस्वीर पर फूल

चढ़ा कर फोटो को प्रणाम किया। इसके बाद वो सुदेश के पास पहुँचा जो कुछ लोगों से घिरा खड़ा था। औपचारिक बातचीज होने के बाद सुदेश अमन को हाथ थाम कर खाने के नजदीक ले गया और बोला - “ पहले आप खाना खा लीजिये, फिर चर्चा करते हैं।”

प्लेट पकड़े हुये अमन सोच रहा था -“ आज पता लगा कि बाप के मरने पर परंपरावादी मृत्यु भोज करते हैं और प्रगतिशील ‘श्रद्धांजलि भोज !’”

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9827668309

●●

कविता वर्मा

नालायक

‘ भैया ऐसा कैसे कर सकते हो तुम? बाबूजी को इस उम्र में वृद्धाश्रम में अकेले छोड़ने का फैसला लेते तुम्हारा कलेजा नहीं काँपा?’ बड़ी बहन में भाई से दुखी स्वर में कहा।

‘ माँ पहले ही चली गई वो होती तो बाबूजी का ध्यान रखतीं, दोनों एक-दूसरे के सहारे समय काट लेते। पहले ही तुमने उन्हें घर के पीछे वाले कमरे में पटक दिया है जिसमें आने जाने का रास्ता भी बाहर से है।’ बोलते-बोलते छोटी बहन का गला रुँध गया।

‘ दीदी कमरा अलग है तो क्या मैं बाबूजी का पूरा ध्यान रखता हूँ। तुम्हारी भाभी भी उन्हें समय से चाय खाना सब देती है।’

‘ हाँ वह तो सब ठीक है लेकिन भाभी तो उनसे बात भी नहीं करतीं। गोलू को भी ज्यादा देर उनके पास खेलने नहीं देती। कितने खुश थे बाबूजी जब गोलू हुआ था। पूरे मोहल्ले में मिठाई बँटवाई थी और अब वे समय का हिसाब देख कर ही उसके साथ खेल पाते हैं। दादा-दादी के साथ तो बच्चे संस्कार सीखते हैं भैया।’ ‘दीदी मैंने कब किसी बात से मना किया। जितना करना चाहिए उतना सभी तो कर रहा हूँ। बस अब समय बदल गया है, इसलिए व्यवस्था बदलना पड़ रही है।

ऐसा क्या बदल गया समय में? तुम पहले से अच्छा कमा रहे हो घर में जगह की कमी नहीं है फिर क्यों बाबूजी को वृद्धाश्रम भेज रहे हो? क्या भाभी उन्हें साथ नहीं रखना चाहतीं? छोटी बहन के स्वर में कड़वाहट उभर आई।

अब तक पूरे वार्तालाप को दरवाजे की ओट से चुपचाप सुन रही बहू से और चुप ना रहा गया। वह सामने आकर बोली ‘हाँ दीदी आप सही समझ रही हैं मैं ही बाबूजी को साथ नहीं रखना चाहती क्योंकि मैंने तो खुद को जैसे-तैसे बचा लिया लेकिन मेरी दुधमुँही बच्ची तो कुछ समझती ही नहीं है। वह खुद को कैसे बचायेगी? और मैं ही कब तक उसकी निगरानी करती रहूँगी?’

कमरे में सन्नाटा खिंच गया। बाबूजी चुपचाप उठ कर अपना सामान बाँधने चले गए।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9827096767

●●

कृष्ण कुमार यादव

योग्यता

सत्ता बदलते ही उनकी चाँदी हो गई। मुख्यमंत्री जी की जाति का होने के चलते उन्हें उस आयोग के अध्यक्ष की कुर्सी मिल गई, जो प्रदेश में भर्तियों व चयन का काम करता। अचानक वह महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गए थे। उनके पास सिफारिशों की भरमार होती गई, पर वह योग्यता मात्र को महत्व देते।

अचानक मुख्यमंत्री सचिवालय से अध्यक्ष जी को अभ्यर्थियों की एक सूची मिली। साथ ही यह निर्देश भी कि इन सभी को फाइनल मेरिट में चयनित करना है। अध्यक्ष महोदय ने लिस्ट देखी तो कोई भी उस पद योग्य नहीं दिखा। स्वभावानुसार उन्होंने उस सूची को दरकिनार कर दिया।

बात पता चली तो मुख्यमंत्री जी ने उन्हें तलब किया—‘अध्यक्ष जी! मेरे द्वारा भिजवाई गई सूची का क्या हुआ? सुना है आपने सभी को दरकिनार कर दिया।’

‘... जी! ऐसा नहीं है।’ ‘फिर उनका चयन क्यों नहीं हुआ?’

‘...जी! दरअसल उनसे अच्छी योग्यता वाले तमाम अभ्यर्थियों ने परीक्षा में भी अच्छा प्रदर्शन किया है।’

‘... योग्यता! तुम्हारी योग्यता क्या है? सिर्फ यही न कि तुम मेरी जाति के हो। वरना अध्यक्ष पद के लिए एक-से-एक योग्य लोग लार टपकाए बैठे हैं। तुम्हें इस कुर्सी पर इसलिए बिठाया था कि अपनी जाति के लोगों का भला करोगे न कि मुझे योग्यता का पैमाना समझाओगे।’

‘... अभी जाइए और तुरंत उस सूची में शामिल लोगों के चयन की घोषणा कर मुझे बताइए अन्यथा अध्यक्ष पद और तुम्हारी योग्यता भी खतरे में है।’

मुख्यमंत्री कार्यालय से बाहर निकलते अध्यक्ष जी अब अपनी ही योग्यता और ईमानदारी को लेकर असमंजस में थे।

सम्पर्क : लखनऊ (उ.प्र.) मो. 9413666599

●●

कृष्ण मनु सार्थक सोच

पिछले चार दिनों से वह इस टापू में पड़ा था। हाँ, इस जगह को वह टापू ही कहेगा। जहाँ के रहवासियों के बोल-चाल, रहन-सहन, बात-विचार उसकी संस्कृति से बिल्कुल भिन्न हों वो उसके लिए टापू ही तो है। वह अजनबी बना फिरता है। न किसी से बात न उससे कोई बतियाने वाला।

पौ फटने के पहले वह दूर तक चली गई लम्बी सपाट सड़क पर टहल कर चला आता है। फिर अकेला किताबों में खो जाता है। मन थका तो सो जाता है। सोये नहीं तो क्या करे। पोते-पोती स्कूल चले जाते हैं। बहू-बेटा अपने-अपने काम पर।

एक दिन सवेरे टहलने के क्रम में अपने सरीखा आदमी दिखा तो खुद को रोक न सका, खड़ा हो गया। उसके हाथ में एक बड़े से डॉग के गले में बँधा पट्टे का डोर था। वह उस डरावने डॉग को अपनी ओर खींचने का प्रयास कर रहा था। एक क्षण लगाया सोचने में कि मुझे डरावने कुत्ते के साथ उस आदमी से बात करनी चाहिए या नहीं और दूसरे ही पल में उसके और समीप चला आया। मैं उसे सम्बोधित करनेवाला था कि उसकी नजर मेरी तरफ उठ गई। वह भी पारखी निकला। उसकी नजर की मिठास चुगली कर गई। समझ गया कि यह शख्स भी अपने बीचवाला है। मेरे कुछ कहने के पहले उसने सलीके से नमस्कार कहते हुए बोला—शायद आप नये—नये आये हैं साहब। मैं दो—तीन दिनों से आप को देख रहा हूँ। बात करने का मन करता था मेरा लेकिन शायद आप बुरा मान जायेंगे इसलिए टोक—टाक नहीं किया।

फिर तो हमारे बीच बातचीत का सिलसिला चल निकला।

बात—बात में उसने बताया कि वह दसवीं तक पढ़ा है। घर पर बेकार बैठा था। उसके चाचा जो यहाँ सिक्युरिटी गार्ड हैं, एक दिन साथ लेते आए और एक धनी परिवार में उनके कुत्ते की देखभाल करने के लिए रखवा दिया। तब से वह यहीं है। परिवार घर पर है। साल में एक बार गाँव जाता है।

जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह इस काम से संतुष्ट है? कैसे कह पाता वह गाँव जेवार में कि वह कुत्ते की देखभाल करता है? उसे शर्म नहीं आती। उसके जवाब ने मुझे तब लाजवाब कर दिया था, सोचता हूँ तो आज भी लाजवाब कर देता है। उसने चेहरे पर निश्छल मुस्कान लाते हुए कहा था— शर्म काहे का साहब, इसमें बुराई क्या है। चाकरी करके पेट तो पालना ही था। धूर्त, बेर्इमान आदमी की चाकरी से तो बेहतर यह स्वामी भद्र, निरपराध, सीधे—सादे जानवर की चाकरी है। फिर दोहरा लाभ भी तो है। सवेरे का घूमना—टहलना भी हो जाता है, स्वास्थ्य बना रहता है और पैसे भी मिल जाते हैं।

उस रात मैं उसकी संतुष्टि और सार्थक बातों के बारे में देर तक सोचता रहा। वह रोना, धोना भी तो कर सकता था कि कम पैसे मिलते हैं, कुत्ते के पीछे भागना पड़ता है, पट्टे लिखे को यह निकृष्ट काम शोभा नहीं देता पर क्या करूँ साहब, किस्मत में यही लिखा है।.. आदि आदि। जैसा कि अक्सर लोग कहा करते हैं। सार्थक सोच संतुष्ट जीवन के लिए कितना जरूरी है! एक अदना सा आदमी मुझे सिखा गया।

सम्पर्क : धनबाद (झारखंड)

]●●

कांता रॉय

सावन की झड़ी

‘भाभी, निबंध लिखवा दो!’ चीनू ने उसका ध्यान खींचा।

‘किस विषय पर?’ चीनू की स्कूल डायरी उठा, फिर से नजर बरामदे की ओर लग गयी।

जब से सुषमा बरामदे में खड़ी हुई है और उधर वो गुजराती लड़का, उसका ध्यान वहीं है।

कितनी बार मना कर चुकी थी इसे लेकिन...!

बाऊजी नजीराबाद वाले से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं और ये है कि इस गुजराती में अटकी है!

ननद के चेहरे पर छाई मायूसी उसे बार—बार हिमाकत करने को उकसा जाती थी इसलिये कल रात

आखिरी बार फिर से हिम्मत करी थी।

‘बाऊजी, वो पड़ोस में गुजराती है ना.... !’

‘हाँ, सो?’

‘अपनी सुषमा को पसंद करता है, उसकी नौकरी भी वेयर हाऊस में है।’

‘वो.... ? शक्त देखी है उसकी, काला-कलूटा, जानवर है पूरा का पूरा! ऊपर से दूसरी जात!’

बाऊजी की आवाज इतनी सर्द..., उसकी हड्डियों तक में सिहरन उठी थी।

पति ने उसकी ओर खा जाने वाली नजरों से देखा था।

चीनू ने हाथ से डायरी छीन ली, वह लौटी, फिर से पूछा, ‘बताओ ना, जानवरों की क्रिया कलापों पर क्या लिखूँ?’

सुषमा और चीनू के लिए वह भाभी कम माँ अधिक थी।

‘भाभी, मोर क्यों नाचता है?’ चीनू ने इस बार सबसे सरल प्रश्न पूछा था।

वैसे चीनू के प्रश्नों के जबाब उसे ढूँढ़-ढूँढ़कर तलाशने होते हैं। आज कल के बच्चे कम्प्यूटर से भी तेज, और चीनू, उन सबमें भी अव्वल!

‘मोरनी को रिझाने के लिए ही मोर नाचता है।’ उसने स्नेह से कहा।

‘और जुगनू क्यों चमकता है?

‘अपने साथी को आकर्षित करने के लिए।’

सुनते ही क्षण भर को वह चुप हो गया।

‘आप हमारे भैया की साथी हो?’

‘हाँ!’ उसके ओर आँखें तरेरती हुई बोली।

‘भैया ने आपको कल रात मारा क्यों?’

‘चीनू!’ वह एकदम से सकपका गयी।

‘क्योंकि मैं उन पर ध्यान नहीं देती हूँ?’ भराये स्वर में धीरे से कहा।

‘तो उनको भी आपको रिझाने के लिए जुगनू की तरह चमकना चाहिये, मोर की तरह नाचना चाहिये था ना?’

‘धत! वे क्यों रिझायेंगे, जानवर थोड़ी ना हैं!

‘भैया जानवर नहीं हैं, लेकिन गुजराती तो जानवर है ना, इसलिये तो सुषमा जीजी को रिझाता रहता है।’ कह कर चीनू जोर-जोर से हँसता रहा लेकिन वह सुनकर सुश पड़ गयी।

‘ये क्या ऊपटाँग बातें कर रहा है तू?’

‘भाभी, मैं खुद ही निबंध लिख लूँगा, बस सुषमा जीजी को उसका मोर दिला दो! फिर वो कभी आपकी तरह छुप-छुपकर नहीं रोयेगी।’ कहते हुए चीनू की नजर भी बरामदे में जाकर टिक गयी।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9575465147

●●

कुंकुम गुप्ता

माँ

मुनिया को होम वर्क कराते हुए सहसा विभा की नजर आलमारी में लगे दर्पण पर पड़ी। उसे अपने मेंहदी लगे तामिया बाल और चेहरे की झुर्रियाँ दिखीं तो सोचने लगी कि मुनिया अभी पाँच साल की ही है लेकिन शादी देर से होने और ठीक ग्यारह साल बाद मुनिया के होने के कारण वह कितनी बुजुर्ग सी दिखने लगी है कुछ लोग तो मुनिया को उसकी पोती समझते हैं।

‘मेरा होम वर्क चेक कर लो माँ।’

मुनिया के बोलने से वह चौंकी और बोली, ‘बताओ चेक कर लूँ।’

‘अरे वाह आज तो एक भी गलती नहीं हुई पूरे सवाल सही है’

अच्छा मुनिया एक बात बता ‘तेरी सहेलियों की मम्मी तो बड़ी स्मार्ट हैं। जब सभी की मम्मी बस स्टॉप पर आती हैं तो तुझे यह तो नहीं लगता कि मेरी मम्मी गंदी दिखती है।’

‘नहीं मम्मी, आप तो मुझे सबसे सुन्दर लगती हो,’

मुनिया ने माँ के गालों को सहलाते हुए कहा।

यह सुनकर विभा की आँखें छलक उठीं और उसने बेटी को अपने सीने से लगा लिया। आखिर माँ तो बस माँ होती है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9425606033

●●

कीर्ति श्रीवास्तव

रक्तदान

‘देख दीपक, अपना सवाल तू खुद सॉल्व कर। मेरी कॉपी से मत देख।’

‘तुझे क्या लगता है मैं कर नहीं सकता?’

‘हाँ नहीं कर सकता। तभी तो रोज मेरी कॉपी में देखकर करता है।’

‘कितना लड़ते हो तुम दोनों। कभी प्रेम से बात नहीं कर सकते क्या?’

‘जब देखो लड़ते रहते हो।’

‘प्रेम से और यशी से। कभी नहीं। इसको झगड़ने के अलावा तो कुछ आता ही नहीं है सर।’

‘ओ हो तू तो बड़ा सीधा है।’

‘अच्छा अब बस दोनों अपने-अपने सवाल करो।’

‘सर दीपक दो दिन से पढ़ने नहीं आया। सब ठीक तो है न?’

‘हाँ, उसकी मम्मी की तबियत ठीक नहीं है। हॉस्पिटल में एडमिट हैं। इसी कारण नहीं आ रहा। फोन आया था उसका।’

‘ओह..., भगवान उन्हें जल्दी ठीक करें।’

‘हेल्लो, दीपक, मैं यशी। सर ने बताया तुम्हारी मम्मी की तबीयत ठीक नहीं हैं। क्या हुआ उन्हें?’

‘हाँ, खून बनना बन्द हो गया है। ब्लड चढ़ेगा। बस उसी की व्यवस्था में लगा हूँ।’

‘मेरी जरूरत हो तो बताना।’

‘हाँ, जरूर। थैंक्स यशी।’

‘वैसे उनका ब्लड ग्रुप क्या है?’

‘एबी पॉजिटिव। वैसे कोई भी हो चलेगा। ब्लड बैंक से एक्सचेंज हो जाएगा।’

‘कुछ इंतजाम हुआ?’

‘3 यूनिट चाहिए। 2 हो गई एक का इंतजाम करने में लगा हूँ।’

‘ओके। किस हॉस्पिटल में हैं आंटी जी?’

‘रेडक्रॉस।’

कुछ मिनटों के बाद यशी दीपक के सामने रेडक्रॉस में थी।

और दीपक के चेहरे पर पर मुस्कान और आँखें नम।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 7415999621



कपिल शास्त्री

हार-जीत

सिर के पीछे पड़ी हलकी सी चपत से ही इस युद्ध का शंखनाद हो चुका था। तकियों को अस्त्र-शस्त्र की तरह इस्तेमाल करने के बाद बात मल्लयुद्ध तक आ पहुँची थी।

‘आज तो तेरी ईट से ईट बजा दूँगा।’ विकास उसकी आँखों में देखकर गुराया।

‘मैं भी पापा आज आपको नहीं छोड़ूँगी।’

पलंग के ऊपर बाप बेटी सांड की तरह भिड़े हुए थे। इस युद्ध के लिए पापा ने ही अपनी पाँच वर्षीय बेटी अंजलि को ललकारा था और घुटनों के बल आकर बेटी की ऊँचाई की बराबरी कर ली थी।

किसी मिट्टी पकड़ पहलवान की तरह दोनों के पंजे और सिर आपस में भिड़े हुए थे। फिर पापा ने एहतियाद से बेटी को उठाकर नरम गदे पर पटक दिया, इससे बो और उग्र हो गयी और उठकर ताबड़तोड़ मुक्के बरसाने लगी जिससे बचते हुए पापा ने भी पुरानी मारधाड़ से भरपूर महान पारिवारिक चित्रों के नायकों की तरह मुँह से ढिशुम, ढिशुम की आवाज निकाली और तीन चार मुक्के उसकी बगल से निकाले। बच्ची भी कहाँ हार मानने वाली थी, उसने तीन चार असली के जड़ दिए और बो पापा के सीने पर चढ़ गयी और चित कर के ही दम लिया। इतने में ही पत्नी शालिनी ने आकर जब देखा कि करीने से चढ़ाए गए गिलाफ तकियों से विमुख हो अचेतावस्था में पड़े हैं तो तमतमा गयी। दोनों को अलग किया और बिफर कर बोली ‘ये क्या पागलपन मचा कर रखा है बाप-बेटी ने घर में!’ फिर बेटी को बाहर जाकर खेलने की हिदायत दी। उसने मम्मी को गर्व से बताया कि ‘मैंने पापा को हरा दिया’ और विजयी

मुद्रा में प्रस्थान किया।

‘इस पागलपंती में दुनियादारी के सारे टेंशन भूल जाता हूँ।’ विकास ने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

‘ये छटाक भरी, तुम्हें पीट-पाट कर चली जाती है और तुम कुछ नहीं कर पाते।’ पत्नी ने आश्चर्य व्यक्त किया। विकास ने भी उसकी ठुड़ी पकड़कर कहा, ‘ये तुम्हारी शक्ति की है न, इसलिए बच जाती है।’ ये सुनकर शालिनी मुस्कुरा उठी और पूछा, ‘क्या तुम भी अपने पापा से इतने ही फ्रेंडली थे?’ इस बात पर उसके चहरे पर उदासी छा गयी और बोला, ‘नहीं था। वो मुझसे मन से प्यार तो करते थे पर कभी इजहार नहीं किया, मैं भी उनके गुस्से के डर से दूर-दूर छिटका, छिटका ही रहता पर मैं भी चाहता था कि मेरे पिता मेरे दोस्त जैसे होते।’ कहकर विकास ने एक ठंडी साँस छोड़ी।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9406543770

●●

कुमार नरेन्द्र

बिरादरी का दुख

मुहूर से चल रहे किराएँदार बंसीराम पर दायर मुकदमा जीतने के बाद आज पंडित ज्योति प्रसाद खुश थे। सुबह से ही बधाई देने वालों को ताँता लगा हुआ था और पंडित जी हाथ जोड़े सबका स्वागत कर रहे थे। साथ-ही-साथ सभी को इस बार दीपावली पर अपने यहाँ आमंत्रित कर रहे थे। दोपहर हुई। आसापास के सभी बुढ़ऊ यार-दोस्त खुशी-खुशी अपने-अपने घर लौट गए और पंडित जी अपने दूर के दोस्तों को पत्र लिखने बैठ गए।कुछ दिनों बाद उनके दोस्तों के जवाब आने शुरू हो गए। एक विधुर दोस्त ने लिखा, जो कि हर वर्ष उनके यहाँ ही दीपावली-पर्व मनाता रहा है-

प्रिय पंडित जी,

...अस्वस्थ होने के कारण संभवतः मैं इस बार तुम्हारे यहाँ दीपावली पर न आ पाऊँगा.....।

तुम्हारा

रामसहाय

पंडितजी का यह दोस्त परदेश में किराएँदार था।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9654935499

●●

कल्पना भट्ट

बागबानी

माथुर साहब को बागबानी का बहुत शौक था। घर का आँगन बहुत बड़ा था सो उन्होंने विविध प्रकार के पेड़-पौधे लगाये थे। बच्चों की तरह वे उनकी देखभाल करते।

अपने बेटे से भी कई बार कहते, ‘बेटा, बागबानी करना सीख लो आगे काम आएगा।’

पर बेटा उनकी मज़ाक बनाता। बेटा एक कंपनी में नौकरी करता था पर परिवार की ज़िम्मेदारियों से भागता

था। बाहर दोस्तों के बीच रहना, पार्टी करना और पैसे उड़ाने में वह अपनी शान समझता था। कई बार समझाने के बाद भी उसमें कोई अंतर नहीं आया। पर माथुर साहब को अपने खून पर भरोसा था। उनको भरोसा था की वक्त सब कुछ सिखा देगा और ऐसा समय आएगा कि बेटे को उसकी गलतियों का एहसास होगा।

बसंत का आगमन, पपीहे की गूँज, पक्षियों का कलरव, बसंती हवा में एक नवांकुर का घर में आगमन। माथुर साहब फूले न समाये, घर वालों की खुशियों का भी ठिकाना न रहा। बच्चे का नाम ‘बसंत’ रखा गया। माथुर साहब ने अपने बेटे से कहा, ‘बेटा, अब तुम भी पिता बन गये हो, तुम्हारी जिम्मेदारियाँ और बढ़ गयी हैं।’ बेटे ने उनसे आशीर्वाद लिया और बोला, ‘हाँ बाबा, अब मुझे आपकी बागबानी का अर्थ समझ आ गया है।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9424473377

●●

कोमल वाधवानी ‘प्रेरणा’

औलाद

सचिन फर्टे से बाइक पर जा रहा था कि उसकी दृष्टि मेनगेट बंद करके पीठ टिकाए खड़ी वृद्ध महिला पर पड़ी। वह पलटकर आया, गाड़ी खड़ी की ओर उस वृद्धा के निकट पहुँचा।

‘कौन? गोलू?’

‘नहीं, मैं सचिन। प्रणाम दादी माँ।’

‘खुश रहो।’ कहते उनकी धुँधली आँखें चमक उठीं। तुम्हीं थे जो अभी तेज़ी से निकले?

सचिन ने सहमति में सिर हिलाया।

‘अरे बेटा, बाइक धीरे चलाया करो। पता नहीं कौन बच्चा खेलते-खेलते गाड़ी के आगे आ जाये।’

उनकी बात को अनसुना करते सचिन ने पूछा, ‘दादी माँ, आप गेट बंद करके बाहर क्यों खड़ी हैं?’

मैं बाहर की ताज़ी हवा खाने और आने-जाने वालों की चहल-पहल देखने के लिए खड़ी हूँ।’

सचिन ने उनकी दुर्बलकाया पर एक दृष्टि डाली और बोला, ‘मैंने गायों के झुंड को तेजी से इधर आते देखा है। वे आपको चोट पहुँचा सकती हैं। आप गेट के अंदर सेफ रहेंगी।’

‘तुम बेफिक्र रहो बेटा। वे मुझे नकुसान नहीं पहुँचाएँगी। वो मेरी औलाद थोड़े ही न हैं।’

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9424014477

●●

गोविन्द शर्मा

मोबाइल फोन

वेटिंग रूम में कई यात्री बैठे थे। सब अपने-अपने मोबाइल फोन पर झुके हुए थे, एक को छोड़कर। अचानक एक मोबाइलधारी का ध्यान उसकी तरफ चला गया। उसने आश्चर्य से पूछा- क्या आपके पास मोबाइल नहीं है?

है, यह देखो कहते हुए अपनी जेब से मोबाइल निकाल कर दिखाया।

वाह, नवीनतम डिजायन का इतना महँगा फोन। जब आपके पास फोन है तो आप इसका इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहे? यानी वीडियो देखने, सर्च करने, चैट करने के लिये हाथ में क्यों नहीं है?

मैं इसे हाथ में तभी लेता हूँ, जब मुझे किसी को फोन करना होता है या कोई मुझे कर रहा होता है। ओह, मैं तो भूल ही गया था कि यह किसी दूरस्थ से बात करने के काम भी आता है।

सम्पर्क : हनुमानगढ़ (गजस्थान) मो. 9414482280

●●

गोविन्द शर्मा

भुगतान

वेतन भुगतान के दिन भारी भीड़ हो जाती है, भुगतान के दौरान ही ग्राहक नोट बदलकर छोटे नोट चाहता है। इस माह भुगतान के दिन तीन में से दो कैशियर अवकाश पर थे, मैंने आश्वस्त किया काम सुचारू रूप से चलेगा। सुबह एक भुगतान काउंटर मैंने सँभाला, आदत ना होने से आरम्भ में थोड़ी परेशानी गई फिर सब कुछ ठीक-ठाक चलने लगा। एक ग्राहक बड़ी देर से बार-बार 500 का नोट मेरी तरफ बढ़ा रहा था, मैं जानता था उसे छुट्टे चाहिये, मैंने उसे डाँट कर एक तरफ खड़ा कर दिया और भुगतान के बाद बात करने को कहा।

एक घंटे बाद मैंने उस ग्राहक को बुलाया और पूछा कैसे नोट चाहिये? उसने कहा बाबूजी मुझे छुट्टे नहीं चाहिये, आपने 500 भुगतान में अधिक दे दिये हैं, वही वापस करने एक घण्टे से बाजू में खड़ा था। 500 का नोट वापस लेते समय मैं ग्राहक से आँखें नहीं मिला पा रहा था।

सम्पर्क : खण्डवा (म.प्र.) मो. 9425388588

●●

गोविन्द भारद्वाज

दो बैसाखियों वाली

बस खचाखच भरी हुई थी। जितने लोग बस में सीटों पर बैठे थे लगभग उतने खड़े थे। उस रुट पर चलने वाली वो आखिरी बस थी। शाम होने वाली थी इसलिए सबको बस में चढ़ाना बस कंडक्टर की जिम्मेदारी भी थी। मैं स्वयं विकलांग होने के कारण विकलांग सीट पर बैठा हुआ था। साथ में किसी और को भी बैठा रखा था। एक जगह बस रुकी तो एक महिला जो बैसाखी के सहारे बस में चढ़ने की कोशिश करने लगी। उसे देखकर कंडक्टर ने उसे मना करते हुए कहा, ‘बहन जी बस में बिल्कुल भी जगह नहीं है। आप परेशान हो जाओगी। आप रहने दो।’ ‘भैया मेरा जाना जरूरी है वरना मैं कल सुबह भी चली जाती।’ महिला ने निवेदन करते हुए कहा। कंडक्टर की मौन स्वीकृति के बाद वह बस में जैसे-तैसे चढ़ गयी। पायदान पर खड़ी उस महिला को देखकर मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। मैंने सीट से उठते हुए कहा, ‘बहन जी आप मेरी सीट पर बैठ जाओ।’ इतने में कंडक्टर ने कहा, ‘तुम भी तो अपाहिज हो।’ मैंने दूसरे यात्रियों की ओर देखते हुए कहा, ‘मैं एक बैसाखी वाला हूँ और ये बहन जी दो बैसाखियों के सहारे हैं। मुझ से ज्यादा इनको जरूरत

‘है सीट की।’ मेरी बात सुन कर तो फिर समझो बस में एक होड़ सी मच गयी। चारों तरफ से आवाजें आने लगी, ‘भैया आप मेरी सीट पर बैठ जाओ... बेटा मेरी सीट पर बैठ जाओ।’

मैं खुश था कि मेरी पहल से सभी में रहम जाग चुका था।

सम्पर्क : अजमेर (राज.)

गोकुल सोनी

कूटनीति

बर्तनों की तीखी झनझनाहट से मेरी नींद खुल गई। समझ गया, सुखिया बाई बर्तन साफ़ कर रही होगी। श्रीमती जी को आवाज दी ही थी कि बाई की 10 वर्ष की बच्ची आयी और माँ से लिपटकर जोर-जोर-से रोने लगी। सुखिया बाई ने डॉटे हुए पूछा- क्यों पुंगा ठोक रही है? बोली- आज लक्ष्मी ने फिर मारा। माँ बोली, तूने कुछ किया होगा? नहीं माँ, मैं तो सिर्फ़ सीट पकड़कर साइकिल के साथ-साथ दौड़ रही थी। और दस मिनट के लिए साइकिल माँग रही थी। माँ, मेरा भी बहुत मन करता है कि मैं साइकिल चलाऊँ। सुखिया पुचकारते हुए बोली- अब रो मत बेटा, मैं लक्ष्मी को बहुत जोर से डॉट लगाऊँगी, फिर तुरंत बोली- जैन साहब और ठाकुर साहब के बर्तन साफ़ कर आयी क्या? हाँ माँ, और चड़ा साहब के यहाँ झाड़ू-पौछा? हाँ माँ, वो भी कर आयी। ठीक है बेटी, घर जा। मैं यहाँ का काम समेटकर अभी आती हूँ। बच्ची चली गयी।

मैंने पूछा-बाई, बच्ची को स्कूल नहीं भेजतीं क्या? बोली-भेजती थी, पाँचवीं पास हो गई, अब नहीं भेजती। अब तो काम से लगा दिया है। बाबू जी आज की घोर महँगाई में घर का खर्च कैसे चले? इसका बाप तो दारू पीकर पड़ा रहता है। हम दोनों माँ-बेटी मिलकर घर-गृहस्थी की गाड़ी खींच रहे हैं। इसको स्कूल भेज दिया तो सब चौपट हो जाएगा।

मैंने बहुत समझाया, पढ़ाई-लिखाई के फायदे भी बताये, बच्ची की अच्छी नौकरी लग जाने के सपने भी दिखाये, पर सुखिया बाई ‘टस से मस’ नहीं हुई। बोली-पढ़ा-लिखा लो तो पढ़ा-लिखा लड़का ढूँढ़ो, फिर उसे लाखों दहेज़ दो।

अगले दिन दोनों माँ-बेटी काम पर आईं। मैंने अच्छा अवसर देखते हुए बच्ची के सामने ही सुखिया बाई से पूछा- क्यों बाई, क्या तुम्हें मालूम है कि आजकल बच्चों को स्कूल में नयी ड्रेस, नयी किताबें, और मध्याह्न भोजन भी मिलता है? बाई बोली- ये सब तो मालूम हैं। फिर मैंने अगला पाँसा फेंका, क्या तुम्हें ये भी मालूम है कि लड़कियों को नयी चमचमाती साइकिल भी मिलती है। माँ कुछ बोलती उसके पहले ही बच्ची ने खुश होकर पूछा-अंकल आप सही कह रहे हैं क्या? मैंने कहा- हाँ बेटा, बिलकुल सच। बच्ची तुरंत मचल गई। माँ- मैं नहीं करूँगी काम-वाम, मैं तो कल से स्कूल जाऊँगी। माँ ने खूब समझाया, पर बच्ची तो जिद पर अड़ गई। अगले दिन जब मुझे बच्ची के स्कूल में दाखिल होने की खबर मिली तो मुझे गहन संतोष का अनुभव हुआ। शायद मैंने एक बच्ची का जीवन बर्बाद होने से बचा लिया था।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9755331831

गिरिजेश सक्सेना

दूध का दूध पानी का पानी

वो आज बहुत खुश थी, उसका सी बी एस ई बोर्ड का दसवीं का रिजल्ट आया था। उसकी पूरे रीजन में सेकेण्ड पोजीशन थी।

उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। हो भी क्यूँ ना प्री बोर्ड तक तो स्कूल में ही उसकी सेकंड पोजीशन थी। जिस दिन उसका प्री बोर्ड का रिजल्ट आया, उसने आते ही स्कूल बेग एक ओर फेंका। ना यूनीफार्म बदली ना खाना खाया बिस्तर पर जा कर पड़ गयी, ज़ार-ज़ार आँसुओं से रो रही थी।

माँ ने आ कर पूछा तो रोते हुए बोली – माँ देखो ना मैं फिर से सेकेण्ड हूँ। उर्वशी फिर फस्ट है। बात तो सही है, इससे पहले वह जहाँ-जहाँ रही हमेशा क्लास में फस्ट ही रही। उसे सेकंड आना नागवार था। उसके पापा मिलिट्री में थे अतः हर तीसरे साल पोस्टिंग पर स्टेशन बदलते रहते थे। यहाँ जबसे आयी सेकंड ही रहती थी और हर बार रोती थी। माँ जानती थी, उर्वशी वाइस प्रिंसिपल की बेटी थी अतः सारे शिक्षक उसे प्राथमिकता देते थे और नम्बर बढ़ा-बढ़ा कर देते थे। इस तरफ़दारी की वजह से वह हमेशा दुखी रहती थी। माँ हमेशा उसे समझती -बेटा! कोई दूसरे के काँधे पर पैर रख कर कब तक सीढ़ी चढ़ेगा? अपनी मेहनत पर भरोसा रखो अंत में वही काम आएगी। उसकी माँ का जोर स्कूल में चल सकता है, बोर्ड में नहीं। बोर्ड में देखना तू ही अब्बल आएगा। आज वो दिन आ गया जब वो स्टेशन के तीनों सी बी एस ई स्कूलों में सबसे अधिक मार्क्स ला कर वह पूरे स्टेशन में अब्बल थी और पूरे रीजन मेरिट में सेकन्ड पोजिशन थी।

मारे खुशी के वो माँ के गले में बाहें डाल कर झूल गयी, माँ ने कहा – मैं ना कहती थी उसकी माँ का जोर स्कूल में चलता है बोर्ड में नहीं, हो गया ना दूध का दूध पानी का पानी।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9425006515 / 8319172532

●●

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

एक आसमान

‘ए विमलाऽऽ॒॒॒॑॥’

मैंने देखा, देहरी पर बैठी पुजारिन अम्मा अपनी आँखों पर हथेली की छतरी सी ताने आतुरता से मुझे ही पुकार रही थी। मैं लौट पड़ी।

‘इधर क्या चाची के घर गई थी?’

अम्मा के सवाल का उद्देश्य मुझे मालूम था। मेरी चाची के पड़ोस में ही अम्मा के बड़े बेटे विनोद का मकान है। महीना भर पहले वे पत्नी बच्चों सहित अपने मकान में रहने चले गए। और अम्मा छोटे बेटे रूप के साथ इसी किराए के पुराने मकान में रह गई। विनोद भैया ने अम्मा से भी साथ चलने को कहा तो

जरूर होगा पर शायद उस तरह नहीं कहा होगा कि अम्मा उठ कर चल देतीं या कि कई दशकों से रह रहे इस घर की इतनी सारी यादों को लेकर जाना संभव नहीं हुआ होगा। वैसे भी कुसमा भाभी की अम्मा से चख-चख होती ही रहती थी। जो भी हो ...।

विनोद भैया को अम्मा के पास आने की, उनकी सुधि लेने की जरा भी फुरसत नहीं है। पर अम्मा के पास उनकी सुधि के लिये फुरसत ही फुरसत है। जो भी उधर से आता है, अम्मा बुला कर बिठा लेती हैं।

‘विनोद के घर भी गई होगी?’

‘हाँ॥ गई तो थी।’ मैंने हिचकिचाते हुए कहा।

‘विनोद मिला होगा।’ ...अम्मा ने और भी उत्सुक होकर पूछा फिर कुछ बुझे स्वर में बोलीं... ‘विनोद की ‘जनी’ तो खूब मजे में होगी कि चलो पीछा छूटा ‘डुकरिया’ से ..। आदमी उसकी मुट्ठी में है। सास गिरे ‘ढाह’ से....।’

अम्मा की आवाज में पीड़ा थी। लगा जैसे शून्य में असहाय सी छटपटाती हुई मेरी प्रतिक्रिया का सम्बल तलाश रही हों।

‘लेकिन अम्मा’ ...मैंने कुछ सोच कर कहा- ‘मैं तो जब भी जाती हूँ, भाभी बड़े आदर से तुम्हारी ही बातें करती रहती हैं। आज ही तुम्हारे हाथ के बने मिर्च के अचार की बड़ी तारीफ कर रही थीं।’

‘सच्ची! खा मेरी सौगन्ध।’ ...अम्मा की आँखों में सितारे से झिलमिलाए।

‘हाँ सच्ची अम्मा! विनोद भैया भी कहते रहते हैं कि हमारी अम्मा ने जैसे बच्चों को पाला है, कौन औरत पाल सकती है।’

‘विनोद तो मेरा विनोद ही है’ ...अम्मा गद्दू हो गई। ‘और कुसमा भी ...जुबान की भले ही जैसी हो पर दिल में खोट नहीं है उसके।’

मैंने देखा, सारी धुन्ध हट गई थी। अम्मा के चेहरे पर सुबह की धूप खिल उठी थी।

झूठ बोल कर ही सही, उस पल मैंने अम्मा को एक आसमान तो दे ही दिया था।

सम्पर्क : बैंगलुरु, मो. 8827293206

●●

गोवर्धन यादव

अपने-अपने हिसाब से

रामेश्वर ने एम.काम.की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, और नौकरी के लिए जहाँ-तहाँ आवेदन भी कर दिया था। उसे पूरा भरोसा था कि जल्दी ही वह अपनी योग्यता के आधार पर नौकरी पा लेगा।

समय बीतता रहा। वह आशाएँ सँजोता रहा, लेकिन उसे अब तक सफलता नहीं मिल पायी थी। कुछ न कुछ तो करना पड़ेगा, यह सोचकर उसने एक कमरा लेकर कोचिंग-क्लासेस डाल दी। उसमें उसे सफलता हाथ लगी। अब वह जमकर रुपया पीट रहा है। बावजूद इसके मन में एक कसक अब भी बनी हुई थी कि सरकारी नौकरी मिल जानी चाहिए।

संयोग से संविदा शिक्षकों की वेकेंसी निकली और उसने अपना आवेदन प्रस्तुत कर दिया और उसका सिलेक्शन भी हो गया। शहर से पचास किलोमीटर दूर उसकी पोस्टिंग हुई। वह स्थान रेल मार्ग से जुड़ा था, उसने मंथली पास बनवा लिया था। अब वह रोज सुबह आठ बजे रवाना होकर नौ बजे वहाँ पहुँच जाता और शाम सात बजे उसी ट्रेन में सवार होकर आठ-साढे आठ तक वापिस घर आ जाता और मुँह-हाथ धोकर पुनः अपने सेंटर जा पहुँचता। देर रात तक उसकी कोचिंग कक्षाएँ चलती रहतीं। अब वह दो नावों पर सवार होकर निश्चन्ता से अपना जीवन यापन करने लगा था।

धीरे-धीरे उसकी जान-पहचान अन्य लोगों से भी हुई जो उसकी तरह अप-डाउन करते थे। अब क्या था, ट्रेन में सवार होते ही पत्तों की बाजी लग जाती। सफर कैसे कट जाता, पता ही नहीं चल पाता था। कुछ दिनों उसके साथ सफर करने वालों में एक मित्र और आ जुड़ा, जिसके अपनी किराने की टूकान थी। धीरे-धीरे दोनों में काफी अंतरंगता कायम हो गई।

एक दिन उसने अपने मित्र के सामने प्रस्ताव रखते हुए कहा- हम रोज-रोज तो आ-जा ही रहे हैं। यदि बारी-बारी से आने लगे तो क्या फर्क पड़ेगा? तुम्हारी अनुपस्थिति में मैं सारे पीरियड ले लूँगा, और तुम मेरे पीरियड ले लेना। इस बात पर प्राचार्य मानेंगे अथवा नहीं, मुख्य प्रश्न यह भी था। वे जानते थे कि प्राचार्य भी तो प्रतिदिन अप-डाउन करते हैं और कभी-कभी तो वे लंबा गोल भी लगा जाते हैं। उनके भी तो शहर में अपने बिजनेस हैं। अतः ऐसी परेशानी नहीं आएगी, उनका अपना मानना था।

अब सब अपने-अपने हिसाब से आने-जाने लगे थे। किसी को किसी से न तो कोई शिकायत थी और न ही आपत्ति..।

सम्पर्क : छिन्दवाड़ा (म.प्र.) मो. 9424356400

●●

गीता गीत

भिखारी दोस्त

रमाकांत विश्वविद्यालय के हॉस्टल में रहकर शोध कार्य कर रहे थे। विश्वविद्यालय के सामने ही चाय-पान का टपरा था। प्रतिदिन सभी प्रोफेसर यहीं से चाय मँगवाकर पीते थे। रमाकांत जब चाय पीने जाते थे तो कभी-कभी एक लंगड़ा भिखारी लहराता हुआ उनके पास आकर खड़ा हो जाता था। रमाकांत उसे भी कभी-कभी चाय पिलवा देते थे। रमाकांत के मित्र लोग उन्हें भिखारी का दोस्त कहकर चिढ़ाते थे।

एक दिन रात को ग्यारह बजे एकाएक रमाकांत को घर की बहुत याद आने लगी। उनका मन बेचैन हो उठा उन्हें लगने लगा अभी के अभी घर जाया जाए। उन्होंने अपने कपड़े उठाये और बाहर निकलने को हुए तो उन्हें याद आया पैसे तो पास में बिल्कुल नहीं हैं। सोचा बाहर जाकर चाय-पान वाले से उधार माँग लेंगे, परंतु बाहर दुकानें बंद हो चुकी थीं। अभी वह खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि लंगड़ा भिखारी लहराता हुआ उनके पास आया और बोला क्या बात है साहब? आप बहुत परेशान लग रहे हो।

रमाकांत ने कहा घर जाने के लिए आखिरी बस बारह बजे की है और मुझे घर की बहुत याद आ रही है पर पास में पैसे नहीं हैं। लंगड़े भिखारी ने अपने जेब में हाथ डाला और बहुत सारी चिल्लर

निकालकर रमाकांत जी के हाथ में रखी और कहा साहब आप घर जाओ। रमाकांत जी को शर्म आ रही थी वो बोले नहीं-नहीं रहने दो तुम मत दो पैसे परंतु भिखारी अड़ गया और बोला आप लौटकर मेरे पैसे दे देना। पैसे लेकर रमाकांत गाँव चले गये। गाँव जाकर पता चला छोटा भाई छत से गिर गया है, उसे अस्पताल में भर्ती किया गया है।

एक सप्ताह बाद भाई जब ठीक हुआ रमाकांत वापस लौटे और उस भिखारी को सौ रुपये का नोट पकड़ाया। भिखारी ने तीस रुपये उन्हें लौटाये। रमाकांत ने कहा भाई तुम पूरे पैसे रख लो। भिखारी बोला साहब भीख माँगते हैं परंतु इतना भी ज्ञान रहता है कि जेब में कितने पैसे हैं। मैंने आपको सत्तर रुपये दिये थे सो सत्तर ही वापस लूँगा। भिखारी हूँ पर बेईमान नहीं।

सम्पर्क : जबलपुर (म.प्र.) मो. 9893305907

●●

घनश्याम मैथिल 'अमृत'

कागजी घोड़े

जब से उन्होंने वन विभाग के मुखिया का दायित्व संभाला उनके मुँह से एक ही सूत्र वाक्य, सदैव सुनने को मिलता 'तन, मन, धन, सबसे ऊपर वन।

हर विभागीय बैठक में वे सिमटते हुए जंगलों की चिंता करते। वनों के विनाश को रोकने के उपाय पर सार्थक कदम उठाना उनकी प्राथमिकता सूची में पहले नम्बर पर था। सरकार ने वनों के प्रति उनके गहरे लगाव को देखते हुए, इस वर्ष पाँच करोड़ की धनराशि वनों के विकास हेतु उपलब्ध करवाई।

राशि मिलने के बाद, देश ही नहीं दुनिया भर से जल, जंगल और जमीन से जुड़े पर्यावरणविद, विषय-विशेषज्ञ, देश की राजधानी में इकट्ठे हुए। एक वातानुकूलित होटल के सभागृह में सम्पन्न हुई इस काफ्रेंस में अतिथि हवाई सफर करके राजधानी पहुँचे, उनके अतिथ्य में किसी प्रकार की कमी न रहे, इसकी मुखिया जी ने पूरी व्यवस्था की थी। वन संरक्षण पर गम्भीर चर्चा के पश्चात् मसौदे को लिखित रूप दिया गया।

वन संरक्षण के लिए स्वीकृत धनराशि अतिथियों के सत्कार, आने-जाने के किराए, होटल, भोजन, गाड़ियों आदि पर खर्च हो चुकी थी। अब वनों को इंतज़ार था अपने संरक्षण के लिए फिर से धनराशि स्वीकृत होने का।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9589251250

●●

घनश्याम अग्रवाल

एक बार फिर

एक बार फिर एक औरत पूरी बस्ती से घिर चुकी थी। बस्तीवालों के हाथों में पत्थर थे।

'यह व्यभिचारिणी है, पापी है, इसने पाप किया है। इसे पत्थर मार-मारकर मार देना चाहिए।' सारी बस्ती चिल्लाने लगी।

‘ठहरो।’ एक बार फिर एक मसीहा ने आकर कहा।

‘ठीक है, यह पापी है, इसे जरूर पत्थरों से मार देना चाहिए। मगर इसे पहला पत्थर वह मारे, जिसने कभी कोई पाप, या पाप का विचार न किया हो।’

एक पल को बस्तीवालों के हाथ थम गए। दूसरे ही पल, उस औरत पर चारों ओर से पत्थरों की बारिश होने लगी। औरत लहूलुहान होकर मर गई।

एक पत्थर भर मारने से यदि मसीहा की नजरों में पुण्यात्मा बन सकते हैं, तो भला बस्ती में ऐसा कौन होगा, जो इतना आसान मौका छोड़ता। सारे पापी खुद को पुण्यात्मा समझ घर चले गए।

उसके बाद बस्ती में किसी ने मसीहा को नहीं देखा।

सम्पर्क : अकोला (महाराष्ट्र) मो. 9422860199

●●

चित्रा मुद्दल

मर्द

‘आधी रात में उठकर कहाँ गई थी?’

शराब में धुत पति बगल में आकर लेटी पत्नी पर गुराया।

‘आँखों को कोहनी से ढाँकते हुए पत्नी ने जवाब दिया ‘पेशाब करने।’

‘एतना देर कइसे लगा?’

‘पानी पी-पीकर पेट भरेंगे तो पानी निकलने में टेम नहीं लगेगा?’

‘हरामिन, झूठ बोलती है? सीधे-सीधे भकुर दे, किसके पास गयी थी?’

पत्नी ने सफाई दी- ‘कऊन के पास जाएँगे मौज-मस्ती करने।’

माटी गारा ढोती देह पर कऊन पिरान छिनकेगा?’

‘कुतिया..’

‘गरियाव जिन, जब एतना मालुम है किसी के पास जाते हैं तो खुद ही जाके काहे नहीं ढूँढ़ लेता?’

‘बेसरम, बेह्या... जबान लड़ाती है! आखिरी बार पूछ रहे हैं-बता किसके पास गयी थी?’

पत्नी तनतनाती उठ बैठी- ‘तो लो सुन लो, गए थे किसी के पास। जाते रहते हैं। दारू चढ़ाके तो तू किसी काबिल रहता नहीं...’

‘चुप्प हरामिन, मुँह झाँस दूँगा, जो मुँह से आँय-बाँय बकी। दारू पी के मरद-मरद नहीं रहता?’

‘नहीं रहता...’

‘तो ले देख, दारू पी के मरद-मरद रहता है या नहीं?’

मरद ने बगल में पड़ा लोटा उठाया और औरत की खोपड़ी पर दे मारा।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9873123237

●●

चंदा सायता

नास्तिक

‘सुखी। चल जलदी से नहा धोकर तैयार हो जा। आज ग्यारस है, आज तो चला चल मंदिर।’

माँ की रोज-रोज की ऐसी बात सुनकर सुखी हँसा, पर बोला कुछ नहीं। माँ बड़बड़ते हुए मंदिर जाने की तैयारी करने लगी। ‘कितना ही बोलूँ इसे, पर मजाल है जो मंदिर जाने के लिए हाँ कर दे। नास्तिक कहीं का।’

माँ दरवाजा भिड़ा कर चली गई। सुखी बिस्तर पर ही लेटा रहा। वह हौले-हौले गुनगुनाने लगा-‘कृष्ण काहे देर की आवन को। मैं तरसूँ तब दरसन पावन को।’

इतने में दरवाजा खुलने की आहट सुनाई दी। ‘कौन है?’ सुखी का स्वर टूटा।

‘अम्मा पूजा के फूल यहीं भूल गई थीं। पूजा कैसे करतीं? तू भजन गा रहा था! कितनी मीठी आवाज है तेरी।’ पड़ोस में रहने वाली रमैया ने कहा।

‘ठीक है, ले जा।’ कहकर सुखी फिर से वही भजन गुनगुनाने लगा। रमैया को बहुत आश्चर्य हुआ- ‘सुखी। तू कान्हा को मानता है, फिर कृष्ण के मंदिर क्यों नहीं जाता?’

रमैया की बात सुनकर सुखी ठीक वैसे ही हँसा, जैसे वह अपनी माँ की बात पर हँसा था।

रमैया अड़ गई, बोली---‘आज तो तुम्हें बताना ही होगा कि तू मंदिर क्यों नहीं जाता?’

सुखी ने आती हुई आवाज की दिशा की ओर मुँह फेरते हुए कहा- ‘अब तू ही बता रमैया। मंदिर में जाकर तुम सब कान्हा की वह मूरत देखते हो, जिसे किसी कलाकार ने अपनी कल्पना से गढ़ा होता है- ...पर मेरे कान्हा का रूप तो मेरी कल्पना है। फिर मैं यहाँ बैठा-बैठा उसी को क्यों नहीं देखूँ?’

रमैया की आँखें नम हो उठीं और पूजा के फूल लेकर वह सुखी के प्रकाशहीन नेत्रों की ओर निहारती हुई बाहर निकल गई।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9329631619

चेतना भाटी

पूस की सुबह

सीवियर कोल्ड डे, अतिशीतल दिन, हाड़ कँपकँपा देने वाली ठंड में खून को भी जम कर सफेद पड़ने में देर ही कितनी लगती? तभी तो पूस की एक सुबह भाइयों में फिर ठन गई ठंड में। विदेश से गँव आए बड़े ने आग उगली - ‘आज मेरे पास बहुराष्ट्रीय कंपनी का करोड़ों का पैकेज है। तुम्हरे पास क्या है?’

‘भाई ... (थ्रूक निगल कर) मेरे पास ... मेरे पास ... (फिर कुछ निगलने की कोशिश सूखे गले से) मेरे पास धूप है।’ आँखें चमकता - ‘हाँ नई तो’ स्टाइल में। कूल-कूल छोटा शीतलता से बोला।

दहकते अंगारे इस सीवियर कोल्ड का सामना नहीं कर पाए और बुझ गए।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9406635557

चरनजीत सिंह कुकरेजा

सरप्राइज

उनके पैर हमेशा अपनी चादर में ही रहते थे। पंख थे, पर उड़ान वहाँ तक भरते थे जहाँ तक आसानी से पहुँच सकते थे। आसमान की ऊँचाइयों पर उड़ते परिदों से होड़ लेने या उनसे बराबरी करने का ख्याल भी उनके मन में कभी न आता। अपनी छोटी सी गृहस्थी की गाड़ी दोनों अपनी सूझबूझ और सामंजस्यता से भलीभाँति चला ही रहे थे कि, देश में फैली वैश्विक महामारी ने अचानक पैरों में लॉक डाउन की बेड़ियाँ डाल दीं। गृहस्थी की गाड़ी के पहिये एकाएक थम गये। सरकारी आदेश और संक्रमण के भय ने घर से बाहर निकलने के रस्ते बंद कर दिए थे। साहब ने भी स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए उसे ड्यूटी पर आने के लिए मना कर दिया था।

आज शाम पड़ोस में रहने वाले सरजू ने तीसरी बार लॉक डाउन बढ़ने की खबर दी तो वह पहली बार इतना विचलित नजर आया। उदास नजरों से वह लछमी को अपलक देखने लगा। ‘तुम किस सोच में डूब गए। साहब ने आगे की सोच कर तीन महीने की पगार और राशन एक साथ इसीलिये तो दिया था कि हमें कोई तकलीफ न हो।’ ‘नहीं वो बात नहीं है। लछमी कल मुझे आवश्यक काम से शहर जाना ही था। कल लॉक डाउन खुलने की अंतिम तारिख भी थी। सोचा था अपने काम के साथ-साथ साहब से भी भेट कर लूँगा।’

रात्रि के दूसरे पहर में वह अचानक नींद से जाग गया। कल शहर न जा पाने की बेचैनी उसे सोने नहीं दे रही थी। भोर होने के बहुत पहले ही वह चल पड़ा साइकिल पर सवार हो शहर की ओर। वह सूरज निकलने के पहले ही लौट आना चाहता था। आज उसे लछमी को उपहार जो देना था। पिछले माह साहब से एडवांस लेकर उसने शहर के जौहरी को लछमी के लिए दो चूड़ियों का आर्डर दिया था।

उस दिन साहब जब राशन और पैसे देने घर आये थे तो चूड़ियाँ भी लेकर आये थे। कहने लगे लॉक डाउन की वजह से सारी दुकानें बंद रहेंगी। इसलिये जौहरी ने ये चूड़ियाँ मुझे लाकर तुम्हें देने के लिये कहा है। पर मैंने उस दिन यह कह कर उन्हें लेने से मना कर दिया था कि, ‘साहब इन्हें अभी अपने पास ही रखिये। अगले महीने सालगिरह है तब लेकर पत्नी को सरप्राइज दूँगा।’ उन्हें भी उसकी बात जँची थी।

साइकल बड़ी तेज रफ्तार से शहर की ओर बढ़ रही थी। वह सुबह होने के पूर्व ही लौट आना चाहता था। मास्क लगाए मुकुंदा ने जैसे ही साहब के बंगले की ओर साइकल मोड़ी बँगले के सामने एम्बुलेंस देख ठिक गया। भीतर का दृश्य किसी को भी विचलित कर देने वाला था। साहब के पड़ोसी वर्मा जी ने मुझे अँधेरे में भी पहचान लिया था। ‘मुकुंदा तुम्हारे साहब अब इस दुनिया में नहीं रहे’ ऐसा लगा मेरे पैरों तले जमीन ही नहीं है।

वह धाराप्रवाह कहे जा रहे थे। ‘पिछले एक महीने से ये रस्तोगी समाज सेवा में लगा था। निचली बस्तियों में जा-जा कर अपने हाथों से पैसे और भोजन बाँट कर पुण्य कमा रहा था।’ ऐसी पुण्यात्मा को भला ईश्वर हम खुदगर्जों के बीच कैसे रहने देते। बुला लिया अपने पास।

मुझे सूझ नहीं रहा था कि, मैं उन्हें ढाढ़स बधाऊँ या मास्क निकाल कर फूट-फूट कर रोऊँ। कहाँ वह लछमी के लिए सरप्राइज लेने की सोच कर आया था। यहाँ तो साहब ने उसे सरप्राइज देकर स्तब्ध कर दिया।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9522002732



चित्रा राणा राघव

अनुकूलन

पति के साथ हुए हादसे से रोली उबरी ही थी। उसकी नजर आसपास लगे बड़े सरकारी होर्डिंग्स पर गई, जिन पर अलग-अलग सरकारी योजनाओं की प्रदर्शनी थी। कुछ पल अपलक सा देख वह घर की ओर भागी।

बहुत ढूँढ़ने पर भी कोई ऐसा कागज नहीं मिला जिसमें कोई उम्मीद लगाई जा सके। कहीं से कुछ उधारी माँगने के लिए वह पलट कर बाहर आ ही रही थी कि उसका पल्लू मुकेश के सब्जीवाले के ठेले में अटक गया। जिसमें बैठा बिरजू खेल रहा था। उससे टिकी बड़ी बेटी अब भी सुबक रही थी। रोली ने अपने आँसू पी लिए।

ठेले के पास पड़ी सब्जी को देख रोली को अजीब सी शांति हुई। वह उसे ठेले पर लाद निकल पड़ी। पहले चक्कर में कुछ भी ना बिकने से बस निराशा ही हाथ लगी। शाम की दूसरी पारी में वह फिर निकली और जोर-जोर से आवाजें लगाने लगी। उसकी शुरुआती आवाज शहर की गलियों में गुम हो जा रही थी। उसने और जोर लगाकर आवाज लगाई तो पहली बार अपनी आवाज में एक मर्दाना आवाज मिली हुई पायीं। लोग बाहर आए और सब्जियाँ भी खरीदीं।

उसे लगा शायद कहीं से मुकेश उसकी मदद कर रहा है। पर उसने जैसे ही यह बात अपनी बेटी को बताई, बेटी ने कहा, ‘यह सिर्फ मानव में ही नहीं जानवरों और प्रकृति के हर जीव में पाया जाता है। अपने अस्तित्व को बचाने के लिए हर जीव में कुछ बदलाव होते रहते हैं जिससे वह लंबे समय तक जीवित रह सके। माँ, इसे अनुकूलन कहते हैं। समय को देखकर तुम्हारी आवाज अनुकूलन कर भारी हो गई है।’

विज्ञान की भाषा से रोली कुछ-कुछ समझ सकी, पर उसकी बेटी उतनी ही उलझ गई थी, ‘स्कूल की दीदी ने तो कहा था इस अनुकूलन में हजारों सैकड़ों साल लग जाते हैं।’

सम्पर्क : गाजियाबाद (यू.पी.) मो. 9582573356

●●

चैतन्य त्रिवेदी

जूते और कालीन

“जब भी वे कालीन देखते हैं तो कोफ्त से भर जाते हैं। कालीन बुने जाने के उन कसैले दिनों की याद में। कुछ आँसू पी जाते हैं और गम खा लेते हैं।”

“क्यों भला, हमने उनका क्या बिगाड़ा?”

“यह कालीन जो आपने अपनी बिरादरी के चंद लोगों की कदमखोरी के लिए बिछाया है, उसके रेशे-रेशे में पल-पल के कई अफसोस भी बुने हुए हैं, जिसे आप नहीं जानते।”

“हमने दाम चुका दिए। उसके बाद हम चाहे जो करें कालीन का।” उन्होंने कहा।

“नहीं श्रीमान्, दाम चीजों के हो सकते हैं, लेकिन कुछ कलात्मक बुनावटें बड़े जतन से बनती हैं। उसके लिए हुनर लगता है। धैर्य लगता है। परिश्रम लगता है। दाम चुकाने के बाद भी उनकी कद्र करनी होती है, क्योंकि उसकी रचना के पीछे एक खास कलात्मकता काम कर रही होती है।”

“आप कहना क्या चाहते हैं?”

“आप जानते हैं कि इस कालीन के रेशे-रेशे में नन्हीं लड़कियों की हथेलियों की कोमलता भी छिपी है। स्त्रियों की हथेलियों के वे तमाम गर्म स्पर्श, जिनसे भरी ठंड में उनके बच्चे वंचित रह गए। इसके कसीदे देखिए श्रीमान् ये सुंदर-सलोने कसीदे, जो आपको क्षितिज के पार सपनों की दुनिया में ले चलने का मन बना लेते हैं, उन कसीदों के लिए उन लोगों ने आपनी आँखें गड़ाई रात-रात, मन मारा जिनके लिए। उन्हें क्या मिला मजूरी में, सिर्फ रोटी ही तो खाई, लेकिन अपना आसमान निगल गए।”

“कुछ पैसे और ले लो यार, लेकिन इतनी गहराई से कौन सोचता है!” वह बोले।

“बात पैसों की नहीं है। उन लोगों की तो बस इतनी गुजारिश भर है कि जिस कालीन को बुनने के लिए उन लोगों ने क्या-क्या नहीं बिछा दिया, उस पर पैर तो रख लें। लेकिन जूते नहीं रखे श्रीमान्।”

●●

छवि निगम

ट्रैफिक रूल्स

‘सुनिए, ये कैसा दोस्त है आपका! ट्रैफिक रूल्स ... पता नहीं क्या इसे? देखिये तो कैसे गाड़ी चला रहा है’ जब तेज रफ्तार कार स्पीडब्रेकर पर फिर से उछली, तो स्वाति ने डर कर आँखें बन्द कर लीं। समीर ने उसे चुप करने को आँखें दिखायीं, पर उसे बुद्धुदाने से रोक नहीं पाया- ‘आये थे यहाँ शादी अटेंड करने, लगता है स्टेशन से घर भी सहीसलामत नहीं पहुँच पाएँगे।’

तभी खिड़की के बाहर उसकी नजर पड़ी, तो चीख ही पड़ी ‘अरे, सिग्नल ग्रीन नहीं हुआ था अभी! और ये क्या, आप राँग साइड गाड़ी क्यों दौड़ा रहे हो भैया?’ दोनों ठठा के हँस दिए। समीर का दोस्त बोला- ‘अरे भाभी, आप ज़रा बोनट पर देखो। पार्टी का झँड़ा लगा तो है न?’ अब वो भी मुस्कुरा दी। हालाँकि कार अभी-अभी एक खोमचे वाले को टक्कर मारने से बाल-बाल बची थी।

सम्पर्क : नोयडा (उ.प्र.)

●●

ज्योति जैन

शिक्षा

नंदिता का नियम ही बन गया था-रोज ऑफिस से लौटते हुए उस टेले वाली से ‘सीजनल फ्रूट्स’ लेते आने का। आते वक्त कभी चीकू, लीची, बेर, संतरे, कभी जामुन, फाल्से ऐसे ही फल ज्यादा होते थे, जो वह एक बार रुककर ले ही लेती थी। धीरे-धीरे दोनों में बिना नाम का ही, पर एक परिचय-सा हो गया। कभी-कभी वह उसे समझाइश भी दिया करती थी। स्वच्छ रहा करो, पॉलिथिन की थेलियाँ मत रखा करो.....आदि.....। उस फलवाली के पास अक्सर 4-5 लड़कियाँ व एक बिल्कुल छोटा बच्चा नजर आता था।

उस दिन जामुन छाँटते हुए नंदिता ने उससे पूछ ही लिया-

“कितने बच्चे हैं तुम्हारे?”

“छः छोरियाँ हैं बेन जी” वह कुछ विद्रूपता से बोली।

“ये सातवाँ..... नन्दिता ने लेटे बच्चे की ओर इशारा करते हुए पूछा.....लड़का है क्या?”

“कोई नी! ये ई तो आखिरी छोरी है।”

“क्या तुम लोग भी..... नन्दिता ने उपदेश दिया-इतनी लाइन लगा लेते हो, और फिर अभावों में जीते हो। अरे! लड़का ही चाहिए तो दूसरे में ही जाँच करा लेनी थी। मुझे देखो! मैंने जाँच कराई और एक बेटी के बाद एक बेटा है।”

“देखो बैन जी” वो जामुन तौलती बोली-“मैं तुम्हारे जैसी होसियार तो काई नी। और मेरे मरद से भोत परेसान हूँ कि उसको छोरा चिए। पन अपनीज छोरियों को किसतर मार दूँ? अब लेन लगाएगा तो वे ही भुगतेगा पन में तो छोरी को नी मार सकूँ-चाहे पेट में चाहे बाहर।” कहते हुए उसने जामुन नन्दिता के झोले में डाल दिए।

जामुन डाले या शिक्षा उड़ेल दी? नन्दिता सोचती रह गई।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9300318182

●●

जया आर्य

लेह का हिम

ब्रिगेडियर राजन की पत्नी ने बार-बार हेड क्वार्टर में फोन किया ‘मेरे पति ठीक तो हैं’? उनकी पोस्टिंग लेह कर दी गई जहाँ उन्हें विंड फैन स्थापित करना था। वे इंजीनियर थे उनके साथ सभी कसान मेजर और सैनिक भी थे। परिवार से जैसे सबका नाता टूट गया था। एक तो ठण्ड और बर्फ की चट्टानें सब एक-दूसरे से रस्सी से जुड़े थे। जब कोई गड्ढे में गिरता सब मिलकर उसे खींच लेते।

ऑक्सीजन का मास्क लगा हुआ रहता। खाना कभी खाते, कभी नहीं खाते। सैनिक डिब्बा बंद भोजन परोसते, वही चल जाता। कहीं कोई नेटवर्क नहीं।

पत्नी को घर पर अकेले बच्चों के साथ रहने की एक आदत सी हो गई थी। ऐसे समय अन्य अफसर और सैनिक उनका ख्याल रखते। दूरबीन से उड़ते हुए हेलीकाप्टर को देखते जो दुश्मन का भी हो सकता था, या भोजन और आवश्यक सामान फेंकने का। अपने आपको बचाने के लिए हैण्ड ग्रेनेड के अलावा कुछ नहीं। काम चलता रहा। भाई का फोन आया कि ‘तुम्हारा पति मर गया। उसको शूट कर दिया गया है’।

पैसे के लेनदेन में दुश्मनी हो गई थी।

घबराकर हेड ऑफिस में फिर फोन किया तो कहा ऐसी तो कोई खबर नहीं है। साहिब आने वाले हैं। काम सफल हो गया। थके हुए ब्रिगेडियर यूनिफार्म में घर पहुँचे दोनों एक-दूसरे से लिपटकर ऐसे रोये जैसे लेह का हिम पिघल रहा हो।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9826066904

●●

जया नर्गिस

बिल्कुल माँ जैसी

बड़े शहर के बड़े रेलवे स्टेशन के बड़े प्लेटफार्म के एक अँधेरे कोने में दोनों लड़के अधनंगे बदन और खाली पेट सर्द रात का मुकाबला करते हुए आपस में बतियाने लगे, “यहाँ तू कबसे है?”

“पता नहीं.....और तू?”

“मैं...? तेरे माँ-बाप नहीं हैं?”

“नहीं...मेरी माँ मुझे यहीं पैदा करके मर गई थी। और तेरी?”

“मेरी...? मेरी माँ पिछली ठंड में इसी जगह सोते-सोते अकड़ गई थी...मैं तो मजूरी करके उसके लिए कम्बल लाना चाहता था...पर...” कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

“ऐ...कैसी थी तेरी माँ?”

“पता नहीं...”

इस सवाल ने या माँ को कम्बल न ओढ़ा पाने के मलाल ने पहले की आँखों को नम कर दिया। दूसरे का जी किया कि उठकर पहले के आँसू पोछ दे। मगर घुटनों को कस कर भींची बाँहों ने ठंड के डर से खुलने से इंकार कर दिया।

“बता न....कैसी थी तेरी माँ...।”

पहला दो क्षण के लिए कहीं दूर निकल गया...फिर वापस लौटकर बोला-“बिल्कुल माँ जैसी...।”

दोनों को लगा कि रात की जानलेवा ठंड में अचानक कहीं से हल्की-सी गर्माहट घुलने लगी है।

सम्पर्क : होशंगाबाद (म.प्र.) मो. 8989206576

●●

जगदीश राय कुलारियां

साँप

कई दिनों से बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। लोग पशुओं के चारे के लिए भी परेशान थे। साहसी लोग सिर पर खाली बोरियाँ ओढ़ खेतों में से चारा लेने जा रहे थे।

अपने इकलौते बेटे जीत को खेत की ओर जाते देख, प्रीतम कौर के मुख से निकल गया, ‘पुत्तर! जरा देख कर जाना। इस मौसम में ससुरे साँप-सँपोलिए सब बाहर निकल आते हैं।’

इस एक वाक्य ने उसके जीवन के पिछले जछों को हरा कर दिया। उसे याद आया कि पति की रस्म-पगड़ी के बाद रिश्तेदारों ने जोर देकर उसके जेठ के बड़े बेटे को उनके पास सहारे के रूप में छोड़ दिया था। एक रात अचानक उसकी नींद खुल गई। उसने देखा कि वह लड़का उसकी सो रही जवान बेटियों के सिरहाने खड़ा कुछ गलत करने की चेष्टा कर रहा था।

‘जा निकल जा मेरे घर से। ज़रूरत नहीं है मुझे तेरे सहारे की मैं तो अकेली ही भली भगवान सहारे अपनी मेहनत मज़दूरी से बच्चों को पाल लूँगी जा तू दफा हो जा।’ अगली सुबह रोते हुए उसने जेठ के लड़के को घर से बाहर कर दिया था।

‘जानवर तो छेड़ने पर ही कुछ कहते हैं, उसका तो पता होता है कि भई नुकसान पहुँचा सकता है, पर आस्तीन के साँप का क्या पता कि किस वक्त डस ले।’ अतीत की बातों को याद करते हुए प्रीतम कौर का मन भर आया।

सम्पर्क : मानसा (पंजाब) मो. 9501877033

●●

जितेन्द्र गुप्ता

अंतर

‘माँ, नींद नहीं आ रही। कहानी कहो न।’

पाँच साल के सोनू ने बिस्तर पर लेटे-लेटे माँ, मधु से मनुहार की। आतंकियों से मुठभेड़ में शहीद हुए लेफ्टीनेंट अरुण की पत्नी थी मधु। पति की मृत्यु के बाद मिले रुपये घर बनवाने में खत्म हो गये। घर में बूढ़े सास-ससुर भी थे। बस, पेंशन पर किसी तरह गुजारा हो रहा था। नन्हा सोनू हालात रोज देखता और जल्दी से जल्दी बड़ा होकर माँ के लिये, दादा-दादी के लिये कुछ करना चाहता था। बेटे को पढ़ा-लिखा कर फौजी बनाना ही सपना था इसलिये रोज पति की बहादुरी के किस्से सुनाती और रोज हँसकर पूछती, ‘मेरा राजा बेटा क्या बनेगा?’ पहले तो सोनू झट से, कभी फौजी, कभी डॉक्टर, तो कभी-कभी पायलट कह देता था।

आज भी सुबह जब मधु ने हँसकर पूछा, ‘मेरा राजा बेटा क्या बनेगा?’

‘सोचूँगा।’ सोनू का जवाब अचकचा गया था मधु को। मन में कुछ खटक रहा था। अचानक सोनू उठकर बैठ गया।

‘मैंने सोच लिया माँ। क्या बनना है बड़े होकर। खूब पैसे कमाऊँगा। फिर हम सब खूब आराम से रहेंगे।’ सोनू की आँखों में चमक थी।

‘अच्छा वो कैसे?’

‘आतंकी बनकर सरेन्डर कर दूँगा।’

मधु सन्न थी और सोनू की निगाह अटकी थी, अखबार में छपी न्यूज पर..

सीमा पर हुए शहीद की शहादत को दस लाख और सरेन्डर करने वाले आतंकी को दो करोड़...। अंतर का दायरा बहुत बड़ा था।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9229203028

●●

तारिक असलम तस्नीम

चरित्र

सुबह का समय था। नाश्ते के बाद बस यों ही हम दोनों पोर्टिको में खड़े थे। एकाएक रहमान साहब के घर से बुर्के में ढँकी एक औरत निकली तो मैंने यों ही पत्ती से पूछ लिया—‘रजिया, यह कौन है जो बुर्के पहनने के बावजूद काँधे से बैग लटकाये जा रही है?’

‘अजी, आपने नहीं पहचाना। यह रहमान साहब की पोती है। कॉलेज जा रही है। मगर यह बुर्का सिर्फ़ कॉलोनी से बाहर निकलने तक के लिए पहनती है।’ उसने तल्ख लहजे में बताया।

‘तुम्हारा मतलब? मैं समझा नहीं।’

‘अजी! एक दिन मैंने आँखों से देखा है कि वह मेन रोड पर पहुँचते ही नकाब उतार कर बैग में रख लेती है और जींस पैंट के ऊपर टी शर्ट पहन कर कॉलेज चली जाती है।’

‘अरे, यह तो कमाल की बात है।’

‘हाँ जी, यही तो चरित्र है। दोहरी जिंदगी जीती हैं सबकी सब। खुदा खैर करे।’

सम्पर्क : पटना पश्चिम (बिहार) मो. 6202743655

दीपक मशाल

सहजीविता

सफेद कबूतर और कबूतरी के उस जोड़े ने दुनिया देख रखी थी और वो बहेलिया था कि उन्हीं के घोंसले वाले पेड़ के नीचे अपने दाने, जाल और आस बिछाए था। कबूतर और कबूतरी ने एक-दूसरे की तरफ देखा, मुस्कुराए और फिर भोजन की तलाश में पास के कस्बे की तरफ उड़ गए।

मगर शाम होते-होते जब कबूतर को कहीं से भी दाने हासिल न हुए तो खाली ही अपने घोंसले में लौट आया। वापस आकर पता चला कि कबूतरी के साथ भी वही हुआ। मारे भूख के दोनों का बुरा हाल था, नीचे देखा तो जाल और दाने अभी भी बिछे हुए थे। कबूतर ने कबूतरी से पूछा, ‘क्या कहती हो? खाया जाए?’

‘पगला गए हो क्या? एक रात भूखे नहीं सो सकते, चार दानों के लिए जान जोखिम में डालने पर तुले हो।’ कबूतरी ने गुस्सा दिखाते हुए कहा।

‘घबराओ मत प्रिये, मैं पता करके आया हूँ। कस्बे में मंत्री जी कल एक खेल प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में हमें अपने हाथों से शांति के प्रतीक के रूप में उड़ाने वाले हैं, जिसके लिए ही ये बहेलिया हमें पकड़ना चाहता है। सिर्फ़ एक रात की बात है, अभी खाना भी मिलेगा और कल आज़ादी भी।’

वो युगल मुस्कुराते हुए दानों पर जा बैठा, झाड़ी में छिपे बहेलिये ने जाल खींच लिया।

सम्पर्क : जालौन (उ.प्र.) मो. 033-753742132

देवी नागरानी

आपको क्या चाहिये

घर की चौखट से बाहर पड़ते ही जैसे सड़क पर पाँव रखा, सामने से आती हुई जानी-पहचानी महिला मिली जो संवाद का सहारा लेकर मेरे साथ-साथ राह पर चलती रही। मेरे साथ चलते हुए मेरे मेहमान प्रोफेसर दीक्षित जी, मर्यादा का दुशाला ओढ़े हम दोनों के पीछे-पीछे तन्मयता से चलते रहे।

वह महिला बार-बार पीछे मुड़कर देखती रही और फिर एक जगह अचानक रुककर पीछे मुड़ी और उस अपरिचित प्रोफेसर की ओर देखते हुए बोली- “आपको क्या चाहिये? क्यों हमारा पीछा कर रहे हैं आप?”

मैं हक्की-बक्की विस्मयता के महाजाल में फँसी रही। एकाएक मैंने उस महिला को संबोधित करते हुए कहा। ये मेरे साथ हैं।

सम्पर्क : मुंबई (महा.) मो. 9987928358

●●

दर्शना जैन

मदद से चूंके नहीं

‘दो दिन से भूखा हूँ साहब, कुछ मदद करो साहब, भगवान आपका भला करेगा।’ भिखारी के ये शब्द सुनते ही दानिश ने जेब से पचास रुपये का नोट निकाला और भिखारी को देते हुए कहा, ‘यह लो, जाकर पहले खाना खाओ।’ भिखारी दुआ देते हुए चला गया। एक दिन फटे-पुराने कपड़े पहने एक बच्ची दिखी तो उसे पास की कपड़े की दुकान पर ले गया और बच्ची से बोला, ‘बेटी, तुम यहाँ से ड्रेस पसंद कर लो, जो तुम्हें पसंद होगी मैं दिला दूँगा।’ पहले तो बच्ची ने मना किया पर दानिश के बहुत कहने पर दो ड्रेस पसंद कर लीं। दानिश ने दुकानदार को पैसे दिये, बच्ची ने दानिश को धन्यवाद दिया और खुशी खुशी घर चली गयी। दानिश ने सोच रखा था कि घर से ऑफिस के रास्ते में कोई भी जरूरतमंद मिला तो वह उसकी मदद करेगा, वैसे तो उसके ऑफिस का समय आठ बजे का था पर अपने इस सेवाभाव को अंजाम देने के लिए दानिश एक घंटे पहले ही निकल जाता।

ठंड बहुत थी उस दिन दानिश वैसे ही ऑफिस के लिये थोड़ा लेट हो गया था। मनोज, जो कि उसका सहकर्मी था, ने लिफ्ट माँगी। अब मना करना अच्छा नहीं लगता सो दोनों साथ हो लिये। रास्ते में किसी गरीब व्यक्ति को ठंड से ठिरुता देख दानिश ने अपनी आदत के मुताबिक कार रोकी। मनोज बोला, ‘क्या हुआ, कार क्यों रोक दी?’ दानिश ने गरीब व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘उसकी सहायता करने के लिये।’ मनोज बोला, ‘ऐसे लोग तो सड़क पर बहुत मिलते हैं, तुम कहाँ इसकी मदद करने को रुक रहे हो, तुम्हें पता नहीं ज्यादातर तो झूठ बोलकर, दिखावा करके हमें लूटते हैं। हमें वैसे ही देर हो रही है, अभी चलो, मदद करना ही है तो आते समय कर लेना।’ दानिश ने घड़ी देखी, सच में देर

हो रही थी इसलिये शायद पहली बार दानिश को वहाँ से मन मसोसकर आगे बढ़ा पड़ा। लौटते हुए दानिश सुबह वाले उस ठंड में कुड़कुड़ते हुए व्यक्ति को देखने सुबह वाली जगह पर रुका, वहाँ बहुत भीड़ लगी थी, दानिश ने उतरकर देखना चाहा कि माजरा क्या है? उसने जो देखा वह उसकी आँखों को रुलाने के लिए काफी था क्योंकि उस गरीब की ठंड के कारण मौत हो गयी थी।

दानिश ने भीगी पलकों से तय किया कि आज के बाद वह किसी भी तरह से भ्रमित हुए बिना अपने सही पथ को नहीं छोड़ेगा और चाहे कितनी भी देर क्यों न हो रही हो वह किसी की ओर मदद का हाथ बढ़ाने में देर नहीं करेगा।

सम्पर्क : खंडवा (म.प्र.) मो. 9827502066



ध्रुव कुमार

हिम्मत

बारी-बारी से सबने हिम्मत दिखाई लेकिन पास पहुँचते ही उस काली-बिल्ली की गुराहट ने सबके कदम पीछे हटने को विवश कर दिया। बिल्ली सीढ़ी के रास्ते नीचे आँगन में उतर आई और भोजन की तलाश में लुक-छिप कर एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम रही थी। इसी बीच श्याम छत की सीढ़ी के किवाड़ बंद कर नीचे आ गया। घंटे भर बाद बिल्ली सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे आ-जा रही थी। बिल्ली की इस उलझन को घर के सभी छोटे-बड़े सदस्य समझ रहे थे। जैसे ही कोई किवाड़ खोलने सीढ़ियों की ओर बढ़ता, बिल्ली आक्रामक मुद्रा में गुर्जती और सबको पीछे हटने को मजबूर कर देती।

घंटे-डेढ़ घंटे की कवायद ने सबको थका दिया लेकिन बिल्ली के आक्रामक तेवर में नरमी नहीं दिख रही थी। अंत में माँ बोरे की चट्टी सिर पर ओढ़ कर सधे कदमों से आगे बढ़ती गई। सँभल कर माँ लौट आओ, बिल्ली झपट्टा न मार दे। तमाम निर्देशों और गुहार को अनसुनी करती माँ सीढ़ियाँ चढ़कर चैताल तक पहुँच गई। किवाड़ खुलते ही सीढ़ी के एक कोने में दुबकी बिल्ली खुली छत की ओर दौड़ पड़ी।

माँ के चेहरे पर संतोष की लकीरें थीं, एक बार फिर घरवालों को मुसीबत से निकालने की।

सम्पर्क : पटना (बिहार) मो. 9304455515



नीना सिंह सोलंकी

हाथों की बदौलत

आलीशान कोठी दुल्हन की तरह सजाई गई है। सारा हाल मेनीक्योर-पेडीक्योर से सुसज्जित, आधुनिक महिलाओं से ठसाठस भरा है। सभी खूबसूरती और नज़ाकत प्रदर्शन की प्रतियोगिता में अब्बल आने को आतुर हैं। मन्नू माँ के पास आकर बोली, ‘माँ दीदी की मेंहदी शुरू होने वाली है, दादी अभी तक नहीं आई।’ ‘बस बेटा पापा का फोन आया था वे पहुँच ही रहे हैं।’

तभी बाहर गाड़ी रुकने की आवाज सुनकर नमिता बोली, ‘लो बेटा दादी आ ही गई।’

सारी महिलाएँ अनुभव से दैदीप्यमान पर गाँव के रहन-सहन वाली उस बुजुर्ग महिला को ऐसे देखने लगीं मानों वे कोई अजूबा हों।

मेंहदी लगाने वाली आ चुकी थी। सबके हाथ आगे थे। जब उनकी बारी आई तो वे सकुचा कर हाथ पीछे करने लगीं। तभी नमिता ने आकर प्यार से उनका हाथ थाम लिया और बोली, ‘माँ लाओ आपके हाथ पर मैं मेंहदी लगाऊँगी।’

‘बहू तेरी सहेलियाँ क्या कहेंगी, मेरे ये खुरदुरे हाथ देखकर। मैं बाद में मेंहदी लगवा लूँगी।’

‘क्या कह रही हो माँ? इन हाथों की बदौलत ही तो आज ये सारी रौनक है।’

उन्होंने दोनों हाथ बहू के सिर पर रख दिये।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9977443184

●●

पंकज शर्मा

माँग नहीं सकता न

बस-स्टैंड पर खड़ा हुआ मैं, बस का इंतजार कर रहा था। मेरे सामने खड़ी बस में बैठा एक आदमी पकौड़े खा रहा था। उसने खाते-खाते पकौड़े का एक टुकड़ा करीब दस साल के उस लड़के के हाथ पर धर दिया, जो कुछ देर से उसकी सीटवाली खिड़की के पास हाथ फैलाए खड़ा था।

मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि लड़के ने झट से वह टुकड़ा अपनी शर्ट की जेब में डाल लिया। कुछ ही देर बाद वह मेरे सामने भी हाथ फैलाकर खड़ा हो गया।

मैंने उसके हाथ पर दो रुपए का सिक्का रखते हुए पूछा- ‘तुमने पकौड़ा खाया क्यों नहीं?’

अचानक पूछे गए इस सवाल से वह थोड़ा सकपकाया, पर अगले ही पल सँभलकर बोला- ‘यह मेरे भाई के लिए है।’

‘भाई के लिए क्यों?’ मैंने दूसरा सवाल भी पूछ लिया।

इस बार उसने अपने चेहरे पर खिलती हुई मुस्कान के साथ बताया- ‘क्योंकि वह अभी बहुत छोटा है। माँग नहीं सकता न, इसलिए।’

सम्पर्क : अम्बाला शहर (हरियाणा) मो. 9416860445

●●

पुरुषोत्तम दुबे

अलॉर्म

आँगन में गिरे सूखे पते हवा के हमले से मर्मर स्वरों में चीख रहे थे। आँगन में खड़ा पीपल का पेड़ पतझड़ की मार से पूरा नंगा हो चुका था। वैसे भी इस ज़हरीले समय में भला पीपल की छाँव की ज़रूरत किसे थी। घर वाले सब अपने घर रूपी दड़बे में दुबके हुए हैं। घर में बंद रहते हुए रामू के पाँव मानों बँध गये थे। ‘पड़े-पड़े पलँग तोड़ते रहते हो, यह नहीं कि आँगन में पड़ा कूड़ा-कर्कट ही बुहार दो? रोटियाँ ही

पचेंगी।' रामू की पत्नी ने ठण्डी फटकार लगाते हुए रामू से कहा।

'ठीक कहती हो भाग्यवान।' पत्नी के कहे से सहमत होकर बुहारा हाथ में लेकर रामू घर के आँगन में पसरे कचरे को बुहारने को हुआ।

'कूड़े - कचरे से भरे इस आँगन को सैनेटाइज्ड कर दिया है न बाबूजी?' आँगन में बिखरे सूखे कचरे के अथाह ढेर में से पीपल के एक बड़े सूखे पत्ते की आड़ से एक नन्हे तिनके ने मानों रामू को सावधान करने के लिए रामू से सवाल किया।

'क्या मज़ाक है?' कानों में पड़ी इस अप्रत्याशित ढंग की चेतावनी से पहले तो रामू सहम गया, फिर जिस दिशा से उस पर प्रश्न की मार पड़ी थी, उस दिशा की ओर रामू ने प्रश्नकर्ता को न पहचानते हुए जैसे हवा में सवाल दागा! फिर यक-ब-यक खुद से नर्म पड़ते हुए रामू ने सवाल पूछने वाले से उसका परिचय प्राप्त करना चाहा।

'मैं एक नन्हा तिनका हूँ बाबूजी।' फिर अपने परिचय में वह आगे बोला, 'सदियों से एक बात का वरदान हम 'तिनका समाज' को प्राप्त है। इसी के चलते मैंने आपसे आँगन को बुहारने से पहले उसे 'सैनेटाइज्ड' करने की बात कही थी।

'लेकिन इस बात से तुम्हरे परिचय का क्या सम्बन्ध?' रामू ने तिनके के परिचय में अव्यक्त रहस्य को जानना चाहा। पीपल के उसी सूखे बड़े पत्ते की आड़ से तिनके ने रामू को अपनी बिरादरी की विशेषता बताते हुए बड़े रोबीले स्वरों में कहा, 'संकट की घड़ियों में हम तिनके ही ढूबने वालों का सहारा बनते हैं बाबूजी।'

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 93295 81414

●●

पूरण सिंह

मैं चुप नहीं रहूँगी

शारदा ने अपने पति से आज तक कभी कुछ नहीं कहा। चाहे उसके बेटों ने कोई गलती की हो या फिर उसकी बेटी ने। उसके मायके वालों ने कुछ कहा हो या फिर ससुराल वालों ने, हमेशा दोष उसे ही दिया गया। किसी भी काम के बिगड़ने पर उसके पति उसे ही गलत ठहराते और वह चुपचाप सहन करती रहती। कभी कुछ नहीं बोलती, लेकिन अंदर ही अंदर कुछ टूटता रहता, बिखरता रहता। उसे कई बार तो ऐसा लगा कि अपनी जान ही दे दे, फिर सोचती शायद औरत की जिंदगी में यह सब कुछ होता ही है, इसमें नया क्या है। कितनी ही बार तो उसके पति ने उससे कहा भी- 'क्या शारदा, तुम कभी पलटकर जवाब भी नहीं देती। इतना चुप रहना ठीक नहीं है। मुझे भी लगता है कि मैं तुम्हें व्यर्थ ही डाँटता रहता हूँ। कई बार तो तुम्हारा दोष भी नहीं होता है। सच, तुम बहुत अच्छी हो।'

लेकिन शारदा हमेशा चुप रहती। पिछले महीने वह बहुत बीमार हो गयी। उसके बेटे, बेटी और पति परेशान होने लगे। कोई दवा काम नहीं करती। तभी उसके पति को लगा कि दवा के साथ-साथ दुआ भी करनी चाहिए सो मंदिर चले गए और भगवान के आगे प्रार्थना की और घर आकर शारदा से बोले, 'शारदा

आज मैंने भगवान से तुम्हारे लिए प्रार्थना की है। देखो, तुम जानती हो कि मैं कभी मंदिर नहीं जाता लेकिन तुम्हारे लिए मैं आज मंदिर गया था। जानती हो, मैंने आज भगवान से क्या माँगा?

शारदा कुछ नहीं बोली सिर्फ अपने पति को देखती रही थी। ‘तुम पूछोगी नहीं कि मैंने क्या माँगा।’ पति ने शारदा के सिर पर प्यासे हाथ फेरते हुए पूछा था।

शारदा ने आँखों ही आँखों में अपने पति से कह दिया- ‘बताओ आखिर क्या माँगा?’

‘मैंने भगवान से माँगा कि हे प्रभु अगले जन्म में भी तुम मुझे शारदा को ही देना। उन्हें ही मेरी पत्नी बनाना और हो सके तो जन्म-जन्म तक शारदा ही मेरी पत्नी बने। तुम देखना शारदा भगवान मेरी जरूर सुन लेंगे।’ पति ने अपनी आस्था व्यक्त की थी।

‘और अगर भगवान ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली तो मैं समझूँगी कि दुनिया में भगवान है ही नहीं।’ शारदा पहली बार चिल्लाकर बोली थी। ऐसा लगा था जैसे ज्वालामुखी फट पड़ा था- ‘क्यों माँगा तुमने मुझे जन्म-जन्म के लिए। इस जन्म में तुमने जो मुझे दिया, पहले उसके बारे में सोचते तब जन्मों की बात करते। स्वार्थी कहीं के।’ शारदा अब भी हाँफ रही थी। उसके पति उसके लिए प्रार्थना ही की थी लेकिन वह बुरा क्यों मान गई?

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9868846388

●●

प्रबोध कुमार गोविल

माँ

उसका बाप सुबह-सुबह तैयार होकर काम पर चला गया। माँ रोटी देकर ढेर सारे कपड़े लेकर नहर पर चली गई। वह घर से निकली ही थी कि उसी की तरह रुखे-उलझे-बालों वाली उसकी सहेली अपना फटा और थोड़ा ऊँचा फ्रॉक बार-बार नीचे खींचती आ गई। फिर एक-एक करके बस्ती के दो-चार बच्चे और आ गए।

“चलो, घर-घर खेलें।”

“पहले खाना बनाएँगे, तू जाकर लकड़ी बीन ला। और तू यहाँ सफाई कर दे।”

“अरे ऐसे नहीं! पहले आग तो जला।”

“मैं तो इधर बैठूँगी।”

“चल अपन दोनों चलकर कपड़े धोएँगे।”

“नहीं, चलो पहले सब यहाँ बैठ जाओ। खाना खाओ, फिर बाहर जाना।”

“मैं तो इसमें लूँगा।”

“अरे! भात तो खत्म हो गया। इतने सारे लोग आ गए... चलो तुम लोग खाओ, मैं बाद में खा लूँगी।”

“तू माँ बनी है क्या?”

सम्पर्क : जयपुर (राज.) मो. 9414028938

●●

प्रीति प्रवीण खरे

वैचारिक प्रदूषण

‘तितली, इस नयनाभिराम दृश्य को देखकर मेरा दिल झूमने और मन गाने को आतुर है।’

‘प्रकृति, मैं तुमसे सहमत हूँ...लेकिन अभी अपने दिल और मन को थाम के रखो....और हाल फिलहाल केवल आनंद लो।’

‘तितली, इनको देखकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो बसंत ऋतु का आगमन हो चुका है। टेसू के फूलों ने वातावरण को अपनी सुगंध से महका दिया है।’

‘तितली, मेरे जीवन में रंगों का विशेष स्थान है। ये जीवन को सकारात्मक ऊर्जा से भर देते हैं...क्या ये रंग तुम्हें भी उमंग से भरते हैं?’

‘प्रकृति, इन सवालों को अभी अपने पास रखो...वो देखो....कुदरत के बेशकीमती तोहफे को....चित्र में ही सही दीदार तो कर ही सकते हैं।’

‘सच कहा तितली! इंद्रधनुषी रंगों से सजे ये फूलों के पेड़ मानो गलबहियाँ कर रहे हैं।’

‘प्रकृति, इसमें तो ईसुरी के सुमधुर फाग का भँवरे गुंजार करते दिखाई दे रहे हैं।’

‘तितली, अरे वो देखो! ऐसा लग रहा है जैसे कोई तेजी से अपने दुपहिया वाहन के साथ, इस प्राकृतिक सौंदर्य को धता बताकर उस बियाबाँ की ओर बढ़ता जा रहा है।’

‘प्रकृति, शायद वह जान गया है कि चित्रों में रंग भरने से ही वास्तविक जीवन में खुशहाली नहीं आ सकती।’

‘तितली, सच्चे सुख को पाने के लिए नैसर्गिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन आवश्यक है।’

‘प्रकृति, शायद उसे इन चित्रों से संज्ञान प्राप्त हो चुका है।’

‘तितली, वो तो कर्तव्य निभाने को बेचैन है।’

‘प्रकृति, हाँ...तभी तो वह चल पड़ा है, इन चित्रों से प्रेरित हो, ऐसे समाज की नींव डालने...।’

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9425014719



प्रदीप शशांक

विखंडित न्याय

हाईकोर्ट के चक्कर लगाते-लगाते उसे चक्कर आने लगे थे। विगत पाँच वर्षों से उसका प्रकरण हाईकोर्ट में लंबित था। पेशी-दर-पेशी सुबह से शाम तक वकीलों के आगे-पीछे घूमने के बाद भी पेशियाँ बढ़ती ही जाती थीं- कभी जज साहब नहीं हैं, कभी विपक्ष का वकील नहीं है, कभी उसका स्वयं का वकील अनुपस्थित है। विगत पाँच वर्षों से वह हजारों रुपये वकीलों के चक्कर में बर्बाद कर चुका था, लेकिन उसके प्रकरण पर कोई सुनवाई शुरू ही न हो सकी।

अब जैसे-तैसे सुनवाई शुरू हुई ही थी कि वकीलों की हड़ताल... हाईकोर्ट विखंडन की खबरें...बचाओ...टुकड़े करो....पक्ष-विपक्ष की अपीलें! वकीलों द्वारा न्यायालय का बहिष्कार।

वह सोचने लगा- ‘हाईकोर्ट बचे या विखंडित हो उसे इससे क्या लेना और उसके जैसे हजारों पीड़ितों को तो बस इस बात की चिंता है कि उनका केस जल्द से जल्द निपट जाए।’

लेकिन कैसे?

सम्पर्क : जबलपुर (म. प्र.)

●●

प्रताप सिंह सोढ़ी

शर्मसार

यात्रियों से भरी बस में सीट न मिल पाने के कारण एक वृद्धा बस के हैंगर को पकड़े बड़ी देर से खड़ी थी। कई बार बस के झटकों से उसके हाथ से हैंगर छू जाता था और वह बस के यात्रियों पर गिर पड़ती थी। बैठने के लिये थोड़ी सी जगह के लिये कई यात्रियों से उसने अनुरोध भी किया। लेकिन किसी ने भी उस पर दया नहीं की। विकलांग सीट पर बैठा एक विकलांग बड़ी देर से उस वृद्धा की हालत देख परेशान हो रहा था। उसने बस के परिचालक को इशारे से अपने पास बुलाया और बोला ‘वो जो वृद्धा बड़ी देर से गिरती-पड़ती बस के झटकों को सहन करते हुए खड़ी हैं, उन्हें मेरी सीट पर बैठा दो।’

परिचालक ने विकलांग की सीट के नीचे पड़ी बैसाखियों को देखकर कहा, ‘तुम्हारी तो दोनों टाँगें ही नहीं हैं। ऐसी स्थिति में तुम बस में कैसे खड़े रह पाओगे।’

विकलांग ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘इसकी चिंता मत करो। मैं अपने हौसलों के बल पर खड़ा रहूँगा।’ बस यात्री दोनों की बातें सुन रहे थे। परिचालक के मन मस्तिष्क में विकलांग के शब्द- ‘मैं हौसलों के बल पर खड़ा रहूँगा’ गूँज रहे थे। इन शब्दों से प्रेरणा ले वह वृद्धा के पास जाकर विनयपूर्वक बोला ‘माँजी आप मेरी सीट (परिचालक) पर जाकर बैठ जाओ।’

परिचालक के इस वाक्य को सुनकर बस के यात्री शर्मसार हो गये।

सम्पर्क : इन्दौर (म. प्र.) मो. 8930235285

●●

प्रभात दुबे

दरख्त

अस्सी वर्षीय यूनुस मियाँ देश के लोकप्रिय शायर थे। वे एक मुशायरे में भाग लेकर तीन दिन बाद जब गाँव वापिस लौटे तो वे सहसा घबरा से गये। उन्होंने देखा कि गाँव की चौपाल में लगे उन हरे-भरे चार नीम के दरख्तों को बेदर्दी से कटवा दिया गया है। जिनके नीचे बैठ कर बरसों से गाँव की चौपालें लगा करती थीं, पंचायतें हुआ करती थीं। लोगों के मुकदमों के फैसले इन्हीं दरख्तों के नीचे हुआ करते थे। उन्होंने नजदीक से जाते हुए सरपंच को रोक कर पूछा- ‘सरपंच जी इन हरे-भरे दरख्तों को किसने और क्यूँ कटवा दिया?

सरपंच ने कहा - 'आपको नहीं मालूम सत्ताधारी पार्टी ने अपनी पार्टी का कार्यालय इसी स्थान पर बनाने का निर्णय लिया है। इसीलिये इमारत निर्माण के लिये इन दरखतों को कटवा दिया गया है। तब उस बुजुग शायर ने कटे हुए दरखतों की खाली जमीन को अपनी आँसू भरी आँखों से देखा और उनकी जुबाँ पर यह शेर उभर आया- वो दरखत भी अब कट गये गाँव में। फैसले होते थे जिनकी छाँव में।'

सम्पर्क : जबलपुर (म. प्र.) मो. 9424310984

●●

पुष्पा जमुआर

मैं हूँ न

वृद्ध पिता तिरंगे में लिपटे अपने बेटे के पार्थिव शरीर से लिपट कर चूमने लगा और थरथराती आवाज में कहा, 'भारत माता की रक्षार्थ मेरा बेटा अमर है। शहीद मरते नहीं। बह बेजार रोते-रोते चुप होकर फिर से कहने लगे - 'वह भारत माँ का सपूत है दुश्मन के घर में घुस कर मारा है। आँखें रो रही थीं होंठ थरथरा रहे थे। वृद्ध पिता का दुख असहनीय हो गया था। उनकी आँखें ही नहीं शरीर का रोयाँ-रोयाँ रो रहा था।'

'वह अपने पोते को गले लगा कर फफक पड़े। पिता अपने शहीद बेटे की कही गई बातों को वहाँ खड़े लोगों से व्यग्रता से कहने लगे - कहा करता था- 'पिता जी चिन्ता न करें आप मेरे ही कंधों पर पार उतरेंगे। किन्तु ईश्वर ने मातृभूमि की रक्षा लिए तुम्हें चुना, बड़े भाग्यवान हो बेटा।'

रोते हुए दादा को ढाठस बँधाते हुए आठ साल का पोता बोला - 'दादा मैं भी सैनिक बनूँगा। सीमा पर लड़के बदला लूँगा। मेरे पापा को मारा है, मैं पakis्तान के पापा को मानूँगा।' और सैनिकों की सलामी देते हुए देख कर उसने भी सलामी दी। वहाँ मौजूद सभी समवेत स्वर में भारत माता की जय, अमर शहीद जवान की जय बोल रहे थे। जयघोष से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। बच्चा भी उस स्वर में स्वर मिला कर पापा -पापा कह कर अपने पिता के शरीर से लिपट गया। वहाँ मौजूद सभी ने एक साथ मिलकर - भारत माँ की जय, शहीद 'महेश' अमर रहे। सँभल जाओ रे पakis्तान हिंदी का बच्चा-बच्चा है जवान। वातावरण देश भक्ति से ओतप्रोत हो रहा था। वृद्ध पिता ने अपने शहीद बेटे को फूलों की शैल्या पर बड़े प्यार से सुलाया और सलामी दी। और दुख भरे शब्दों में कहा - काश प्रभु ने मुझे और भी बेटा दिया होता तो मैं उन्हें भी भारत माता की रक्षा हेतु सौंपता कहते - कहते फूट-फूट कर रोने लगे। तभी पोता आगे बढ़कर दादा से बोला - दादा 'मैं - हूँ - ना' हिन्दुस्तान का सैनिक जवान। भारत माँ की रक्षा मैं करूँगा। सभी लोग ताली बजाकर बच्चे के हौसले पर नतमस्तक हो गए। शाम ढल रही थी। पुनः सैनिकों की सलामी के साथ शहीद 'महेश' विदा हो रहा था। श्रद्धा में सभी के सिर झुक गए थे।

सम्पर्क : पटना (बिहार) मो. 8848878820

●●

पवित्रा अग्रवाल

नाटक

‘बहू कल के लिए चने भिगो दिए? पूजन की दूसरी तैयारी भी करनी है। ...किन किन कन्याओं को बुलाना है, उनको भी खबर कर दे।’ बहू सब समझ गई थी फिर भी अनजान बन कर बोली –कल क्या है माँ जी? ‘अरे भूल गई, कल कुँवारी कन्याओं को जिमाने को बुलाना है, उनका पूजन करना है।’ नहीं माँजी यह त्पौहार अब मैं कभी नहीं करूँगी। क्यों?

‘आप भूल सकती हैं मैं नहीं। अपनी बेटी को कोख में मार दो और दूसरों की बेटियों को बुला कर पूजा करो ...सॉरी माँ अब यह नाटक मुझ से न होगा।’

सम्पर्क : हैदराबाद (तेलंगाना) मो. 9393385447, 7207175464

पूनम डोगरा

हथियार

एक घना भयावह गुबार उसे निगलने को हरदम मुस्तैद रहता है। वह उसे धकेलती, वह कुछ पीछे हट जाता, पर दूर नहीं, वहीं आसपास मँडराता रहता है।

कल बाहर दोनों सहेलियाँ गपबाजी में लगी थीं। उनकी फुसफुसाहट और उसके बाद के ठहाके वह समझ रही थी, वे बहुएँ थीं तो वह भी सास थी। जाने कैसे उसके कमरे का अकसर बंद दरवाज़ा, उस दिन खुला रह गया था।

‘अभी उठेंगी तो लीप पोत के निकल पड़ेंगी सैर सपाटे को।’

‘बूढ़ी घोड़ी.....’ और एक फुसफुसाहट भरी खिलखिलाहट।

उसने धीरे से अपने कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया। बिस्तर पर बैठ अपनी ठंडी हो चुकी चाय पीने लगी। आँखों से झरते आँसू चाय में घुलकर पेनकिलर बनते रहे। कई साल तो पति द्वारा चेहरे पर दिए निशान गाढ़े मेकअप से ढकती रही थी। जीवन ने चोट दी, तो झेलने के हौसले भी! शनैः-शनैः लाउड होना उसके व्यक्तित्व का हिस्सा ही बन गया था। जिस दिन अधिक डिप्रेस होती उस दिन अधिक चटख रहती वह, और उसकी लिपस्टिक! उसने उठकर दर्पण में अपना साफ़ धुला चेहरा देखा। कितने सारे भद्दे निशान थे चेहरे पर। कुछ पति के हाथ के मैडल थे और रही सही ट्रॉफी कैंसर ने जड़ दी थी। जिस हौसले से जिंदगी से लड़ी, उसी हौसले से कैंसर को पछाड़ा भी था।

वह देर तक खुद में खोयी रही। मौका देख, सलेटी गुबार धीरे-धीरे, बिना आहट उस से लिपटने लगा। उसकी ठंडी नमी की बोझिल गंध से वह सहसा सजग हुयी। इससे पहले गुबार उसे पूरा निगल जाए, उसने झट बड़े-बड़े लाल नीले फूलों वाली साड़ी निकाली, और सबसे चटख लिपस्टिक!

सम्पर्क : उताह (यू.एस.ए.)

पवन जैन

फाउंटेन पेन

उस जमाने में बी. ए. प्रथम श्रेणी से पास होने पर बाबू जी को कालेज के प्राचार्य ने पारितोषिक स्वरूप दिया था यह पेन। बाबू जी ने न जाने कितनी कहानियाँ, कविताएँ लिखीं। हमेशा उनकी सामने की जेब में ऐसे शोभा बढ़ाये रखता जैसे कोई तमगा लगा हो।

मेरी पहली कहानी प्रकाशित होने पर बाबू जी ने प्रसन्न हो कर मेरी जेब में ऐसे लगाया जैसे कोई मेडल लगा रहे हों।

आज बाबू जी की पुण्य तिथि पर उनकी तस्वीर पर माला चढ़ा कर, पेन साफ कर, स्याही भर के शर्ट के सामने की जेब में खोंस कर एक सिपाही की तरह सीना तान कर कार्यालय पहुँचा।

लिखने के लिए एक-दो बार पेन निकाला पर हाथ काँप गये, कुछ न लिख सका।

न जाने क्यों आज बाबू जी की हिदायत बार-बार मेरे कानों में गूँज रही थी-

‘बेटा इस पेन से कभी झूठ नहीं लिखना,

और न ऐसा सच जिससे किसी का अहित हो।’

मैं कच्छहरी का बड़ा बाबू दिन भर उस पेन को जेब में खोंसे रहा। घर आकर पिता जी की फोटो के साथ टिका दिया, उनके नाम का दीपक जलाकर।

सम्पर्क : जबलपुर (म. प्र.) मो. 9425324978

●●

प्रेरणा गुप्ता

बसंती चावल

सात फेरों के तुरंत बाद वीणा को ससुराल में विदा होकर आए अभी दो घंटे भी नहीं बीते थे कि बुआ जी की टग्गाकेदार आवाज सुनाई दी, ‘भाभी ओ भाभी... आज अपनी बहुरिया से रोटी-छुआई की रसम जरूर करवा लेना। कल तो हम चले जायेंगे। जरा हम भी तो चखें, बहुरिया खाना कैसा पकाती है?’

सासू माँ की आवाज गले में फँसने लगी, और जिज्जी, वो.... अभी तो आई है ... रात भर की जगी हुई..।

अरे भाभी, क्या इतनी नाजुक है तुम्हारी बहुरिया। हम तो बारह बरिस की व्याह कर गये थे, जाते ही सास ने चूल्हे में झोंक दिया था। इतनी भी हिम्मत ना थी कि चूँ-चपड़ करते और देखो पहले मीठे बसंती चावल ही बनवाना, क्योंकि आज बसंत-पंचमी है न।

वीणा सासू माँ का मुँह देखने लगी और धीरे से डरते-डरते बोली, ‘माँ, मुझे बसंती चावल बनाने नहीं आते ... कहें तो मैं बसन्ती रंग डाल कर खीर बना दूँ।’

बुआ जी की त्योरियाँ सातवें आसमान पर चढ़ गई, ‘वाह भाभी वाह! तुम तो अपनी बहुरिया का

बड़ा बखान करती थीं कि साक्षात् सरस्वती है! पढ़ी-लिक्खी आई है! इतनी उम्र में, अपनी अम्मा से कुछ तो सीखा होगा?’

इतने में आनन्द बूँदी के लड्डूओं का डिब्बा लेकर खुशी से लहराता हुआ आया और सबसे पहले उसने अपनी नई नवेली दुल्हन का मुँह मीठा किया। फिर हँसते हुए बोला, ‘अरे बुआ जी बधाई हो बधाई। आपकी बहुरिया सचमुच साक्षात् सरस्वती है। देखिये, आज ही इसकी एक पुस्तक छपकर आई है।’ बुआ जी लड्डू न खाने के लिए अपना मुँह बंद किये, लाल-पीली होती ऊँ-ऊँ किये जा रही थीं और आनन्द बसंती रंग का लड्डू उनके मुँह में खिलाने के लिए टूँसता जा रहा था।

सम्पर्क : कानपुर (यू.पी.) मो. 8299872841



बलराम

मसीहा की आँखें

देश कठिन परिस्थितियों के भँवर में फँसा डोल रहा था। लोकतंत्र का सूरज अब ढूबा कि तब ढूबा वाली स्थिति थी। बुरी तरह से डरी हुई जनता चुप थी, अडोल। कहीं कोई जुंबिश नहीं हो रही थी कि तभी परिवर्तन का मसीहा उठ खड़ा हुआ, सामाजिक क्रांति की अलख जगाने। सोए हुए लोग जैसे अचकचाकर नींद से उठ बैठे। जहाँ कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता था, उसी फूलबाग में मसीहा के नाम पर हजारों लोग इकट्ठा हो गए।

अपनी बुलंद आवाज में मसीहा ने देश और समाज के हालात बयान करने शुरू किए। दम साधकर बैठी जनता गौर से सुन रही थी। उस समय वह भूल गई कि चारों तरफ आग्नेयास्त्र से लैस भारी पुलिस-बल घेरा डाले खड़ा है। बहुत संभव है कि ऐसे नाजुक मौके का फायदा उठाकर कोई सिरफिरा कुछ ऐसा कर बैठे कि पुलिस को गोली चलाने का बहाना मिल जाए। सैकड़ों लोग मरें, हजारों घायल हों और मसीहा को गिरफ्तार कर जेल के सीखचों में डाल दिया जाए। सो, आयोजकों ने मजबूत और पक्का इंतजाम किया था कि किसी भी तरह की बदअमनी न फैलने पाए। भीड़ का क्या भरोसा! अंजाम के बारे में कहाँ कुछ सोचती है वह! ऐसे में ही तो बड़े-बड़े हादसे हो जाते हैं।

उस दिन भी आखिर हो ही गया। एक सिरफिरा बिजली की फुर्ती से मंच पर चढ़ गया और मसीहा के हाथ से माइक छीन लिया। आयोजक सोच-समझ ही न पाए कि यह सब कैसे हो गया। इस अप्रत्याशित को देखकर वे हक्के-बक्के रह गए।

सभा में दहशतनाक सन्नाटा पसर गया और कुछ पल बाद आयोजकों में भागा-दौड़ी मच गई। सिरफिरे को पकड़कर मंच से नीचे फेंक देने को तत्पर लोगों से मसीहा ने शांत रहने की अपील करते हुए उस युवक की बात सुन लेने का आग्रह किया।

सिरफिरे ने मंच पर जाकर मसीहा से सवाल करने की इजाजत माँगी थी, जो व्यवस्था और सुरक्षा के नाम पर उसे नहीं मिली। सो, उसे यह दुस्साहस करना पड़ा। माइक अब उसके हाथ में था और मसीहा उसके सामने, उसकी पहुँच के भीतर।

“महामना, आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ।”

“पूछिए, जरूर पूछिए।”

“इस भ्रष्ट और जनविरोधी सरकार से आप सत्ता छीन क्यों नहीं लेते?”

क्रांति और संघर्ष का बिगुल बजाते-बजाते मसीहा के पाँव थक चले थे और हाथों में ताकत की कमी महसूस होने लगी थी। आँखों की ज्योति धुँधला गयी और गुदों की क्षमता घट गई, लेकिन सिरफिरे के सवाल से जैसे उसकी जीवनी शक्ति में अचानक इजाफा हो गया। पाँवों में जैसे शक्ति लौट आयी। हाथ भी मानो दूनी शक्ति से संपन्न हो उठे। दूर, बहुत दूर क्षितिज में उसे परिवर्तन का सूर्य उगता नजर आया। कुछ पल चुप रहने के बाद मसीहा ने सिरफिरे से पूछा, “छीन तो लें भाई, मगर कैसे?”

“ऐसे।” मसीहा से छीने माइक को अपनी मुट्ठी में करने उसे उनकी आँखों के आगे करते हुए उसने कहा, “जैसे मैंने आपसे माइक छीन लिया।”

“मैं सिर्फ इतना ही नहीं करना चाहता भाई, मेरा लक्ष्य संपूर्ण परिवर्तन है, सत्ता हथियाना भर नहीं।” कहते-कहते व्यवस्था परिवर्तन को आतुर मसीहा की स्नेह विहँत आँखें डबडबा आयीं और आगे बढ़कर उसने सिरफिरे को बाँहों में भर लिया।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 8826499115

●●

बबिता चौबे

धरा की प्यास

‘आह! ओह!’ धरा लगातार कराह रही थी शरीर में जगह-जगह गड्ढे। जगह-जगह दरारें पड़ गई थीं। तन का आवरण मिटटी-धूल बन उड़ रहा था।

‘ओ क्षितिज... मुझे प्यास लगी है... तन जल रहा है और तुम देख रहे हो।’ जल से रहित प्यास से तड़पती धरती ने गगन की ओर कातर द्रष्टि से देखकर कहा।

‘अरे धरा ओ प्रिय मैं... क्या करूँ... क्या करूँ। मुझसे भी तुम्हारी यह दशा और जलन देखी नहीं जाती पर...।

‘पर क्या व्योम तुम नहीं तो कौन मेरी प्यास व तपन मिटायेगा बोलो।’

‘अरे प्रिया... मैं तो हमेशा ही तुम्हें हरा-भरा खिलखिलाता देखना चाहता हूँ, अमृत बरसाना चाहता हूँ पर...।’ ‘ओहो फिर पर... पर क्या व्योम? क्या मेरी तड़प जलन तुम्हें व्यथित नहीं करती?’

‘क्यों नहीं करती रे... मगर... मगर... तुम्हारी सन्तान ने ही तुम्हें और मुझे अपाहिज करके रख दिया है.. अब वृक्ष नहीं। हरे-भरे वन नहीं... तो जल कैसे बरसाऊँ... कैसे?’

बेबस व्योम की आँख से टपकी आँसुओं की कुछ बूँदे ओस बन धरा के घावों पर मरहम बनकर शीतलता देने लगीं।

सम्पर्क : दमोह (म. प्र.) मो. 9644075809

●●

बरखा दुबे शुक्ला हारी हुई बाजी

मोहनलाल ने ज्यों ही बेटे से बात करके मोबाइल रखा पत्नी रीमा ने पूछा ‘कब आ रहा है राहुल।’
‘वो शायद न आ पाए।’ मोहनलाल बोले।
‘क्यों, ये क्या बात हुई भला इकलौती छोटी बहन की शादी में नहीं आ रहा।’ पत्नी बोली।
‘हाँ कह रहा था कोई ज़रूरी प्रोजेक्ट है, और अमेरिका से बार-बार आना संभव भी नहीं है।’
मोहनलाल ने बताया।
‘वाह, जैसे ये अकेले ही जॉब कर रहे हैं अमेरिका में, दूसरे भी समय-समय पर अपने देश आते हैं न।’ पत्नी बोली।
‘कह रहा था रुपए कहो तो और भिजवा देता हूँ।’ मोहनलाल बोले।
‘हमें नहीं चाहिए रुपए, गुड़िया सुनेगी भाई नहीं आ रहा है तो रो-रो कर परेशान कर देगी।’ पत्नी बोली।
‘ग़लती उसकी कहाँ है, मैंने ही तो प्रतिस्पर्धा की इस अंधी दौड़ में उसे बचपन से ही झोंक दिया था।’ मोहनलाल बोले।
‘आप ऐसा क्यों बोल रहे हैं।’ पत्नी बोली।
‘शुरू से ही उसे परिवार की किसी शादी में नहीं जाने देता था, बस स्कूल, कोचिंग, कॉलेज इसी में उसको लगाए रखा।’ मोहनलाल बोले।
‘हाँ सच ही कह रहे हो उसे कभी परिवार में, रिश्तेदारों से घुलने-मिलने ही नहीं दिया, मैं तो दोनों बहन-भाई के बीच की नोक-झोंक के लिए तरस ही गयी।’ पत्नी बोली।
‘तभी तो बहन की शादी उसके लिए मायने ही नहीं रखती। बेटे का कैरियर बना कर उसे तो ज़िंदगी की बाजी जिता दी, पर इस दौड़ में खुद बेटे को हार गया।’ मोहनलाल रुँधे गले से बोले।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9753870800

●●

भारत यायावर

काम

“बाबू!”
“जा भाग, साले पैदा हुए लगे माँगने भीख।”
“बाबूजी, बहुत भूखा हूँ...”
“बहुत भूखा है?”
“हाँ!”
“खाना खाएगा?....चल मेरे साथ। तुझे रोटी दूँगा, पर तुझे काम करना होगा। बोल, करेगा काम?”

“अरे थोड़ो भाई, इन लोगों को मुँह क्यों लगाते हो? कुछ देकर चलता करो!”

“हाँ, साब!”

“क्या?”

“चलता करो। मेरा धंधा खराब हो रहा है। बहुत टैम लग गया।”

“तो तुम भीख माँगोगे, पर काम नहीं करोगे?”

“वाह साब, तो यह काम नहीं है?”

सम्पर्क : हजारीबाग (झारखण्ड) मो. 9835312665

●●

भुपिंदर कौर

खरपतवार

‘अरे देखो ये कार से उतर कर कौन से लोग आ रहे हैं।’

भाँग बोली ‘जिसके खेत हैं वही होगा।’

‘हूँ।’

‘हाँ जी, देखो ये तेरे खेत की जगह है भागवान।’

‘हाँ, पर हमें यहाँ तो भाँग व खरपतवार ही दिख रही है।’

‘हाँ पर अब हम इसे साफ करवा कर कुछ ऐसे पौधे लगवाएँगे जिसकी ज्यादा देखरेख न करनी पड़े। ज्यादा पानी की जरूरत नहीं पड़े थोड़ी बहुत देखरेख में ही फल-फूल जाए।’

‘वो कैसे पेड़ लगाएँगे।’

‘जैसे पेपर के पेड़ बहुत बड़े होते हैं उसको देख रख की ज्यादा जरूरत नहीं होती।’

‘अरे वही जिससे माचिस की तीलियाँ बनती हैं।’

‘अरे फिर भी हमें कभी-कभी तो देखने आना पड़ा करेगा।’

‘अरे, तुम इसकी चिंता मत करो, मेरे भाई के दोस्त को यह काम सौंप देंगे वो बखूबी निभा लेगा।’

‘आपके पास भगवान का दिया इतना कुछ है फिर भी आप इस जमीन पर कुछ न कुछ बोकर पैसे हासिल करना चाहते हैं।’

खरपतवार बहुत ही घबराकर रुआँसी होकर कह उठी- ‘बहन अब तो हमारा अंत निश्चित है। अभी अभी जो लोग आए थे वो खरपतवार हटाकर कुछ बोने की बात कर रहे थे।’

भाँग बोली ‘अरे भाई तुम निश्चितता से लहराते रहो, खुश रहो कुछ नहीं होने वाला।

पूत के पाँव पालने में ही...।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र) मो. 9685278181

●●

महावीर रवांल्टा

समझौता

किसी बात पर पति-पत्नी में झगड़ा हो गया तो पत्नी ने गुस्से से घर छोड़ने की धमी दे दी-
‘अगर तुम्हें घर छोड़ना ही है तो छोड़ क्यों नहीं देती, कौन रोकता है तुम्हें।’ पत्नी को उलाहना देता
हुआ पति आवेश में फट पड़ा था।

पति के शब्द सुनकर पत्नी का सारा गुस्सा हवा हो गया और वह पति के बारे में सोचने लगी थी,
यही पति था जो उसकी एक दिन की जुदाई भी सहन नहीं कर सकता था, आज उससे घर छोड़ने की बात
कर रहा था।

उसे लगा वह किसी चौराहे पर निर्वस्त्र खड़ी है और अनगिनत निगाहें उसका पीछा कर रही हैं।
इसके बाद उसने फिर कभी पति के सामने घर छोड़ने की जिद नहीं की, बस उसकी सुनती रही।

सम्पर्क : उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

●●

डॉ. मुक्ता

कोहराम

रेवती के पति का देहांत हो गया था। अर्थी उठाने की तैयारियाँ हो रहीं थीं।

उसके तीनों बेटे गहन चिंतन में मग्न थे। वे परेशान थे कि अब माँ को कौन ले जायेगा? उसका
बोझ कौन ढोयेगा? उसकी देखभाल कौन करेगा? इसी विचार-विमर्श में उलझे वे भूल गये कि लोग
अर्थी को कांधा देने के लिये उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

शमशान से लौटने के बाद रात को ही तीनों ने माँ को अपनी-अपनी मजबूरी बताई कि उनके लिये
वापिस जाना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने माँ को आश्वस्त किया कि वे सपरिवार तेरहवां पर अवश्य लौट
आयेंगे। उनके चेहरे के भाव देख कोई भी उनकी मनःस्थिति का अनुमान लगा सकता था। उन्हें देख ऐसा
लगता था मानो एक-दूसरे से पूछ रहे हों - ‘क्या इंसान इसी दिन के लिये बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा
करता है? क्या माता-पिता के प्रति बच्चों का कोई कर्तव्य नहीं है?’ वे आँखों में आँसू लिये हैरान, परेशान
चिंतित एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। उनके भीतर का कोहराम थमने का नाम नहीं ले रहा था।

ऐसी स्थिति में रेवती को लगा, सिर्फ पति ही नहीं, शेष संबंधों की डोरी भी खिंच गयी है। उसके
टूटने की आशंका बलवती होने लगी है।

सम्पर्क : गुरुग्राम (हरियाणा) मो. 9312212155

●●

मुकेश वर्मा

प्लेटफार्म से लौटते हुए

वह मेरे सामने डिब्बे में घुसा। फिर ओझल हो गया। स्टेशन पर बहुत भीड़ है। मैं असहाय-सा ट्रेन की खिड़की के सर्कचे को पकड़े खड़ा रह गया। छड़ का लोहा ठंडा और सख्त है। उन कुछ मिनटों में घबरा भी गया हूँ। मुझे एकाएक गुजर चुके दिन याद आ गए। इस तरह घबरा जाना उन दिनों कहाँ था। मैं अपने विचारों में खोया जा रहा हूँ भीतर और भीतर कोई जैसे खींच रहा हो कानों के करीब किसी ने कहा-“हैलो”। मैंने देखा। डिब्बे के भीतर वह खिड़की में से झाँक रहा है।

थोड़ा झुककर वह खिड़की के करीब सीट पर बैठ गया वह चुप है और बीच-बीच में स्टेशन की खिड़की देख लेता है। मुझे याद आया, ऐसा मैं भी करता था, खिड़की वाली सीट पर बैठना और बाहर झाँकना, जहाँ मेरे पिता रहते थे और उनके पीछे दीवार पर एक घड़ी। थोड़ी बहुत तब्दीली के साथ वही स्टेशन, थोड़ी बहुत तब्दीली के साथ वैसा ही गाढ़ी, वैसे ही लोग, प्लेटफार्म पर लगभग वही भाग-दौड़ और वैसी ही एक घड़ी...सिर्फ जहाँ मेरे पिता खड़े हो जाते थे, वहाँ मैं खड़ा हूँ और खिड़की के पार अब मेरा बेटा है।...कब और कैसे ट्रेन धड़धड़ती निकल गई।

लौटते हुए मेरे पिता जा रहे हैं। मेरी कमीज में से उनके हाथ निकले हुए हैं, वही पहचाने ठंडे और पस्त हाथ। पैर उनके पैरों में बदल गए हैं। मैंने देखा कि मैं उन्हीं की तरह रुक-रुक कर चल रहा हूँ। मुझे आज पता चली कि वे एकदम नहीं लौटते थे। पत्थर की बेंच पर थके से बैठ जाते थे और अपनी कमज़ोर आँखों से जाती हुई ट्रेन के आखिरी डिब्बे को देख लेने की कोशिश करते थे, जैसे वह उनकी जिंदगी का देखा जाने वाला आखिरी डिब्बा है। तब शाम ऐसी ही उदास हो जाया करती थी। शर्म और रंज से लथपथ सूर्य लोको-शेड के पीछे मुँह गड़ा लेता था। बहुत देर बाद कहीं वे उठने की हिम्मत जुटा पाते और धीरे-धीरे घर की तरफ चलने लगते। पत्थर की बेंच पीछे छूट जाती है। पत्थर की सड़क पर सिर्फ एक साया रह जाता है, रुक-रुक कर चलता हुआ। अगले मोड़ पर वह साया गायब है।

स्टेशन पर फिर ट्रेन के आने की आवाज आ रही है।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9425014166

●●

मुकेश तिवारी

यह क्यों नहीं

अच्छा बताओ कैसा लगा वह शहर...अपने शहर से तो बहुत बड़ा होगा ना...चकाचौंध भी खूब होगी...जिस काम से गये हो उसके पूरा होने के कुछ आसार दिख रहे हैं या नहीं...।

बाहर गये पति से फोन पर वह बतिया रही है। यहाँ-वहाँ की बातों में कोई आधा घंटा बीत गया। तभी उसे याद आया सासू माँ ने कहा था उसका फोन आए तो दो मिनट मेरी भी बात करा देना बहू।

मम्मी...इनका फोन है यह कहते हुए उसने फोन उन्हें थमा दिया। माँ ने सिर्फ इतना ही पूछा... वहाँ रहने-खाने की ठीक व्यवस्था मिली की नहीं... खाना खा लिया बेटा...? उनके ऐसा पूछने के बाद बहुत देर तक यह सोचती रही...मैंने सब कुछ पूछा आखिर यह क्यों नहीं।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9425060460



माया मालवेन्द्र बदेका

अफवाह

वह बदहवास सी दौड़ती आई थी।

अम्मा जी मुझे काम से न हटाइये, अम्मा जी मुझ गरीब पर दया कीजिए।

क्या हुआ कमली? अचानक ऐसे क्यों दौड़ी चली आई है। कहा था ना तुझे अभी काम पर नहीं आना है।

नहीं-नहीं अम्मा जी मुझे कुछ नहीं हुआ है। कुछ लोग बोल रहे थे। अब काम बंद तो पैसा बंद। माहिने की पगार नहीं मिलेगी। अम्माजी बच्चों को क्या खिलाऊँगी। काम पर आती हूँ तो सब घर से मुझे थोड़ा बहुत बचा हुआ खाने को मिल जाता है, मुझे भी चाय मिल जाती है। पगार भी नहीं और बचा-खुचा भोजन भी नहीं?

बच्चे बीमारी से नहीं भूख से?...

नहीं-नहीं कमली तू इन फालतू की अफवाह पर ध्यान न दे और घर जा।

रुलाई आ गई कमली को बेबस कमली बस आँखों में बोल पड़ी-महामारी का नाश हो।

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 8349883002



मुरलीधर वैष्णव

पागल

बेटे ने अपने व्यापार के लिए चालीस लाख रुपयों के बैंक लोन का आवेदन किया था। जमानत उसके पिता रिटायर्ड मेजर विक्रम सिंह ने दी थी। उन्होंने इसके लिए अपने मकान-मालकियत के मूल कागजात भी बैंक को सौंप दिये थे। फिर भी बैंक के अनुसार उनके मकान की बाजारू कीमत का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक था। मेजर ने यह बात सुनी तो उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगा।

‘सर, क्या आप ही मेजर विक्रम सिंह जी हैं?’ मूल्यांकन अधिकारी ने रौबदार मूँछों वाले निक्कर-टीशर्ट पहने बगीचे में खुरपी कर रहे प्रौढ़ से पूछा-

‘यस, व्हाट कैन आई डू फॉर यू यंग मैन’ मेजर ने अपने काम में मशगूल रहते हुए पूछा।

‘सर, मैं आपके मकान का वेल्यूएशन करने आया हूँ।’

मेजर ने उस पर एक नजर डाली और मन ही मन मुस्कुरा दिए। साथ ही वे मूल्यांकन अधिकारी की नीयत भी भाँप गये थे।

‘ठीक है, मकान का बो क्या... मूल्य...मूल्य...हाँ, मूल्यांकन बाद में कर लेना। पहले इधर आओ।’
मेजर उसे अपने बगीचे में उगे पहाड़ी चमेली, हरसिंगार, रातरानी, बादाम, आँवला, जूही, मोगरा आदि के पेड़-पौधों की तरफ ले गया।

‘अहा! कितना सुंदर! क्या खुशबू है!’ अधिकारी विभिन्न रंगों के गुलाब की क्यारी को देखते हुए बोला।

‘चलो यहाँ से शुरू करते हैं। इस क्यारी में खिल रहे चार तरह के गुलाब सिर्फ हिल नहीं रहे हैं मिस्टर! ये आपको झुककर सलाम कर रहे हैं। इनकी कीमत कोई छः लाख रुपये समझिये... और हाँ, इस पहाड़ी चमेली के यंग पेड़ को देखिए। सबसे ज्यादा महक इस पर खिले सैकड़ों फूलों की ही है। यह बेशकीमती है। दस लाख की तो खाली इसकी महक ही है...एक मिनट, एक मिनट... इस हरसिंगार के नीचे बिछी नन्हे फूलों की यह चादर!... कम से कम पाँच लाख की तो होगी ही...’

अचंभित अधिकारी सम्मोहित सा कभी मेजर को तो कभी पेड़-पौधों को देखता रहा।

‘इधर, इस बादाम के पेड़ की डालियों की ओर भी देखो यंग मैन! एक, दो, तीन, चार... चार कमेड़ी, पाँच कबूतर बैठे हैं और इनके आस-पास कोई दस-बारह गौरेया फुदक रही हैं... बोलो, इस दृश्य की क्या कीमत लगाओगे? तीन लाख तो होगी ही... रुको, रुको, नाप जोख का सामान अभी मत निकालो। मकान की दीवार और इस छप्पर के नीचे लटक रहे यह बारह मिट्टी के घराँदे देख रहे हो? इनमें सात में गौरेया अपने छोटे बच्चों के साथ रहती हैं, तीन में कल ही अंडे दिये हैं... एक-एक लाख का एक-एक घराँदा है मिस्टर!’ अब अधिकारी मेजर को विस्फारित नेत्रों से देखने लगा।

‘इधर आओ... एक और कोना दिखाना हूँ तुम्हें। इस नीम के पेड़ की डालों पर तीन बड़े छीकें लटके देख रहे हो। एक में चिड़िया के लिए बाजरी, दूसरे में कबूतर-कमेड़ी के लिए ज्वार-गेहूँ और तीसरे में तोतों के लिए चने की दाल, मिर्ची, फल रखे हैं। और हाँ... इनके पास ही इनके लिए पानी के कुँड़िये भी लटक रहे हैं। बोलो... क्या कहते हो पाँच लाख तो इसके भी लगाओगे ही।’

अब मेजर ने पास ही पड़ी अपनी गन उठा ली, ‘उधर जंगल है न! कभी-कभी इसके इस्तेमाल की भी जरूरत पड़ जाती है।’ मूल्यांकन अधिकारी गन देखकर घबरा गया। वह बगीचे से आया और अपनी मोटरसाइकिल को किक लगाने लगा।

‘मकान का नाप जोख नहीं करोगे?’ मेजर मुस्कुराते हुए बोला।

‘सर नहीं... बस हो गया...’

‘आज सुबह-सुबह किस पागल से पाला पड़ा है’ मन ही मन यह बड़बड़ाते हुए उसने जल्दी से मोटर साइकिल को किक मारी।

सम्पर्क : जोधपुर (राजस्थान)

●●

महिमा (श्रीवास्तव) वर्मा

अनमोल

एक साथ दो-तीन बार घंटी बजने से चिढ़ते हुए मानसी ने दरवाज़ा खोला, तो सामने एक सब्जी वाले को देख उसे गुस्सा आ गया।

‘सब्ज़ी नहीं लेना मुझे’ रुखे स्वर में कहते हुये वो दरवाज़ा बंद करने को हुई कि सब्जी वाले ने उसके सामने एक पैकेट कर दिया ‘ये आपके लिये।’ पैकेट में दो-तीन प्रकार के फल और कुछ ताज़ी सब्जियाँ देख मानसी ने हैरानी से पूछा ‘ये किसने भिजाये हैं?’

‘मेरी तरफ से। आप ने शायद मुझे नहीं पहचाना?’ कहते हुए उसने जेब से थैली में पैक एक दस रुपये का फटा-पुराना नोट उसे दिखाया। ‘ये आपने मुझे दिया था। उस दिन आपकी बात दिल से जा लगी थी। एक संस्था से अपाहिजों के लिए बनी हाथ गाड़ी मुझे मिली थी। उसी पर ये छोटी-सी ट्राली, कुछ पैसे उधार लेकर जुड़वायी और सब्जी बेचने का काम शुरू किया है। मानसी के हाथ में पैकेट थमा विह्वल होते हुए बोला- ‘ये नोट मैंने सँभाल कर रखा है, आपके ही कारण मुझे अपना वास्तविक मूल्य पता चला।’

मानसी ने एक बार फिर उस व्यक्ति को देखा। उसे लचक कर चलते देख उसे याद आ गयी वो घटना- भीख माँगने वालों से चिढ़ने वाली मानसी ने इस व्यक्ति के भीख माँगने पर चिढ़ते हुए काम करने की सलाह दे डाली थी। अपाहिज होने का हवाला देते हुए इसने फिर से याचना की, तो मानसी ने ये फटा नोट उसको दे दिया था।

‘एक रुपये के बदले ये लोगे?’

वो खुश हो गया था ‘क्यों नहीं बहन जी, ये तो दस रुपये हैं।’

‘पर नोट फटा है न’ मानसी ने फिर से कहा था।

‘फटा है तो क्या, कीमत तो दस रुपये ही है न’ उसने जवाब दिया।

तब मानसी ने कहा था, ‘फटा होने से नोट की कीमत कम नहीं हुई तो एक पाँव थोड़ा लचकने से तुम जैसे इन्सान की कीमत कम कैसे हो गयी?’

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9425692732, 7974717186

●●

मधुकांत

पहली लड़ाई

उसे अच्छी प्रकार याद है, बचपन में वह ऊँची-ऊँची दीवारों के बीच घिरी प्रथम तल की छत पर नीचे पतंग उड़ाता था। उसकी छत के आसपास कोई पतंग उड़ जाती तो वह तुरंत अपनी पतंग को डुबका लेता था। उस दिन आकाश बिल्कुल साफ था और आसपास कोई पतंग भी नहीं उड़ रही थी। उसने अपनी पतंग को ऊँचे आकाश में छोड़ दिया। पहली बार अपनी पतंग को इतना ऊँचा उड़ा देखकर उसका मन रोमांचित हो गया।

अचानक उसके पीछे से एक बड़ी पतंग निकल कर आयी। वह घबरा गया। वह किसी भी प्रकार अपनी पतंग को बचा नहीं सकता था। अचानक आए ख्याल से वह उत्साहित हो गया और उसने अपनी पतंग को साधा।

दोनों पतंग आकाश में खूब लड़ीं और अंत में उसकी पतंग कट गयी। पतंग तो उसकी कट गयी, फिर भी वह उस दिन उत्साहित था। अपनी पहली लड़ाई लड़ने का दंभ उसके चेहरे पर थिरकर रहा था। उसी दिन से वह दूसरे तल पर चढ़कर पतंग उड़ाने लगा।

सम्पर्क : रोहतक (हरियाणा) मो. 9896667714

●●

मधुदीप गुप्ता

अबाउट टर्न

अक्टूबर का अन्त है। शहर पर गुलाबी ठण्ड पसरने लगी है। सुबह के नौ बज चुके हैं। पार्क में सुबह घूमने आनेवालों की भीड़ छँट चुकी है।

रामप्रसाद जी एक बेंच पर गुमसुम बैठे हैं। उनके सभी साथी जा चुके हैं मगर उनका मन घर जाने का नहीं है। घर पर कौन उनकी प्रतीक्षा कर रहा है! दो वर्ष पहले जब वे सेवामुक्त हुए तो कैंसर से पीड़ित उनकी पत्नी भी साथ छोड़ गई। बेटा है, बहू है मगर वे दोनों नौकरी पर चले जाते हैं। वे सारा दिन अपनी 'स्टडी' में किताबों में गुम बैठे रहते हैं।

'ढम...ढम...' सामने मिलट्री ग्राउंड में हो रही सैनिकों की परेड में बज रहे ड्रम की आवाज उनके सिर पर हथौड़े की तरह बज उठती है।

'बात मदद करने की नहीं है, बल्कि सच यह है कि आप हमारा अधिकार उस महरी को देना चाहते हैं...' बेटा यहीं पर नहीं रुका था, 'आप महरी से जुड़ते जा रहे हैं...'

आगे कुछ नहीं सुन सके थे वे, सब रह गए थे।

बात कुछ भी नहीं थी मगर तूल पकड़ती चली गई थी। वे घर की महरी की लड़की की शादी में कुछ अर्थिक मदद करना चाह रहे थे मगर बेटे की नजर में उन्हें इसका कोई अधिकार नहीं था। वे समझ नहीं पाए थे कि उनका बेटा उनपर ऐसा घटिया लांछन क्यों और कैसे लगा गया! क्या उन्हें खुद की कमाई इस दौलत में से अपनी मर्जी से कुछ भी खर्च करने का अधिकार नहीं है?

सूरज थोड़ा और ऊपर आ गया है। तपिश भी बढ़ने लगी है।

'अबाउट टर्न...' सामने मिलट्री ग्राउंड में सेनानायक की तेज आवाज गूँज उठी है।

वे उठे और उनके पाँव पार्क से निकलकर 'अनुभव घर' वृद्धाश्रम की ओर मुड़ गये।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 8826499115

●●

माया दुबे

लकीरें

बदरी ने अँगोछे से पसीना पोंछते हुए, बड़बड़ते हुए घर के दलान में प्रवेश किया है। मन अभी भी ग्लानि और अपमान से झुलस रहा है। इधर-उधर आँखें घुमाई, पत्ती पुनिया कहीं दिखाई नहीं दे रही, वह जोर से चिल्लाया है... अरे कहाँ मर गयी। दोपहर चढ़ आई मुँह में अन्न का एक दाना जायेगा। वहाँ मालिक बैल की तरह खटा रहा, यहाँ ये महारानी सो रही।

पुनिया बदहवास सी दौड़ती आई। जल्दी से खाना परसी और जब दो कौर मुँह के अन्दर गया तब वह उसके हाथों को देखते हुए बोली... अभी मैं पड़ोस वाली भाभी के यहाँ गयी थी। वे अपना घर बेच कर मुम्बई जा रहे हैं। कह रही थीं अब यहाँ गाँव में रखा क्या है? हमारे बाप-दादाओं ने मालिक के घर मजदूरी कर के जीवन काट दिये पर हम तो अब आजाद हैं। बड़े शहर में कोई किसी की जात नहीं पूछता, जो पैसा कमा रहे हैं सब सुविधा से जी रहे हैं। कह रहे थे कि तुम लोग भी चलो यहाँ धरा क्या है? गुलामी के जीवन से अच्छा है खुद का ठेला लगाकर, नमक-रोटी खाकर जीवन बिता लें।

तब तक उसका खाना खत्म हो गया। भरे पेट सब अच्छा लगता है। अपने दोनों हाथों की खुरदुरी लकीरें को देखते हुए बोला... इन लकीरें में क्या लिखा है? मैं पढ़ने का प्रयास करता हूँ।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9425651231

●●

मौसमी परिहार

उड़ान

घर की छत पर आज बहुत दिनों के बाद आकर बैठी थी साँची। ढलती शाम, पीपल का विशाल वृक्ष, जिसकी डाल पर गौरैया का घोंसला था। गौरैया अपनी नन्हीं गौरैया को पंख फैलाना और उड़ने का पाठ सिखा रही थी। साँची बैठकर देखने लगी। उसकी उत्सुकता थी कि गौरैया किस तरह अपने बच्चों को उड़ना सिखाती है? उसे याद आया जब नवल ने पहली बार उसका हाथ पकड़कर चलना सीखा...“अरे वाह! मेरा बेटा चलने लगा।” खुशी से उछल पड़ी थी, बीडियो भी बनाया था। हल्की सी मुस्कान बिखेरे, अपनी यादों से बाहर आई, अँधेरा होने को था।

सुबह फिर साँची गौरैया को देखने पहुँची। नन्हीं गौरैया पंख फैलाना सीख गई थी। शाम होते-होते उड़ना भी सीख गई। समय तो जैसे पंख लगा कर ही उड़ता है। साँची को फिर याद आया नवल का स्कूल जाना, कॉलेज जाना, नवल की पहली जॉब और...नवल के पिता का चले जाना...? नवल की शादी और एक दिन नवल का दूर देश में बस जाना। उसकी आँखें भर आईं।

जैसे गौरैया ने दो दिन में उड़ना सीख लिया, लगता है उसकी जिंदगी सिर्फ दो दिनों की ही रही हो।

अचानक नन्हीं गौरैया ने ऊँची उड़ान भरी, तेज हवा के झोंकों ने नाजुक पंखों को धक्का सा दिया

पर गौरैया ने अपने पंखों का सहारा दिया। वापस उसे घोंसले पर ले आई। साँची ने आसमान की ओर देखा..... एक विमान कोलाहल करता हुआ, दूर देश जा रहा था। ‘पता नहीं, अब किस माँ का नवल उससे दूर जा रहा है।’

उसने सोचा... ‘काश कि गौरैया की भाँति मैंने भी अपने नवल को ऊँची ‘उड़ान’ भरने से रोक लिया होता...? विमान की आवाज हवा के साथ कहीं दूर चली गई। साँची आसमान में देखती रही। घोंसले पर गौरैया अपनी नहीं गौरैया को चोंच से कुछ खिला रही थी...?’

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9575444699

●●

मनीष कुमार

चोर

‘देखो तुम बाहर नजर रखना। कोई अंदर नहीं आ पाये। और आये भी तो उसे बेहोश कर देना।’

‘हाँ बिल्कुल! तुम यहाँ से ऊपर चढ़ो और हाँ डरना मत। सेठ और उसका परिवार आज शादी में गया है। आज मौका है सारा माल हड़पकर ही जायेंगे।’

रात के दस बजे शहर में लोगों को सुलाने के लिये सायरन बजा...

वह अंदर घुस गया था और सायरन सुन थोड़ा घबरा गया। हिम्मत जुटाकर सारा माल बैग में भर वापस नीचे आ गया।

‘अरे वाह कल्लू आज तो लम्बा हाथ मारा तुमने। अब चलो जल्दी से।’

दोनों सड़क पार हो गए और फिर बैंटवारे के लिये पेड़ के नीचे बैठे।

‘अरे वाह चाँदी का सिक्का.... इसे तो मैं ही लूँगा।’

तभी सेठ और उसका परिवार शादी से लौटते हुए उसी पेड़ के सामने ट्रक से टकरा गये जिसमें सेठ और सेठानी घायल हो गये थे। कल्लू और जग्गा भागने की सोच रहे थे मगर इस हालत में....

कल्लू और जग्गा सेठ जी और सेठानी को अस्पताल ले गए। जहाँ उनका इलाज शुरू हुआ है। लेकिन वहाँ खून की जरूरत थी जो मिल नहीं रहा था। डॉक्टर ने कल्लू का खून टेस्ट किया और किस्मत से सेठ जी के खून से मिल गया। जब सेठ जी ठीक हो गये तो कल्लू का शुक्रिया अदा करने लगे।

कल्लू जग्गा को देख रहा था और जग्गा कल्लू को।

‘भला चोरों का भी कोई ईमान होता है क्या?’

सम्पर्क : ईटावदी (महेश्वर) मो. 8435740937

●●

मार्टिन जॉन

नजरिया

‘क्यों इतना आँसू बहा रहे हो यार?... भूल जा उसे।... ये इमोशन तेरी लाइफ़ का मोशन खराब कर देगा। तेरे आगे बहुत लम्बी जिंदगी पड़ी है।’

‘कैसे भूलूँ... इट इज इम्पॉसिबल।’ ताज़ा ज़ख्म के दर्द से स्वर भीगा हुआ था, ‘उससे बेइंतहा प्यार करता हूँ।’

‘और वह?... अगर तुमसे सच्चा प्यार करती तो सुमित से कोर्ट मैरिज क्यों कर लेती।... शी इज फ्रॉड।’

वह सिर झुकाए खामोश रहा। सोनम की बेवफ़ाई ने उसे तोड़कर रख दिया था।

‘देख रानू, ये इक्कीसवीं सदी की लिबरल लड़कियाँ हैं, टेक्नो और डिजिटल ज़माने में जीने वाली।... इन्हें प्यार-मुहब्बत, ज़ज्बात की कोई क़द्र नहीं ... टोटली अनइमोशनल।’

‘लेकिन वो वैसी नहीं है।’

‘अरे यार, सब वैसी ही होती हैं।... इन्हें तो बस ‘यूज एंड थ्रो’ कलम की तरह...।’

‘रिंकी और पिंकी भी नए ज़माने की लड़कियाँ हैं।’

‘शटअप रानू... वे मेरी बहनें हैं।... वून सिस्टर्स।... गो टू हेल, नॉनसेंस।’

सम्पर्क : पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) मो. 9800940477



मधुलिका सक्सेना

असमंजस

‘जूही आखिर कितना समय और चाहिए तुम्हें?

अब मान भी जाओ न! माँ से एक बार मिल भी लो।’

समीर बड़े प्यार, मनुहार से जूही को विवाह के लिए मना रहा था।

‘समीर मेरा असमंजस तो तुम जानते ही हो, एक बार नकारी जा चुकी हूँ, दुबारा सहन नहीं कर पाऊँगी।’

जूही बड़े उदास स्वर में बोली।

‘तुम ज़रा भी संदेह मत करो आजकल अधिकांश लोगों को इन सब बातों से फर्क नहीं पड़ता।’

समीर उसे आश्वस्त करने में लगा था।

‘हूँ.....’ जूही का संक्षिप्त उत्तर था।

‘हूँ क्या हूँ! अच्छा चलो कैफे काफी डे में शांति से काफी पीते हैं।’ समीर आज पीछे ही पड़ा हुआ था।

‘अभी रहने ही दो।’ जूही फिर ठिठकी।

‘अरे भई उनकी तो Tag line है’ A lot can happen over coffee
 समीर आँखों में आँखें डाल कुछ शरारत से बोला।
 हार कर जूही समीर के साथ छली गई।
 वहाँ अन्दर घुसते ही –
 ‘अरे माँ आप यहाँ?’ समीर आश्चर्य से बोला।
 ‘हाँ बेटा बड़ी देर से तुम दोनों का पीछा कर रही थी। सोचा नवरात्रि में अपने बेटे की पसंद को
 मोहर लगा ही दूँ कंगन पहना दूँ अपनी बहू को!’
 ‘ओह समीर! तुमने कभी बताया नहीं, माँ को भी सफेद दाग हैं!’
 रुँधा हुआ पर हर्ष मिश्रित स्वर था जूही का।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9406516683



महेश राजा

पुराना छाता

काफी उम्र हो गयी थी उसकी। एक सरकारी महकमे में चौकीदारी करते उम्र गुजार दी। आगे पीछे कोई न था। सेवानिवृति के बाद पैंशन से जो कुछ मिलता, उससे रुखी-सूखी खाकर गुजार रहा था। सुबह, शाम मंदिर जाना उसका नित्यकर्म था। बीच का समय कभी पार्क या ईंधर उधर टहल कर कट जाता था।

सावन का महीना। बारिश की शुरुआत हो गयी थी। नन्हीं-नन्हीं बूँदों को टपकते देख कर उसकी बूढ़ी आँखों में चमक आ गयी थी। पुराने कबाड़ के सामान में से उसने अपना वो छाता ढूँढ़ निकाला, जो काम के प्रति उसकी लगन से खुश होकर बड़े साहब ने दिया था।

बड़े जतन से उसने पुराने छाते पर की धूल को पोंछा। यही तो एकमात्र वह चीज थी जो उसके पुराने दिनों की स्मृति से जुड़ी थी। उसने प्रेमपूर्वक नजरों से छाते को देखा। उसे सहलाया। अब वह फिर से बारिश शुरू होने का इंतजार करने लगा।

थोड़ी देर बाद जैसे ही नन्हीं-नन्हीं बूँदे आसमान से टपकना शुरू हुई, वह बच्चों की तरह मचलता हुआ छाता लेकर सड़क पर दौड़ चला। उसमें एक नयी स्फूर्ति जाग उठी। तभी मौसम का मिजाज बिगड़ा। हवा के तेज थपेड़े चलने लगे। उसे बड़े जोर का धक्का लगा। छाता भी सह न पाया, उलट गया। छाते की डंडियों को छाती से लगाये भीगता हुआ वह धीमे कदमों से चलता हुआ, अपनी कोठरी में वापस आ गया।

वह पूरी तरह से भीग चुका था। शरीर से टूट चुका था। हाँफते-गिरते टूटी हुयी चारपायी पर पसर पड़ा। उसे महसूस हुआ कि उसका शरीर भी इस पुराने छाते की तरह हो गया है, जो अब किसी भी तरह के थपेड़े सहने में असमर्थ हो गया है।

सम्पर्क : महासमुद्र (छ.ग.) मो. 9425201544



मनोरमा पन्त

रक्षासूत्र

सबेरे उठा ही था कि कुछ लोगों का हुजूम कल उखड़े पड़े बरगद के पौधे को दोबारा लगाने वाली जगह पर लेकर खड़ा था। सबसे आगे खड़े एक नेतानुमा शख्स ने गुर्हा कर मुझसे कहा—‘आपने ही गाँव की सड़क किनारे बरगद का पेड़ लगाया?’

‘हाँ, क्यों क्या हुआ। पेड़ लगाना तो पुण्य का काम है।’

‘आपकी हिम्मत कैसे हुई हमसे बिना पूछे लगाने की। पूरी सड़क घेर लेगा बड़ा होकर। हटाइये उसे।’ मौके की नजाकत समझ कर मैं मिमियाने लगा। आप जैसा कहेंगे मैं करूँगा।

मुझे समझ में नहीं आ रहा था, क्या करूँ। क्यों रास्ते में उखड़े पड़े बरगद के छोटे से पेड़ को लेकर आया जिस पर एक लाल चुनरी बाँधी थी। इतने में नेता नुमा आदमी फिर गर्जा। बक्त की नजाकत देखकर पीछे खड़ी पत्नी ने कहा—

‘बताते क्यों नहीं कि पूरे विधि-विधान से पेड़ लगाया है, माता की लाल चुनरी भी बाँधी है। पंडित जी ने कहा है कि उखड़े पेड़ को लगाना पुण्य का काम है, पर इसे जो फिर से उखाड़ेगा वह 15 दिन के भीतर मर जाएगा। उसकी रक्षा के लिये उन्होंने ही उसपर लाल चुनरी बाँधी है। हम तो मरना नहीं चाहते आप लोग ही उसे उखाड़ दे, हमें कोई ऐतराज नहीं।’

बस फिर क्या था अगले ही पल पौधा अपनी मस्ती में झूम रहा था।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9229113195

●●

मृणाल आशुतोष

पोंगा-पण्डित

घण्टी बजी। मोहन ने दरवाजा खोला तो सामने लँगोटिया यार सुभाष था। इससे पहले कि उसे बैठने को कहता, उसने आरोप जड़ दिया, ‘कल तुम्हें कई बार फोन किया पर तुमने उठाया ही नहीं।’

‘अरे भाई! कल मूँड ऑफ हो गया था।’

‘पर हुआ क्या?’

‘कुछ नहीं। कल गाँधी जयंती थी। फेसबुक पर कुछ नीच लोग उनको गाली दे रहे थे।’

‘तो?’

‘तो! तो क्या! मैंने भी जमकर गरियाया साले को। बोला, ‘एक बाप की औलाद है तो आकर मिल’। अपना पता भी दिया उन हरामखोरों को।’

‘यार! यह तो तुमने ठीक नहीं किया। उनको नजरअंदाज़ करना चाहिए था न।’

‘अरे यार! जब से मैंने गाँधी-दर्शन पर पीएचडी करनी शुरू की है! कोई गाँधी जी के बारे में बोलता है तो मेरा खून खौल उठता है।’

कमरे में अब गाँधी जी के तीनों बंदर के सिसकने की आवाज आ रही थी।

सम्पर्क : समस्तीपुर (बिहार) मो. 8010814932

●●

मुज़फ्फर इकबाल सिंहीकी

अम्मा अभी जिंदा है

शाम को सूरज डूबते वक्त जैसे ही नदीम ने घर का बाहर की तरफ खुला दरवाज़ा, बंद करना चाहा तो फरज़ाना ने कहा, ‘नदीम खुला रहने दो। अज़ान का वक्त होने वाला है।’

‘अम्मा कहती थीं न कि दोनों वक्त, घर के दरवाजे खुले रहना चाहिए। सुबह-शाम, घर में भी फरिश्तों और घर के बुजुर्गों का आना-जाना होता है।’

अम्मा तो इस घर के हर मर्द को कुछ न कुछ नसीहत करते हुए, पिछले बीस सालों से इस दुनिया को छोड़ चुकी थीं।

नदीम जब भी ऑफिस से आते-जाते अपनी अम्मा के पास ज़रूर बैठते। अम्मा हमेशा कुछ न कुछ नसीहत करतीं। या अपनी पढ़ी हुई किताब के कुछ खास पन्नों पर निशानी लगाकर नदीम को पढ़वाने के लिए रख लेतीं थीं। अब्बू को घर के इन्तज़ामों से सम्बंधित क्या पसंद था और क्या पसंद नहीं, इसका ज़िक्र ज़रूर करतीं।

जब फरज़ाना उनके पास बैठती तो, उसे अपनी अम्मा सास के किस्से सुनातीं। जब वह इस घर में बहू कर आई थीं तब से लेकर आज तक इस घर की रवायतों को किस तरह ज़िंदा रखे हुए थीं। क्या-क्या कुर्बानियाँ दे कर बच्चों की परवरिश की थी। जो आज ये दिन देखने को मिले।

‘कितनी अटपटी लगतीं थीं फरज़ाना-नदीम को, उस वक्त उनकी ये बातें।’

लेकिन अपनी बातें वो किसी न किसी तरह मनवा लेने का हुनर भी जानती थीं। बहुत पक्की मिट्टी की बनी थीं। वक्त के साथ, अब फरज़ाना और नदीम के भी, घर गृहस्थी सँभालते हुए बच्चे जवानी की दहलीज़ पर क़दम रख चुके थे। उन्हें भी शायद उन्हीं नसीहतों की आज ज़रूरत थी।

तभी तो नदीम आज कल, ‘उन्हीं किताबों के पन्नों को पलटकर खाली वक्त में पढ़ते रहते थे। जिन्हें अम्मा ने निशानी लगाकर छोड़ा था।’

फरज़ाना ने जब अज़ान के वक्त दरवाज़ा खुला रखने के लिए बोला तब नदीम ने कहा- फरज़ाना, अल्लाह का शुक्र है, ‘अम्मा अभी भी इस घर में जिंदा है।’

सम्पर्क : भोपाल (म प्र) मो. 9977589093

●●

मधु जैन

कबाड़

सुरभि के पति का ट्रांसफर नए शहर में होने पर, घर व्यवस्थित करने में एक ससाह का समय लग गया। पड़ोसी सिन्हा जी के यहाँ से चाय नाश्ता भी आया था, पर मुलाकात नहीं हो सकी।

आज सुरभि मिलने और धन्यवाद देने के लिए उनके घर गई। स्वागत पामेरियन डाग ने किया।

आलीशान घर, महँगे फर्नीचर विलासिता की सारी वस्तुएँ उनके शानो शौकत को बयान कर रही थीं। सिन्हा साब इंजीनियर जो हैं।

‘टॉमी ने आपको परेशान तो नहीं किया।’

‘नहीं-नहीं, रामू के आने से चुप हो गया।’

‘बहुत ही शारती है, घर में सबका प्यारा है। देखो उसका बिस्तर, जमीन पर नहीं सोता।’

‘अरे वाह छोटा सा कूलर भी।’

फोन आने पर मिसेज सिन्हा व्यस्त हो गई, तभी समीप के कमरे से कराहते हुए पानी, पानी की आवाज ने सुरभि के ध्यान को बरबस उस ओर खींचा।

साधारण सा कमरा, पुराना सा सीलिंग फैन, पलँग पर लेटी वृद्ध महिला पानी माँग रही है।

जग से पानी निकाला, ‘अरे यह तो गर्म है, ठंडा लाकर देती हूँ।’

‘नहीं यही दे दो, सूखी घास पर कोई ठंडा पानी क्यों सिंचेगा।’

‘आप कौन हैं।’

‘मैं इनकी माँ, पर काश इनका कुत्ता होती तो भरपेट...’

आगे वह सुन न सकी, और बाहर आ गई। कमरे से निकलता देख मिसेज सिन्हा बोली, ‘इनको छूत की बीमारी है, इसलिये...’

सम्पर्क : जबलपुर (म. प्र.) मो. 9425324978



मीरा जैन

सर्वश्रेष्ठ

उत्साह एवं अति आतुरता के साथ लेडिस क्लब की सभी महिलाएँ परिणाम घोषित होने का बेसब्री से इंतजार कर रही थीं। कुछ समय पश्चात् निर्णायक मंडल की अध्यक्षा ने विजयी महिला का नाम उद्घोषित किया। आशा के विपरीत परिणाम सुन कर सभी महिलाएँ स्तब्ध रह गईं। कुछ ने पक्षपात का आरोप लगाते हुए कहा – ‘जिसे क्रीम, लिपिस्टिक, माइचराइजर की ए बी सी डी तक नहीं आती। उसने क्या खाक उत्तर दिया होगा, ये सरासर नाइंसाफी है।’

एक जिज्ञासु महिला ने खड़े होकर पूछा – ‘माननीय अध्यक्षा महोदया! आपने जिसे विजेता के रूप

मे चुना है, कम से कम उसके द्वारा लिखित उत्तर हमें बता दीजिए?’

प्रश्न था- ‘किसी ऐसे सौंदर्य प्रसाधन का नाम लिखिये जिससे चेहरा हमेशा साफ सुथरा तथा कील मुहाँसों से मुक्त रहता है?’

मात्र एक शब्द में उत्तर देते हुए विजेता महिला ने लिखा था- ‘चरित्र’

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9425918116



डॉ. मालती बसंत

आत्मविस्मृति

एक स्कूल के अध्यापक रिटायर हो रहे थे। विद्यालय में उनकी विदाई समारोह आयोजित किया गया था। प्रधान अध्यापक और सभी अध्यापक कुर्सियों पर विराजमान थे। हमेशा की तरह लड़कों का शोर-गुल जारी था। शिक्षकों के चुप कराने के बावजूद लड़के चुप नहीं हो रहे थे। समय की कमी को देखते हुए प्रधान अध्यापक महोदय ने उसी स्थिति में कार्यक्रम प्रारम्भ करने का आदेश दे दिया।

एक छात्र ने उन रिटायर अध्यापक की प्रशंसा में एक तोता रटं भाषण दिया। उसके पश्चात् दो छात्राओं ने मिलकर कागज पर नजरें गड़ाए विदाई गीत गाया। विद्यालय के एक शिक्षक ने उनको माला पहनायी, जब कैमरा सामने आया। फिर विद्यालय के प्रधान अध्यापक ने मगरमच्छी आँसू बहाते हुए स्कूल के सुने होने का दुःख प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में रिटायर होने वाले अध्यापक महोदय ने बच्चों को आशीष वचन देना शुरू किया।

‘बच्चों! मैं इस विद्यालय में पच्चीस वर्षों से जुड़ा रहा हूँ। मुझे इस बात का बड़ा दुःख होता है, कि शिक्षा का स्तर दिन-ब-दिन गिरता जा रहा है। अनुशासनहीनता-हीनता बढ़ती जा रही है। लेकिन इस विद्यालय ने जिले में अपनी पढ़ाई और अनुशासन के मामले में नाम कमाया है।

मेरा आशीर्वाद है, कि तुम लोग खूब उन्नति करो। डॉक्टर, इंजीनियर बनो इसके लिए तुम्हें खूब मेहनत से पढ़ना होगा, यदि तुम लोग पढ़ाई-लिखाई नहीं करोगे तो क्या बनोगे? सिर्फ मास्टर, इससे ज्यादा कुछ नहीं। इसलिए बड़ा आदमी बनना है तो मेहनत करनी पड़ेगी।

तालियों की गड़गड़ाहट में भाषण समाप्त हो गया। कार्यक्रम के खत्म होते ही उस ओर भगदड़ मच गयी जिस ओर नाश्ते की प्लेटें रखी थीं। उसी भगदड़ में एक लड़के को कहते सुना, ‘खुद ने तो कभी पढ़ाई में मेहनत नहीं की, तभी तो मास्टर बने और हम लोगों को उपदेश झाड़ गए।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9981775190



माला वर्मा

ऑपरेशन

धीरे-धीरे बक्त करीब आता जा रहा है। ज्यादा दिन महटियाना ठीक नहीं। एक आँख का ऑपरेशन तो हो ही चुका, दूसरी भी करवा लें तो अच्छा। पिछले पन्द्रह दिनों से मिसेज निगम उधेड़बुन में पड़ी हैं। किसी को साथ लेकर हॉस्पिटल जाना होगा। हाँ, अकेली भी जा सकती हैं पर लौटने के समय कोई तो चाहिए। माना कि ऑपरेशन लेजर सर्जरी से तुरन्त हो जाएगा फिर भी एक शख्स तो करीब हो। बेटा-बहू शहर में नहीं और होते भी, तो कोई उम्मीद न थी। दोनों को पता है कि माँ का ऑपरेशन तय है फिर भी न फोन पर पूछताछ की और न ही उन्हें याद होगा। सो वहाँ से कोई उम्मीद न रखें तो ही बेहतर हैं। हाँ, बेटी है करीब पर उसकी अपनी गृहस्थी है। छोटा बच्चा, ऊपर से नौकरी! जो स्वयं सुबह से शाम घर में नहीं टिकती, वो माँ की देखभाल क्या करेगी! खबर तो उसे भी है कि माँ को ऑपरेशन करवाना है। फोन पर बातें होती हैं पर एक बार भी सलाह-मशवरा नहीं किया।

मिसेज निगम दुःखी हैं, चिन्तित हैं ज़माने का हालचाल देखकर। अपनी संतान के होते हुए भी माँ बाप कितने निरुपाय हो गए हैं। और यहाँ तो किस्मत ने धोखा दिया है। पति की अचानक मृत्यु से मिसेज निगम अकेली पड़ गई हैं। वो होते तो आज इतना सोचना पड़ता! खैर, मिसेज निगम साहस वाली हैं। अगर बच्चों को परवाह नहीं तो न सही, अपना हाथ जगन्नाथ। जैसे भी हो इस कार्य को पूरा करना ही होगा।

शाम को मिसेज निगम की कुछ सहेलियाँ घर में पधारीं। इन सबका संग साथ वर्षों से चला आ रहा है। और सच पूछिए तो ये एक ऐसा ग्रुप था जिसके साथ कुछ घंटे हँसी-मज़ाक में गुज़ार मिसेज निगम फ्रेश हो जाती थीं। थोड़ी देर ताश-वाश, चाय पानी का दौर चला और अब उठने की बारी थी। तभी उनमें से एक महिला ने कहा, क्या बात है मिसेज निगम! आज तुम्हारा मूड थोड़ा डाउन लगा। ऐनी प्रॉब्लम?

मिसेज निगम ने सकुचाते हुए अपनी समस्या बताई। इतना सुनना था कि मिसेज तालुकदार बोल उठीं, ‘हद हो गई यार! हमें तो एकदम से पराया समझ लिया। इतनी छोटी सी बात और तुम तनाव में पड़ी थी! हम किस दिन काम आएँगे? एक बार कहकर तो देखा होता। तुम्हें अपने किसी रिश्तेदार को बुलाने की ज़रूरत नहीं। जब तक हम हैं तुम्हें किसी बात की तकलीफ न होने देंगे। और ये आँख का ऑपरेशन! इसमें समय ही कितना लगता है। हम सब बाहर ताश खेलेंगे और तुम्हारा ऑपरेशन खत्म। बस्स तुम्हें थामा और घर पहुँचा गए।’

सहसा विश्वास नहीं हुआ। जिस बात को लेकर वे तनावग्रस्त थीं उसका समाधान चुटकियों में निकल आया था। अश्रुभरी नजरों से उन्होंने अपनी फ्रेंड्स को देखा व शिद्दत से महसूस किया- उनकी आँखों की रोशनी तो बजाय धुँधली होने के थोड़ी ज्यादा ही दीस हो गई थी?

सम्पर्क : परगना (पश्चिम बंगाल) मो. 9874115883, 9007744346

●●

डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद'

संवेदना

सुबह लगभग पाँच-साढ़े पाँच का समय रहा होगा। मैं प्रातःकालीन भ्रमण पर जा रहा था। भोज विश्वविद्यालय के पास एक तेज रफ्तार से दौड़ती हुई आ रही कार ने एक कुत्ते को टक्कर मार दी। एक मर्माहत चीख के साथ उसकी साँसें थम गई। अहत हुए कुत्ते की चीख को सुनकर एक दूसरा कुत्ता दौड़कर उसके पास आया और उसकी देह से बहते हुए रक्त को देखकर पूरा माजरा समझ गया। उसने कुत्ते के मुँह को सूँघकर पता कर लिया कि अब उसके प्राण जा चुके हैं।

अभी भी उस रास्ते पर सरपट वाहन दौड़ते हुए आ जा रहे थे। कुत्ते ने यह सोचकर कि मृत देह को ये आने जाने वाले वाहन बुरी तरह से न कुचल डालें। वह उसके शरीर को बीच सड़क से एक ओर ले जाने के लिए प्रयत्न कर रहा था। वहाँ पर कई अन्य लोग खड़े यह दृश्य देखकर अपने मोबाइल से वीडियो बनाकर वायरल कर अपनी संवेदनाओं का प्रदर्शन कर रहे थे।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 8989436604

●●

मेघा मैथिल

भाग्यलक्ष्मी

अस्पताल के लेबर रूम के बाहर गीता अपने बेटे राममोहन के साथ बैठी बहू की डिलेवरी का इंतजार कर रही थी। और मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना भी कर रही थी कि हे! ईश्वर इस बार तो बस पोता ही देना।

थोड़ी ही देर में नर्स लेबर रूम से बाहर आयी और बोली- 'माँ जी बधाई हो, डिलेवरी नार्मल हो गयी है। दो जुड़वाँ बेटियाँ हुई हैं, गीता के सिर पर तो जैसे आसमान गिर पड़ा। वह नर्स को अवाक देखती रही और कुछ भी ना बोल सकी। एक तो ये गरीबी और ऊपर से ये दो और बेटियाँ? हे! ईश्वर तू भी गरीब की खूब परीक्षा लेता है। पहले से जो चार बेटियाँ हैं वो क्या कम थीं जो दो और दे दीं। मैं तो सोचती थी कि एक पोता हो जायेगा तो अब की बार बहू की नसबंदी करवा दूँगी।

पंडित राममोहन के घर जन्मी जुड़वाँ बच्चियों की खबर नगर सेठ के कानों तक भी पहुँच गयी। बिना एक पल की भी देर किए सेठ जी अपनी पत्नी के साथ सीधे अस्पताल पहुँच गये और दोनों माँ-बेटे के आगे हाथ जोड़कर अनुनय विनय करने लगे कि यदि हो सके तो एक बच्ची मेरी पत्नी की गोद में डाल दो, जो वर्षों से सूनी पड़ी है। एक नन्हीं सी किलकारी सुनने के लिये हमारे कान तरस रहे हैं।

हमारे पास ईश्वर की कृपा से जमीन, जायदाद, धन दौलत सब कुछ है, बस संतान सुख से अब तक वर्चित रहा हूँ। यदि आपकी कृपा हो जाए तो हम जीवन भर आपके ऋणी रहेंगे। हम दोनों बड़ी आशा लेकर आपके पास आये हैं, निराश मत कीजिये। सेठानी ने अपनी झोली फैला दी।

माँ-बेटे ने भी अपनी सहमति दे दी। और गीता ने एक बच्ची सेठानी की गोदी में डाल दी।

सेठ जी को तो मन माँगी मुराद मिल गयी। वे अपनी नहीं परी पर कुछ भी न्यौछावर करने को तैयार थे। उन्होंने बिन माँगे ही पंडित जी को खूब सारा धन, रुपया –पैसा, वस्त्र आभूषण सब कुछ दे दिया।

और.....अन्य पाँच बच्चियों की जीवन बीमा पॉलिसी भी करायी ताकि बच्चियों का भविष्य सुरक्षित रह सके।

आज नगर में लक्ष्मी दो रूपों में आयी एक नगर सेठ के घर नहीं परी के रूप में, और दूसरी गरीब पंडित के घर धन –धान्य खुशहाली के रूप में।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9589251250

●●

मृदुल त्यागी

सब्र

देर रात ऑफिस से घर में घुसते ही सीमा ने अपने पति सुरेश पर प्रश्नों की बौछार कर दी ‘आज फिर इतनी देर कर दी आपने? हमेशा ऑफिस के काम का जुनून सवार रहता है, आप अपने उद्देश्य में लगे रहते हो, क्यों ऑफिस का सारा काम अकेले ही देखते हो? फिर भी ना तो आपकी पदोन्नति होती है, ना ही तनखा बढ़ती है। आपके इंतजार में मेरा तो सब यहीं खत्म हो गया।’

‘अरे घर के अंदर तो आने दो और मैंने कितनी बार तुमसे कहा है कि यदि मुझे देर हो जाए तो खाना खा लिया करो, आता हूँ हाथ मुँह धो कर’ सुरेश ने कहा।

खाना खाते हुए सुरेश बोला- ‘मन में नकारात्मक विचार मत रखा करो, देश में अनेक उदाहरण ऐसे हैं जो शून्य से अपनी यात्रा प्रारंभ कर शिखर पर जा पहुँचे, क्योंकि वे प्रत्येक क्षण अपनी शक्ति को पहचानने में जुनून के साथ अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में लगे रहे। यह जीवन अनंत है, ऐसा कुछ भी नहीं जिसे प्राप्त न किया जा सके। ‘जीवन में धैर्य रखना जरूरी है।’

ऐसा कहते हुए मुस्कुराकर उसने एक लिफाफा निकालकर मेज पर रख दिया। ‘यह क्या है?’ सीमा ने पूछा। ‘यह मेरा पदोन्नति पत्र है। मेरे काम को देखते हुए सीधे बड़ा पद मिल गया है और तनखा भी बहुत बढ़ गई है। सीमा पत्र को हाथ में थाम अवाक सुरेश का मुँह देखती रही।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9993051213

●●

योगराज प्रभाकर

गुरु गोविन्द

‘देख ली अपने चेले की करतूत?’ वयोवृद्ध शायर के सामने एक पत्रिका को लगभग फेंकते हुए एक समकालीन ने कहा। ‘क्या हो गया भाई? इतना भड़क क्यों रहे हो?’

‘इसमें अपने चेले का आलेख पढ़िए ज़रा।’

‘कैसा आलेख है?’

‘आपकी ग़ज़लों में नुक्स निकाले हैं उसने इस पत्रिका में, आपकी ग़ज़लों में। मैं कहता था न कि मत सिखाओ ऐसे कृतघ्न लोगों को?’

समकालीन बोले जा रहे थे, किन्तु वयोवृद्ध शायर बड़ी तल्लीनता से आलेख पढ़ने में व्यस्त थे।

‘देख लिया न? अब बताइए, क्या मिला आपको ऐसे लोगों पर दिन-रात मेहनत करके?’

‘उम्र के आखिरी पड़ाव में अपने शिष्य की इतनी प्रगति और ईमानदारी देखकर मुझे बहुत कुछ मिल गया भाई।’ पत्रिका एक तरफ रखते हुए उनके चेहरे पर एक अनोखी चमक थी।

‘ऐसा क्या कुबेर का खज़ाना मिल गया आपको?’

‘आज मुझे अपना सच्चा उत्तराधिकारी मिल गया है।’

सम्पर्क : परिभाला (पंजाब) मो. 9872568228

●●

योगेन्द्रनाथ शुक्ल

कद

“भाई जी! हम आपके साथ वर्षों से जुड़े हैं....हमारी इच्छा है कि आपका राजनीतिक-कद बढ़े ताकि पूरे गुप को इसका फायदा मिल सके!”

कार्यकर्ता की बात सुनकर वे बोले- “यह कैसे संभव है?”

“भाई जी! इस बार हमारा रावण दूसरों के रावण से बड़ा होना चाहिए....आप तो जानते ही हैं कि बिना अपनी शक्ति को बताए, आज राजनीति में कोई ऊँचा नहीं उठ सकता।” दूसरे कार्यकर्ता ने उन्हें समझाने का प्रयास किया। वे कुछ देर सोच में ढूबे रहे फिर बोले - “कार्यकर्ता के बिना नेता का कोई वजूद नहीं होता। यदि आप सभी की ऐसी इच्छा है, तो इस बार हम पिछली बार की गलती नहीं करेंगे कि जिसने जो दिया, हमने ले लिया....इस बार जो हम कहेंगे, उन्हें देना पड़ेगा....आप सभी अपने काम के अधिकारियों और व्यापारियों की सूची बनाना शुरू कर दें।” उनकी बात सुनकर कार्यकर्ताओं के चेहरे खिल उठे।

इस बार दशहरे पर भाई जी का रावण चर्चा का विषय रहा। उनके कार्यकर्ता, लोगों से कह रहे थे “भाई जी ने अपने ‘रावण’ के कद को सबसे ऊँचा कर पार्टी को बता दिया कि क्षेत्र में उनका दूसरे नेताओं से अधिक दबदबा है, इसलिए इस बार चुनाव में उनका टिकिट काटा नहीं जा सकता।”

सम्पर्क : इंदौर (म. प्र.) मो. 9977547030

●●

युगेश शर्मा

जवाब

कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों के साथ भारतीय सेना जूझ रही थी। टायगर हिल्स को पुनः अपने कब्जे में लेने के लिए भारतीय रण बाँकुरे निर्णायक युद्ध लड़ रहे थे। रेडियो और सांघिकालीन समाचार पत्र के माध्यम से नगर के लोगों को जानकारी मिल चुकी थी कि युद्ध में उनके नगर का एक

सैनिक आज शहीद हो गया है। शहीद सैनिक के निवास पर लोगों का ताँता लग गया था। लोग बीर प्रसूता माँ से मिलकर अपनी शोक संवेदनाएँ व्यक्त कर रहे थे। ऐसे अवसर पर भी कुछ न कुछ कह डालने के आदी लोग शहीद की माँ को सुनाकर अपनी तरफ से प्रतिक्रिया देने में नहीं चूक रहे थे। टी.वी. कैमरों की मौजूदगी ने ऐसे लोगों की वाचालता में कई गुना बढ़ोत्तरी कर डाली थी।

एक व्यक्ति ने कहा- बेचारी का पति 1965 के युद्ध में पाकिस्तानी सेना के हाथों मारा गया। एक बेटा बचा था, वह भी आज नहीं रहा।

एक अन्य व्यक्ति बोला- 1971 के युद्ध में बेचारी अपने बड़े बेटे को भी खो बैठी थी। यह तो बहुत बुरा हुआ बेचारी विधवा के साथ।

शोक से सराबोर वातावरण में भी शहीद की माँ अपने 9 साल के पोते को गोद में लिये लोगों की इन प्रतिक्रियाओं में निहित भावनाओं को चुपचाप सुन-समझ रही थी। उसके चेहरे पर उदासी की गहरी रेखाएँ खिंची जरूर थीं, पर आँखों में आँसू का एक कतरा भी नहीं था। उसके मनोभावों से आभास हो रहा था- वह लोगों की बातों से बुरी तरह आहत है। लेकिन फिर भी एकदम चुप थी।

इसी बीच शहीद की माँ ने कुछ दूरी पर खड़े अपने देवर को संकेत से अपने पास बुलाया और पोते को दुलारते हुए वह बोली- देवर जी, कल पत्र भेजकर सैनिक स्कूल, रीवा से फार्म मँगवा लीजिए, अरुण को सैनिक स्कूल में एडमीशन दिलवाना है। वह सेना का एक बहादुर अफसर बनकर अपने दादा, पिता और चाचा की बहादुरी की परंपरा को आगे बढ़ाएगा।

लोगों की आँखों में छिपे ढेर सारे सवालों को जवाब मिल चुका था। अप्रत्याशित जवाब सुनकर वहाँ जमा सब लोग हतप्रभ थे। लोगों को विश्वास हो गया था- वास्तव में शहीद की माँ तो ऐसी ही होती है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9407278965

●●

राम मूरत 'राही'

माँ के लिए

हम पति-पत्नी मंदिर में दर्शन करके जब बाहर निकले, तो देखा पत्नी की नयी चप्पल गायब थी। हम परेशान होकर इधर-उधर ढूँढ़ने लगे, तभी मेरी नजर एक गरीब से दिखने वाले पाँच-छः साल के बच्चे पर पड़ी, जो पत्नी की चप्पल लेकर जा रहा था। मैं तेज कदमों से उसके नजदीक पहुँचा, और उसे रोकते हुए पूछा 'बेटा! आप ये चप्पल लेकर कहाँ जा रहे हो?'

'घर जा रहा हूँ।'

'ये चप्पल तुम कहाँ से लाये?'

'मंदिर के बाहर से।'

'बेटा! तुम इस चप्पल का क्या करोगे?'

'मैं इसे अपनी माँ को दूँगा।'

'माँ को दोगे...''

‘हाँ...क्योंकि मेरी माँ के पास चप्पल नहीं है। हम लोग गरीब हैं।’
 ‘लेकिन बेटा! ये तो चोरी की चप्पल है।’
 ‘चोरी! ये चोरी क्या होती है?’
 ‘बेटा! किसी की इजाज़त के बिना उसकी कोई चीज़ ले लेना, चोरी कहलाती है। जो बुरी बात है।’
 ‘मुझे तो ये मालूम नहीं था।’ इतना कहकर वह बालक कुछ सोचने लगा। फिर कुछ सोचने के बाद वह मुड़ा, और मंदिर की तरफ जाने लगा, तब मैंने उसे रोककर पूछा ‘बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?’
 ‘मंदिर।’
 ‘क्यों?’
 ‘चप्पल रखने।’
 ‘मत जाओ बेटा! तुम अब ये चप्पल लेजाकर अपनी माँ को दे दो।’
 ‘लेकिन ये तो चोरी की है।’
 ‘अब ये चोरी की नहीं है।’
 ‘वो कैसे?’
 ‘क्योंकि ये हमारी चप्पल है। हम तुम्हें इसे ले जाने की इजाज़त देते हैं।’
 यह सुनकर वह बालक बहुत खुश हुआ, और फिर खुशी-खुशी चप्पल लेकर अपने घर की ओर चल दिया।
 उसके जाते ही पत्नी आई, और पूछने लगी- ‘अरे...आपने उसे चप्पल क्यों ले जाने दिया?’
 ‘क्योंकि वो अपनी माँ के लिए ले जा रहा था। चलो मैं तुम्हें दूसरी दिला देता हूँ।’

सम्पर्क : इंदौर (म. प्र.) मो. 9424594873

●●

डॉ. राजश्री रावत ‘राज’

आँखें

उर्मिला ने अपने बेटों को हमेशा प्यार दुलार और उचित संस्कार देकर पाला था, परंतु विडंबना यह थी अशोक जितना ही सज्जन, मृदुभाषी, मेहनती और ईमानदार था, उतना ही मनीष कपटी, धूर्त, अहंकारी और बेईमान था, परंतु माँ के तो वे दोनों ही आँखों के तारे थे।

माँ अब असहाय हो चुकी थी। आँखों में मोतियाबिंद उतर चुका था परंतु अशोक के पास माँ की आँख के ऑपरेशन के लिए पैसे भी नहीं थे।

बहुत सोच-विचार के बाद न चाहते हुए भी उसने माँ को ऑपरेशन के लिए धर्मार्थ चिकित्सालय में निशुल्क ऑपरेशन के लिए भर्ती करने का विचार किया।

उसके लिए माँ को असहाय और अकेली बताना आवश्यक था जिसके पालन के लिए उनका कोई पास में नहीं है मन मारकर अशोक ने माँ की भलाई के लिए झूठा सर्टिफिकेट बनवाया।

भाई अशोक से मन ही मन द्वेष रखने वाले मनीष ने जाकर अस्पताल में अशोक के खिलाफ

रिपोर्ट कर दी कि उसने झूठा सर्टिफिकेट बनवाया है। जबकि माँ को पिता की पेंशन भी मिलती है।

अधिकारियों ने निशुल्क ऑपरेशन करने से मना कर दिया, हालाँकि पेंशन बहुत ही कम थी जिसमें माँ का खर्च भी नहीं चल सकता था। अशोक ने जब रो-रो कर अपनी परिस्थिति और माँ के लिए स्वाभाविक प्रेम और चिंता जताई तो उसकी सच्चाई से प्रभावित होकर अधिकारियों ने ऑपरेशन करना स्वीकार कर लिया। जब यह सारी घटना माँ को पता चली तो उसने रोते हुए ऑपरेशन करवाने से मना कर दिया। माँ का कहना था- ‘मेरी तो दो आँखें मनीष और अशोक ही हैं। मनीष आँख से तो मैं अंधी ही भली और अशोक के रहते हुए मुझे आँख की क्या जरूरत है।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9131406662, 9826538913



डॉ. रामनिवास ‘मानव’

कसक

गाँव का युवक पढ़-लिखकर शहर में नौकरी क्या करने लगता है, अपनी जड़ और जमीन से ही कट जाता है। शहर जाकर वह अपने गाँव के अभावों और अवृत्तियों का प्रतिशोध लेना शुरू कर देता है। उसके इस प्रतिशोध का पहला शिकार माँ-बाप ही होते हैं, क्योंकि अपने को गरीब घर में पैदा करने का सीधा जिम्मेदार वह उन्हें ही मानता है। हमारे लघुकथा-नायक श्रीमान के साथ भी ऐसा ही हुआ। श्रीमान ओवरसियर लगा है, सिंचाई-विभाग में। तनखा के अलावा भी मोटी इनकम है। अब वह कपड़े के जूतों से लिबर्टी शूज तक और लट्टे के कुर्ते-पजामे से सफारी सूट तक पहुँच गया है। पिछले साल ही शादी हुई है उसकी। सारी कमाई पति-पत्नी के बनाव-सिंगार, खान-पान और पिकनिक-पिंकर पर ही खर्च हो जाती है। माँ-बाप के लिए कुछ नहीं बचता। उनकी हालत पहले जैसी भी नहीं रही। जो कुछ था, श्रीमान की शिक्षा और शादी पर खर्च कर हो गया। उम्र की तरह खेती भी जवाब दे गई। माँ की लुगड़ी के पैबंद तथा काका के चेहरे की झुर्रियाँ और बढ़ गई हैं।

श्रीमान कभी-कभार ही घर आता है। पत्नी को गाँव में परेशानी न हो, अतः रास्ते में ससुराल छोड़ जाता है। घरवालों के रुकने के लिए कहने पर शान दिखाकर कहता है-‘नीलम गुड़गाँव में है। अकेली डरेगी, इसलिए आज ही जाना पड़ेगा।’

कल वह घंटे-भर बाद ही जाने लगा, तो काका ने भारी मन से कहा- ‘इतनू नगीच हुयां पाच्छै बी महनां-महनां मैं आवा सा। आतो रह्याकर बेट्टा! बहू नै बी साथ लियायाकर। हम कोई हमेस्यां तो बैठ्या ना रहां; इब तो साल-दो साल का सां।’

‘वो तो ठीक है काका! पर गाँव में छः बीघा ऊसर जमीन, कच्चे पुश्तैनी मकान और तुम्हारे सिवाय है ही क्या, जिसके लिए आना हो।’

‘तेरी मरजी बेट्टा!’ कहकर काका ने श्रीमान को विदा कर दिया। पर उन्हें रात देर तक नींद नहीं आई। वह सोचते रहे कि बेटे के लिए उनका महत्व ऊसर जमीन और कच्चे मकान जितना भी है या नहीं।

सम्पर्क : नारनौल (हरियाणा) मो. 8053545632



राजनारायण बोहरे

भ्य

सौ मीटर भी नहीं चले थे कि उन्हें एकाएक अहसास हुआ जैसे कुछ लड़के उनके पीछे आ रहे हैं। अहसास हुआ कि कोई उन पर हमले की फिराक में है तो उनका समूचा शरीर एकबारगी पसीने से नहा उठा। उन जैसे छात्र मित्र को कभी कल्पना भी न थी कि जिन्दगी में ऐसी स्थिति से दो-चार होना पड़ेगा। उनके पैरों की गति मन्द सी हो गई। दिन की स्मृति शेष थी।

शाम को कमरा नम्बर बारह में उनकी तीसरी ड्यूटी थी। तब आधा घण्टा बीत चुका था परीक्षा आरम्भ हुए, जब उन्होंने देखा कि कोने में बैठा छात्र पूरे इत्मीनान से नकल टीप रहा है। रवि बाबू ने एक क्षण निर्णयक ढंग से सोचा, बिजली की तरह छात्र के सिर पर जा धमके थे। उन्होंने छात्र को परीक्षा कार्यालय चलने का आदेश दिया तो एकाएक वह लड़का बिगड़ गया। बाहर तैनात पुलिस-कानिस्टेबल ने भीतर झाँका। आगे-आगे प्रोफेसर रवि और पीछे-पीछे दो सिपाहियों की गिरफ्त में जकड़ा वह लड़का परीक्षा-कक्ष तक गया। पसीना-पसीना प्रोफेसर सिंह कमरे में रवि को एक तरफ ले गये, ‘यार तुम भी एकदम ना समझ आदमी हो। कहे को नकल पकड़ ली सुरेन्द्र की? हॉस्टल का प्रेसीडेंट है वो। अब भुगतना अपना करा-धरा।’

आज अगर उनके साथ मारपीट होती है तो उसकी चोटों का डर नहीं है उन्हें, बल्कि आज के बाद जो भोगना पड़ेगा वह ज्यादा पीड़ादायक होगा, कल कस्बे में हर जुबान पर उनका नाम होगा। अखबारों तक पहुँचने में भी देर नहीं लगेगी। तभी शाम के सुरमई अँधेरे को बेधती किसी छोटे वाहन की हैडलाइट से एकाएक उनकी आँखें चौंधिया गईं। निकट आने पर पता चला कि वह एक सरकारी जीप थी। ऊपर पीली बत्ती लगी थी और सामने पीतल के मोटे अक्षरों में लिखा था-एस. डी. ओ.पी। उन्होंने पुकारने का यत्न किया तो गला अवरुद्ध पाया।

ब्रेक चरमराने की आवाज से लगा कि लगभग पचास कदम आगे जाकर वही जीप रुकी है। वे रुके और मुड़कर पीछे देखा। जीप बैक गियर में चलती हुई उनके बराबर तक सड़क के उस पार रुक गई थी। जीप में से पुलिस अफसर की वर्दी में सजा-धजा एक युवक उतर रहा था। उस नौजवान पर नजर पड़ते ही एक नाम कौँधा था-कुणाल वर्मा!

कुणाल भी कभी इस कॉलेज का छात्र रहा है, कुणाल को भी उन्होंने बी.ए.फाइनल में नकल की पर्चियों के साथ पकड़ा था। तब रुआँसा होता कुणाल बोला था, ‘सर, ये पर्चियाँ मैं नहीं लाया, न मैंने किसी से माँगी हैं। किसी ने बिन माँगे मेरी टेबिल पर फेंक दीं! प्लीज सर, छोड़ दीजिए मुझे, मेरा एक साल बरबाद हो जाएगा। सत्य की रखवाली का आपका ठेका नहीं सर।’

रवि ने कहा था- ‘मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा एक साल भले ही बरबाद हो जाए, पर जिन्दगी की सफलता में किसी शार्टकट या एक साल का कोई महत्व नहीं होता।’

जल्दी ही अपने पिता का तबादला होने की वजह से वह यहाँ से चला गया था। बाद में सुना था कि वह डी.एस.पी. के लिए चुन लिया गया है।

आज पूरे पाँच साल बाद उनके सामने था वही कुणाल। एकाएक रवि बाबू के भीतर कुण्डली मारे बैठे भय के नाग का फन फिर फैला- वहीं कुणाल भी मौका देखकर आज उस दिन का बदला...।

‘प्रणाम सर!’ कहता हुआ कुणाल उनकी ओर लपका तो जीप के पास खड़े ड्राइवर और सिपाही ने भी मुस्तैदी से कुणाल का अनुसरण किया था। वे आठों लड़के पीछे मुड़ पराजित-हॉस्टल लौट गये थे। अपने पुलिसिया जूते खटकाता हुआ कुणाल चला आ रहा था।

‘सर मैं यहीं आ गया हूँ इन दिनों। कल ही ज्वाइन किया है मैंने।’ कुणाल उमग रहा था- ‘आइए सर, मैं आपको घर छोड़ दूँ।’

कुणाल फिर बोला- ‘सर, लगता है, आप बहुत परेशान हैं। आप निश्चिन्त रहिए। लेकिन ...कुणाल ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी थी।

उन्हें लगा वाक्य को कुणाल इसी तरह पूरा करेंगे ‘लेकिन मैं आपसे यही कहूँगा सर, कि आइन्दा आप इस तरह के झंझटों में नहीं पड़ें तो ठीक रहेगा।’

और वे पुलिकित हो उठे। कुणाल कह रहा था। ‘क्षमा करें सर, अक्सर आपकी कही हुई सच बात भले ही दुनिया में हर जगह सुरक्षित नहीं है उसे तोड़ा जाता है, लेकिन सच कभी भी दुनिया से खत्म नहीं होता। कोई-न-कोई इसको बचाए रखता है। एक बात आपसे कहना चाहता हूँ।’

रवि सर की आँखों को गहराई तक बेधती नजरें गड़ाकर कुणाल फिर बोला-‘मैं यह चाहता हूँ सर, कि आइन्दा ऐसी स्थितियों में नितान्त अकेले आप सच की ऐसी ही हिफाजत करते रहें, तकि मुझ जैसे कई लोंगों को सच्चाई के कदमों पर इसी झुकते रहने की प्रेरणा मिलती रह सके, और’

अपनी बात पूरी नहीं कर पाया वह और सजल नेत्रों से रवि बाबू के पैरों में झुक गया। पाँच पर गिरी कुणाल के आँसू की बूँद ने बहुत सुख दिया रवि बाबू को। नत नयनों से कुणाल मुड़ा और अपनी जीप की ओर बढ़ गया। आशंका और भय के कुहासे से निकलकर प्रेम की स्निग्ध हवा से सराबोर होते रवि बाबू अपनी स्वाभाविक चाल से घर को चल पड़े।

सम्पर्क : दत्तिया (म. प्र.) मो. 9826689939

●●

राधेश्याम भारतीय

धर्म

“...उखाड़ फेंको इन बेरियरों को। ऐसा कहकर ट्रैक्टरों पर बैठे किसानों के साथी उनका हौसला बढ़ा रहे थे।

दूसरी ओर पुलिस स्थिति को काबू में रखने के लिए किसानों पर वाटर कैनन से पीछे की ओर खदेड़ने में लगी थी। कई घंटों की जद्दोजहद के बाद किसानों ने वहीं मोर्चा सँभाल लिया। पुलिस भी वहीं डटी खड़ी रही।

इसी बीच एक पुलिस कर्मी का दम घुटने लगा। वह अपने साथियों से पानी की गुहार लगाने लगा। पर उन हालातों में उनके पास पानी कहाँ से आता। सूखी खाँसी उसे बेदम किए जा रही थी।

उसे बेहाल देख एक किसान पानी की बोतल लेकर उसकी ओर बढ़ने लगा।
 “बाबे, तुसी आ कि करदे हो। थोड़ी देर पहिलां तां एही पुलिसवाला लाठियाँ पाँज रिहा सी...अब तुसी ओहू पाणी पिलांदे हो....। मरण दो...ताही अकल ठिकाणे आऊंगी।”
 “पुत्र! तुसी ठीक कहिंदे हो। पर...।”
 “पर वर कुछ नी। इथे ही बैठो जी।”
 “पुत्र तुसी किवें भूल्ल जांदे हो, उस वक्त तां ओ पुलिसवाला अपणा धर्म निभा रिहा सी और हूण मैं अपणा। मानव-धर्म से बड़ा कुछ नी हाँदा पुत्र।” ऐसा कहते हुए वह किसान पानी की बोतल लेकर पुलिसकर्मी की ओर बढ़ गया।

सम्पर्क : करनाल (पंजाब) मो. 9315382236

●●

रामदेव धुरंधर

राजनीति की बस

दो भाई एक साथ अपने काम से कहीं जा रहे थे। दोनों बस स्टॉप पर पहुँचे कि बड़े भाई ने पेशाब के लिए आड़ में जाते-जाते छोटे भाई से कहा बस आए तो उसे आवाज दे। बस आती हुई दिखाई देने पर छोटा भाई उसे आवाज देने ही वाला था कि बस को आकर्षक देखने पर वह भ्रमित सा हो कर चुप रह गया। यह राजनीति की बस थी। इस में चारों ओर रंगदार लिखावट पुती हुई थी।

- नौकरी चाहिए तो हमारी बस में सवारी कर लो।
- महँगाई से रुष्ट हो तो हमारी बस में आ बैठो।
- स्वास्थ्य चाहिए, शिक्षा चाहिए, यही बस आप को उस मंज़िल पर पहुँचा सकती है।
- सब आप के बोट पर निर्भर करता है। राजनीति आप से इतना ही चाहती है नेता चुनने में आप कुशल हों। उस बस स्टॉप पर खड़े लोग राजनीति की बस में सवार होने के लिए उद्यत हो गए थे। वह जो छोटा भाई था वह भी लोगों की तरह उस बस में चढ़ गया था। उसने अनजाने में अपने बड़े भाई को छोड़ा। पर जैसे भी, भाई तो छूटा।

चुनाव के बाद ही दोनों भाईयों की मुलाकात हो पायी। बड़ा भाई पेशाब कर के आ रहा था और छोटा भाई राजनीति की बस से बाहर आ कर उसके पास जा रहा था। बड़े भाई ने कहा- पेशाब उतर नहीं रहा था इसलिए आने में देर हुई।

छोटे भाई ने कहा- शायद राजनीति की बस के आकर्षण में बँध जाने से मैं उसमें जा बैठा था। अब चलो फिर से उस बस स्टॉप पर खड़े होते हैं। हमें अपने काम के लिए जाना तो है।

दोनों बस स्टॉप पर पहुँचे तो वे लोग भी वहीं खड़े दिखाई दिये जो छोटे भाई की तरह राजनीति की बस में चढ़ कर चले गए थे।

सम्पर्क : मॉरिशस, फोन : +230-4137917, +230 - 7537057

●●

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

कटे हुए पंख

एक निरंकुश बादशाह को मरते समय उसके बाप ने कहा, 'बेटा, प्रजा शेर होती है। बादशाह की कुशलता इसी में है कि शेर पर सवार रहे। नीचे उतरने का मतलब है मौत। इसलिए यह ध्यान रखना कि लोग गुलामी के आगे कुछ न सोच सकें। जनता में जो सरदार प्रसिद्ध हो जाये उसे रास्ते का काँटा समझकर हटा देना।' बेटे ने बाप की शिक्षा का पालन किया और सबसे बूढ़े वजीर को हवालात में बंद कर दिया। बूढ़ा वजीर आज तक सारे शासन का सूत्रधार था।

इसी बीच कहीं से उड़ता हुआ एक तोता राज्य में आ पहुँचा। उसने चारों दिशाओं में उड़कर कहना शुरू कर दिया, 'गुलाम बने रहना सबसे बड़ी कायरता है। चुप रहकर सहना सबसे बड़ा पाप है।'

प्रजा में खुसुर-पुसुर शुरू हो गई। तोते की वाणी को देव वाणी समझकर लोग एकजुट होने लगे। बादशाह को भी सुराग मिल गया। उसने तोते को पकड़ाकर पिंजरे में बंद करवा दिया।

कुछ जनता ने तोते को मुक्त करने की आवाज उठाई तो बादशाह ने वाहवाही लूटने के लिए उसे पिंजरे से मुक्त कर दिया। तोता उड़कर दूर के वृक्ष पर जा बैठता, इसके पूर्व ही प्रजा बादशाह की दरियादिली का बखान करती हुई लौट आई। परन्तु तोता उड़ न सका। वह धीरे-से पिंजरे के पास बैठ गया था— क्योंकि उसके पंख मुक्त होने से पहले काट दिए गए थे।

सम्पर्क : नोएडा (उ.प्र.) मो. 9313727493

●●

रामकुमार घोटड़

एक और बिन्दु

पण्डाल ब्राह्मण समुदाय से भरा हुआ था। ब्राह्मण महासभा में, समाज में बदलती जीवन शैली, पण्डिताई में सेंधमारी, आमजन का देवी-देवताओं व धर्म के प्रति बदलती आस्था, और आधुनिक युग में गिरते नैतिक मूल्य जैसे विषयों पर मंथन हो रहा था। सभा में उपस्थित एक सदस्य ने खड़े होकर कहा कि हमारे समाज के लोगों की जीवन शैली शास्त्र संगत नहीं है। कुछ तो व्यवहार व आचरण में डेढ़-चमारों से भी गये बीते हो गये हैं जो एक अशोभनीय एवं चिंता का विषय है।

वो महोदय अपनी बात पूरी कर नहीं पाया था कि सभा के बीच से एक सिरफिरे ने उठकर कहा— 'मास्टर जी, आपने हमें डेढ़-चमार की उपमा दी है। हमने यह संयम रखते हुए सहन कर लिया है लेकिन आप किसी पढ़े-लिखे डेढ़-चमार को विद्वान पंडित कह दोगे तो हमारे से बर्दाशत नहीं होगा। हाँ... इस बात का ध्यान रखना।'

महासभा के मंथन विषयों में एक और बिन्दु जोड़ लिया गया।

सम्पर्क : चूरू (राज.) दूरभाष : 01559-224100

●●

रामयतन यादव

प्रतिकार

दिवाकर बाबू को रिटायर हुए अभी एक डेढ़ माह भी नहीं बीता था फिर भी आज अपने ही दफ्तर में अपने ही सहकर्मियों के बीच वे बिल्कुल अजनबी जैसा महसूस कर रहे थे।

कारण यह था कि कल तक जो उनके सामने हाथ बाँधे खड़ा रहता था, मजे से कुर्सी पर बैठकर उनकी अरजी में तरह-तरह की खामियाँ ढूँढ़कर उन्हें परेशान करने पर तुला था। माह भर से अधिक का समय बीत जाने के बावजूद भी भविष्य निधि की राशि मिलने की संभावना नहीं थी। वे हताश-निराश होकर उस नौजवान हेड क्लर्क के पास पहुँच गये, जिसका आगमन उस कार्यालय में उन्हीं के अधीनस्थ क्लर्क के तौर पर हुआ था। अभिवादन की औपचारिकता के बाद हेड क्लर्क राजन ने सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए पूछा, ‘कहिए दिवाकर बाबू कैसे आना हुआ?’

‘भाई राजन,’ दिवाकर बाबू ने शिकायती लहजे में कहा, ‘तुम्हें तो सब मालूम है कि मैं भविष्य निधि की राशि और पेंशन निर्धारण हेतु कितने दिनों से दौड़ रहा हूँ।’

कुछ पल रुककर उन्होंने पुनः कहा, ‘पता चला है कि मेरी अरजी तुम्हारे पास ही पड़ी है... तुम उसे आगे नहीं बढ़ा रहे...’

‘आपकी अरजी जरूर बढ़ेगी दिवाकर बाबू, लेकिन आप पाँच हजार देंगे, तब....’ अपमान का घूँट पीकर दिवाकर बोले— ‘तुम्हें इतना भी लिहाज नहीं कि इस दफ्तर में तुम्हारी नौकरी मैंने ही करायी थी....’

‘बदले में आपने ढाई हजार लिया भी तो था।’ दिवाकर की बात को बीच में काटते हुए राजन ने कहा, ‘उस समय आपको लिहाज नहीं करना चाहिए था क्या...?’

दिवाकर बाबू ने आँखें नीची कर उसकी तरफ देखा तो उसने अपनी बात पूरी करने के लहजे में कहा—‘दिवाकर बाबू बात यह है कि वही ढाई हजार फल-फूलकर पाँच हजार हो गया है न...’ दिवाकर भीतर उमड़ते आक्रोश को खामोशी की चादर में लपेटकर जैसे ही जाने के लिए उठकर खड़े हुए कि राजन ने पुनः टोका—‘बबूल रोपकर उसमें आम फलने की आकांक्षा क्यों रखते हैं?

सम्पर्क : पटना (बिहार)

●●

रामचन्द्र धर्मदासानी

माँ भी पास हो गई

‘माँ, तुम पास हो गई,’ उत्साहित हो राम ने अपनी माँ निर्मला को सूचना दी, ‘और तुम?’ निर्मला ने पूछा। ‘माँ पास तो बेटा भी पास’, राम यह कहकर माँ के इर्द-गिर्द प्रफुल्लित होकर नाचने लगा।

निर्मला को बचपन से ही पढ़ने की चाह थी, माँ-बाप पुराने विचारों के थे, इसलिए पढ़ नहीं पाई, फिर राम को दुनिया में लाई। उसके बाद परिवार चलाने की जद्दोजहद। देश का विभाजन हुआ और दैव

निर्मला का पति, राम और उसकी छोटी बहन के साथ भारत लाया, और मध्यभारत में आ बसे। निर्मला सिलाई का काम करती, और पति दुकानदारी करते थे। राम स्कूल जाता, पढ़कर आता, माँ के साथ बैठता था। निर्मला का पढ़ाई के प्रति रुक्षान बढ़ गया। उसने पति से परामर्श किया और यह तय हुआ कि निर्मला को प्रायवेट मैट्रिक का फार्म भरवाया जाये और एक ट्यूटर पढ़ाने के लिए रखा जाये, जो राम और निर्मला दोनों को पढ़ायेगा। राम भी हाईस्कूल में था, वह जो स्कूल से पढ़कर आता, माँ के साथ बौटा था। निर्मला का बेटा उसका दोस्त भी था। दोनों माँ-बेटे ने एक-दूसरे को सहयोग देकर अच्छे अंकों से हाईस्कूल परीक्षा पास कर ली, जिससे आगे की पढ़ाई का रास्ता खुल गया।

निर्मला बहुत खुश थी, कि उसने पढ़ाई का पहला पड़ाव पार कर लिया था, घर भर में उत्सव का माहौल था। राम भी प्रसन्न था कि उसके सहयोग से माँ पास हो गई थीं, राम के पिता की खुशी के तो ठिकाने ही न थे। अपनी पत्नी को पढ़ाने की योजना सफल जो हो गई थी।

सम्पर्क : उज्जैन (म. प्र.) मो. 8989404424

राजकुमार जैन राजन

अतिशयोक्ति कैसी

झींगू-ढींगू चूहे एक शाम अपनी माँद में लौटे तो ढींगू के पेट में जोर से दर्द हो रहा था। हुआ यह था कि सुबह जब ढींगू भोजन की तलाश में पास के खेत की तरफ गया तो उसे वहाँ मूँगफली का ढेर दिखाई दिया।

बस, फिर क्या था। ढींगू खेत में उत्तर गया और लालची स्वभाव होने के कारण भूख से कहीं ज्यादा मूँगफलियाँ खा गया। इसलिए शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। रातभर वह दर्द से कराहता रहा।

सवेरा हुआ तो झींगू बोला- ‘आज हम भोजन की तलाश में दूर-दूर तक नहीं जाएँगे। तुम कुछ देर आराम करो, मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी पकाऊँगा। हल्का खाना खाने से तुम्हारा पेट ठीक हो जाएगा।’

झींगू ने बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाने का सामान जुटाया। जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई तो झींगू ने ढींगू से कहा- ‘मैं नहाने जा रहा हूँ। लौटकर दोनों साथ-साथ खिचड़ी खाएँगे। तब तक तू आराम कर।’

झींगू नहाने चला गया तो ढींगू ने थोड़ी-सी खिचड़ी चखकर देखी। खिचड़ी बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने थोड़ी-सी और खा ली। लालची ढींगू थोड़ी-थोड़ी करके अपने हिस्से की सारी खिचड़ी खा गया।

फिर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने झींगू के हिस्से की खिचड़ी भी खा ली। उसका पेट तो पहले से ही खराब था, अब जो उसने इतनी सारी खिचड़ी अकेले ही खा ली थी तो उसका पेट फूलने लगा। वह दर्द से तड़पने लगा। हाय-तौबा मचाने लगा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि आदमी के घर में रहते-रहते चूहे भी आदमी के माफिक लालची हो गए हैं। उनका पेट कभी भरता ही नहीं। उन्हें भी और...और...और... की आदत पड़ गई है। आदमी का नमक खाकर, आदमी के घर में रहकर आदमी जैसे क्रियाकलाप चूहों के भी हो गए हों तो अतिशयोक्ति कैसी? उनका लालची होना अवश्यंभावी है।

सम्पर्क : चित्तौड़गढ़ (राज.) मो. 9828219919

राजेंद्र शर्मा 'अक्षर'

विकास

एक देश के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे यंत्र नं.-1 का आविष्कार किया जिसके द्वारा किसी भी आदमी के बारे में यह पता चल जाता था कि वह आदमी उस वक्त क्या सोच रहा है।

दूसरे देश में एक ऐसा यंत्र नं.-2 बनाया जिसमें पहले देश के यंत्र नं.-1 के अलावा यह भी ज्ञात हो जाता था कि कोई आदमी वर्तमान में क्या सोच रहा है तथा भूतकाल में क्या कुछ सोच चुका है।

तीसरे देश में एक ऐसा यंत्र नं.-3 विकसित किया जिसके द्वारा विद्युत चुंबकीय तरंगों से जिस किसी भी व्यक्ति को जैसा चाहो सोचने पर मजबूर कर दो।

सभी यंत्र माचिस के समान छोटे और तथा बहुत सस्ते थे।

विश्व के प्रत्येक देश ने यह यंत्र नं.-1, यंत्र नं.-2 यंत्र और नं.-3 बड़ी मात्रा में खरीदे। यहाँ तक कि हर आदमी अपनी-अपनी जेब में इन यंत्रों को रखकर घूमने लगा।

लोगों ने इस यंत्र का एक-दूसरे पर भरपूर प्रयोग किया। कुछ दिनों बाद धरती पर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी ही शेष बचे रह गए जिनमें न तो आदमी के बराबर अकल थी और न छल कपट।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 9893416360

●●

राजुरकर राज

जेब

'काका, इस बार तो बताना ही पड़ेगा कि तुम अपने कुरते में जेब क्यों नहीं सिलवाते हो?' -टेलर ने रामू से इस बार फिर कुरते का नाप लेते हुए पूछा।

'रहने दो भाई, तुम तो नाप लो और कुरता सिल दो' - कहकर रामू ने इस बार भी टेलर को टालने की कोशिश की।

'नहीं, इस बार तो जानकर ही रहूँगा। तुम पिछले सात-आठ सालों से मुझसे साल में केवल दो कुरते सिलवाते हो, और उसमें जेब नहीं लगवाते हो। आज तो तुम्हें कारण बताना ही पड़ेगा, नहीं तो नाप न लूँगा।'

'क्यों कुरेदते हो मास्टर जी!'

'कुछ भी हो, बोलो।'

'भाई, पूरे दिन हाथ मजूरी करता हूँ कमाता हूँ सब खर्चे, कर्जे और तगादे में निकल जाता है। शाम को घर जाओ तो बच्चे जेब में हाथ डालेंगे, क्या मिलेगा। बच्चे निराश होंगे तो दुःख तो होगा ही न? बुरा लगता है।' - कहकर रामू इस बार कुरते का नाप दिए बिना ही चला गया।

सम्पर्क : भोपाल (म. प्र.) मो. 8319379126, 7692026871

●●

राजीव नामदेव राणा लिधौरी

बेन्टेक्स की चेन

एक चेन खींचने वाले ने एक महिला की जब चेन तेजी से झपटी, तो वह महिला जल्दी कंगन उतारते हुए बोली- भइया, ये कंगन भी लेते जाओ, 'बेन्टेक्स' का पूरा सेट बन जायेगा।

उस चोर ने यह सुना तो वह एक पल रुक कर, गुस्से में आकर वह चेन जोर से नीचे फेंकते हुए शीघ्र भाग गया। महिला ने आगे बढ़कर बड़े ही आराम से खुश होकर वह चेन उठायी, और भगवान को धन्यवाद दिया कि उसके झाँसे में वह चोर आ गया और असली सोने की चेन को बेन्टेक्स की चेन समझकर गुस्से में वही फेंक गया।

सम्पर्क : टीकमगढ़ (म. प्र.) मो. 9893520965

●●

राजेन्द्र परदेसी

विवरण

वह खाना खाकर सोने के लिए लेट तो गया, लेकिन नींद आ नहीं रही थी। उसकी आँखें बाँस की मुँड़ेर देख रही थीं और मन, वह तो पता नहीं कहाँ था। तभी तो परबतिया कब आयी, उसे पता भी न चला। कमरे का दिया भी परबतिया के साथ आयी हवा में बुझ गया था। अँधेरे में पता नहीं चल रहा था कि वह जग रहा है या सो रहा है। अतः टोह लेने के लिए वह बोली- 'सो गये क्या?' 'नहीं तो, ऐसे ही लेटा हूँ।' बिना कोई हरकत किये वह बोला। परबतिया को तो बात बढ़ानी थी इसलिए फिर बोली- 'क्या सोच रहे हो?'

'कुछ तो नहीं...''

'फिर बोलते क्यों नहीं?'

'क्या बोलूँ?'

'सुबह चले जाओगे क्या?'

वह कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला- 'हाँ, छुट्टी कल ही तक तो है...परसों से ड्यूटी करनी है।'

सुबह के बिछोह की कल्पना की नागिन ने डस लिया। परबतिया के मुँह से निकला- 'कुछ दिन और रुक क्यों नहीं जाते?'

पीड़ा उसे भी साल रही थी, लेकिन करे क्या... पेट जो बीच में आ जाता है। फिर भी दुखते मन से कहा- 'कैसे रुकूँ?' छुट्टी भी बाकी नहीं है। रुक जाऊँगा, तो पैसा कट जायेगा, फिर, यहाँ बहुत दिक्कत हो जायेगी। वैसे जैसा तुम कहो?'

'मैं क्या कहूँ? तुम तो खुद ही समझदार हो। परसों चंदर आया था। कह रहा था कि तिवारी के

यहाँ से जमीन छुड़ा लो। वह बटाई पर जोतने को तैयार है?’ फिर अपनी सलाह देते हुए कहा- ‘अच्छा भी रहेगा, चार-छः कुंटल अनाज तो साल में घर में आ जायेगा। अभी तो यही देखना पड़ता है कि कब मनीआर्डर आये कि घर में दाना आवे।

इसलिए तो जा रहा हूँ कि तुम लोगों को तकलीफ न हो।

फिर दोनों विवशता की चादर में सिकुड़ सिमट रहे।

सम्पर्क : लखनऊ (उ.प्र.) मो. 9415045584

●●

रंजना शर्मा

खिसकते पल

भीरू, अँधेरी रात में खेत पर खड़ा मन ही मन सोच रहा है, जीवन का मार्ग कितना लंबा हो गया है। मुट्ठी में बैंधे वे हँसी के पल जाने कहाँ समा गए। खेत में बीज डाले, और अंकुर फूटने की प्रतीक्षा रहती। पौधों का लहलहाना, खेत में उठती, बरसती मेघमालायें और तभी बच्चों का कोलाहल-कितनी शीघ्रता से आनंद बटोरना चाहता था। हाथ में छोटी सी लालटेन जिसकी चिमनी में कालिख जमी हुई है, उसका प्रकाश चंद कदमों तक ही था। दिन का प्रकाश भीरू के लिए अभिशाप बन गया था, घर से निकला और कर्ज लेने वालों का ताँता लग जाता। एक कदम बढ़ाया ही था, थोड़ा ठिठका शायद किसी की पदचाप है। उस निःस्तब्धता में पत्नी का स्वर गूँजा, ऐ जी! ‘राते किते जा रये?’

‘कहूँ नहीं जा रओ, ते घर जा मटरुआ जाग जैहे’ लौट जा तें, हों तो तनक हवा खा रओ, रमकू वापस आ गई। मटरुआ को कलेजे से लगा कर सो गई।

सबेरे घर के सामने भीड़ देखी और पूछने लगी। काय भैया क्या हो गओ, इत्ते मरद काय खड़े?

हरिया धीरे से आगे बढ़ा मटरुआ को प्यार से हाथ फेरा और बोला रमकू भौजी तनक इते आओ, भीरू भैया ने पीपर की डार तरें फौंसी लगा लई। पतझड़ के दौड़ते पत्तों सी उन्मत्त रमकू, सन्नाटे में ढूबी भीड़ को चीरती भीरू की लंबी गर्दन से लिपट गई।

आँसू सूख गए, हूँक सी उठी पृथ्वी को अपने आँचल से झाड़ा- पोँछा भीरू को सुला दिया।

भीड़ से एक सवाल था उसका, ‘मरबे पे किते दे रई आजकाल सरकार?

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 8989159519

●●

रेणुका सिंह

रियल हीरो

मम्मा-मम्मा देखो ये क्या हो रहा है। बस अड्डे की भीड़ तो लगातार बढ़ती ही जा रही है।

पिंकी के आवाज लगाने पर सरिता दौड़ती हुई आयी तो उसकी आँखें आश्चर्य से फ़टीं की फटीं रह गयीं सामने हज़ारों लोगों का रेला बस अड्डे की तरफ तेजी से बढ़ रहा था।

पिंकी रोने लगी कि 'ममा ... पापा को फ़ोन करो, उन्हें वहाँ से किसी तरह निकालो। अगर यहाँ भगदड़ मच गई तो पता नहीं कितने लोग बेमौत मारे जायेंगे। ये भीड़ कंट्रोल करना नामुमकिन है।'

सरिता के पति की पोस्टिंग बस अड्डे के प्रमुख के पद पर थी। ये मजदूरों का हुजूम था जो कोरोना के टाइम में दिल्ली से पलायन कर रहा था। उसके घर वालों के भी फ़ोन आने लगे कि किसी तरह उन्हें वहाँ से बाहर निकालो।

वो घबरा कर फ़ोन पर फोन किये जा रही थी पर संजीव उसका फोन ही नहीं उठा रहे थे। पूरे दिन पिंकी और सरिता के मुँह में एक निवाला भी नहीं गया। बढ़ती हुई भीड़ को देख कर कलेजा मुँह को आ रहा था।

सारी रात संजीव बिना खाये पिये मुस्तैदी से मुसाफिरों को उनकी मंज़िल तक पहुँचाने में लगे रहे।

सुबह थके हुए पर विजयी मुस्कान के साथ जब घर में दाखिल हुए तो उन्हें अच्छे से साफ सुथरा (सैनिटाइज) होने के बाद पिंकी बोल ही पड़ी... 'पापा वहाँ इतनी भीड़ होने के साथ-साथ कोरोना के मरीज भी होंगे क्या आपको डर नहीं लगता..।'

संजीव ने पिंकी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- '...बेटा, अगर मैं ही डर गया तो मेरा पूरा स्टाफ कैसे काम करेगा और ये जो लाखों लोग हमारे भरोसे यहाँ आये हैं। उनका क्या होगा। अभी तो ये लम्बी लड़ाई है जो कुछ दिन और चलेगी।'

पिंकी टकटकी लगाए अपने रियल हीरो पापा को देखे जा रही थी।

सम्पर्क : गाजियाबाद (उ.प्र.) मो. 9807303555



रोहित शर्मा

मृत जीवन

बाड़मेर में राशन का डोडा पोशत लेने वालों की लंबी कतार लगी थी। नशा मुक्ति केंद्र के वरिष्ठ चिकित्सक विमल कुमार अपने कनिष्ठ अधिकारियों के साथ वहाँ निश्चित उद्देश्य से आये थे। उन्होंने सब को गौर से देखा। कतार में भावहीन सूखी आँखें लिये लोग निर्धारित मात्रा मिलने की आशा में तिलमिलाते हुए खड़े थे। कतार में एक महिला भी खड़ी थी लेकिन उसकी आँखें सूनी नहीं थीं, उनमें पानी था।

'तुम कतार में कैसे?'

'पति के लिए लेने आयी हूँ।'

'तुम स्वयं ही उसे नशा देती हो?'

'वे बचे ही कहाँ हैं, उनमें एक तड़प बची है जो उठते ही नशा माँगती है। उसको शांत रखने के लिए नशा देना पड़ता है।' उनकी बातें सुनकर कुछ आगे खड़ा व्यक्ति हँस दिया। विमल कुमार ने साथियों को उसे साथ लेने को कहा।

साथ खड़े नये अधिकारी ने विमल कुमार से कहा-

'सर कितना दुष्ट व्यक्ति है! दूसरे के दुःख में हँस रहा है।'

‘दुष्ट होना या नहीं होना अलग विषय है लेकिन हमारे लिए महत्वपूर्ण ये है कि इसमें जीवन की क्रियाएँ अभी शेष हैं। ये हँसता है तो रोता भी होगा। प्रयास करें तो ये नशा छोड़ सकता है। अन्य तो ‘ब्रेन डैड’ हैं।’

‘नहीं मैं ज़िंदा हूँ।’ एक व्यक्ति ने हाथ नीचे करने के अदृश्य दबाव को हटाते हुए धीरे-धीरे हाथ ऊपर किया। ‘इसको भी साथ ले लो।’

अन्य सभी अकड़ कर साँस रोक कर खिड़की की ओर देखने लग गए। कहीं उन्हें जिंदा न समझ लिया जाए।

सम्पर्क : बिलासपुर (छ.ग.)

●●

रूपसिंह चन्देल

हकीकत

सुबह एक कवयित्री मित्र का फोन आया। बोलीं, ‘आपने अमुक अखबार देखा?’

‘देखा। उसमें कुछ खास है?’

‘स्नेह रश्मि के कविता संग्रह की समीक्षा—---।’

‘वह भी देखा--लेकिन...’

मेरी बात बीच में ही काट वह बोलीं, ‘मेरा संग्रह प्रकाशित हुए एक वर्ष होने को आया और किसी भी पत्र-पत्रिका ने अभी तक उसकी समीक्षा प्रकाशित नहीं की, जबकि मैंने सभी को समीक्षार्थ प्रतियाँ भेजी थीं। स्नेह रश्मि के संग्रह को प्रकाशित हुए छः माह भी नहीं हुए और कितनी ही पत्रिकाओं और रविवासरीय अखबारों में समीक्षाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।’ उनके स्वर में उदासी स्पष्ट थी।

‘देखिए... मैंने उन्हें नाम से संबोधित करते हुए कहा- ‘आपके पति दूरदर्शन या आकाशवाणी में निदेशक नहीं हैं और न ही किसी मंत्रालय या लाभप्रद विभाग में ऊँचे पद पर हैं। आकाशवाणी या दूरदर्शन में निदेशक नहीं तो कम से कम प्रोग्राम एकज्यूकेटिव ही होते... लिखने वाले लपककर आपका कविता संग्रह थामते और आपको बताना भी नहीं होता कि आपने कहाँ-कहाँ समीक्षार्थ प्रतियाँ भेजी हैं। वे स्वयं पत्र-पत्रिकाएँ खोज लेते। स्नेह रश्मि के संग्रह की भाँति ही वे आपके संग्रह पर भी टूट पड़े होते और सारे कामकाज छोड़कर उस पर लिखते। आपके पति हैं तो रक्षा मंत्रालय में लेकिन ऐसे पद पर भी नहीं कि वहाँ की कैटीन से लिखने वालों के गले तर करने की व्यवस्था कर सकते।’

‘यह तो मुझ जैसी साधनहीना के साथ ज्यादती है।’ लंबी साँस खींच वह बोलीं।

‘कुछ जोड़-जुगाड़कर आप भी इंडिया इंटर नेशनल सेंटर या इंडिया हैबिटेट सेंटर में एक गोष्ठी कर डालें... समय की वास्तविकता को समझें... वर्ना...।’

‘वर्ना...वर्ना...’ उनके शब्दों में पहले की अपेक्षा और अधिक उदासी थी। उनको उदास जान मैं उनसे अधिक उदास हो चुका था।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9810830957

●●

आर. एस. माथुर

भविष्य की योजना

मुझे सबरे जल्दी जाना था टूर पर ऑडिट करने। सबरे कहीं और ऑटो मिलना कठिन था, इसलिए पड़ोस की ही एक बस्ती में रहने वाले ऑटो वाले से पहले बात कर ली थी।

सबरे उसके घर ही पहुँच गया। ऑटो में उसका दस बरस का बेटा सो रहा था।

मैंने उसे आवाज लगाई। घर में से ऑटो वाला बाहर आया और उसने अपने बेटे को जगाया।

‘उठ रमेश! जल्दी से गाड़ी बाहर निकाल कर साफ कर दे। अंकल को छोड़ने जाना है।’

मुझे आश्चर्य हुआ। दस साल का बेटा गाड़ी बाहर निकालेगा।

‘अरे तुम क्यों नहीं निकालते गाड़ी! ’ मैंने आपत्ति ली।

उसका उत्तर आया, ‘कोई बात नहीं बाबूजी! यह तो पिछले एक साल से गाड़ी को साफ करता है, पोंछता है, पेट्रोल चेक करता और पहियों की हवा देखता आ रहा है। इसे सब आइडिया है। मैं नहीं होता हूँ तो पास की कोई सवारी भी ले जाता है।’ उसने आश्वस्त भाव से बताया।

‘ऐसा क्यों करते हो। यह पढ़ने नहीं जाता क्या?’ मैं अभी भी अपने सही और उसके गलत होने पर अटका हुआ था।

‘जाता है बाबूजी! पाँचवीं क्लास में है, लेकिन आजकल पढ़ाई ऑनलाइन हो रही है न। इसे जाना भी नहीं पड़ता। धीरे-धीरे सब सीख जाएगा।’

‘ऐसा मत करो। उसका भविष्य ऐसे मत बिगाड़ देना।’

‘ये भी ठीक कही आपने। आपका बेटा, इतना पढ़-लिख कर, घर पर ही तो बैठा है। मैंने तो इसे पुश्तैनी काम सिखा दिया है। कुछ साल बाद लाइसेंस बनवा दूँगा। एक ऑटो किराए पर ले लूँगा। चैन की नींद सोता हूँ। आपकी तरह फिक्र में तो नहीं घुलता! क्यों ठीक कहा न?’

उसका यह कहना अब मुझ पर भारी पड़ रहा था।

‘चलें सर। आपको देर न हो जाए।’ उसने कहा।

मुझे लगा देर तो अब हो गई है।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.)मो. 8462007117

●●

रुखसाना सिद्धीकी

सीख

कल का उगा हरा भरा गवरीला पेड़, सामने खड़े ठूँठ को ताना दे रहा था-‘तुम व्यर्थ ही रास्ता रोके खड़े हो। छोड़ क्यों नहीं देते अपनी जगह। अब तुम से किसी को कोई फायदा नहीं, उल्टे मार्ग की बाधा बने हुए हो। तुम हट जाओगे तो मुसाफिर टेढ़े-मेढ़े मार्ग से नहीं, सीधी राह से गुजर जायेंगे।’

दूर पेड़ कुछ क्षण मौन रहा फिर गम्भीरता से बोला - 'तुम अभी नए-नए हो। जवानी की उमंग तुममें जोश मार रही है, तुम्हारी तरोताजा जड़े बेहद कोमल हैं। अभी तुमने आँधी, तूफान, गड़गड़ाते बादल और चमकती बिजली का सामना नहीं किया। ना जाने कौन सा हवा का झोंका तुम्हें नेस्तनाबूद कर दे ... तुम्हें जड़ से उखाड़ फेकें...।'

'इसलिए अपनी जवानी पर इतराओ मत...। मुझे देखो हजारों आँधी, तूफान झेल अपना अस्तित्व बचाए अडिग खड़ा हूँ...। तुम्हारी तरह छाया नहीं दे सकता तो क्या हुआ। दूँठ रहकर उन्हें चट्टान की तरह अटल हौसले की सीख तो दे ही सकता हूँ।'

सम्पर्क : टीकमगढ़ (म.प्र.) मो. 9425893110

●●

रूप देवगुण

जगमगाहट

वह दो बार नौकरी छोड़ चुकी थी। कारण एक ही था- बॉस की वासनात्मक दृष्टि, किंतु उसका नौकरी करना उसकी मजबूरी थी। घर की आर्थिक दशा शोचनीय थी। आखिर उसने एक दफ्तर में नौकरी कर ली। पहले ही दिन उसके बॉस ने अपने केबिन में देर तक बिठाए रखा और इधर-उधर की बातें करता रहा। अबकी बार उसने सोच लिया था, वह नौकरी नहीं छोड़ेगी, वह मुकाबला करेगी। कुछ दिन दफ्तर में सब ठीक-ठाक चलता रहा, किंतु एक दिन उसके बॉस ने उसे अपने साथ अकेले उस कमरे में आने के लिए कहा जहाँ पुरानी फ़ाइलें पड़ी थीं। उन्हें उन फ़ाइलों की चेकिंग करनी थी। उसे साफ़ लग रहा था कि उसके साथ कुछ गड़बड़ होगी। उस दिन बॉस सजधज कर आया था।

एक बार तो उसके मन में आया कि कह दे कि मैं नहीं जा सकती, किंतु नौकरी का ख्याल रखते हुए वह इन्कार न कर सकी। कुछ देर में ही वह तीन कमरे पर करके चौथे कमरे में थी। वह और बॉस फ़ाइलों की चेकिंग करने लगे। उसे लगा जैसे उसका बॉस फ़ाइलों की आड़ में केवल उसे ही धूरे जा रहा है। उसने सोच लिया था कि ज्यों ही वह उसे छुएगा वह शोर मचा देगी। दस पंद्रह मिनट हो गए, लेकिन बॉस की ओर से ऐसी कोई हरकत न हुई।

अचानक बिजली गुल हो गई। यह बॉस की ही साज़िश हो सकती है, यह सोचते ही वह काँपने लगी। लेकिन तभी उसने सुना, बॉस हँसते-हँसते कह रहा था, 'देखो तुम्हें अँधेरा अच्छा नहीं लगता होगा। तुम्हारी भाभी (बॉस की पत्नी) को भी अच्छा नहीं लगता। जाओ तुम बाहर चली जाओ।' इस अप्रत्याशित बात को सुनकर वह हैरान हो गई। बॉस की पत्नी, मेरी भाभी यानी मैं बॉस की बहन।

सहसा उसे लगा, जैसे कमरे में हज़ार-हज़ार पावर के कई बल्ब जगमगा उठे हैं।

सम्पर्क : सिरसा (हरियाणा) मो. 9812236096

●●

रश्मि प्रणय वागले

कुर्बानी

‘एक लड़की से छेड़खानी के कारण भड़का दंगा सैकड़ों को लील चुका है। एक लड़की को छेड़ने के विरोध में सैकड़ों जाने गयीं।’ सारे टीवी चैनल्स पर एंकर्स चीख-चीख कर समाचार सुना रहे थे।

उफ्फफ! ये आग तो भड़कती ही जा रही है, बस्ती से निकल कर अब नये शहरों तक जा पहुँची है। अब तक 50 लोगों से भी ज्यादा के मरने की औपचारिक खबर आ चुकी है न्यूज़ में। और बाकी का नुकसान तो करोड़ों में पहुँच गया है। ‘वो’ मासूम सहमी हुयी सी कोने में सिमटी पड़ी थी। लाल सुर्ख आँखों में अब आँसू का एक कतरा भी नहीं बचा था। ‘मैं, क्या मैं जवाबदार हूँ इन सबके लिए? इतने लोगों की मौत का कारण मैं हूँ। कैसे जी पाऊंगी मैं इतना बड़ा बोझ लेकर? नहीं अब और नहीं सहा जाता ये अपमान, ये दर्द।’

और उसने उसी क्षण एक निर्णय लिया। उठ खड़ी हुयी और झूल गयी फंदे पर। पहुँच गयी उस दुनिया में, जहाँ वो अब टीवी की ये आवाजें और सुर्खियाँ नहीं देख-सुन पा रही थी। उसका निर्णय सही था या गलत वो नहीं जानती थी, लेकिन हाँ सभ्य समाज के कुछ दरिद्रों के किये की सजा एक बेगुनाह को भुगतनी पड़ी। विडम्बना कि ये कभी न खत्म होने वाला सिलसिला अनवरत चलता रहेगा। उसकी कुर्बानी के बाद भी।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 7509630764

●●

लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

प्रधानमंत्री चुप क्यों हैं

बैठा टी. वी. देख रहा था कि अचानक गली में शोर सुनाई पड़ा। जाकर देखा तो एक बच्चे को कुत्ते ने काट लिया था। एक व्यक्ति ने बताया कि बच्चे ने कुत्ते को चिढ़ाया था। लेकिन तभी भीड़ में से एक नेतानुमा आदमी निकला और भाषण देने लगा- ‘जब से ये नई सरकार आई है कुत्तों के हौसले बहुत बढ़ गए हैं। जब देखो बिना बात के बेसमय भौंकने लगते हैं। जिसे चाहें, जब चाहें काट लेते हैं। लोग इन कुत्तों से परेशान हैं और प्रश्नासन जश्न मना रहा है।

तभी भीड़ में से एक आवाज आई - ‘प्रधानमंत्री’॥१॥

लोगों ने फौरन जवाब दिया ‘मुर्दबाद’॥२॥

काफी देर नारे लगाने के बाद जब पता चला कि कुत्ता किसी और का नहीं बल्कि नेतानुमा आदमी का ही था तो नेता चुपके से खिसक गया और भीड़ भी अपने-अपने घर की ओर बढ़ गई।

मैंने भी राहत की साँस ली और घर आ गया, लेकिन घर आकर जैसे ही टी.वी. खोला तो हैरान हो गया। घटना को अभी आधा घंटा ही हुआ था कि टी.वी. पर चर्चा शुरू हो चुकी थी। एंकर वहाँ पर बैठे लोगों से पूछ रही थी- ‘आधा घंटा हो गया कुते द्वारा बच्चे को काटे हुए किन्तु अभी तक प्रधानमंत्री का वक्तव्य नहीं आया है, आखिर प्रधानमंत्री चुप क्यों हैं? क्या ये संवेदनहीनता की पराकाष्ठा नहीं है।

सम्पर्क : हैदराबाद, मो. 9393385447

●●

लता अग्रवाल

व्यावहारिक कुंडली मिलान

‘पंडित जी! मेरी पत्नी अभी-अभी दो कुंडलियाँ आपको देकर गई हैं मिलान के लिए।’

‘हाँ! जी।’

‘क्या कह रही थी वो?’

‘कहती थी गुणों का मिलान होगा तभी व्याह के लिए हामी भरेगी।’

‘तो पंडित जी, आपको किसी भी तरह उन कुंडलियों का मिलान करना है।’

‘ये कैसे संभव है जजमान?’

‘पंडित जी! आपकी भी जवान बेटी है, ना।’

‘है तो।’

‘सोचो जरा कोई अच्छे घर का रिश्ता खुद ब खुद चलकर आपके घर आये।’

‘बहुत सौभाग्य की बात होगी श्रीमान।’

‘एकलौता लड़का हो, वो भी सरकारी नौकरी में?’

‘शिव! शिव! सोने पर सुहागा जजमान।’

‘उस पर दहेज की कोई माँग नहीं।’

‘कभी न छोड़ूँ ऐसे रिश्ते को, गुणों का क्या, जहाँ मन के तार मिल जाएँ, वहाँ गुण तो अपने आप ही मिल जाते हैं।’

‘तो पंडित जी ...क्या आदेश है?’

‘शगुन की तैयारी कीजिये जजमान।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.)

●●

ललित समतानी

धर्म और जात

हमारी कार भोपाल-इन्दौर हाइवे पर तेज गति से दौड़ी जा रही थी। मैं चाह रहा था कि किसी भी तरह उजाले-उजाले अपने परिवार सहित सुरक्षित इन्दौर पहुँच जाऊँ। मन में बार-बार डरावने ख्याल आ रहे थे। कोई वाहन आते देख मैं कार की गति और बढ़ा देता, तेज और तेज।

हम आधे से ज्यादा रास्ता तय कर चुके थे। धीरे-धीरे अँधेरा घिर आया था। मैं मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ करने लगा। कुछ दूरी पर सड़क पर टार्च की रोशनी से गाड़ी रोकने के लिए इशारा करते हुए कुछ लोग हमारी गाड़ी के सामने आ गये। मजबूरीवश मुझे रुकना पड़ा। मैंने एक झटके में हनुमान जी की मूर्ति सामने से हटा दी। भीड़ में से एक टोपीधारी गरजते हुए बोला, ‘कहाँ से आ रहे हो, कहाँ जा रहे हो?’

मैंने धीरे से कहा, ‘जी हम भोपाल से इन्दौर जा रहे हैं।’ उसने अन्दर झाँकते हुए पूछा, ‘कौन जात के हो?’

बाहर सड़क किनारे लगे बोर्ड पर दौलतपुर पढ़ते ही मेरे मुँह से तपाक से मुसलमान निकल गया।

वो बोला, ‘अच्छा कुरान शरीफ़ की एक आयत सुनाओ।’

मैंने तुरन्त अंग्रेजी में दो लाइनें यह बोलते सुना दी कि उर्दू बराबर बोलना नहीं आती है।

उसने इशारे से आगे बढ़ जाने के लिए जगह कर दी।

पास बैठी पत्नी बोली, ‘आपने तो गीता के श्लोक को कुरान की आयतें बता अंग्रेजी में सुना दिया।’

मैंने लम्बी साँस लेते कहा, ‘उमा, इन लोगों ने अगर कुरान पढ़ी होती तो ये जो आज कर रहे वो कभी नहीं करते।’ मील का पत्थर इन्दौर दो किलो मीटर बता रहा था और मेरा हनुमान चालीसा का पाठ खत्म हो गया था।

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.) मो. 98260 95711

●●

ललिता अच्यर

अनुत्तरित प्रश्न

यशोधरा का मन आज वर्षों की विरह वेदना और वैराग्य के उपरांत हर्ष की कुछ तरंगों को अनुभव करने लगा जबसे उसे ज्ञात हुआ कि उसके स्वामी राजमहल के ही समीप ज्ञानोपदेश देने पधारे हैं। चरम यौवनावस्था में उसका और नवजात पुत्र राहुल का परित्याग कर सत्य की खोज में संन्यास मार्ग पर सिद्धार्थ के चले जाने के बाद यशोधरा महल में ही राजसी भोग विलास का पूर्ण त्याग कर योगिनी का जीवन यापन कर रही थी। यशोधरा ने अपने पुत्र से कहा- ‘राहुल, जाओ अपने पिताश्री के चरण स्पर्श कर भावी जीवन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करो।’ पुत्र के चले जाने के कुछ समय बाद उसके मन में एक बार अपने पति के दर्शन करने की इच्छा इतनी बलवती हो गई कि वह राजमहल की मर्यादा के विपरीत नंगे पाँव चल कर वहाँ पहुँच गयी। वहाँ अपने पुत्र को योगी के वेश में देख कर यशोधरा दंग रह गई। उसने

गौतम बुद्ध के चरण स्पर्श कर पूछा—‘यह आपने क्या किया? इस अबोध बालक को भी संन्यास का मार्ग दिखा दिया। मैं एक तपस्विनी के रूप में भी संसार के कर्तव्यों का पालन कर रही हूँ। यदि संसार से मुख मोड़ना ही आपका धर्म एवं मार्ग है तो मानव जाति का भविष्य क्या होगा? विलुप्त नहीं हो जाएगी? गौतम बुद्ध मंद मंद मुस्कुराए और बिना कुछ कहे अपने शिष्यों सहित बहाँ से चले गए।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9893360915, 9589278589



विजय जोशी ‘शीतांशु’

महेश्वर

‘दरबान, ये कौन लोग हैं, जो सीधे अंदर चले आ रहे हैं? इन्हें रोको?’

मंत्री जी के पास बैठे सलाहकार ने कान में बोला—‘मालिक आप ... आप इन्हें नहीं पहचाने?’

‘इन्हें कैसे रोक सकते हैं? आपका पाँच वर्षों का इनसे गहरा नाता रहा है। जब आप मंत्री थे।’

‘मैं स्वयं तुम्हारे कहने पर इन्हें रोज बँगले पर लाता ले जाता था।’

मालिक ‘वह पारो और उसकी बेटी है।’ आपके छोड़ने के बाद, बड़े बुरे हालातों से गुजर रहे हैं।

शायद कुछ मदद के लिए आये होंगे। ‘कुछ देकर रफा-दफा कर देंगे।’ ‘अरे, तुम तो मेरे हमराज हो, इनको यहाँ से भगाओ, नहीं तो गले पड़ जायेंगी। हिस्सा माँगेगी। चुनाव सिर पे है।’ ‘क्या भरोसा कोई समझदार विपक्षी मिल जाये, तो यह अपनी बेटी और मेरा डॉ.एन.ए. टेस्ट भी करवा ले।’ अभी मैं किसी मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता हूँ। मेरी जिंदगी के इस काले पृष्ठ को हमेशा के लिए निकाल फेंको। समझ गए ना।’ ‘यह मेरी आगामी सफेदपोश जिंदगी में कहीं काला धब्बा न लगा दे।’

उसके बाद पारो और उसकी बेटी को किसी ने नहीं देखा। शहर ही नहीं दुनिया की मतदाता सूची से दोनों के नाम विलोपित हो गये।

सम्पर्क : खरगोन (म.प्र.) मो. 9617259535



विवेक निझावन

कराहटें

बूढ़ी सास बार-बार कराह रही थी—‘अरे, कोई है, एक गिलास पानी ही दे दो।’ सास की आवाज को अनसुना कर बहू ने बेटे को पढ़ाना शुरू कर दिया—‘टू वन्ज आर टू टू टूज़ आर फ़ोर।’ सास के कराहने की आवाज पुनः आई तो बहू ने अपना स्वर और ऊँचा कर लिया—‘टू वन्ज आर टू टू टूज़ आर फ़ोर।’ बार-बार दादी की कराहटें सुन पोता बोल उठा, ‘मम्मी, दादी!’ ‘तो तुम्हारा ध्यान टेबल्ज़ की तरफ़ है ही नहीं! अगर इस बार तेरे नाइन्टी परसेंट नम्बर न आए तो देख। मैं तेरी जान ले लूँगी।’ कहते हुए मम्मी ने कसकर उसका कान मरोड़ा। पोते की चीख सुनकर दादी ने कराहना बंद कर दिया था।

सम्पर्क : अम्बाला शहर (हरि.) मो. 9896100557



विभा रश्मि लो अपनी धूप

जाड़े की धूप तापने के लिये सुबह से ही काकू की आराम कुर्सी गली के दूसरे किनारे पर उनका पोता निकू रख आया था। जब तक धूप ने उनकी कुर्सी का स्पर्श नहीं कर लिया, वे अधीर हो खिड़की से झाँक-झाँक कर बाहर ही देखते रहे। वे सोच रहे थे, ‘उजली-गर्म धूप का ये सुख बस चंद घंटों का।’ उन्होंने आराम से बैठकर जाड़े की धूप तापना शुरू किया ही था कि म्यूनिसिपैलिटी के मज़दूर फावड़े और खुदाई-मशीन ले कर वहाँ आ फटके। शीत-लहर में गुनगुनी धूप की अहमियत काकू को मालूम थी। वे डटे रहे।

ठेकेदार के आदमियों से काकू की बहस हो गई। जिस धूप पर वे बरसों से अपना एकाधिकार समझे थे, वो तो सरकारी ज़मीन पर खिली थी। पलभर में ही काकू से धूप सेकने का अधिकार छिन गया। आज उन्हें पहली बार पता चला कि धूप भी सरकारी और गैर-सरकारी होती है।

काकू और कॉन्ट्रैक्टर की बहस बेनतीजा देखकर आस-पड़ोस के लोगों ने बीच-बचाव करने की चेष्टा की। काकू की एक न चली। उनकी प्लास्टिक की कुर्सी उठा कर एक ओर पटक दी गई। आधुनिक ड्रिलिंग मशीन से नाले की खुदाई शुरू हो गई। काकू हार कर अपने ठंडे कमरे में लौट आये और वहाँ से खड़े होकर नाले का निर्माण देखते रहे। बूढ़ी हड्डियों में दूर से ही धूप की गर्मास भरते रहे।

तभी सड़क पार दुर्मिले मकान में से एक युवती, जो सब देख-सुन रही थी, बूढ़े काकू के लिये परेशान होती हुई उनके पास चली आयी।

उसने काकू से मुख़ातिब हो, उन्हें मज़दूर व म्यूनिसिपैलिटी के लोगों से बहस न करने के लिये समझाया। लड़की ने हाथ जोड़कर विनम्रता से कहा- ‘अंकल, आपकी धूप हमारे घर है। प्लीज़ अब आप चलाए धूप सेकने।’

काकू का गुस्सा पानी हो गया था। वे उस सहृदया युवती के साथ चुपचाप चल पड़े, उसके घर अपनी बिखरी-बिछी जाड़े की धूप सेकने।

सम्पर्क : गुरुग्राम, मो. 8826765717

●●

वंदना सहाय

तीन बेटों का बाप

पिछले पाँच सालों से सुरभि की कार धोने का काम करने वाले रामप्रसाद ने पहली बार ऐसा किया कि जब वह बिना बताये आठ दिनों तक काम पर नहीं आया। सुरभि को यह कुछ अजीब-सा लगा और उसका मन आशंका से भर सोचने लगा कि पता नहीं इस महानगरी में उसकी खोज-खबर लेने वाला कोई है भी है या नहीं।

अभी वह अन्तर्द्वंद्व से जूँझ ही रही थी कि कॉल बेल बजी और पैरों ने अनायास ही उठ कर दरवाज़ा खोल दिया- सामने रामप्रसाद किसी अपराधी की तरह नजरें झुकाये खड़ा था। बिना हजामत की गयी सफेद दाढ़ी ने उसे सहसा कई वर्ष बूढ़ा बना दिया था। धूमिल चेहरे से धूसर आँखें झाँक रहीं थीं। उसने कहना शुरू किया-‘माफ़ करना मैडम जी, समय इतना कठिन था कि आपको बिना बताये घर बैठ जाना पड़ा।’

‘क्या हुआ?’ सुरभि ने पूछा।

‘अरे! मैडम जी, क्या बताऊँ। घर वाली अचानक बीमार हो गयी थी। मलेरिया सिर तक चढ़ गया था। सरकारी डॉक्टरों ने प्राइवेट अस्पताल ले जाने को कहा। तीन लाख के करीब लगे, पर ऊपर वाले की दया से वह बच गयी।’

सुरभि के पसीजे मन ने जीभ पर सवार हो पूछा-‘इतने सारे रुपयों का इंतज़ाम तुमने किया कहाँ से?’

‘बाप रे! इतने पैसे मेरे पास कहाँ थे? मुझे तो इस संकट की घड़ी में ही पता चला कि मैं तीन बेटों का बाप हूँ। पता नहीं, मेरे बेटों ने इतने पैसों का इंतज़ाम कैसे किया होगा। पता चला कि मेरे बड़े बाले ने अपने फलों के जूस का ठेला और मँझले बाले ने अपनी स्कूटी गिरवी रख दी। छोटे बाले ने डबल शिफ्ट में काम करना शुरू कर दिया। सबका अपना परिवार है, पता नहीं...’ आँखों को छलकने से रोकने के प्रयत्न के कारण उसके होठों की बात अधूरी रह गयी।

उसका एक-एक शब्द सुरभि की अंतरात्मा को झकझोरता चला जा रहा था। उसे याद आया जब चार साल पहले उसकी सास गंभीर रूप से बीमार हो गयी थीं, तो उसके पति एवं उसके अन्य दो भाई उच्चस्तरीय नौकरियाँ एवं भरा-पूरा बैंक बैलेंस रहने के बावजूद, अपनी माँ के इलाज का दायित्व एक-दूसरे पर फेंकने की कोशिश कर रहे थे, और अंत में ससुर को गाँव का मकान गिरवी रखना पड़ा था।

सम्पर्क : नागपुर (महा.) मो. 9325887111

●●

विजया त्रिवेदी

करवाचौथ

मेडम जी, आज तो आपका करवाचौथ का उपवास होगा। वैसे...। कुछ सोचकर... मेडम जी, एक बात पूछूँ...। आपको मैंने इतने साल से कभी करवाचौथ का उपवास करते नहीं देखा। काम वाली बाई झाड़ू-पौछा करते करते पूछ रही थी। वैसे इन बाइयों को किसके घर में क्या हो रहा है, कौन आया, किसका किसके साथ टाँका फिट है, सब पता रहता है। ये चलती-फिरती टेलीफोन होती हैं।

मैं अपने काम में व्यस्त थी। कुछ सुनकर भी अनसुना कर रही थी। दिल के एक कौने में टीस थी जो की चुभने लगी, जिसे मैंने बरसों से दबाके रखा था। मैं उस अतीत में चली गई...।

‘आज जल्दी घर आ जाना।’

‘क्यूँ आज क्या है? पहले तो कभी जल्दी आने को नहीं कहा...।’

‘आज ऐसा क्या खास है।’

‘आ...आ...आवाज कँपकँपाते हुए करवाचौथ है।’

‘ओह...।’

रुखी हँसते हुए चले गए। रोज़ रात को पीकर आना, मार पीट करना जैसे उसके जीवन जीने का आधार बन चुका था। वृणा होने लगी थी उससे...। एक दिन प्रण किया, आखिर किसके लिए और क्यों ये सब दिखावा करूँ? जिसके लिए एक औरत अपना सब कुछ छोड़कर आती है, एक नया जीवन जीने के लिए आज वही... बस...। अब नहीं... बहुत सहन कर लिया। तभी किसी ने आवाज दी...मेडम जी, मैं शाम को नहीं आऊँगी।

‘क्यों, आज तेरा उपवास है?’

‘हाँ...कुछ रुखाई से जवाब दिया।

‘क्यों क्या हुआ ऐसे रुखी सी क्यों बोल रही है?’

मैं उसकी आँखों में झाँकते हुए बोली—‘क्या तेरा आदमी तुझे मारता है, तेरे चेहरे पर तो नील के दाग हैं, फिर भी तू...’

उसके लिए अपने को कष्ट दे रही है, पूरे दिन भूखी रहेगी...।’

‘आखिर क्यों...?’

मेडम जी, इसीलिए तो सब सहन कर रही हूँ, कम से कम मेरे पास मर्द तो रहता है। वरना...।

चुप हो गई।

‘क्या हुआ...?’

‘मैं जिस मोहल्ले में रहती हूँ वहाँ के लोग कबके नोच डालते मुझे।’

मैं उसका चेहरा देखती रह गई....

कुछ क्षण के लिए उसकी कहानी मेरी कहानी जैसी नजर आने लगी।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9165007070

●●

वसुधा गाडगिल

सरोवर

उस शहर की पहचान अनेक ताल-तलैया के कारण थी। पर्यटक सुंदर सरोवरों को निहारने दूर-दूर से आते थे। देश की प्रगति और विकास का प्रभाव शहर पर भी दिखता था। बड़ी-बड़ी गगनचुंबी इमारतें, सीमेंट की सड़कें, विकसित तकनीकें आदि की द्रुत गति ने शहर को भी तेज़ रफ्तार दी थी किंतु दूसरी ओर सरोवरों में निरंतर सड़ांध, दुर्गंध बढ़ती जा रही थी। स्थानीय लोग तालाब का इस्तेमाल स्वयं और पालतू जानवरों की शुद्धता के लिये कर उसे अशुद्ध कर रहे थे। पास खड़े पीपल, नीम के वृक्षों की पत्तियाँ भी बढ़ते तापमान से सूख रहीं थीं। पीपल जिसके पत्ते बसंत आते ही ताली बजाने लगते थे, थिरकने लगते थे, नीम की पत्तियाँ ब्रह्म मुहूर्त में चहकने लगती थीं। दोनों वृक्ष दुःखी थे। पीपल ने परेशान होकर सरोवर से कहा - ‘मित्र, आदमी की

मति को न जाने क्या हो गया है? इसकी अति महत्वाकांक्षी वृत्ति हमारी जान ले रही है! ‘‘क्या कहूँ मित्र! मेरा स्वस्थ शरीर निर्बल और मृतप्राय-सा हो गया है! मेरी चमड़ी देखो! चर्मरोगों से पीड़ित हो गई है! कितनी बार गुहार लगाता हूँ पर मानव-मति पर पत्थर पड़ गये हैं!’

नीम भी त्रस्त था। हताश होकर बोला – ‘सड़क पर दौड़ती, धुँआ छोड़ती गाड़ियों से मेरी तबियत भी नासाज़ रहने लगी है।’

तीनों के बीच संवाद जारी था। तभी दूर आसमान से कुछ प्रवासी पक्षी धरती पर उतरते नजर आने लगे, जिन्हें देख तालाब और वृक्ष प्रसन्न हो गये। सारे पक्षी ठुनक-ठुनककर तालाब के कचरे को चोंच में पकड़ते हुए बाहर लाकर फेंकने लगे। तालाब ने राहत की साँस ली। उसे पुनर्जीवित कर रहे पक्षियों को वह कृतज्ञ भाव से देख रहा था। पीपल, नीम के वृक्षों में उम्मीदें जाग गईं। प्रकृति के मानवेतर अंग मानव जाति को प्रकृति को सहेजना सिखा रहे थे!

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.)

●●

वाणी दबे

विश्वास

ज्यादा बड़ा वृक्ष नहीं था वह, जिस पर गौरैया ने अपना छोटा सा घोंसला बड़े जतन से बनाया था। उसे देखकर लगता था यह एक आँधी में ही उखड़कर धराशायी हो जाएगा। कुछ शाखों, कुछ कोपलों और कुछ फूलों का गुलदस्ता ही तो दिखाई देता था दूर से। गौरैया को सबने समझाया भी था कि यह सुरक्षित स्थान नहीं है, लेकिन उसे विश्वास था तो केवल उन जड़ों पर जिससे वह बँधा हुआ था और वह दिन आया जब उसके अपने घोंसले में बच्चे फुदकने लगे तभी मौसम बदला और तूफान ने तेज बारिश की आहट दी। मजबूत वृक्ष उखड़ गए, लेकिन उस पेड़ को कुछ न हुआ जहाँ गौरैया के बच्चे फुदक रहे थे।

और गौरैया के चेहरे पर विश्वास चमक रहा था।

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9926005000

●●

विश्वभर पाण्डेय ‘व्यग्र’

चबूतरे का नीम

जब कान्ती बहू बनकर इस घर में आई, तब उसकी सास ने बताया कि ये बाहर चबूतरे पर नीम का पौधा, तेरे पति ने ही लगाया है। तब से कान्ती ने उसकी देख-रेख व सुरक्षा का जिम्मा ले रखा था। कान्ती बहू, अब कान्ती दादी का रूप ले चुकी थी। उसके पति भी इस दुनिया से कई वर्ष पहले जा चुके थे। कान्ती दादी अब सुबह से शाम तक चबूतरे के उस नीम के नीचे टाट बिछाकर बैठी रहती। शायद इस रहस्य को वो स्वयं कान्ती ही जानती थी कि उस नीम से उसका क्या रिश्ता है?

कुछ महीनों बाद कान्ती के बड़े पोते का विवाह होने वाला था। इस कारण घर में एक चर्चा होने लगी कि नीम को कटवाकर चबूतरे पर एक बड़ा कमरा बनवा दिया जाये। ये चर्चा जब कान्ती के कानों तक पहुँची तो उसे धक्का लगा और वह उस दिन से अनमनी सी रहने लगी। कुछ दिनों बाद तो उसका खाना-पीना भी लगभग छूट गया। अचानक, माँ की तबियत खराब देख, बेटे चिंतित होने लगे। उन्होंने उसे डॉक्टरों को बताया पर उसकी बीमारी, किसी के पकड़ में नहीं आ रही थी। एक दिन उसने, अपने बेटों से कहा, ‘बेटों! मुझे बाहर चबूतरे पर ले चलो, मैं कुछ पल वहाँ बिताना चाहती हूँ।’

बेटे-बहुओं ने उसकी खाट चबूतरे पर जाके रख दी और सब आश्चर्य से उसे देखने लगे। वो कान्ती दादी अपलक उस नीम को देखे जा रही थी। किसी को पता भी नहीं चला कि कब उसके प्राण पग्बेल उड़ गये।

सम्पर्क : सर्वाई माधोपुर (राज.) मो. 9549165579



विष्णु सक्सेना

संतोष

राघव की एक बचपन की मित्र है नाम है संतोष। वह उससे प्रेम करता है और वह भी राघव से। वह बहुत सीधी व सादगी पसंद है। एक दिन राघव ने उससे कहा, ‘यह बीसवीं सदी है तुम भी बदलो।’

वह मुस्कुराई और बोली, ‘यह मृगतृष्णा है।’

एक दिन राघव एक माल में घूम रहा था। तभी उसकी मुलाकात दया व कृपा से हुई। उनकी आँखों में मादक आकर्षण व मौन निमंत्रण था। राघव तभी से उनमें आसक्त है।

संतोष से चाहकर भी मिल नहीं पा रहा है और संतोष धीरे-धीरे उससे दूर होती जा रही है।

सम्पर्क : गाजियाबाद (उ.प्र.) मो. 9896888017



विनीता राहुरीकर

सपनों का बक्सा

‘उफ़! अब इस भारी बक्से में क्या है।’ ससुर जी ने तौलती नजरों से बड़े से बक्से को देखा। दहेज़ के सामान से बस खचाखच भर चुकी थी पहले ही। सोच रहे थे अब इसे किस तरह और कहाँ रखें।

‘जी बिटिया के सारे सर्टिफिकेट, मेडल्स, और किताबें हैं। मैं बस के ऊपर चढ़ावा देता हूँ अभी।’ बेटी के पिता ने कहा।

‘अरे नहीं-नहीं, जगह नहीं है। गृहस्थी का सामान होता तब भी एक बारगी सोचते। इस फ़ालतू सामान के लिए कोई जगह नहीं है। जरूरत भी नहीं है। इसे आप अपने पास ही रखिये।’ कहते हुए ससुर बस में चढ़ गए और बस आगे बढ़ गयी।

बहते आँसुओं के बीच धुँधलाई नजरों से नई-नवेली बहू सड़क पर पड़े उस बक्से को देख रही थी। उसे लग रहा था उसका स्वतंत्र अस्तित्व, उसकी विद्या, सपना, उसका आत्मसम्मान, विश्वास सबकुछ उस बक्से में ही बन्द होकर सड़क पर छूट गया है और वो एक अँधेरे भविष्य की ओर बढ़ रही है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9826044741



विजय उपाध्याय

राजा

धर्मराज के कैंपस में आई एक आत्मा ने पहले दिन ही खूब उत्पात मचाया, वहाँ की व्यवस्था पर अँगुली ही नहीं उठाई बल्कि बड़े-बड़े आरोप जड़ दिए। आहत धर्मराज ने उस आत्मा को ही एक ससाह के लिए राजा बना कर व्यवस्था चलाने की जिम्मेदारी सौंप दी। दो दिन में ही धर्मराज का सिहांसन डोलने लगा। हर तरफ चीत्कार, हाहाकार से व्यथित धर्मराज उस आत्मा की कार्यवाही देखने राजसभा पहुँचे। दीन-हीन मरणिल्ले लोगों को गिड़गिड़ते देख वह आत्मा खूब आनन्दित हो रही थी। लोगों को बड़े-बड़े आश्वासन देना, मातहतों को डाँटना-फटकारना और खूब खा-पी कर सो जाना, यही उसकी दिनचर्या थी।

धर्मराज का सिर चकराया। उसने चित्रगुप्त से उसका खाता खुलवाया तो पता चला कि वह किसी बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री की आत्मा है जिसकी दुर्घटना में मौत हुई थी। धर्मराज ने यमराज को आदेश दिया। इस महाप्रतापी का शव अभी तक जनता के दर्शनों के लिए रखा हुआ है। इसे तुरंत पृथ्वीलोक पहुँचाओ नहीं तो यह स्वर्ग को भी नरक से बदतर बना देगा।

सम्पर्क : कांगड़ा (हि.प्र.) मो. 8629084484



विनय कुमार

गुनाह

पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके सलाखों के पीछे डाल दिया था। वजह थी ऐसा कत्तल जो एक लड़की का अपहरण करके उसे जिस्मफरोशी के दलदल में धकेलने जा रहा था। समाज और मीडिया उस पर थू-थू कर रहा था क्योंकि उसका भी जुर्म का इतिहास था। और उस लड़की को भी शक की निगाह से देखा जा रहा था। अदालत में जज ने उससे अपना बयान देने को कहा। उसने एक बार कटघरे में खड़े उस युवक को देखा और फिर भारी मन से कहने लगी- ‘जज साहब, हर किसी का एक अतीत होता है और जरूरी नहीं कि उस अतीत से ही उसके वर्तमान को निर्धारित किया जाए। अगर इस मामले में सब लोग इस युवक को मुज़रिम करार दे रहे हैं तो शायद उससे बड़ी मुज़रिम मैं खुद हूँ। आखिर ये क़त्तल तो मेरी ही वजह से हुआ है और अगर किसी ऐसे व्यक्ति का क़त्तल करना गुनाह है, तो मैं वो गुनाह बार-बार करूँगी।’ अदालत में सन्नाटा छा गया, लड़की ने एक बार और उस युवक की आँखों में देखा और दृढ़ता से चलते हुए अपनी सीट पर बैठ गयी।

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9140521518



वर्षा अग्रवाल

जिंदगी बाकी है अभी

ट्रेन रुकी। मेरे मायके के उस छोटे से स्टेशन पर मेरे अलावा एक दो यात्री ही उतरे, और अपनी राह ली। मैंने जैसे ही सामान एक तरफ किया, मुझ अकेली के साथ सामान देखकर दोनों ओर से दो कुली मेरी ओर लपके। पचास रुपये तय कर मैंने उनमें से नौजवान कुली को सामान उठाने का इशारा किया। दूसरा कुली जाने के लिये मुड़ा तो वह उससे बोला...

‘चच्चा, जे बैग तुम उठाय लेओ।’

‘अरे! देखने में तो तुम हट्टे-कट्टे हो। तुमसे दो नग नहीं चलेंगे? रहने दो। मैं दूसरा कुली कर लूँगी।’

वह घबराकर जल्दी से बोला...

‘बहन जी, आप गलत समझ रही हैं। आपने जो तय किया है, वही देना। हम आपस में बाँट लेंगे।’

लोग दूसरे का हक मारकर भी डकार नहीं लेते, यह गरीब बाँटने की बात कर रहा है। मैं अचकचा गई ‘क्या मतलब...?’

फिर जो उसने कहा, सुनकर मैं निरुत्तर हो गई। अपने छोटे से शहर की आबोहवा और परवरिश पर गर्व हो आया मुझे, कि मैं असली भारत की बेटी हूँ। उसने कहा... ‘बहन जी, बारह बज रहे हैं। ऊपर से चिलचिलाती धूप। सवेरे से एक भी सवारी नहीं मिली। बाँट लेंगे तो दोनों घरों में चूल्हा जल जायेगा। मैं तो एकबारगी भूख सह भी लूँगा, पर चच्चा कल आने लायक नहीं रह जायेंगे।

सम्पर्क : अलीगढ़ (उ.प्र.) मो. 9258016490



वर्षा रावल

किस्मत के निशान

बाबू, मैं बहुत गरीब हूँ। सच कहती हूँ मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं?

लाइन में खड़े और लोग उस फटी साड़ी में लिपटी जीर्ण काया को देखने लगे...

देखो न भाई इसकी कोई मदद कर सको तो ..किसी ने कहा- सरकारी योजना इन्हीं के लिए तो बनती है। इन्हें ही फायदा न मिले, तो क्या मतलब ...बुजुर्ग ने कहा।

माई मैं कब से कह रहा हूँ, तुम्हारा आधार कार्ड नहीं बन पा रहा है। मैं बहुत कोशिश कर चुका हूँ।

गरीब स्त्री की आँखों से आँसू बह निकले, मुँह से निकले उद्गार के साथ कि.. बाबू सात साल की उम्र से बर्तन माँज रही हूँ घरों में, मेरे हाथों के निशान घिस गये हैं। निशान नहीं छोड़ रहे, तो इसमें मेरा क्या दोष...हाथ की रेखा जैसी बदहाल थी वैसे ही घिस जाने से अँगुलियों की रेखा भी हो गई। मेरे फूटे भाग्य की तरह....वो रोती जा रही और इधर ग्लानि से भर गया है, आधार कार्ड बनाने वाला बाबू....

सम्पर्क : मुंबई (महा.) मो. 9977237765



वर्षा चौबे

सलवार सूट

माँ देखो मैं ये सूट पीस लाई हूँ कैसे हैं? सोनू ने मुस्काते हुए माँ के गले में हाथ डालकर पूछा। बहनों में सबसे छोटी सोनू माँ की कुछ ज्यादा ही लाड़ली थी।

हर छूट थी उसे-खाने की, पहनने की। सोनू ने भी गलत फायदा नहीं उठाया। पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी कर रही थी। माँ के लिए अभी तक बच्ची ही थी। पूछ-पूछकर खाना बनाती, बहलाकर खिलाती पर अभी कुछ दिनों से देख रही माँ का स्वभाव कुछ चिढ़चिड़ा हो गया था। या तो बिल्कुल चुप रहती या बात-बात में बिगड़ जाती। हो क्यों नहीं 32 की हो रही थी। देखने में अच्छी खासी फिर भी अभी तक शादी नहीं हो पा रही थी। जो आता जाने के बाद कोई जवाब नहीं देता। माँ की उम्मीदें और स्वास्थ्य दोनों ही गिरते जा रहे थे। माँ सूटों की ओर देखकर बोली- ‘बेटा ऐसा कोई रंग चुन लो जो तुम पर अच्छा लगे और ज्यादा तंग या ढीला मत सिलवाना। ऐसी फिटिंग जिसमें तू अच्छी लगे।’ सुनकर सोनू उदास हो गई बोली- ‘माँ ऐसा क्यूँ कह रही हो? पहले तो मैं तुम्हें हर रंग, हर ड्रेस में अच्छी लगती थी। फिर अचानक क्या हो गया?’

माँ बोली बेटा- ‘अच्छी तो तू मुझे आज भी लगती है, पर बात मेरे अच्छे लगने की नहीं। मैं चाहती हूँ इस इतवार जो लड़के वाले आ रहे हैं, उन्हें भी तुम पसन्द आ जाओ। और फिर खेत बिकने से पैसे भी आ गए हैं। इस बार शादी होने में कोई कमर नहीं छोड़ना चाहती।’ कहकर माँ अपने कमरे में चली गई। और सोनू माँ की पीड़ा को महसूस करते हुए उन सूटों को समेटने लगी।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9827318628

●●

विजेता

सुकेश साहनी

‘बाबा, खेलो न!’

‘दोस्त, अब तुम जाओ। तुम्हारी माँ तुम्हें ढूँढ़ रही होगी।’

‘माँ को पता है- मैं तुम्हारे पास हूँ। वो बिल्कुल परेशान नहीं होगी। पकड़म-पकड़ाई ही खेल लो न।’

‘बेटा, तुम पड़ोस के बच्चों के साथ खेल लो। मुझे अपना खाना भी तो बनाना है।’

‘मुझे नहीं खेलना उनके साथ। वे अपने खिलौने भी नहीं छूने देते।’ अगले ही क्षण कुछ सोचते हुए बोला, ‘मेरा खाना तो माँ बनाती है, तुम्हारी माँ कहाँ है?’

‘मेरी माँ तो बहुत पहले ही मर गयी थी।’ नब्बे साल के बूढ़े ने मुस्कुराकर कहा।

‘बच्चा उदास हो गया। बूढ़े के नजदीक आकर उसका झुर्रियों भरा चेहरा अपने नहें हाथों में भर लिया,’ अब तुम्हें अपना खाना बनाने की कोई जरूरत नहीं, मैं माँ से तुम्हारे लिए खाना ले आया करूँगा। अब तो खेल लो।’ ‘दोस्त।’ बूढ़े ने बच्चे की आँखों में झाँकते हुए कहा, ‘अपना काम खुद ही करना

चाहिए—और फिर—अभी मैं बूढ़ा भी तो नहीं हुआ हूँ—है न !'

'और क्या, बूढ़े की तो कमर भी झुकी होती है।'

'तो ठीक है, अब दो जवान मिलकर खाना बनाएँगे।' बूढ़े ने रसोई की ओर मार्च करते हुए कहा।
बच्चा खिलखिलाकर हँसा और उसके पीछे-पीछे चल दिया।

कुकर में दाल-चावल चढ़ाकर वे फिर कमरे में आ गये। बच्चे ने बूढ़े को बैठने का आदेश दिया,
फिर उसकी आँखों पर पट्टी बाँधने लगा।

पट्टी बाँधते ही उसका ध्यान अपनी आँखों की ओर चला गया— मोतियाबिन्द के आपरेशन के बाद एक
आँख की रोशनी बिल्कुल खत्म हो गई थी। दूसरी आँख की ज्योति भी बहुत तेजी से क्षीण होती जा रही थी।

'बाबा, पकड़ो—पकड़ो!' बच्चा उसके चारों ओर घूमते हुए कह रहा था।

उसने बच्चे को पकड़ने के लिए हाथ फैलाए तो एक विचार उसके मस्तिक में कौंधा— जब दूसरी
आँख से भी अंधा हो जाएगा—तब—तब—वह—क्या करेगा?—किसके पास रहेगा?—बेटों के पास?
नहीं—नहीं! बारी-बारी से सबके पास रहकर देख लिया—हर बार अपमानित होकर लौटा है—तो
फिर?— 'मैं यहाँ हूँ—मुझे पकड़ो!'

उसने दृढ़ निश्चय के साथ धीरे—से कदम बढ़ाए, हाथ से ट्योलकर देखा, मेज, उस पर रखा
गिलास, पानी का जग, यह मेरी कुर्सी और यह रही चारपाई और यह रहा बिजली का स्विच, लेकिन तब
मुझ अंधे को इसकी क्या ज़रूरत होगी? होगी—तब भी रोशनी की ज़रूरत होगी, अपने लिए नहीं, दूसरों
के लिए, मैंने कर लिया। मैं तब भी अपना काम खुद कर लूँगा।'

'बाबा, तुम मुझे नहीं पकड़ पाए, तुम हार गए—तुम हार गए!' बच्चा तालियाँ पीट रहा था।

बूढ़े की घनी सफेद दाढ़ी के बीच होंठों पर आत्मविश्वास से भरी मुस्कान थिरक रही थी।

सम्पर्क : बरेली (उ.प्र.) मो. 9634258583

●●

बर्षा ढोबले

तर्पण

बड़े भैया आ गये, किसी ने अन्दर आकर खबर दी। टैक्सी से उतर कर जय ने अन्दर आकर विवेक
को गले लगाया और फक्फक-फक्फक कर रो पड़ा। बाबू जी के देहान्त वाले दिन अमेरिका से आने में
असमर्थता जता दी थी। पर तेरहवीं को आना पड़ा। तभी रेखा चाय लेकर आयी, तेरहवीं की सभी तैयारियाँ हो
चुकी थीं। जय विचलित था। रुपये की व्यवस्था उसी के सिर पड़ना है। रेखा को बड़ी तन्मयता के साथ काम
करते देख जय ने कहा—बाबू जी की हर इच्छा की पूर्ति करना चाहता हूँ, तो अब वे सारी कसर पूरी करेंगे। तभी
विवेक ने कहा भैया, बाबू जी ने हमेशा सीधी-सादी जिंदगी जी और सादा भोजन किया अब ये दिखावा
क्यों? मैंने सादा भोजन बनवाया है, सात पंडितों को न्योता दिया है और बाबू जी की पंसद के गुलाब जामुन
भी बनवाये हैं। कुल मिलाकर पचास लोग होंगे खाने पर और इतना कहकर काम में जुट गया। सभी कार्य
यथावत हो गये। मेहमान जाने लगे तब फूफा जी ने कहा देखो विवेक अगले साल श्राद्ध भी करना पड़ेगा। जय

को तो छुट्टी की समस्या होगी तो तुम गया जाकर कर देना। कहते हैं वहाँ तर्पण करने से मोक्ष मिल जाता है तब जय के आने का भी काम नहीं होगा। जय ने भी हाँ में हाँ मिलाई, तभी रेखा ने कहा- ‘तर्पण... बाबू का श्राद्ध तो हम विधिवत करेंगे, उनके मोक्ष की कामना भी करेंगे’ पर उन सारी यादों का क्या? उनका तर्पण तो न कभी हुआ है, न होगा। उन्हें हमारे साथ ही रहने दें।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 8085646430

●●

श्याम सुन्दर अग्रवाल

मुद्रे

जब उग्रवादी ने वीराने में चार राहगीरों को रोका तब रिवाल्वर में केवल दो गोलियाँ ही शेष बची थीं। पहली चार गोलियाँ दो व्यक्तियों को लाशों में बदल चुकी थीं। चारों राहगीर भयभीत थे। एक ने जान बचाने के लिए भागने का प्रयास किया तो रिवाल्वर ने गोली उगली और भागने वाला वहाँ ढेर हो गया। शेष बची एक गोली तीनों के लिए काफी नहीं थी। इसलिए उन तीनों को कब्रें खोदने का हुक्म सुनाया गया। कब्र खोदते हुए पहले ने कहा- ‘यह हमें कब्रों में जिंदा दफन कर देगा। हमें मिल कर इसे काबू कर लेना चाहिए।’

सहमा हुआ दूसरा बोला, ‘नहीं कब्रें तो उन तीन लाशों के लिए हैं। हमने कोई गड़बड़ की तो वह हमें गोली मार देगा।’ ‘जैसा वह कहता है, वैसा ही करें, शायद वह हमें छोड़ दें।’

तीसरा दूसरे की बात से सहमत था। जब वे कब्रें खोद चुके तो आदेश मिला, ‘अपनी-अपनी कब्र में लेट जाओ, वर्ना गोली मार दी जायेगी।’ पहले ने धीमी आवाज में दूसरे से कहा, ‘अभी भी मौका है, और नहीं तो हम भाग ही जाएँ। रिवाल्वर की गोली बहुत दूर तक मार नहीं करती।’ दूसरे ने काँपते हुए कहा- ‘नहीं वह हमें मार देगा। कब्र में लेटने के बाद शायद उसे हम पर रहम आ जाए।’

दूसरा और तीसरा कब्रों में लेट गये और आदेशानुसार अपने ऊपर मिट्टी डालने लगे। पहले ने उग्रवादी को सम्बोधित होते हुए कहा, ‘वहाँ जमीन में कुछ हथियार दबे हुए लगते हैं।’ हथियार देखने के लिए उग्रवादी कब्र के नजदीक हुआ। पहले ने उसे धक्का दे कब्र में फेंक दिया और अपने पूरे सामर्थ्य से उस पर मिट्टी डालने लगा।

सम्पर्क : कोटकपूरा (पंजाब) मो. 9888536437

●●

श्याम सुन्दर दीपि

उदासी का सफर

राघवी की लड़की हुई तो सास की मुस्कुराहट जैसे कहीं छुप ही गई।

राघवी के पास पहले से लड़का-लड़की हैं। इस बार अनियोजित गर्भ होने पर, सास ने ही आग्रह किया, ‘कोई न, यह गर्भ रहने दे, भाईयों की जोड़ी अच्छी होती है।’ परिणाम बहनों की जोड़ी में निकला। कुदरत की कार्यवाही, राघवी की सास पर कहर बन कर टूटी।

राघवी को उसकी बहन मिलने आई। उस की उदासी का कारण समझते, उसके मन में एक विचार दौड़ा। रिम्पी के विवाह को पाँच वर्ष हो गए हैं और उसके घर कोई संतान नहीं है। सभी मेडीकल उपाय व गैर विज्ञानक उपचारों का असर न हुआ। उसने राघवी से कहा, “ये लड़की मुझे दे दे।”

रिम्पी की सास भी कई बार कह चुकी थी कि बिना दादी बने ही मर जाऊँगी। कोई तो हो, लड़का या लड़की, जो मुझे दादी कह कर बुलाए। ...रिम्पी ने सोचा, इस तरह मेरी सास की इच्छा भी पूरी हो जाएगी।

रिम्पी ने अपने पति से सलाह की और राघवी की बेटी को अपनी छाती से लगा लिया।

घर आ कर रिम्पी ने यह खबर सास को दी और बेटी को दादी की गोदी में डाल दिया।

रिम्पी की सास के मुँह से निकला, “ये क्या? खुद ही फैसला कर लिया?” और गुस्से में बोली, “अगर बच्चा गोद ही लेना था तो लड़की क्यों?”

रिम्पी को लगा, जैसे उसकी बहन की उदासी, उसमें दाखिल हो गई हो!

सम्पर्क : अमृतसर (ਪंजाब) मो. 9815808505

●●

शेख शहजाद उस्मानी

देसी औरत

कड़ाके की सर्दी में सर्दी-बुखार से पीड़ित गर्भवती औरत कम्बल ओढ़े हुए जोर-जोर से कराह रही थी। रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की के पास ही एक कोने में अपने पति के साथ वह देर रात से बैठी हुई थी।

‘क्यों रे, अपनी लुगाई को सरकारी अस्पताल क्यों नहीं ले जा रहा, रात भर से कराह रही है। अब तो ऑटो-रिक्शा भी मिल जायेगा!’ – एक कैन्टीन वाला दूर से ही चिल्लाकर बोला। पति खड़े होकर इधर-उधर देखने लगा, फिर ठिठुरते हुए वापस अपनी जगह पर बैठ गया। औरत लगातार कराह रही थी। उसने इशारों से पति को परेशान न होने को कहा। कुछ ही पलों में पति की गहरी नींद लग गयी। पत्नी के अन्दर की औरत जागी। उसने अपने कम्बल से पति को भली भाँति ढाँक दिया और वापस अपनी जगह पर जाकर बैठ गई। पत्नी सी पुरानी साड़ी का पल्लू समेटती हुई वह फिर से जोर-जोर से कराहने लगी। कुछ ही देर में कूँ-कूँ की आवाज करता हुआ एक कुत्ता ठिठुरता हुआ सा पति के नजदीक आया और कम्बल के नीचे छिप गया।

टिकट खिड़की पर एक आधुनिक सी शिक्षित महिला उस औरत से कुछ कहने के लिए आगे बढ़ी तो उसके पति ने इशारा करके उसे रोक कर टिकट खिड़की पर ही खड़े रहने को कहा।

वह औरत अब भी जोर-जोर से कराह रही थी। उसके पति की खर्राटों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। कुत्ता कम्बल के नीचे ही छिपा सो रहा था।

सम्पर्क : शिवपुरी (म.प्र.) मो. 7869242589, 9406589589

●●

शशि बंसल

असल सहारा

वह स्याह रात थी। जब दो बूढ़ी आकृतियाँ उस पब हाउस के समीप जाकर ठिठकीं। दोनों ने एक दूसरे को देखा। उन व्यग्र आँखों के बीच मौन वार्तालाप हुआ। दोनों ओर से आश्वस्ति का भाव मिलते ही वे साहस कर भीतर प्रवेश कर गईं।

‘अरे...? अरे...? कहाँ घुसे चले आ रहे हो दोनों? ये कोई मंदिर-वन्दिर नहीं...पब हाउस है, पब हाउस। यहाँ तुम बूढ़ों का क्या काम?’

शोर सुन दो परिचित युवा आकृतियाँ उन तक पहुँचीं और उन्हें घसीटते हुए बाहर ले आईं।

‘क्या डैड... अब मेरी जासूसी भी शुरू कर दी।’ ये गर्जना युवा पुरुष आकृति की थी।

‘नहीं बेटा...ये बात नहीं। रात के दो बजे रहे थे, तुम्हारा फ़ोन भी नहीं लग रहा था, तो...’ बूढ़ी पुरुष आकृति कातर स्वर में बोली।

‘यही ‘प्रॉब्लम’ है, इन बूढ़ों की...खुद तो रात-रात भर सोयेंगे नहीं... और चिंता का बहाना बना पहरा देंगे संतानों पर।’ तैश में डूबा ये स्वर युवा महिला आकृति का था।

‘जब जवान बेटा-बेटी आधी रात को घर से बाहर हो, तो हम बूढ़ों को नींद कैसे ...’ बूढ़ी आकृति का शिकायती स्वर गूँजा।

‘अब हम बच्चे नहीं रहे...बड़े हो गए हैं, आप दोनों भी अपना बचपना छोड़िये और घर जाइये।’ ज़िंड़कते लहजे में कहते हुए वे दोनों युवा आकृतियाँ एक-दूजे की बाँह थामे भीतर चली गईं।

बूढ़ी आँखें पुनः मिलीं, अब कि मुखर वार्तालाप के साथ।

‘सही तो कहते हैं बच्चे, हमें बचपना छोड़ देना चाहिए। अब वे बड़े हो गए हैं।’ कहते हुए दोनों बूढ़ी आकृतियाँ असल सहारे काठ की लाठी को थामे अपनी-अपनी राह हो लीं।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) (म.प्र.) मो. 7697045571



शेफालिका श्रीवास्तव

बड़े लोग

‘अरे सुनो-कहीं जाना मत ..पुलिस घूम रही है!’

‘हाँ-हाँ.. मुझे कहाँ जाना है।’

पर अपने लाड़ले धीरज को रोक सको, तो रोक लिया करो।’

पति-पत्नी के बीच वार्तालाप चल रहा था, कि लॉकडाउन के समय घर में रहना ज़रूरी है।

तभी दोनों बेटों की बातचीत की आवाज आयी -

‘यार मनु मज़ा आ गया गाड़ी में बाहर घूम कर आये। थोड़ी ठंडी हवा भी मिली और नजारा भी

देखा।'

धीरज चहकते हुये बोला रहा था! यह सुन कर मनु तपाक से बोला - 'अरे तुम्हें किसी ने रोका नहीं, बाहर जाना तो सख्त मना है लॉकडाउन में'!

'नहीं भाई ... कहाँ ... मैं तो तफ़री कर के पान खा के आ रहा हूँ।'

थोड़े गर्व से धीरज बोला! यह सुन कर मनु बोला - 'हाँ- धीरज ये सारे नियम कानून तो थोड़े निचले तबके वालों के लिये ही होते हैं।'

'हाँ! हा हा .. हम तो बड़ी गाड़ी में घूमते हैं और पुलिस वालों को भी बुमा लेते हैं।'

थोड़े गर्व से धीरज बोला!

मनु धीरे से बोला - 'वो तो ठीक है भाई पर बायरस का कोई दोस्त नहीं होता है... !'

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 8085479090

●●

शारदा गुप्ता

माँ हमेशा माँ ही रहेगी

सुबह से काम की तलाश में निकला प्रणव जब रात को थका-माँदा घर पहुँचा तो सभी की आँखों में एक प्रश्न था व साथ में उम्मीद भी।

पापा की थकी-थकी आवाज ने पूछा-‘बेटा कुछ काम बना कि नहीं?

पत्नी ने उत्सुकता से आवाज में मिश्री घोलते हुए पूछा-‘इंटरव्यू कैसा हुआ?’

बेटे राहुल ने पूछा-‘पापा कितने का पैकेज मिला है?’

रुही ने पूछा-‘पापा इस साल छुट्टियों में तो शिमला ले जाओगे ना?’

बूढ़े दादाजी ने प्रणव को अपने पास बैठाकर सिर पर हाथ फेरा। मानो कह रहे हों - ‘बेटा सब ठीक हो जाएगा।’

लेकिन माँ ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए पूछा-बेटा सुबह से कुछ खाया-पिया की नहीं?

प्रणव माँ की तरफ देखता हुआ सोचने लगा-‘माँ हमेशा माँ ही रहेगी।’

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9826677728

●●

शमीम शर्मा

बेटे की माँ

- तेरी माँ ने तुझे कुछ सिखाया है या नहीं? तुझे आटा गूँथना भी नहीं आता।

- माँजी, मैं तो सारा ध्यान बस खेलों में ही रखा करती, तभी तो खेलों में मैडल जीते हैं मैंने। आये दिन बड़े-बड़े फंक्शनों में मंत्रियों से मैडल मिला करते।

- मैडल से रोटियाँ तो नहीं बनतीं।

- मेरी माँ ने तो मुझे खेलों में टॉप पर ला दिया। चलो तो आप सिखा देना रोटी-सब्जी बनाना। प्रोमिस है कि मैं बहुत जल्दी सीख जाऊँगी। पर क्या 'ये' बना लेते हैं रोटियाँ?
- तेरा दिमाग खराब है? क्या अब लड़के रोटी-सब्जी बनायेंगे?
- तो क्या मैडल लाये थे, इनके किसी क्लास में या खेलों में?
- तूने मैडल क्या जीत लिये तू तो सिर पर ही चढ़ी जा रही है।
- पर यह तो बताइए आपने क्या सिखाया इन्हें? ना खेल, ना पढ़ाई, ना रसोई।
- ज्यादा ज़बान ना लड़ा। आई बड़ी।
- शताब्दियों से सुना रही हो, अब सुनने की आदत डाल लो। बेटे पैदा करके कोई तीर नहीं मार दिया आपने।

सम्पर्क : हिसार



शोभा रस्तोगी

मुट्ठी भर धूप

कमरा बुहारती सतिया चुप थी आज। आँखें नम थीं। लपालप बोलने वाली के होठों पर टेप? दिशा से न रहा गया - 'क्या है री? आज मौन ब्रत? वो भी तेरा? तेरी बोलती चुप्पी?' 'कछु न दिदिया।'

'न-न है कुछ?' पूछते ही तरबतरा गया चेहरा। दोनों टंकी खुल गई।

'फिर मारा तेरे मरद ने?'

'हाँ, दिदिया.. दारू वास्ते हम पइसा नाई दे रहे। बच्चन के टूसन काजे जोड़े रहे। दो बोल बोल दिए, बस्स...।' 'बोलती ही क्यूँ है तू? औरत कितना ही करे... बोल नहीं सकती। मुझे ही देख। तेरे साहब के आगे होंठ सी के रहती हूँ। क्या करे... घर जो चलाना है।'

'का घर औरत का ही होय करे? मर्दन का कोई लेन-देन नहीं? झाड़-पौछा, रसोई-बर्तन, बाजार-हाट, बच्चा-बुजुर्ग, तीज-त्यौहार, रस्म-नेगई सब महरारू के पल्ले? मरद मस्त तोपर भी चौधरी?' एक ही रौ में बोले जा रही थी सतिया।

'धरती-धरती ही रहती है। असमान नहीं बन सकती।' दिशा का घुटा दर्द तड़पा।

'कौन हम आसमान के चाँद-तारे चाहे रही... मुट्ठी भर धूप और हवा भी नाहीं...।'

'झाड़ से बिस्तर तक बना सकता है मर्द औरत को।'

'ई सब के इलावा थोड़ी धूप की सेंक और बयार की ठंडक भी बनना चाहे है औरत... मैं ई हवा और ताप बन के ही रहूँगी।' दोनों की अधमुँदी निस्तेज आँखें एक ही प्रश्न और प्रत्युत्तर में एक क्षीण आस की किरण देख रही थीं। किरण जो निकलेगी अवश्य निकलेगी।

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9650267277



शील कौशिक

विकलांग

पन्द्रह अगस्त ! भारत की आज़ादी का दिन ! टी.वी., मोबाइल, लाउडस्पीकर पर चारों तरफ देशभक्ति के गाने सुनाई पड़ रहे थे । पास बैठे कुछ युवक ताश खेलने में व्यस्त थे । वहाँ से गुजरने वाले एक सज्जन उन्हें सम्बोधित कर बोले, ‘अरे भाइयों ! राष्ट्रगान बज रहा है, इस धुन का मान करते हुए जरा एक मिनट के लिए सावधान खड़े हो जाओ ।’ ‘अरे जा-जा ! खड़े होने से देश का सम्मान बढ़ेगा क्या ?’ एक साथ हँसी का फव्वारा छूटा । तभी उस सज्जन ने देखा सामने दुकान वाला विकलांग व्यक्ति राष्ट्रगान की आवाज कान में पड़ते ही बैसाखी के सहरे एक टाँग पर सावधान खड़ा था । उसी समय उन बैठे युवकों ने अपनी टाँगों को टटोला, उन्हें लगा जैसे उनमें जान ही नहीं है ।

सम्पर्क : सिरसा, मो. 9416847107

●●

सुभाष नीरव

बारिश

आकाश पर पहले एकाएक काले बादल छाये, फिर बूँदें पड़ने लगीं । लड़के ने इधर-उधर नजरें दौड़ाई । दूर तक कोई घना-छतनार पेड़ नहीं था । नए बने हाई-वे के दोनों ओर सफेद के ऊँचे दरखत थे और उनके पीछे दूर तक फैले खेत । बाइक के पीछे बैठी लड़की ने चेहरे पर पड़ती रिमझिम बौछारों की मार से बचने के लिए सिर और चेहरा अपनी चुन्नी से ढक्कर लड़के की पीठ से चिपका दिया । एकाएक लड़के ने बाइक धीमी की । बार्यां और उसे सड़क से सटी एक छोटी-सी झोपड़ी नजर आ गई थी । लड़के ने बाइक उसके सामने जा रोकी और गर्दन घुमाकर लड़की की ओर देखा । जैसे पूछ रहा हो-‘चलें?’ लड़की भयभीत-सी नजर आई । बिना बोले ही जैसे उसने कहा-‘नहीं, पता नहीं अन्दर कौन हो ?’

एकाएक बारिश तेज़ हो गई । बाइक से उत्तरकर लड़का-लड़की का हाथ पकड़ तेज़ी से झोपड़ी की ओर दौड़ा । अन्दर नीम अँधेरा था । उन्होंने देखा, एक बूढ़ा शिलंगी-सी चारपाई पर लेटा था । उन्हें देखकर वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ ।

‘हम कुछ देर... बाहर बारिश है...’ लड़का बोला ।

“आओ, यहाँ बैठ जाओ । बारिश बन्द हो जाए तो चले जाना ।” इतना कहकर वह बाहर निकलने लगा ।

“पर तेज़ बारिश में तुम...?” लड़के ने पूछा ।

“बाबू, गरमी कई दिनों से हल्कान किए थी । आज मौसम की पहली बारिश का मजा लेता हूँ । कई दिनों से नहाया नहीं । तुम बेफिक्र होकर बैठो ।” कहता हुआ वह बाहर खड़ी बाइक के पास पैरों के बल बैठ गया और तेज़ बारिश में भीगने लगा । दोनों के लिए झोपड़ी में झुककर खड़े रहना कठिन हो रहा था । वे चारपाई पर सटकर बैठ गए । दोनों काफी भीग चुके थे । लड़की के बालों से पानी टपक रहा था । रोमांचित हो लड़के ने शरारत की और लड़की को बाँहों में जकड़ लिया ।

“नहीं, कोई बदमाशी नहीं।” लड़की छिटक कर दूर हटते हुए बोली, “बूढ़ा बाहर बैठा है।”

“वह इधर नहीं, सड़क के पार देख रहा है।” लड़के ने कहा और लड़की को चूम लिया। लड़की का चेहरा सुख्ख हो उठा। ” एकाएक, वह तेजी से झोपड़ी से बाहर निकली और बाँहें फैलाकर पूरे चेहरे पर बारिश की बूँदें लपकने लगीं। फिर वह झोपड़ी में से लड़के को भी खींच कर बाहर ले आई।

“वो बूढ़ा देखो कैसे मजे से बारिश का आनन्द ले रहा है और हम जवान होकर भी बारिश से डर रहे हैं।” वह धीमे से फुसफुसाई और बारिश की बूँदों का आनंद लेने लगी।

लड़की की मस्ती ने लड़के को भी उकसाया। दोनों बारिश में नाचने-झूमने लगे। बूढ़ा उन्हें यूँ भीगते और मस्ती करते देख चमत्कृत था। एकाएक वह अपने बचपन के बारिश के दिनों में पहुँच गया। और उसे पता ही न चला, कब वह उठा और मस्ती करते लड़का-लड़की के संग बरसती बूँदों को चेहरे पर लपकते हुए थिरकने लग पड़ा।

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9810534373

●●

डॉ. शकुंतला कालरा

बाँझ होने का सुख

सुमित्रा अपने आस-पास जहाँ भी नजर दौड़ाती हँसती-महकती बच्चों की फुलवारी उसे जहाँ पुलकित करती वहाँ उसे अपनी जिंदगी खुशबूहीन, बेरंग व ऊसर जमीन होने का अहसास कराती। संतान-प्राप्ति के लिए उसने क्या नहीं किया। देवी-देवताओं को मनाया, हवन-यज्ञ किए, मंदिर-गुरुद्वारे जाकर माथे टेके। दरगाहों पर चादर चढ़ाइ। हालाँकि पति ने कभी उसे इसका अहसास नहीं कराया था। पर जब वह उन्हें अपने जेठजी के बच्चों के साथ खेलते-गपियाते और उनके लिए तरह-तरह के खिलौने लाते देखती तो उनके दुःख से दुखी और निराश हो जाती। सुमित्रा अपने पति में हर पुरुष की तरह अपने आत्मज हो देखने की स्वाभाविक लालसा से अनभिज्ञ नहीं थी। हालाँकि इसकी शिकायत उन्होंने न कभी सुमित्रा से की और न ईश्वर से। अपना अधिकांश समय जब वह बच्चों के साथ व्यतीत करते तो उस समय वह उनमें एक अतृप्ति पिता को देखती। तब उसे रेगिस्तान में दौड़ते प्यासे मृग की याद आती। उस समय सुमित्रा सोचती काश वह पति को संतान-सुख दे पाती। किंतु भगवान की इच्छा के ऊपर तो किसी की इच्छा नहीं हो सकती। फिर उसकी इच्छा और यह लालसा कैसे पूरी होती।

उम्र के उत्तरार्द्ध में पहुँचने पर धीरे-धीरे सुमित्रा ने अनुभव किया जेठ-जिठानी खुश नहीं हैं। बच्चों के भरे-पूरे परिवार के होते हुए भी वे अकेले हैं। उनकी जिंदगी में कहीं खालीपन है। विवाह के बाद तीनों में से कोई भी बेटा उनके पास नहीं था। बड़े बेटे ने अमरीका में बसने का फैसला शादी से पहले ही कर लिया था, क्योंकि उसकी पत्नी के दोनों भाई और बहन पहले से ही अमरीका में रहते थे। बीच वाला बेटा पानीपत में ही बैंक मैनेजर था, पर दिल्ली की लड़की से विवाह के बाद उसे माया नगरी ऐसी भाई कि वह भी वहीं बस गया। छोटा बेटा अपने पिता के साथ ही उनके दरियों और

गलीचों के एक्सपोर्ट के कारोबार में उनके साथ था। एम.बी.ए. करके भी वह अपना पैतृक कारोबार सँभालने लगा।

जेठ-जिठानी अपने संबंधियों, पड़ोस और मित्रमंडली में जहाँ दिखाइ देते तो प्रसन्न दिखते किंतु जब सुमित्रा उनके चेहरों के भावों को ध्यान से पढ़ती और उनकी मनोदशा को समझने का प्रयत्न करती तो वहाँ उसे सदा दुःख और उदासी के चिह्न नजर आते। सुमित्रा को याद आ रहा था कि रमा जीजी अपनी अपार चल-अचल संपत्ति के तीन-तीन उत्तराधिकारियों को पाकर कितनी प्रसन्न थी। उन्हें इस बात का संतोष था कि पितृलोक में उनके पितर प्रसन्न होंगे। उन्हें तर्पण करने वाले तीन-तीन वंशधर देकर वह गौरवान्वित थी किंतु जेठ-जी की असामियक मौत के बाद तो रमा जीजी अब बिल्कुल अकेली ही पानीपत में रहने लगी थीं। छोटा बेटा भी शादी के छः महीने तक साथ रहा फिर पानीपत छोड़कर मेरठ में अपने ससुर के कारोबार को सँभालने लगा। उनके सुख-दुःख को देखने के लिए वह उनका घर-दामाद बन गया था।

अब बुढ़ापे और अकेलेपन ने जीजी को तन-मन दोनों से अस्वस्थ कर दिया था। उन्हें किसी के साथ की इच्छा और ज़रूरत महसूस होती पर बच्चों के पास न फुर्सत थी न मन। अपने पिता की मृत्यु के बाद तीनों बेटों ने माँ के मन को पढ़े बिना ही तय कर लिया कि पुरुतैनी मकान को बेचकर संपत्ति का बँटवारा कर लिया जाए। माँ बारी-बारी चार-चार महीने हम सबके पास रहेगी। यह किसी भी बेटे ने नहीं कहा कि माँ जिसके पास रहना चाहे रह सकती है। तीनों में से कोई एक अपने पास माँ को रखने को तैयार नहीं था। आखिर माँ तो सबकी जिम्मेदारी है। बड़ा बेटा तरुण एकमुश्त मोटी रकम भाइयों को देकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो गया।

करोड़ों का मकान बिक गया। बेघर हुई रमा जीजी दो साल तक तो दोनों के पास छः-छः महीने रहीं। अनचाहे मेहमान की तरह रहते हुए उसका स्वाभिमान बुरी तरह आहत और लहू-लुहान हो गया था। बुढ़ापे में वह अब अपना एक ठौर-ठिकाना चाहती थीं। जहाँ अपने ढंग से जी सके। एक दिन उसने बच्चों से कहा –

‘मुझे पानीपत में ही कोई छोटा सा मकान दिला दो, मैं वहीं रहूँगी। इधर से उधर भटकने की मेरी उम्र अब नहीं रही।’ सबने अपना-अपना पैसा कहीं न कहीं इनवैस्ट कर दिया था। कोई उसका अल्पांश भी लौटाने को तैयार नहीं था। तीनों ने आपस में गूढ़ मंत्रणा की और उसके बाद एक सुरक्षित रास्ता तलाश लिया। बीच वाले बेटे विशाल ने माँ से स्पष्ट कहा –

‘माँ इस उम्र में हम तुम्हें अकेला कैसे छोड़ सकते हैं? आप इसी तरह हमारे पास आती-जाती रहो, या फिर वृद्धाश्रम में रहो, जहाँ आपको सभी सुविधाओं के साथ अपने अन्य हमउम्र दूसरे साथी भी मिलेंगे जिससे तुम्हें अकेलापन भी नहीं लगेगा और हमें भी चिंता नहीं रहेगी।’

सुमित्रा को जीजी के वृद्धाश्रम में जाने की जैसे ही खबर मिली वह तुरन्त उनसे मिलने गई। तन-मन से टूटी जीजी को देखकर उसकी रुलाई फूट गई। हिचकियों में वह इतना ही कह पाई –

‘जीजी आप यह कैसे भूल गई कि आपकी एक बहू और भी है। छोटा देवर भी तो बेटा ही होता है। आज वह नहीं हैं तो क्या हुआ आप चलिए मेरे साथ।’ जीजी एकाएक फफक-

फफककर रो पड़ीं। एक आर्त रुदन आवेग उनके भीतर से जमे लावे की तरह फूट पड़ा। उन्हें सहज होने में समय लगा। सुमित्रा ने उन्हें रोने दिया। कुछ पलों के लिए वातावरण में एक सशाटा घिर आया।

‘याद है छोटी, मैंने एक दिन तुमसे कहा था – देहरी पर दीपक जलाने वाला कोई होना चाहिए’।

‘याद है जीजी’।

आज मेरे पास देहरी ही नहीं और दीपक...।

जिस दुःख के साथ सुमित्रा उम्रभर रही कि वह बाँझ है, आज जीजी के इस दुःख के आगे उसे प्रकृति-प्रदत्त अपने बाँझपन का दुःख सबसे बड़ा सुख लग रहा था। अपनी गीली आखों को पोंछते हुए वह मन ही मन ईश्वर का धन्यवाद कर रही थी जिसने उसे दर-दर भटकने और बेघर होने से बचा लिया था।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9868735123

●●

सुनीता प्रकाश

घर

अभी-अभी कल्पना तीन दिन के आफिस के दौरे से लौटी थी। आटो से उतरते, घर देखकर ही ख्याल आया कि आज तो कुछ राहत मिलेगी। घर के अंदर प्रवेश ही किया था, कि सासु माँ ने देखते ही कहा ‘अरे, अच्छा हुआ, तुम आ गई। मौसाजी और मौसीजी कल से आए हुये हैं। अभी इनकी बेटी-दामाद भी आने वाले हैं। खाना तो खाएँगे न।’

‘आपने कल तो बताया नहीं। कैसे किया?’ कल्पना के जेहन में सवाल गूँज रहा था।

‘राजहंस से सब मँगवा लिया था।’ पति ने पीछे से कहा।

‘पर अभी?’ कल्पना ने पति की ओर देखा।

‘अब तुम जानो। तुम्हारा घर है।’ पति ने कहा।

कल्पना ने क्रिज टटोला। सब्जी नदारद थी। केवल बैगन ही पड़े थे।

वह कौन है? क्या सिर्फ एक मशीन? घर उसका है, इसका क्या अर्थ है? इन सबको कभी उसकी भावनाओं का अहसास होगा कि नहीं। कल्पना का मन बहुत व्यथित हो चला था।

‘ममा, तुम आ गई। मैं तुमको कितना याद कर रही थी।’ खेल कर लौटी बेटी उससे चिपकी हुई थी। बिटिया की बातें उसकी आहत भावनाओं पर मरहम के लेप के समान सिद्ध हुईं।

‘सच है। मेरा ही घर है। मुझे ही हल निकालना है। राजहंस तो है न। कुछ खाना वहाँ से, कुछ अभी बना लेती हूँ। हो जाएगा।’ कल्पना का आत्मविश्वास और बल जाग्रत हो चला था। वह गुनगुनाते हुये अपने कार्य में तल्लीन हो गई।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9425013043

●●

संजय पठाड़े 'शेष'

निपुणता

साँझ होते ही राज के कदम स्वमेव मजार की ओर बढ़ रहे थे। जैसे-जैसे शाम का अँधेरा बढ़ रहा था, आसमान में तारें छिटक रहे थे, और सड़कों पर रौनक बढ़ गई थी। मजार पर पहुँचने वाला राज अकेला व्यक्ति नहीं था। राज की तरह अनेक लोगों की आस्था का केंद्र थी ये मजार। राज जैसे ही मजार के नजदीक पहुँचा, उसके आसपास छोटे बच्चों की भीड़ सी लग गई, कुछ बच्चे राज से फूलों की माला खरीदने के लिए आग्रह करने लगे।

लेकिन राज का ध्यान एक छोटी -सी बालिका की ओर गया। बालिका ने माला का हाथ राज की ओर बढ़ाकर उससे माला खरीदने का आग्रह किया। राज उस बालिका का आग्रह टाल नहीं सका। उसने झुक कर छोटी बालिका से पहले उसका नाम पूछा, बाद में उसके हाथ में राखी माला के दाम पूछे। बालिका ने बड़ी चपलता से उत्तर दिया।

बालिका के हाथ में सिर्फ दो मालायें थीं, अतः राज ने अच्छी माला के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि उस बालिका ने साधारण सी माला राज को पकड़ा दी और तत्परता से कहा कि बाबूजी, यह साधारण सी माला कोई बाद में क्यों लेगा। राज भी उसकी बातों से सहमत हो गया। राज तेजी से पलटकर मजार में प्रवेश कर गया। इबादत करने के बाद वापस आकर देखा तो उस बालिका के हाथों में पुनः दो मालाएँ थीं। राज ने उस बालिका से कुछ पूछना उचित नहीं समझा। वह समझ चुका था की पेट की भूख ने बालिका को बचपन में परिपक्व कर दिया था। यकीनन वह अपनी कला में निपुण थी।

सम्पर्क : बैतूल (म.प्र.) मो. 9406547404, 8602848402

●●

सरस दरबारी

संकल्प

वह चौराहे से गुजर रही थी। तभी बापू की प्रतिमा बोल उठी।

'बेटी यह लाठी रख लो।'

'यह लाठी क्यों बापू?'

'बेटा, तुम्हारी रक्षा के लिए'

'किस-किस से!'

'मैं समझा नहीं?'

'क्या उन लफ़ंगों से जो रास्ता रोककर भद्दे-भद्दे इशारे करते हैं, राह चलते आवाजा कसी करते हैं, या राह चलते दुपट्टा खींच लेते हैं। या उन आशिकों से जो आए दिन प्रेमिकाओं के चेहरों पर तेज़ाब फेंकते

रहते हैं? या फिर उस पुलिस से जो शांति से न्याय की गुहार पर आँसू गैस छोड़ती है, या फिर उस प्रशासन से जो सुरक्षा माँगने पर हमपर लाठी बरसाता है?’

‘किस से बापू, किस से?’

बापू गर्दन झुका कर खड़े हो गए।

‘नहीं बापू, इस सहारे की हमसे ज्यादा अब आपको ज़रूरत है। कहीं अराजकता की पराकाष्ठा देखकर आपके कदम न लड़खड़ा जाएँ। इसे रखिए अपने पास। बहुत रो चुके, गिड़गिड़ा चुके इंसाफ के लिए। भीख के लिए उठे हाथ अब मुट्ठी बन गए हैं। हमने अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने का संकल्प लिया है।’

‘यह संकल्प ही हमारी लाठी है।’

सम्पर्क : प्रयागराज (उ.प्र.) मो. 8853659917

●●

सतीशचंद्र श्रीवास्तव

विश्वास

लगातार बरसते पानी के तेज बहाव में पेड़ का एक पौधा निरन्तर बहा जा रहा था। बहते-बहते अचानक एक चट्टान में उलझ कर रुक गया। रुकते ही पौधे के जान में जान आई। वह सोचने लगा कि आखिर, ईश्वर ने उसे बचा ही लिया। अभी वह इस ख्याल से अलग भी नहीं हुआ था कि अचानक उसके कानों में आवाज सुनाई दी।

‘ए पौधे, क्या सोच रहा है? अभी तक तूने मुझे मेरे परोपकार का धन्यवाद भी नहीं दिया। देख, मैंने कितनी सारी बहती मिट्टी को अपनी आड़ में बचाया है। अब, तू मेरे परोपकार के बदले एक काम करना। बारिश के बाद इस बची मिट्टी में शरण लेकर बड़े होना और मेरे लिए धूप से छाया करना।’

‘किन्तु चट्टान महाशय, मुझे आपने कहाँ रोका? मैं तो स्वयं ही आपसे टकराकर रुक गया। आप, मुझे बचाने बीचों-बीच तो नहीं आए। आप तो स्वयं ही इस बहते पानी से जूझ रहे हैं।’ इतना सुनते ही चट्टान चिल्ला पड़ा, ‘ऐ, जरा सी जान के पौधे, तेरी ये मजाल! कृतज्ञता के बदले धृष्टा कर रहा है, मूर्ख? अगर, मैं चाहूँ तो तुझे अपने से मुक्त कर बहने के लिए मजबूर कर दूँ।’

‘सुनकर, पौधा हँसते हुए बोला, ‘महाशय, जिन पर ईश्वर की कृपा होती है, उनका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। यदि, आपने मुझे मुक्त भी कर दिया, तो भी बहते हुए कहीं न कहीं किनारे लग ही जाऊँगा। लेकिन, आसमान के घने बादल इसी तरह बरसते रहे, तो आपका भारी पन आप पर ही भारी पड़ जाएगा। तब, आपका क्या होगा। ये कभी सोचा है आपने...?’ इतना कहते हुए पौधे ने खुद को बहते हुए पानी के हवाले कर दिया।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 8085918811

●●

सत्यजीत रॉय

कुंभ चर्या

‘इतनी सारी महिलायें यहाँ क्यों रो रही हैं?’ श्याम ने सिंहस्थ मेले में पास ही खड़े पुलिस वाले से पूछा। ‘ये वो मातायें हैं जिनको कलयुगी परिजनों ने कुंभ स्नान के बहाने यहाँ लाकर छोड़ दिया है।’

‘बाप रे, इनके आँसुओं को अगर जमा किया जाये तो शिप्रा नदी में मौजूद पानी से भी ज्यादा हो जायेगा।’ ‘हे महाकाल, क्या सोचकर ऐसी संतानों को मानव योनि प्रदान करते हो?’

सम्पर्क : खोपाल (म.प्र.) मो. 9630921900

●●

सतीश खनगवाल

आँसुओं का रहस्य

मैंने अपने माता-पिता से पक्का वादा कर लिया था कि इस बार गर्भियों की छुट्टियों में उन्हें तीर्थ यात्रा के लिए अवश्य भेज दूँगा। मैंने इसके लिए व्यवस्था करना भी शुरू कर दिया था। मेरे माता-पिता बहुत प्रसन्न थे। परन्तु मेरी पत्नी की चिकित्सक शुरू हो गई। जैसे-जैसे गर्भियों की छुट्टियाँ पास आ रही थीं मेरी पत्नी का क्रोध और अधिक बढ़ता जा रहा था।

“कब से कह रही हूँ, इस बार बच्चों को शिमला-मसूरी कहीं घुमा लाओ। पर वह नहीं हो सकता। अरे समझते क्यों नहीं ये बुड़े-बुढ़िया भी तो घूमने ही जा रहे हैं, बस नाम तीर्थयात्रा का हो रहा है। तीर्थ के बहाने पता नहीं कहाँ-कहाँ जायेंगे।”

“भगवान के लिए चुप हो जाओ। माँ-बाबू जी सुन लेंगे तो क्या होगा?”

“अरे! सुनते हैं तो सुन लेने दो मैं क्या उनसे डरती हूँ। मेरे बच्चे मन मारकर रह जाएँ और घर के बड़े-बूढ़े बाहर जाकर मौज-मस्ती करें, यह मैं नहीं होने दूँगी।”

“अरे! वो मौज-मस्ती करने नहीं, तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं।”

“तीर्थयात्रा ही सही। सच कह रही हूँ मेरे बच्चों का मन मारकर जा रहे हैं। यह तीर्थयात्रा इन्हें नहीं फलेगी। पुण्य कमाने जा रहे हैं पर पाप ही लगेगा। देख लेना तुम।”

कभी-कभी तो मेरे बच्चे भी इस वाक्युद्ध में शामिल हो जाते।

“अरे! पापा अब दादा-दादी को क्या जरूरत है, बाहर जाने की। बड़े-बड़े ज्ञानी कह गए हैं कि ईश्वर तो स्वयं आप के अंदर ही है, उसे बाहर ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। आप दादा-दादी से कहिए कि घर में ही बैठकर भगवान के भजन करें।” ये कथन मेरी बेटी के थे।

“हाँ पापा, दीदी ठीक कहती है, और वैसे भी इस उम्र में इतने दिन घर से दूर रहना उनके लिए ठीक नहीं है। पता नहीं कब क्या घटना घट जाएँ। फिर हम कुछ नहीं कर पाएँगे।” मेरे बेटे ने एक प्रकार से अपनी दीदी की ही बात आगे बढ़ाई।

कुछ दिनों बाद मेरा पूरा परिवार रेल्वे स्टेशन पहुँचा। मैं सिर नीचा किए अपनी पत्नी और बच्चों के साथ गाड़ी में बैठा था। हमें छोड़ने के लिए मेरे माँ-बाबू जी भी स्टेशन पर आए थे। वे हमें जरूरी हिदायतें दे रहे थे। जब गाड़ी धीरे-धीरे स्टेशन छोड़ रही थी उस समय वे हाथ हिला रहे थे और उनकी आँखों में आँसू थे। यद्यपि मेरी पत्नी और बच्चे उनके आँसुओं का कारण कुछ और बता रहे थे, परन्तु मैं उनके आँसुओं का रहस्य भली-भाँति समझ रहा था।

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9873639077

००

सतीश राठी

समाधान

जबसे नंदिता की कोख में बच्चा आया, तब से रामप्रसाद के दिमाग में संघर्ष चलने लगा था। उसकी नौकरी बड़ी छोटी सी थी, और पहले से ही बीमार माँ-बाप का बोझ उस अकेले की कमाई पर था। अब बच्चे का बोझ बढ़ने वाला था, इसका तनाव उसके दिमाग पर आ गया था। वह कई बार यह भी सोचता कि, बच्चे तो भगवान की देन होते हैं, फिर चिंता क्या करना। प्रत्येक बच्चा अपना भाग्य लेकर ही आता है। लेकिन फिर आज का समय देखकर उसकी चिंता और बढ़ जाती। स्कूलों की फीस ही बहुत बढ़ गई है, और फिर बच्चों का पालन-पोषण करना आज के समय में बड़ा कठिन काम हो गया है। रामप्रसाद का चिंताग्रस्त चेहरा देखकर नंदिता भी चिंतित हो रही थी। साहस कर पति से पूछ बैठी, ‘आप किस बात की चिंता कर रहे हैं।’ पहले तो रामप्रसाद ने नंदिता को कोई जवाब नहीं दिया, पर फिर उसके बार-बार पूछने पर कहा, ‘आज का समय तो तुम देख रही हो, खर्च कितने बढ़ते जा रहे हैं। अब संतान आ जाएगी तो, घर का खर्च कैसे चलेगा। तुम्हें तो पता है, माँ भी बीमार रहती है, और पिताजी भी। उनकी दवाइयों का खर्च भी किसी तरह मैनेज करना पड़ता है। फिर अब यह नया खर्च बढ़ जायेगा।’

पति की चिंता ने एकबारगी तो नंदिता को भी चिंता में डाल दिया। फिर भी वह इस खुशी के मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहती थी। उसने पति से कहा, ‘आप ऐसा क्यों सोचते हैं। आप अकेले नहीं हैं, मैं भी तो हूँ आपके साथ में। अच्छी खासी पढ़ी-लिखी हूँ घर पर छोटे बच्चों की कोचिंग तो कर ही सकती हूँ। हमारा आगे का कमरा खाली पड़ा है। और फिर मैंने शादी के पहले भी कोचिंग का काम किया है। आप बिल्कुल चिंता ना करें। मैं आपके साथ हूँ। हम आगे के कमरे में कोचिंग क्लास शुरू कर देंगे, और मैं बच्चे को सँभालने के साथ, बच्चों को पढ़ा दिया करूँगी। उससे हमारी अतिरिक्त आमदनी हो जाएगी, और हम अपने परिवार को वह सब दे सकेंगे, जो एक माँ-बाप अपने बच्चों को देना चाहते हैं।’

पत्नी की बात सुनकर रामप्रसाद की चिंता कुछ कम हुई। उसने सोचा परिवार भी तो बढ़ाना जरूरी होता है। और जब ऐसी पत्नी साथ में हो, तो चिंता की क्या बात है। उसने प्रेम से पत्नी के पेट पर हाथ फेरा, जैसे अंदर बैठे बच्चे को बाहर आने की चिंताओं से मुक्त कर रहा हो। दोनों पति-पत्नी आने वाले बच्चे का स्वागत करने के लिए मुस्कुराते हुए तैयार थे।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9425067204



सत्या शर्मा 'कीर्ति'

फटी चुन्नी

सीमा जो मात्र 14 साल की है, बैठ कर सिल रही है अपनी इज्जत की चुन्नी को आँसुओं के धागे और बेबसी की सुई से।

कल ही लौटी है बुआ के घर से। वहाँ जाते वक्त सुरमई-कौमार्य ओढ़ कर गयी थी, पर आते वक्त सब कुछ बिखर गया था।

बड़े मान से बुआ ने बुलाया था। प्रसव के दिन नजदीक आ रहे थे। बुआ फिर से माँ बनने बाली थीं। पहले से वह इक प्यारी - सी तीन साल की बिटिया की माँ थीं।

वहाँ वह हँसती-खिलखिलाती बुआ का सारा काम करती, फूफा जी भी बात-बेबात उसे प्यार करते रहते। सीमा खुश हो जाती। पिता-तुल्य वात्सल्य से भरा प्यार! पर कभी-कभी चौंक जाती, पापा तो ऐसे प्यार नहीं करते। ऐसे नहीं छूते। धीरे-धीरे हँसी खोने लगी, उदासी की परत चढ़ने लगी उसकी मासूमियत पर।

बुआ पूछती- 'क्या हुआ, मन नहीं लग रहा है? देखो फूफा जी कितना मानते हैं। जाओ साथ में कहीं घूम के आ जाओ।'

पर सीमा बुआ को कभी उस 'मरदाना प्यार' के बारे में नहीं बता पाई।

कभी-कभी सोचती, चीख-चीख कर बता दे सब को पर बुआ की गृहस्थी का क्या होगा, जो फिर एक और बेटी-माँ बन लोगों के ताने झेल रही है।

कौन उठाएगा बुआ और उनकी दोनों बेटियों का बोझ।

माँ तो बुआ को देखना तक नहीं चाहती।

और वह बहुत शिद्धत से सिलने लगती है अपनी फटी चुन्नी।

सम्पर्क : रांची (झारखण्ड) मो. 7717765690

●●

सारिका भूषण

सहारा

पाँव में दर्द आज कुछ ज्यादा ही महसूस हो रहा था। शायद ठण्ड की दस्तक का असर था। बदन में सिहरन भी थी। बालकनी में बाहर निकल कर देखी तो रास्तों पर गाड़ियाँ भी कम ही दिख रही थीं। सामने वाले पार्क में छोटे बच्चे दौड़-दौड़ कर खेल रहे थे। मानो बचपन बुढ़ापे को मुँह चिढ़ाता हुआ वक्त और उम्र का कोई खेल खेल रहा हो। पता नहीं क्यूँ उनका यूँ शोर मचा कर खेलना आज मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। सुबह से फोन पर सबकी तकलीफें और खराब मौसम की दुहराई देकर काम पर न आने की दलीलें सुन कर थक चुकी थी। अस्त-व्यस्त कमरे और गन्दी रसोई ने मेरे अंदर की नकारात्मक सोच को काफी बढ़ा दिया था। दर्द भी असहनीय प्रतीत होने लगा था। मगर बाहर निकलते ही ठंडी हवाओं और बच्चों की हुल्लड़बाजी ने मानो रग-रग में नए जोश का संचार कर दिया। यह मरहम मेरे किसी भी

पेनकिलर दवा से ज्यादा असरदार था।

मुझे तो लगता है असल दर्द तो मन का ही दर्द होता है जिसे अक्सर रिश्तों की मोह-माया दिया करते हैं। रिश्तों को आप जितना पकड़ेंगे शायद दर्द उतना ही ज्यादा होगा। एक बार उसे सिर्फ महसूस करके देखिये, बिना कोई मोलभाव के ...शायद आपकी अंतरात्मा आज़ादी को परिभाषित कर पाएगी।

शायद जैसा कि मैंने किया। जब लोगों की नजरों में, मैं पूर्णतया स्वस्थ थी तो काफी बन्धनों से जकड़ी हुई थी। पति और बच्चों का सहारा था पर खुद को बहुत बेसहारा महसूस करती थी। शरीर में कोई दर्द नहीं था। पर छोटी-छोटी बातों पर मन बहुत दुखता था। मेरी सारी कागजी डिग्रियाँ मुझे अनपढ़ होने का अहसास दिलाती रहती थीं। बस खुद को कामवाली बाई बोल नहीं सकती थी वरना अंतर सिर्फ चंद उपहारों और बिस्तर का ही था शायद।

आज सभी दूर हो चुके हैं। बच्चे विदेश में और पति अपने शौक में। मैं अकेली हूँ, पर अकेलापन नहीं लगता। दुनिया की नजर में शरीर से अस्वस्थ हूँ पर दर्द नहीं होता और जो दर्द होता है वह शायद खुद की सोच मात्र है। मनुष्य अपने हर उस दर्द पर काबू पा सकता है जिसे वह दर्द नहीं मानता या जब उसकी आंतरिक शक्तियाँ दर्द पर हावी हो जाती हैं। एक गहरी साँस लेकर मैंने अपने सहारों को पकड़ा और काम निपटाने अंदर चल पड़ी। आज बैसाखी का सहारा लेना पड़ता है पर पल भर भी खुद को बेसहारा महसूस नहीं करती।

सम्पर्क : राँची (झारखण्ड) मो. 9334717449

●●

सदाशिव कौतुक

सामंजस्य

शर्मा जी आर.टी.ओ. में दलाली का काम करते थे। एक दिन वर्मा जी लाइसेंस बनवाने शर्मा जी के ऑफिस गये। उन्होंने वर्मा से जरूरी कागजात लिये और पूछा- उन्हें ठीक से दिखाई तो देता है ना? वर्मा जी की आयु करीब पचास वर्ष दर्शायी गयी थी। वर्मा जी ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि - 'भाई शर्मा जी मैं साफ-साफ बता देना चाहूँगा कि मुझे अपनी आँखों से कम दिखाई देता है।'

इतना सुनते ही शर्मा जी के ज्ञान-चक्षु खुल गये। वे ईमानदारी का चोला पहनकर बोले, 'देखो भाई, नये साहब जो आये हैं बड़े सख्त हैं, आप जानते हैं कि सख्त अधिकारी बहुत ईमानदार होता है। वे सारी बातें जाँच-परख कर ही लायसेंस पर हस्ताक्षर करते हैं। इसलिए आपका लाइसेंस बनना मुश्किल लग रहा है।'

वर्माजी को लाइसेंस बनवाना जरूरी था। उन्होंने शर्मा जी द्वारा बतायी फीस से तिगुने रुपये टेबल पर रखे और पूछा- 'अब तो बन सकता है?'

शर्माजी नोटों की गड्ढी पर अँगुलियाँ थिरकाते हुए मधुर मुस्कान के साथ बेहिचक बोले, 'वाह वर्मा जी आपने तो देश का नक्शा ही पलट दिया। इतनी बड़ी राशि में तो हमारे साहब अंधे का भी लाइसेंस बना देंगे। आप तो बेफिक्र होकर जाइये लाइसेंस कल ही आपके घर आ जायेगा।'

सम्पर्क : इन्दौर (म.प्र.)

●●

सतविंद कुमार राणा

स्नेह बन्धन

‘ये देखो ! कर दी पूरी बैडशीट गीली । चार साल की होने को आई अब तक भी... । ऐसे बच्चे होने से तो ना हो वो ही अच्छा ।’

जेठानी का तंज दिल को चीरता हुआ निकला । मुँह से बोल न निकले पर आगे कभी भी बच्चे को उनके कमरे में न जाने दूँगी यह निश्चय कर लिया । बच्चे की डॉट-पिटाई की वह अलग ।

‘हम तो पाँच साल से इनके तीन-तीन बच्चों को सह रहे हैं । इतने बत्तमीज़ हैं, न खाने की अकल न नियंत्रण ।’ बड़बड़ती हुई बच्चे को अपने कमरे में ले गई ।

कुछ देर बाद खेलते-खेलते बच्चा थक गया । जलते बल्ब की ओर इशारा करते हुए ।

‘ताई जी ताई जी ! वो लाइट आ गई है । आपके कमले में कालतून देखेंगे ती.वी. चलाओ न ।’

वे दोनों पहले तो दाँत पीस रही थी और बाद में मुस्करा दीं ।

सम्पर्क : करनाल (हरियाणा) मो. 9255532842

●●

सिमर सदोष

ओवर-टाइम

ऊपरी निर्देश मिलने पर पुलिस सुबह-सवेरे ही गाँव में आ धमकी थी । सुबह जो जाँच-पड़ताल शुरू हुई, तो शाम तक बैठकें जुटी रहीं । दोपहरों को नंबरदारों की हवेली में मुर्गे पके थे और शहर से अंग्रेजी विहस्की मँगवाई गई थी । चौपाल नंबरदारों की हवेली में बिछी थी ।

नंबरदारों के बड़े पुतर द्वारा हवेली की मुजारिन से खेतों में बलात्कार किए जाने पर मुजारों के नेता ने मुख्यमंत्री से शिकायत कर दी थी । शिकायत पत्र पुनः थाने में लौट आया था, जिसके जवाब में नंबरदार ने मीतो पर नंबरदारनी की चार हजार की सोने की चेन चुराने का आरोप लगा दिया था ।

शाम ढलते ही थानेदार ने विहस्की का गिलास हलक के नीचे उतारते हुए अंतिम कार्रवाई शुरू कर दी-हूँ.... ।....तो चेन आपके पास नहीं है...मीतो कहाँ है? बुलाओ उसे जरा...मैं स्वयं पूछ लेता हूँ ।

डरी-सहमी मीतो के आते ही थानेदार की भेड़िया नजरें उसे नीचे से ऊपर तक लील गई । अपने ही संबंधियों के सामने नग्न होती जाती मीतो की कमजोरी को थानेदार के रुठबे ने बड़ी तेजी से भाँप लिया-बंता सिंह....इसे अंदर लाओ तो जरा ।

थानेदार बिना किसी से आँख मिलाये चौपाल के साथ वाले कमरे में चला गया जहाँ पहले ही बंता सिंह सिपाही मीतो को बाँह से पकड़कर भीतर ले गया था । आधे घंटे बाद थानेदार मीतो को साथ लेकर बाहर आया तो उसके संबंधियों की जान में जान आई ।

मीतो ने चोरी मान ली थी, और जिस्म के टूटते जाते अंगों के दर्द को सँभालते हुए उसने भरी

चौपाल में समझौते पर हस्ताक्षर भी कर दिए। थानेदार ने कागज मीतो की बिरादरी वालों की ओर बढ़ाते हुए उसके माता-पिता को समझाया-रकम तो बहुत ज्यादा है ; परंतु मैंने नंबरदारों को आधे पर मना लिया है।....वह भी नगद नहीं देना पड़ेगा आपको....। मीतो उनके घर पर थोड़ा काम कर देगी....और शाम को घर जाते समय खेतों में खाना भी दे आया करेगी। बस, उसके इस ओवर टाइम से नंबरदारों का घर भी पूरा हो जाएगा, और.....आप भी बच जाएँगे। थानेदार ने अपनी मूँछों को ताब देते हुए, एक नजर से जहाँ नंबरदार की ओर देखा था, वहीं उसकी दूसरी नजर, अपनी नजरें झुकाए बैठी, मीतो पर जा टिकी थी।

सम्पर्क : जालन्धर (पंजाब) मो. 9417756262

●●

सीमा व्यास

नो हॉर्न प्लीज

उस अपार्टमेंट में बीस से कुछ अधिक ही फ्लेट्स थे। एक बुजुर्ग महिला काँपते हाथों से मेन गेट के आसपास प्रिंटआउट्स चिपका रही थी, 'नो हॉर्न प्लीज।'

मुझे उस अपार्टमेंट के चौथे माले पर किसी से मिलने जाना था। बुजुर्ग महिला से आँखें चार होते ही मैंने अभिवादन की मुद्रा बनाते हुए पूछ लिया, 'कोई मरीज होगा न घर में। उसे हॉर्न से...'

'नहीं... मरीज तो नहीं हैं। घर में हम दोनों ही रहते हैं। बच्चे बाहर सेटल हो गए हैं।' मेरा प्रश्न खत्म होने से पहले ही उन्होंने उत्तर दिया। हाथ का कागज दिखाते हुए बोली, ये दूसरे फ्लेट्स के बच्चों से मिलने उनके दोस्त आते हैं और नीचे से ही हॉर्न बजाते हैं। हमें लगता है हमसे मिलने कोई आया.... अब पलंग से उठकर धीरे-धीरे गेलरी तक आने में समय लगता है, थकान भी हो जाती है। फिर पता लगता है अपने लिए कोई नहीं। निराश हाथ लगती है। अब वैसे भी हमसे मिलने की फुरसत किसे? बार-बार हॉर्न सुनकर रुका नहीं जाता। तो मैंने ये उपाय निकाला, 'नो हॉर्न प्लीज।' अब देखो, लगाये तो हैं। कोई माने तो ठीक न माने तो।' और वे बड़ी उम्मीद से एक और कागज चिपकाने लगीं।

आज 'नो हॉर्न प्लीज' का एक अलग रूप देखने को मिला।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9406852215

●●

सीमा वर्मा

लौट आई खुशियाँ

राधा और उसके पति नीलेश के पास ईश्वर का दिया सब कुछ था, मगर फिर भी मन में एक टीस सी थी, भगवान ने उन्हें बेटी नहीं दी थी। वैसे भी बेटियाँ सौभाग्य से प्राप्त होती हैं।

ज्यों-ज्यों राखी का त्यौहार नजदीक आता, राधा का दिल डूबने लगता। दूसरे बच्चों की बहनों को उनके साथ देख बच्चे उदास हो जाते। ऐसे तो दिन त्यौहार इनके लिए कोई मायने नहीं रखेंगे, अक्सर राधा सोचने लगती। आखिर एक दिन पतिदेव से बोल उठी, 'बुरा ना माने तो एक बात कहूँ, क्यों न हम एक

गुड़िया गोद ले लें।' वे झट से मान गए। सुबह राधा ने बच्चों को उठाकर नहाने भेजा और खुद आरती का थाल सजाने में लग गयी। पतिदेव सारी औपचरिकताएँ पूरी करके अनाथालय से निकल चुके थे। डोर बेल बजते ही उसकी तंद्रा टूटी, बच्चे दरवाज़ा खोलने भागे और वह जल्दी से आरती का थाल उठा लाई।

पतिदेव छोटी सी गुड़िया लिए खड़े थे, 'यह कौन है पापा?' बच्चों ने उत्सुकता से उसकी ओर देखते हुए पूछा। 'बच्चों ये आपकी बहन हैं और अब हमेशा हमारे साथ रहेंगी,' कहकर राधा ने बड़े प्रेम से उसकी आरती उतारी। सबकी आँखें खुशी से चमकने लगीं।

सम्पर्क : लुधियाना (पंजाब) मो. 9988063780

●●

सीमा जैन

मैं वारी जांवा

शहर क्या, देश के नामी स्कूल की प्रिंसिपल हमारे घर आई। मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। सोशल साइट पर किसी से मैं बात कर रही थी। फोन को एक तरफ पटका और मैडम से बात करने बैठ गई।

मैडम ने ही बात शुरू की-'क्या करती हैं आप रिया जी?'

-'जी, एक कम्पनी का एकाउंट्स देखती हूँ।'

-'फिर तो हिसाब की बहुत पक्की होंगी आप!'

-'जी मैडम मैंने एम कोम में टॉप किया था।'

-'मैंने तो आज देखा, आप लेखिका और कवयित्री भी हैं। कैसे कर लेती हैं ये सब?घर की जिम्मेदारी, काम के बाद कैसे समय निकाल लेती हैं?'

-'क्या करें मैडम, सब करना पड़ता है। अब हुनर है तो...'

-'आपकी कविता, कहानी कई पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं। मैंने आज पहली बार आपके अकाउंट को देखा।'

-'अरे, पर आपने कोई कमेंट तो नहीं दिया।'

-'आज सालों बाद अपना अकाउंट खोला था। देखा, आपके तो मित्रों की भरमार है। कमेंट करना तो भूल गई आपके मित्रों की लम्बी लिस्ट देखकर।'

(बहुत अच्छा लगा ये सुनकर की मैडम ने मेरी हैसियत देखी। वो भी समझ गई होंगी कि मैं कोई छोटी-मोटी नहीं, बड़ी लेखिका हूँ)

-'अब ये रोज़ का रिश्ता है मैडम, सबसे निभाना पड़ता है तो दोस्त बन ही जाते हैं।'

-'आपके हर दो दिन में बदलते प्रोफाइल फोटो को तो जबरदस्त लाइक मिलते हैं। कभी पेड़ के पीछे तो कभी झरने के नीचे; आप तो अपने बचपन की हो या परिवार की, हर खुशी और याद सबसे साझा करती हैं। यहाँ तक की भोग की थाली की फोटो लगाना भी नहीं भूलती हैं।'

(आज तो दिल कर रहा था अपने सारे कमेंट्स मैडम जी पर वार दूँ।)

खुशी को छुपाते हुए मैंने कहा—‘अब ये साइट भी हमारे परिवार जैसी ही हो जाती है।’

—‘रिया जी, घर, नौकरी के बाद अपने हुनर को वक्त देना एक बात है और सोशल साइट के बगैर साँस भी न लेना दूसरी बात है। इस सब के बीच में बच्चों का भविष्य आता है, उसको सिर्फ लाइक नहीं उसपर कमेंट करना भी जरूरी है।’

(ये अचानक बात करते-करते मैडम जी का मूड क्यों बदल गया?)

—‘रिया जी, आपने ये नहीं पूछा कि मैं यहाँ आई क्यों? मैं यहाँ आपकी बेटी, जो सातवीं में मेरी बेटी की ही कक्षा में है, उसके बारे में बात करने आई हूँ।’

—‘क्यों, क्या हो गया मेरी पारुल को? वो तो शहर के सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ती है।’

—‘स्कूल चाहे जैसा हो, आपकी जिम्मेदारी किसी भी हालात में कम नहीं हो सकती है! ये देखिये पारुल का वीडियो जो उसने मेरी बेटी को भेजा है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि वो ये फोटो आपसे छुपाएगी और आप अपने फोटो....’

अब मैडम के हाथ से मैंने फोन छीन लिया और वीडियो देखकर मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। अब मुझे मिलने वाले लाइक और आँसुओं में जंग शुरू हो गई। अकाउंट्स में टॉप करने वाली माँ, अब ये हिसाब ठीक से रख पायेगी क्या?

सम्पर्क : ग्वालियर (म.प्र.) मो. 8817711033

●●

सीमा भाटिया

परीक्षा की चिंता

‘मुझी, क्या बात है? आज फिर ग्यारह बजा दिए। मैंने कितनी बार तेरी माँ को बोला है कि खुद आया करे काम पर। खुद तो फिर भी नौ बजे तक आ जाती है। अब ग्यारह बजने को हैं और बर्तन सफाई दोनों पड़े हैं। चल जल्दी से हाथ चला। मुझे बारह बजे किट्ठी पार्टी में भी जाना है।’ काम पर देरी से आई शीला बाई की बेटी को देखते ही मिसेज वर्मा गुस्से में शुरू हो गई।

‘बस आंटी जल्दी ही निपटा दूँगी। वो अम्मी को बुखार था, नहीं तो वह खुद ही आने वाली थीं। बस जरा पहले खाने को कुछ बचा पड़ा है तो दे दो।’

‘ओफफो! अब महारानी को पहले कुछ खिलाओ, फिर काम करेगी।’ मन ही मन बड़बड़ते हुए मिसेज वर्मा ने फ्रिज में पड़ी ब्रेड और रात की बची दाल ठंडी ही उसके आगे रख दी। मुझी भी बिना नानुकर के बड़े स्वाद से खाने लगी। अनायास ही मिसेज वर्मा ने पूछ ही लिया, ‘ग्यारह बजे तू आ रही है फिर भी भूखी ही आ रही घर से?’

‘अरे नहीं आंटी, घर तो बस बस्ता फैंक कर सीधा इधर ही चली आई। आज अम्मा को बुखार था न तो सुबह घर का काम निपटा स्कूल भाग गई। आज मेरी पाँचवीं कक्षा की पक्की परीक्षा थी। नहीं जाती तो फेल कर देते स्कूल वाले। और बापू तो यही कहता कि जिस दिन फेल हो गई, तेरी पढ़ाई की छुट्टी। वैसे भी पढ़ लिखकर कौन सा क्लक्टर लगना तुझे? आप ही बताओ आंटी, अब फेल होकर सारी उम्र

अम्मी की तरह बर्तन ही घिसने पड़ेंगे ना। अरी मैं भी पागल हूँ बातों में लग गई। अभी तीन कोठी का और काम पड़ा। निपटाकर कर कल की परीक्षा की भी तैयारी करनी है।'

मिसेज वर्मा के मन में पता नहीं क्या आया, मुश्त्री को छुट्टी दे कर खुद किट्टी जाने का प्रोग्राम रद्द कर बर्तनों पर खुद हाथ चलाने लगी।....

सम्पर्क : लुधियाना (पंजाब) मो. 9888347334

●●

सुधा भार्गव

परिभाषा

क्या कहा? तुम्हारे मम्मी-डैडी भारत लौटने वाले हैं! तुम तो कह रहे थे, वे इस बार लंदन में छः मास रहेंगे। यहाँ की नागरिकता लेने का उनका पक्का इरादा है। विष्णु ने अपने दोस्त को कुरेदा।

-हाँ! बहुत कुछ सोचा था, पर बंधु, सब गढ़बड़ा गया। डैडी को ब्लडप्रेशर, डायबिटीज़ रोग सताते रहते हैं। स्पोन्डीलाइटिज़ के कारण माँ की गर्दन में इतना दर्द रहता है कि दर्दमारक दवाइयाँ खाते हुये भी मछली की तरह तड़पती रहती हैं। अरमान था, अच्छी से अच्छी चिकित्सा कराऊँगा, बहुत सुख दूँगा, पर दो मास के बाद ही वे उखड़ गए। -वे क्या कहते हैं?

-बस तोते की तरह एक ही रट लगाए रहते हैं कि मन नहीं लगता। तू तो बीबी को थामे आफिस निकल जाता है। हम पीछे से क्या करें?

-घर का सन्नाटा उन्हें काटने को दौड़ता होगा। जल्दी से उन्हें दादी-बाबा बना दे फिर तो यहीं जम जाएँगे।

-यह बात नहीं है दोस्त, अंग्रेज़ हमारे देश में बाबू पैदा करके चले गए जो न मॉल जा सकते हैं और न बर्तन माँज सकते हैं, वे हुकुमरानी करते दूसरों के पैर तोड़ सकते हैं। भारत की नौकरशाही जिंदगी से इनके मिजाज आसमान पर चढ़ गए हैं। सुबह उठते ही चाहिए 'बैड-टी... लाया हुजूर।' बदन दर्द है तो मालिशवाली चाहिए और पॉट के लिए चाहिए जमादार। यहाँ यह सब चलने वाला नहीं।

-इसका मतलब अंकल-आंटी को भारत में ज्यादा सुख है! -खाक सुख! सुख की परिभाषा ही नहीं मालूम। मगर किसे? एक प्रश्न हवा में फड़फड़ा उठा।

सम्पर्क : बैगलुरु, मो. 9731552847

●●

सुष्मा गुप्ता

फ्रॉक

'माँ, कल से मैं बाहर नल पर पानी भरने नहीं जाऊँगी।' तेरह साल की लाली रोते हुए बोली।

'क्यों री, क्या हुआ?'

'माँ, वो ढाबे वाले बिशन चाचा हैं न, रोज रास्ता रोक लेते हैं। कहते हैं अंदर ढाबे में चल बढ़िया-बढ़िया खाना खिलाऊँगा। अजीब ढंग से हाथ लगाते हैं, मुझे बहुत गंदा सा लगता है।'

‘करमजला, हरामखोर, उसकी इतनी हिम्मत। याद नहीं उसे तू हरि सिंह ट्रक डाइवर की बेटी है। अब के फेरा पूरा करके आएगा जब अमृतसर से, सारी करतूत बताऊँगी जनमजले की। तेरे बाप ने चीर के रख देना है।’

‘पर माँ बिशन चाचा से तो सब डरते हैं। उनके बड़े भाई तो वो सफेद जीप वाले नेता के काम करते हैं न। और उनके भाई के पास हमेशा बंदूक भी तो रहती है वो बड़ी सी।’

बिल्लो का चेहरा फक्क पड़ गया। आँख के आगे सुखिया की लाश घूम गई, जिसकी घरवाली का हाथ पकड़ लिया था बिशन ने और खूब लट्ठ बजे थे दोनों में। फिर एक दिन अचानक सुखिया गायब हो गया। पाँच दिन बाद नदी में मछलियों खाई लाश मिली उसकी। सबको पता है क्या हुआ और किसने किया पर मजाल किसी की हिम्मत हो जाए बोलने की। ‘सुन लाली। कल से तू पानी लेने नहीं जाएगी और स्कूल छोड़ने लेने भी मैं आऊँगी। अब से ये फ्रॉक पहनना बिल्कुल बंद। कल से सूट पाई और दुपट्टा ले के सिर ढँक के जाई।’

सम्पर्क : फरीदाबाद (हरियाणा) मो. 9899916431

●●

सुमन ओबेरॉय

मेमने का प्रश्न

एक मैदान में बकरों का बाजार लगा था। सैकड़ों की संख्या में छोटे-बड़े बकरे बिकने के लिये एकत्रित थे। एक मेमना अपनी माँ के निकट खड़ा भयभीत नजरों से चारों ओर देख रहा था।

उसने अपनी माँ से पूछा, ‘हम यहाँ क्यों आये हैं?’

माँ ने जवाब दिया, ‘बिकने के लिये...।’

मेमना बोला, ‘बिकने के लिये? हमें खरीदेगा कौन?’

माँ ने बताया, ‘यह जो इंसान इधर-उधर घूम कर हमें देख-परख रहे हैं- वो हमें खरीदेंगे।’

‘इंसान? यह ‘इंसान’ हैं तो हम कौन हैं?’

‘हमें ‘जानवर’ कहा जाता है,’ माँ ने समझाया।

मेमने की जिज्ञासा शांत नहीं हुई, ‘इन्हें इंसान क्यों कहा जाता है?’

‘हम सब प्राणी हैं, पर इंसान को श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है, हमें नीचे दर्जे का जानवर-पशु।’

मेमना बहुत जिज्ञासु था, उसने फिर प्रश्न किया, ‘इन्हें श्रेष्ठ क्यों कहा जाता है?’

माँ निराशा भरे स्वर में बोली, ‘यह तो मुझे भी नहीं पता बेटा, हड्डियाँ-माँस यह हमारा चबा-चबाकर खाते हैं, कहते हमें जानवर हैं।’

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9993942380

●●

सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

रात का चौकीदार

दिसंबर जनवरी की हाड़ कँपाती ठंड हो, झमाझम वर्षा या उमस भरी रातें, हर मौसम में रात बारह बजे के बाद चौकीदार नाम का यह निरीह प्राणी सड़क पर लाठी ठोंकते, सीटी बजाते हमें सचेत करते हुए। कॉलोनी में रातभर चक्कर लगाते रोज सुनाई पड़ता है। हर महीने की तरह पहली तारीख को हल्के से गेट बजाकर खड़ा हो जाता है। साब जी, पैसे?

कितने पैसे, वह पूछता है उससे?

साबजी-एक रुपए रोज के हिसाब से महीने के तीस रुपए। आपको तो मालूम ही है।

अच्छा एक बात बताओ बहादुर- कितने घरों से पैसे मिल जाते हैं तुम्हें महीने में?

साबजी- यह पक्का नहीं है, कभी साठ घर से कभी पचास से। तीज त्यौहार पर बाकी घरों से भी कभी कुछ मिल जाता है। इतने में ठीक-ठाक गुजारा हो जाता है हमारा।

पर कॉलोनी में तो सौ सवा सौ से अधिक घर हैं फिर इतने कम क्यों?

साबजी, कुछ लोग पैसे नहीं देते हैं, कहते हैं। हमें जरूरत नहीं है तुम्हारी।

तो फिर तुम उनके घर के सामने सीटी बजाकर चौकसी रखते हो कि नहीं? उसने पूछा

हाँ साबजी, उनकी चौकसी रखना तो और जरूरी हो जाता है। भगवान नहीं करे, यदि उनके घर चोरी-वोरी की घटना हो जाये तो पुलिस तो फिर भी हमसे ही पूछेगी ना। और वे भी हम पर झूठा आरोप लगा सकते हैं कि पैसे नहीं देते, इसलिए चौकीदार ने ही चोरी करवा दी। ऐसा पहले मेरे साथ हो चुका है साबजी।

अच्छा ये बताओ रात में अकेले घूमते तुम्हें डर नहीं लगता?

डर क्यों नहीं लगता साबजी, दुनिया में जितने जिन्दे जीव हैं सबको किसी न किसी से डर लगता है। बड़े से बड़े आदमी को डर लगता है तो फिर हम तो बहुत छोटे आदमी हैं। कई बार नशे-पत्ते वाले और गुंडे बदमाशों से मारपीट भी हो जाती है। शरीफ दिखने वाले लोगों से झिड़कियाँ, दुत्कार और धौंस मिलना तो रोज की बात है।

अच्छा बहादुर सोते कब हो तुम? फिर प्रश्न करता वह।

साबजी, रोज सुबह आठ-नौ बजे एक बार और कॉलोनी में चक्कर लगाकर तसल्ली कर लेता हूँ कि, सबकुछ ठीक है ना, फिर कल की नींद पूरी करने और आज रात में फिर जागने के लिए आराम से अपनी नींद पूरी करता हूँ। अच्छा साबजी, अब आप पैसे दे दें तो मैं अगले घर जाऊँ।

अरे भाई, अभी तुमने ही कहा कि, जो पैसे नहीं देते उनका ध्यान तुम्हें ज्यादा रखना पड़ता है। तो अब से मेरे घर की चौकसी भी तुम्हें बिना पैसे के करना होगी, समझे?

जैसी आपकी इच्छा साबजी, और चौकीदार अगले घर की ओर बढ़ गया।

सम्पर्क : जबलपुर (म.प्र.) मो. 9893266014

●●

सूर्यकांत नागर

लघुता

रविवार था और बतियाने के लिए पड़ोसी खन्ना जी के यहाँ चला गया। यू.पी. चुनाव-परिणाम पर चर्चा चल रही थी कि खन्ना जी का बेटा विमल स्कूल से लौटा।

‘कैसा रहा तुम्हारा आज का पर्चा?’ खन्ना साहब ने पूछा।

‘पापा! बहुत बढ़िया!’ बेटे ने कहा। उसकी खुशी समा नहीं रही थी। कुछ रुककर कहा, ‘पापा, आज एक मजेदार घटना घटी। हमारे सर जब प्रश्न-पत्रों का बंडल लेकर जा रहे थे तो उसमें से एक प्रश्न-पत्र खिसक कर फर्श पर गिर गया। सर को इसका पता न था। मैं उनके पीछे-पीछे जा रहा था। मैंने पर्चा उठाकर देखा तो वह अगले दिन होने वाले गणित का पर्चा था। मैं कुछ देर ठिका-सा खड़ा रहा। फिर दौड़कर पर्चा मास्टर जी को थमाते हुए कहा, सर! ये पर्चा पीछे गिर गया था। पर्चा देख सर घबरा गए। पूछा, ‘तुमने इसे पढ़ा तो नहीं?’

‘बिल्कुल नहीं।’ मैंने कहा तो उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और चल दिए।’ कहते हुए वह एक बार फिर प्रसन्नता से भर आया। पर मैंने देखा, खन्ना जी के चेहरे का रंग एकाएक बदल गया। अफसोस की रेखा चेहरे पर खिंच गई जैसे कोई सुनहरा अवसर नियत के हाथ से छूट गया, ‘मूर्ख है साला!’ वे बुद्धुदाए।

‘हाँ, सचमुच मूर्ख है। बच्चा है इसलिए खुद की आँखों में धूल झोंक ली। बड़ा होता तो टीचर की आँखों में धूल झोंक आता।’ मैंने कहा।

सम्पर्क : इंदौर (म.प्र.) मो. 9893810050

●●

सुभाषचंद्र लखेड़ा

नसीहत

वे हमेशा द्वितीय दर्जे के छात्र रहे। संयोगवश, उन्हें उच्च पदासीन अपने किसी रिश्तेदार की बदौलत एक प्रयोगशाला में वैज्ञानिक ‘बी’ का पद मिला।

तत्पश्चात्, वे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते गए। उनकी जुबान यह कहते हुए नहीं थकती थी कि इंसान को कर्म करना चाहिए, फल की चिंता करना बेवकूफी है। बहरहाल, इस बार वे निदेशक पद के इंटरव्यू के लिए गए थे।

लेकिन पहली बार वे असफल रहे। कल वे किसी से कह रहे थे, ‘इस देश में भाई-भतीजावाद का राज है और इसलिए यहाँ से प्रतिभा पलायन हो रहा है।’

सम्पर्क : नई दिल्ली, मो. 9891491238

●●

सुदर्शन रत्नाकर

भाई जैसा

जब भी वह उस सँकरी गली से निकलता, एक गरीब-सा दिखने वाला लड़का प्रायः उसकी चमचमाती लम्बी गाड़ी को हसरत भरी निगाहों से देखता। एक दिन उसने गाड़ी रोककर उसे अन्दर बैठने का निमन्त्रण दे दिया। वह लड़का खुशी-खुशी गाड़ी में बैठ गया।

“आपकी गाड़ी बहुत बढ़िया है, कितने की होगी सर!”

“पता नहीं, मेरे भाई ने मुझे उपहार में दी है।”

“आपका भाई बहुत अच्छा है।”

“क्या तुम भी चाहते हो, तुम्हारा भी कोई ऐसा भाई हो।”

“नहीं सर! मैं आपके भाई जैसा बनना चाहता हूँ।”

उसने तपाक से जवाब दिया।

सम्पर्क : फरीदाबाद (उ.प्र.) मो. 9811251135

●●

संजीव वर्मा सलिल

समाज का प्रायश्चित

खाप पंचायत ने स्वगोत्री विवाह करने पर उनके ग्राम-प्रवेश पर रोक लगा दी। दोनों के परिवारजन तथाकथित मान-मर्यादा के नाम पर उन्हें क्षति पहुँचाने को उद्यत हुए तो उन्हें इस अपराध से दूर रखने का विचार कर दोनों ने गाँव छोड़ दिया।

शहर में विषम परिस्थितियों से जूझते हुए एक-दूसरे का संबल बनकर उन्होंने राष्ट्रीय दलों में चयनित होकर प्रसिद्धि प्राप्त की। संयोगवश उस खेल की अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा उनके जिले में आयोजित थी। न चाहते हुए भी उन्हें राष्ट्रीय दलों में होने के कारण जाना ही पड़ा। स्टेशन पर दल के उत्तरते ही उनकी दृष्टि उस बैनर पर पड़ी जिस पर उनके बड़े-बड़े चित्रों के साथ स्वागत और गाँव को उन पर गर्व होने का नारा अंकित था। बड़े-बड़े पुष्पहार लेकर उनका स्वागत कर सेलफी लेने की होड़ में सम्मिलित थे वे सब जो कभी उनकी जान के दुश्मन बने थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि यह स्वागत व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए था या समाज का प्रायश्चित।

सम्पर्क : जबलपुर (म.प्र.) मो. 9425183244

●●

संतोष श्रीवास्तव

शहीद की विधवा

कैप्टन जयदीप करगिल युद्ध में शहीद हो गये थे। उनकी पत्नी सारिका मेरी अंतरंग मित्र थी। अमेरिका में होने की वजह से तुरंत नहीं जा पाई थी उसके पास....चार साल बाद आज मिल रही हूँ। देख रही हूँ सारिका सँभल गई है। जयदीप के शून्य को स्वीकार कर लिया है उसने...लेकिन यह मेरा भ्रम था। उसने उस शून्य में प्रभात को ला खड़ा किया है। घर में जयदीप के बूढ़े माता-पिता और सारिका ...प्रभात निर्द्वंद्व आता, सारी-सारी रात सारिका के साथ कमरे में बिताता। रोक भी कौन सकता था उन्हें। पहल मैंने ही की.. ‘तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते?’

वह हँसी...‘शादी करके शहीद की विधवा होने का गर्व खो दूँ? सारी उम्र बहुत कुछ करके भी शायद इतना मान-सम्मान न पाती, जयदीप को मरणोपरांत दिया गया परमवीर चक्र, समाजसेवी संस्थाओं की भारी मदद, ये नौकरी, जयदीप की पेंशन ...क्या मिलेगा शादी करके, शारीरिक सुख? वो तो मिल ही रहा है न प्रभात से...।

मैं अवाक...लड़खड़ा गये कदमों को सँभाला मैंने। सारिका मुझे स्टेशन तक छोड़ने के लिए अपनी बाइक निकाल रही थीं। जयदीप के माता-पिता मुझे पहुँचाने गेट तक आए, माताजी ने कुछ कहने के लिए होंठ खोले ही थे कि पिताजी ने बरज दिया...‘देखो तुम प्रभात की चर्चा नहीं करोगी।’

‘हाँ नहीं करूँगी। पर यह दोस्त है उसकी, समझा सकती है उसे।’

‘नहीं, जिन्दगी अब इसी तरह गुजारनी है यह तय है...छाती पर रखा यह बोझ सहना ही होगा..हम कुछ नहीं कर पाएँगे। न तुम न मैं। शहीद बेटे के माँ-बाप से भी बढ़कर होती है शहीद की विधवा ..दो निवाले को भी तरस जाएँगे हम।’ मैं कतरा-कतरा मरते दोनों के वजूद को देखती ही रह गई।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9769023188

●●

संध्या तिवारी

उगता सूरज

उसे अपने लम्बे बालों से बड़ा प्यार था।

आज उसका आईआईटी का रिजल्ट आया था। आईआईटी में सिलेक्ट होने की खुशी में नाते रिश्तेदारों के फोन, अड़ोसी-पड़ोसी का घर आना-जाना लगा हुआ था।

वह झटके से अपने लम्बे बालों को पीछे फेंक कर सभी का अभिवादन कर रहा और बधाइयाँ ले रहा था। तभी उसे किसी ने दरवाजे के बाहर से पुकारा। दरवाजे पर उसके कालेज के प्रिंसिपल और मैनेजिंग डायरेक्टर खड़े थे। उन्हें देखते हुए एक पल को उसका मन कौंध कर आज से दो महीने पीछे चला गया।

हाईस्कूल के बाद ही आईआईटी की तैयारी के लिए उसे कोटा जाना था लेकिन आईआईटी के लिए इन्टर भी पास करना जरूरी था। इन्टर करने के लिए उसने अपने शहर के एक इन्टर कालेज में डमी

स्टूडेंट के बतौर एडमीशन ले लिया था। जहाँ पूरे साल बिना उपस्थित हुए केवल स्कूल की फीस भरकर एकजाम दिया जा सकता था। इन्टर, सेकेण्ड इयर में इत्फाक़ कन वह अपने शहर में था। जब उसकी फेयर वेल पार्टी थी। डमी स्टूडेंट है तो क्या? है तो इसी कालेज का- सोच कर उसने शेरवानी पहनी, अपनी लम्बी जुलफ़ों को सँवारा और पार्टी में पहुँच गया।

प्रिंसिपल और सारे टीचर उसके इस रूप को देखकर हिल गये। उन्हें लगा यदि यह लड़का यहाँ ज़्यादा देर ठहरा तो उनके कालेज के लड़के बागी हो जायेंगे। लड़कियाँ बिगड़ जायेंगी। संस्कार और संस्कृति का क्या होगा? 'बाल कटा कर सभ्य तरीके से स्कूल आओ।'

उन्होंने उसे यह कह कर स्कूल से खदेड़ दिया। 'हेलो! दीपक कहाँ खो गए?'

प्रिंसिपल साहब की आवाज और उनका हाथ मिलाने के लिए बढ़ा हाथ देख-सुन वह वर्तमान में लौट आया- 'जी.. सर.., मैं.. यहीं .. हूँ।' कहकर उसने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और उन्हें घर के अंदर ले गया। मैनेजिंग डायरेक्टर और प्रिंसिपल साहब दोनों उसे बधाई देते हुए बोले- 'दीपक, तुम्हारा एक लेटेस्ट फोटो चाहिए कालेज फ्लैक्सी के लिए।'

'लेकिन सर मेरे जो भी फोटो हैं बड़े बालों में ही हैं।' दीपक ने कहा

हें...हें...हें... कोई बात नहीं दीपक... तुम तो हमारे कालेज के... स्टार स्टूडेंट...।

सम्पर्क : पीलीभीत (उ.प्र.) मो. 9410464495



संतोष सुपेकर

मजा नहीं, फायदा

मोटरसाइकिल से घर लौट रहा था तो शहर पहुँचने के थोड़ा पहले एक दृश्य देख चौंक पड़ा। व्यस्त सड़क के कोने पर खड़े एक विशाल वृक्ष के नीचे हरी-हरी घास पर मेरे पड़ोसी नरेंद्र जी बैठे हुए थे, ठंडी-ठंडी हवा खाते हुए, सिकी मूँगफली के दाने चबाते, मोबाइल फोन पर पुराना फिल्मी गीत सुनते हुए...

अरे वा, क्या बात है? 'बाइक उनके पास खड़ी करते हुए गहन आश्चर्य से मैंने कहा, 'क्या देख रहा हूँ ये? मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा। यहाँ तो दम लेने की फुर्सत नहीं है और आप खूब मजा ले रहे हैं जिंदगी का?'

'मजा नहीं भाई' उन्होंने माहौल के अनुरूप इत्मीनान से उत्तर दिया, 'फायदा! फायदा उठा रहा हूँ और जिंदगी का नहीं, आम आदमी होने का! सात-आठ दिनों से लाइनों में, क्यू में, लग-लगकर थक गया था, कभी पेट्रोल के लिए लाइन, कभी रिजरवेशन कराने के लिए लाइन, कभी बैंक की लाइन तो कभी दूध लेने के लिए लाइन! रोज आम आदमी होने का नुकसान उठाता हूँ तो सोचा, क्यों न आज चो सुख ले लूँ जो सिर्फ आम आदमी को नसीब है, किसी खास को नहीं! और फिर क्या पता कब, फिर कौनसी अनसोची लाइन में लगना पड़ जाए, ठीक है न?

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9424816096



सुधा रानी तैलंग

सच्चा हकदार

ज्योति आज बहुत खुश है। क्योंकि उसके पति डॉक्टर दीपक को मानव सेवा समिति की ओर से समाज सेवा के लिये पुरस्कार मिलने वाला है। पुरस्कार समारोह कार्यक्रम पाँच बजे शाम को शुरू होना है। इसलिए ज्योति दीपक जल्दी जल्दी तैयार हो रहे हैं। तभी दरवाजे पर दस्तक होती है। ज्योति दीपक देखो कौन है? दीपक दरवाजा खोलते हुए-क्यों भाई क्या काम है? बेटा कल से भूखा हूँ, दो रोटी मिल जाती, बूढ़े पर दया करो।

भले चंगे तो लग रहे हो। कुछ काम वाम करो। जाओ कोई और घर जाओ। भीख माँगते शर्म नहीं आती। दरवाजा बंद करते हुए दीपक ने कहा-इसको भी अभी मरना था पैने पाँच वैसे ही बज चुके हैं। कहीं प्रोग्राम चालू नहीं हो जाए। अरे जब आप ही चीफ गेस्ट नहीं पहुँचेंगे तो भला प्रोग्राम कैसे चालू हो जायेगा।

ज्योति दीपक घर से गाड़ी लेकर निकलते ही हैं कि रास्ते में भीड़ के कारण जाम है। दीपक एक युवक से पूछता है क्यों क्या बात है? ये जाम क्यों लगा है? एक बूढ़ा आदमी बेहोश होकर गिर गया है। युवक ने सहानुभूति जताते हुए कहा। अरे बाबूजी आप इसे अपनी गाड़ी से अस्पताल तक पहुँचा देंगे क्या? एक मैले कुचले कपड़े पहने कच्चरा बीनने वाले युवक ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

क्यों मेरी गाड़ी को तुमने एम्बूलेंस समझ रखा है क्या? ले ये दस रुपये रिक्षा करके ले जाओ कहते हुए कार की खिड़की से दस का नोट फेंकता है। युवक ने कार की खिड़की से दस का नोट अन्दर वापिस फेंकते हुए कहा- अरे गाड़ी वाले बाबूजी। अभी मेरे पास इससे ज्यादा रुपये हैं बाबू। अपने पास ही रख लो ये अपनी ये दस रुप्पली। आपकी गाड़ी में पेट्रोल भरवाने के काम आयेंगे।

ज्योति ने कार का शीशा बन्द करते हुए कहा- तुम भी दीपक न जाने क्यों इन छोटे लोगों के मुँह लगते हो। हम वैसे भी आलरेडी बहुत लेट हो चुके हैं। जल्दी करिये मंत्री जी पहुँच गये होंगे अब तक कार्यक्रम में।

दीपक ने गाड़ी स्टार्ट की और कुछ ही देर बाद मानव सेवा समिति के मंच पर वो बड़ी शान के साथ पहुँच गया। मंत्री जी के हाथों समाज सेवा में विशिष्ट योगदान के लिये डॉक्टर दीपक के नाम पुरस्कार की घोषणा करते ही की पूरा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। पर आज न जाने क्यों दीपक के हाथ पुरस्कार लेते समय काँप रहे थे। उसकी अंतर्रात्मा चीख कर कह रही थी क्या वो सचमुच इस पुरस्कार का सच्चा हकदार है?

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.)
मो. 940712018, 9301468578



हरि जोशी

होनहार बिरवान के होत चीकने पात

प्राथमिक शाला की उस कक्षा में साठ बालक थे जिनमें से तीन अपने-अपने क्षेत्रों में अग्रणी थे। पहले छात्र का लिखने-पढ़ने से कोई वास्ता नहीं था। कक्षा में न बैठकर अन्य छात्रों से चंदा वसूलना, हड्डियाँ आयोजित करना, प्रदर्शनों-जुलूसों में अगुआ रहना, उसके मुख्य कार्यकलाप थे। पारिवारिक पृष्ठभूमि का अच्छा प्रभाव था।

दूसरा छात्र चालाक था। मेधावी विद्यार्थियों की कौपियों से नक़ल कर सबसे पहले अध्यापकों को दिखाना, अच्छे अंक पाना उसका नियमित कार्यक्रम था। मध्यम वर्गीय छात्रों के प्रति नाक-भौंह सिकोड़ता था।

एक तीसरा बालक भी था। कुशाग्र बुद्धि वाला। लट्टे का कुरता पायजामा पहनकर आता, कक्षा में कोने में चुपचाप बैठकर अध्ययन करता था। एकाग्र रहकर पढ़ना, गुरुजनों का आदर करना उसके दैर्घ्यदिन कार्यकलाप थे। कक्षा में प्रतिवर्ष प्रथम आता था। स्वाधीनता प्राप्ति के पचास वर्ष बाद नैतिकता का ऐसा उत्कर्ष हुआ कि पहला लड़का उस प्रदेश का शिक्षा मंत्री है, दूसरा छात्र आई.ए.एस. होकर उस प्रदेश का शिक्षा सचिव हो गया है। और तीसरा विद्यार्थी बड़े संघर्ष के बाद दूर-दराज़ के एक गाँव में प्राथमिक शाला का अध्यापक हो सका है।

सम्पर्क : भोपाल (म.प्र.) मो. 9428936226



हनुमान प्रसाद मिश्र

परिचय

‘भाई-साहब, आप क्या काम करते हैं।’

‘मैं तो अध्यापक हूँ।’

‘और भाई-साहब, आप क्या करते हैं।’

‘मैं तो वकील हूँ, वकालत करता हूँ।’

‘और आप?’

‘मैं तो पुलिस विभाग में हूँ।’

‘भाई-साहब क्यों झूठ बोलते हैं। दिखने में तो कतई पुलिस लगते ही नहीं।’

‘कौन स्साला.. मादर ... कहता है कि मैं पुलिस का नहीं हूँ। और फिर मैं चाहे पुलिस वाला हूँ या नहीं तुमसे मतलब--?’

‘अरे भाई-साहब, आप नाहक बुरा मान गए। दरअसल आप वर्दी में नहीं थे इसीलिए भूलवश जबान से निकल गया। लेकिन आपकी बातचीत से आपका पूरा परिचय मिल गया, अब तो हँडेड परसेंट कंफर्म हो गया कि आप पुलिस विभाग के ही हैं।’

सम्पर्क : अयोध्या (उ.प्र.) मो. 7275575001, 9450815316



हीरालाल नागर बौना आदमी

अंततः फैसला हुआ कि इस बार भी माँ हमारे साथ नहीं जाएगी। पत्नी और बच्चों को लेकर स्टेशन पहुँचा। ट्रेन आई और हम अपने गंतव्य की ओर चल पड़े। ठीक से बैठ भी नहीं पाए होंगे कि डिब्बे के शोर को चीरता हुआ फिल्मी गीत का मुखड़ा ‘हम बने तुम बने एक दूजे के लिए’ गूँज उठा। अँगुलियों में फँसे पत्थर के दो टुकड़ों की ...टिक.... टिकिर.... टिकिर....टिक....टिक् के स्वर में मीठी पतली आवाज ने जादू का-सा असर किया। लोग आपस में धँस-फँसकर चुप रह गए।

गाना बंद हुआ और लोग ‘वाह-वाह’ कर उठे। उसी के साथ उस किशोर गायक ने यात्रियों के आगे अपना दायाँ हाथ फैला दिया। “बाबूजी दस पैसे !” ...मेरे सामने पाँच-छः साल का दुबला-पतला लड़का हाथ पसारे खड़ा था।

“क्या नाम है तेरा?” ...मैंने पूछा।

“राजू।”

“किस जाति के हो?” ...लड़का निरुत्तर रहा। मैंने लड़के से अगला सवाल किया... “बाप भी माँगता होगा?”

“बाप नहीं है।”

“माँ है?”

“हाँ है, क्यों?” ...लड़के ने मेरी तरफ तेज़ निगाहें कीं।

“क्या करती है तेरी माँ?”

“देखो साब, उलटी-सीधी बातें मत पूछो। देना है तो दे दो।”

“क्या?”

“दस पैसे।”

“जब तक तुम यह नहीं बताओगे कि तुम्हारी माँ क्या करती है, मैं एक पैसा नहीं दूँगा।” ...मैंने लड़के को छकाने की कोशिश की।

“अरे बाबा! कुछ नहीं करती। मुझे खाना बनाकर खिलाती-पिलाती है और क्या करती है।”

“तुम भीख माँगते हो और माँ कुछ नहीं करती? भीख माँगकर खिलाते हो उसे?”

“माँ को उसका बेटा कमाकर नहीं खिलाएगा तो फिर कौन खिलाएगा?” ...लड़के ने करारा जवाब दिया। मेरे चेहरे का रंग बदल गया, जैसे मैं उसके सामने बहुत बौना हो गया हूँ।

सम्पर्क : दिल्ली, मो. 9582623368

●●

हेमंत उपाध्याय

अगरबत्ती

एक रायचंद ने श्वाँस के रोगी को राय दी कि हनुमान जी के मंदिर में जाकर हर रोज ग्यारह अगरबत्ती जलाया करो।

जब दूसरे रोज भक्त ग्यारह अगरबत्ती लेकर मंदिर के अंदर पहुँचा तो पुजारी ने अगरबत्ती जलाने से रोक दिया कि – अंदर अगरबत्ती न जलाओ पवनपुत्र का दम घुटेगा।

‘श्वाँस का मरीज जो अपने घर के अंदर ग्यारह अगरबत्ती जलाता था उसने उसे भी बंद कर दिया और उसका इलाज हो गया।

सम्पर्क : खण्डवा (म.प्र.) मो. 9425086246



हेमंत राणा

जवाब

‘तुम्हारी आँखें आज भी उतनी खूबसूरत हैं, जितनी बरसों पहले थीं।’

‘अच्छा, तुम्हें एक बात पता है?’

‘क्या?’

‘उन्हें मेरी आँखें जरा भी पसंद नहीं।’

‘ऐसा क्यों?, वैसे उनको क्या पसंद है?’

यह सुन वो थोड़ा शरमा गई, उन्होंने पलकें झुकाते हुए कहा, ‘बिल्कुल पागल हो, हर बात बताने के लिए नहीं होती।’

उनके पलक झुकाते ही, मेरी निगाहें आँखों से फिसलकर उनके होंठों पर जा गिरीं। उनके होंठ बहुत खूबसूरत थे। लेकिन उन पर किसी और का नाम लिखा था। निगाहें पल-भर भी वहाँ ठहर ना सकीं। वो वापिस आकर फिर उन आँखों को देखने लगीं। जहाँ आज भी मेरी बरसों पुरानी तस्वीर बनी थी।

‘क्या हुआ, ऐसे क्यों देख रहे हो, क्या मिल गया मेरी आँखों में?’

‘उस सवाल का जवाब कि उन्हें तुम्हारी आँखें अच्छी क्यों नहीं लगतीं?’

सम्पर्क : बुलन्दशहर (उ.प्र.) मो. 9458223103



क्षमा सिसोदिया

सुरक्षा-कवच

स्कूटी पर दो सहेलियाँ पूरी मस्ती में चली जा रहीं थीं। एक के कान में हैडफोन लगा हुआ था।

जिस पर धुन बज रही थी – ‘आज मैं ऊपर, आसमां नीचे...’

और फिर फर्राटे से स्कूटी घूमकर गेट के पास आकर रुकीं–

‘आंटी सिमी हैं?’

‘अररे तो तुम लोग ही थीं?’

‘बुलाती हूँ, अंदर आओ।’

‘नहीं आंटी थोड़ी जल्दी में हैं, फिर आएँगे।’

‘आंटी जल्दी भेजो न उसे।’

‘बेटा वो कपड़े चेन्ज करके ही आएगी बाहर। मैंने नियम बना कर रखा है और मेरी बेटियाँ उसे खुशी-खुशी निभाती भी हैं, कि किस कपड़े को कब और कहाँ पहनना चाहिए। ए आजकल जो तुम लोग शॉर्ट्स पहनकर घर से बाहर निकलती हो तो तुम्हारे मम्मी-पापा कुछ बोलते नहीं हैं! एक दिन मैं देख रही थी कि- तुम घर के बाहर अपने दोस्तों के साथ शॉर्ट्स में आराम से बात कर रही थीं। बेटा यह कोई मेट्रो सिटी तो है नहीं, कि जो तुम्हारी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाएगा।

फिर प्राकृतिक चीजों को तो हम नहीं बदल सकते हैं न। प्रकृति ने स्त्री-पुरुष को भिन्नताओं से ही नवाज़ा है। और इस बात को हमें समझना और स्वीकारना ही होगा। हम खुद ही आगे होकर क्यों न्यौता देने लगे हैं? क्या इतनी खुली हुई टाँगें अच्छी लगती हैं?’

‘अरे आंटी आप भी किस जमाने की बात कर रही हैं!’

‘बेटा मैं उसी जमाने की बात कर रहीं हूँ जिस जमाने में तुमलोग जी रही हो। और कितनी बराबरी चाहिए लड़कों से? हर तरह से बराबरी का दर्जा पाने के बाद भी, उनका शरीर तो नहीं पा सकते न। तो फिर अपने शरीर को ढंककर और सँभालकर रखना भी सीखो।’

‘ओफफफहो आंटी।’

‘हाँ बेटा, मैं सही कह रही हूँ। ईश्वर ने हम औरतों को हीरे की तरह तराशकर भेजा उसकी दुनिया को स्वर्ग बनाने के लिए। और आज की लड़कियाँ/औरतें नर्क का दरवाज़ा खुद ही खोलने पर तुली हुई हैं। ‘अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान की रक्षा जब तुमलोग ही नहीं करोगे तो फिर दूसरा कोई कैसे इज्जत देगा? हमें स्वतंत्रता के साथ ही अपनी इज्जत बढ़ानी है। न कि स्वच्छंद होकर घटानी है।

हमारे खूबसूरत शरीर को हर कोई भला क्यों देखे?’

तब तक सिमी लोअर पहनकर आ चुकी थी।

सम्पर्क : उज्जैन (म.प्र.) मो. 9425091767

●●

त्रिलोक सिंह ठाकुरेला

घरवाली

रामप्रसाद ने घर में प्रवेश किया तो उसके पैर और जुबान दोनों लड़खड़ा रहे थे।

‘कुछ तो बच्चों का खयाल करो। इन पर क्या असर पड़ेगा।’ विनीता ने सहज भाव से कहा। दोनों बच्चे नींद में बेखबर थे। ‘बकवास बंद कर।’ रामप्रसाद ने अलमारी से बोतल निकाली और पैग बनाने लगा।

‘मैं तो घर की भलाई के लिए ही कह रही हूँ।’ विनीता गिड़गिड़ाई। ‘तू घरवाली है। घर की भलाई कर।’

‘लेकिन घर तो दोनों के बनाने से बनता है।’ ‘नहीं, तू घरवाली है। सब कुछ मैं ही करूँगा तो तू क्या करेगी?’ रामप्रसाद और भी बहकने लगा। ‘घरवाली हूँ तभी तो कह रही हूँ।’ विनीता ने जोड़ा।

रामप्रसाद की आँखें लाल हो गयीं – ‘तू पिटकर मानेगी या ऐसे ही। मेरा दिमाग मत खा। घर और बच्चों की साज-सँभाल की जिम्मेदारी घरवाली की होती है।’

विनीता के सब्र ने जवाब दे दिया – ‘हाँ, घरवाली हूँ। तभी तो कह रही हूँ। इस घर में यह सब नहीं चलेगा।’ उसने बोतल उठाई और घर के बाहर फेंक दी। बोतल टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गयी।

रामप्रसाद गुस्से से लाल-पीला हो गया। वह विनीता को घसीटता हुआ दरवाजे तक ले गया और उसे धक्का मारकर दरवाजा बंद कर लिया। अब घरवाली घर के बाहर थी।

सम्पर्क : आबू रोड (राजस्थान) मो. 9460714267

●●

ज्ञानदेव मुकेश

वायरस

स्वास्थ्यकर्मी और पुलिसकर्मी के गाँव में प्रवेश करते ही उनकी लाठियों और पत्थरों से पूजा शुरू हो गयी। वे सिर पर पाँव रखकर भागे। उन्होंने कण्ट्रोल रूम में ही आकर दम लिया। कण्ट्रोल रूम प्रभारी ने पूछा, ‘क्यों भाग आये? क्या उस गाँव में कोरोना का कोई मामला नहीं है?’

एक पुलिसकर्मी ने हाँफते हुए कहा, ‘वहाँ असंतोष का सदियों पुराना वायरस है। आज वह फूट पड़ा। हम उसी के डर से भाग आये।’ प्रभारी को हैरत हुई, ‘असंतोष का वायरस? यह क्यों है भला?’

पुलिसकर्मी ने कहा, ‘हमने उन्हें आजतक दिया ही क्या है? हमारी चौपट तंत्र ने गरीबी दी, धर्म गुरुओं ने सांप्रदायिकता का और स्वार्थी नेताओं ने जातीयता का विष बोया। ये सभी दीर्घजीवी वायरस से कम हैं क्या?’

प्रभारी कुछ कह नहीं पाया। पुलिसकर्मी ने आगे कहा, ‘भागते वक्त गाँव का अगुआ मिला था। उसने कहा, इतने सारे वायरस के बीच हमने जीना सीख लिया तो ये कोरोना निगोड़ा क्या कर लेगा? अब आप ही बताइये हम क्या करें?’ प्रभारी ने पूछा, ‘मगर तुम लोगों को तो कोई असंतोष नहीं है न?’

पुलिसकर्मी हँसने लगा। उसने बस इतना भर कहा, ‘कोरोना से तो हम भी नहीं डरते।’

और वह उछलते-कूदते हुए कण्ट्रोल रूम से बाहर निकल गया।

सम्पर्क : पटना (बिहार)

●●